أحسن الوعاء لآداب الدعاء معه ذيل المدعاء لأحسن الوعاء

की तस्हील व तख़्रीज बनाम

Fazaaile Duaa (Hindi)

फ़ज़ाइले दुआ

मुसन्निफ़ : रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अली ख़ान

शारेह : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान

مكتبة المدينة (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج۱ ص۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ज़ाइले दुआ़

येह किताब **(फ़ज़ाइले दुआ़)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।
MO. 09374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

दुआ़ के फ़ज़ाइल व आदाब और इस से मु-तअ़ल्लिक़ा अह़काम
पर मुश्तमिल बे मिसाल तह़क़ीक़ी शाहकार

احسن الوعاء لآداب الدعاء

मुसन्निफ़ : रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

मअ़

ذیل المدعاء لاحسن الوعاء

शारेह़ : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान
की तस्हील व तख़्रीज बनाम

फ़ज़ाइले दुआ़

तस्हील व तख़्रीज : अ़ब्दुल मुस्तफ़ा रज़ा म-दनी, मुह़म्मद यूनुस अ़ली अ़त्तारी म-दनी, मुह़म्मद काशिफ़ सलीम अ़त्तारी म-दनी, सय्यिद अ़क़ील अह़मद अ़त्तारी म-दनी

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ اٰلک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब	:	احسن الوعاء لآداب الدعاء ذیل المدعاء لاحسن الوعاء
तस्हील व तख़्रीज बनाम	:	फ़ज़ाइले दुआ
मुसन्निफ़	:	रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान
शारेह़	:	علیہ رحمۃ المنان आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمن
तस्हील व तख़्रीज	:	अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा रज़ा म-दनी, मुह़म्मद यूनुस अ़ली अ़त्तारी म-दनी, मुह़म्मद काशिफ़ सलीम अ़त्तारी म-दनी, सय्यिद अ़क़ील अह़मद अ़त्तारी म-दनी
पेशकश	:	मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالی علیہ)
सिने त़बाअ़त	:	र-मज़ानुल मुबारक 1434 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ अगस्त 2013 सि.ई.
नाशिर	:	मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई	:	19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली	:	421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपुर	:	मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C / 0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290
अजमेर शरीफ़	:	19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385
हुब्ली	:	A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 09343268414
ह़ैदरआबाद	:	पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

याद दाश्त

(दौराने मुता़-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

(दौराने मुता-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा

याद दाश्त

(दौराने मुता-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَاءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

(दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा

इज्माली फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त ।	10	फ़ज़ीलते इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه में	
निय्यतें ।	25	एक रूयाए सालिह़ा ।	107
कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और		**फ़स्ले सिवुम**	
अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या ।	27	अवक़ाते इजाबत में	115
पेशे लफ़्ज़ ।	30	साअ़ते जुमुआ़ का बयान ।	115
ह़ालाते मुसन्निफ़ ।	36	नक़्द इजाबत, सह़ीह़ ह़दीस का इर्शाद ।	116
मुनाजात ।	43	**फ़स्ले चहारुम**	
ख़ुत़्बतुल किताब	44	अम्किनए इजाबत में	128
फ़स्ले अव्वल		उन मज़ाराते औलिया का बयान जिन के पास	
फ़ज़ाइले दुआ़ में	48	क़बूले दुआ़ को उ़-लमाए किराम ने मुजर्रब बताया ।	136
फ़स्ले दुवुम		1293 सि.हि. में हु़ज़ूर मह़बूबे इलाही	
आदाबे दुआ़ व अस्बाबे इजाबत में	57	رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रोशन करामत का ज़ुहूर ।	140
फ़ाइदए जलीला : (ह़ाशिया) ।	65	**फ़स्ले पन्जुम**	
मह़बूबाने ख़ुदा से तवस्सुल ।	65	इस्मे आ'ज़म व कलिमाते इजाबत में	143
तीन बार "يا أرحم الراحمين" कहने की फ़ज़ीलत ।	70	**फ़स्ले शशुम**	
अल्लाह तआ़ला के सम्अ़ व बसर		मवानेए़ इजाबत में	153
जमीअ़ मौजूदात को आ़म हैं ।	76	कोई ह़क़्क़ुल अ़ब्द गरदन पर होना	
आ़म मुसल्मानों के ह़क़ में दुआ़ करने के फ़ज़ाइल ।	86	सख़्त मानेए़ क़बूलिय्यत है ।	154
दुआ़ में अपने आप को मुक़द्दम करे या		वोह लोग जिन की दुआ़ "नहीं इ़लाज अपने	
दीगर मुसल्मानों को ?	91	हाथ के बनाए का" के त़ौर पर क़बूल नहीं होती ।	159
फ़ाइदए जलीला : क़बूले दुआ़		बीस फ़वाइदे अह़ादीस ।	165
में देर से न घबराने का बयाने शाफ़ी ।	99	तम्बीह ।	171

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
तर्के दुआ कभी न चाहिये ।	171	दुआ में तंगी न करे ।	216
क़बूलिय्यत न होना किसी ह़ालत में यक़ीनी नहीं।	171	**फ़स्ले हश्तुम**	
फ़स्ले हफ़्तुम		उन लोगों के बयान में जिन की दुआ	
किन किन बातों की दुआ न करनी चाहिये ?	172	क़बूल होती है ।	218
मुह़ाले आ़दी का मफ़्हूम (ह़ाशिया) ।	172	**फ़स्ले नहुम**	
मुह़ाले आ़दी की दुआ का मस्अला ।	172	उन आ'माले सालिहा में जिन के करने	
आ़फ़िय्यत की हमेशगी और शारेह़ की तह़क़ीक़।	173	वाले को किसी दुआ की ह़ाजत नहीं ।	228
दोनों जहां की भलाई मांगने का मस्अला ।	175	**फ़स्ले दहुम**	
अल्लाह तआ़ला से ह़क़ीर चीज़ मांगने का मस्अला		मब्ह़से दुआ के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द	
और मुसन्निफ़ व शारेह़ की तह़क़ीक़ ।	177	नफ़ीस सुवाल व जवाब में ।	233
अपनी मौत त़लब करने का मस्अला ।	180	**सुवाले अव्वल :** दुआ बेहतर है या	
दूसरे के लिये दुआए हलाकत न करे ।	183	क़ज़ा पर राज़ी हो कर तर्के दुआ ?	233
मुसल्मान पर कुफ़्र की बद दुआ का मस्अला।	188	हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार	
ला'नत की मज़म्मत और इस के जवाज़		दुआ बिल इत्तिफ़ाक़ वाजिब है ।	237
व हुरमत की तफ़्सील ।	188	**सुवाले दुवुम :** क्या दुआ तफ़्वीज़	
ला'ने यज़ीद का बयान ।	194	के मुनाफ़ी है ?	240
फ़ाइदए जलीला : बद मज़हब गुमराहों		शर्ते ख़ैर व सलाह़ हर दुआ में लगानी चाहिये।	241
के मुग़ा-लते़ का दफ़्अ़ ।	199	**सुवाले सिवुम :** जो मुक़द्दर है, हो कर	
एक वज्हे इस्लाम और निनानवे वज्हे कुफ़्र के मा'ना।	199	रहेगा, फिर दुआ से क्या फ़ाएदा ?	242
अहले क़िब्ला की तक्फ़ीर न करने के मा'ना।	199	क़ज़ाए मुअ़ल्लक़ व मुबरम का बयान ।	243
गुज़रे हुए काफ़िर के लिये दुआए मग़्फ़िरत अशद		हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का इर्शाद	
ह़राम है बल्कि तजदीदे इस्लाम व निकाह़ चाहिये।	203	और उस की तौज़ीह़ में शारेह़ की तह़क़ीक़।	245
सब मुसल्मानों के सब गुनाहों की		**सुवाले चहारुम :** क्या दुआ ख़िलाफ़े	
बख़्शिश और शारेह़ की तह़क़ीक़ ।	206	तस्लीमो रिज़ा है ?	249
औलाद पर बद दुआ और क़बूलिय्यत		तफ़्वीज़ व तस्लीम में फ़र्क़ ।	249
में शारेह़ की तह़क़ीक़ ।	212	**सुवाले पन्जुम :** क्या दुआ तर्के इरादा	
ह़ासिल शुदा का हुसूल ।	215	व ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ है ?	251

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
अह़कामे फ़िक़्ह व तसव्वुफ़ का फ़र्क़।	251	जोगियों का मांगना ह़राम है।	290
सुन्नत पर ज़ियादत का मस्अला।	253	सुवाले औलिया की दूसरी नफ़ीस	291
बिद्अ़ते ह़-सना, सुन्नत पर ज़ियादत		तौजीह व तह़क़ीक़े शारेह़।	
नहीं, शारेह़ की तह़क़ीक़।	253	बाहम इम्बिसाते़ ताम की ह़ालत में ब	
ह़ज़रते बिश्र हा़फ़ी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की बरह्ना पाई।	254	क़दरे इम्बिसात़ मांगना सुवाल नहीं।	294
नबी صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की सुन्नत ब लिहा़ज़े उम्मते		मुरीदों से फ़रमाइश का मस्अला।	294
आ़म्मा होती है, ख़्वास कि अपनी अ़ज़ीम क़ुव्वत		शैख़ को क्या लिहा़ज़ चाहिये और मुरीद	
के मुता़बिक़ अ़मल करें, मुख़ालिफ़े सुन्नत नहीं।	257	को क्या समझना लाज़िम।	294
तज़्यील		रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को अपना मालिक जाने।	294
ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल का बयान।	263	**ख़ातिमा**	
आदमी से मांगने में तीन ख़राबियां हैं।	265	चन्द तरकीब नमाज़े हा़जत में।	295
बेटी की शादी या सफ़रे ह़ज के लिये		रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को नामे पाक ले	
मांगने का मस्अला।	270	कर निदा करना जाइज़ नहीं जिस दुआ़ में	
स-दक़े को ह़क़ीर न जानने की तीन तफ़्सीरें।	275	लफ़्ज़ "**या मुह़म्मद**" आया हो उस की	
मस्जिद में मांगने का मस्अला।	278	जगह "**या रसूलल्लाह**" कहना लाज़िम है।	296
अ़-मले आख़िरत को ज़रीअ़ए दुन्या		मस्अला - بمعاقد العز من عرشک।	304
त़-लबी बनाना जाइज़ नहीं।	280	नमाज़ में क़ियाम के सिवा कहीं तिलावते	
जम्ए़ माल के लिये वा'ज़ कहने की मज़म्मत।	281	क़ुरआन जाइज़ नहीं।	305
सय्यिद बन कर मांगने की मज़म्मत।	285	सज्दे या क़ा'दे में सू-रतुल फ़ातिहा़ व	
मां के सय्यिदह होने से बेटा सय्यिद नहीं हो जाएगा।	285	आ-यतुल कुर्सी से निय्यते सना करें	
बा'ज़ औलियाए किराम के सुवाल करने, उस के		न कि निय्यते क़ुरआन।	305
वुजूह व मक़ासिद और फ़वाइद का बयान।	286	हु़ज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ	
तवक्कुल फ़र्ज़े ऐन है और तर्के अस्बाब तवक्कुल नहीं।	287	की दुहाई।	308
सालिकीन के लिये नादिरन ह़िल्लते		नमाज़े ग़ौसिया शरीफ़।	309
सुवाल में शारेह़ की तह़क़ीक़।	290	मआख़िज़ो मराजेअ़	314

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ और		ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई	
अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या ।	27	चीज़ मुअस्सिर नहीं ।	54
पेशे लफ़्ज़ ।	30	**दुआ़ के पांच फ़वाइद :**	
ह़ालाते मुसन्निफ़ ।	36	**अव्वल :** आ़बिदों के गुरोह में दाख़िल होता है।	54
मुनाजात ।	43	**दुवुम :** वोह इक़्रारे इ़ज्ज़ो नियाज़े दाई व ए'तिराफ़	
ख़ुत़्बतुल किताब ।	44	बिह कुदरत व करमे इलाही पर दलालत करती है।	54
फ़स्ले अव्वल		जो शख़्स दुआ़ करता है वोह अपने इ़ज्ज़ व	
फ़ज़ाइले दुआ़ ।	48	एह़तियाज का इक़्रार और अपने परवर्द गार	
ह़दीसे कुदसी की ता'रीफ़ (ह़ाशिया)	49	के करम व कुदरत का ए'तिराफ़ करता है। (ह़ाशिया)	54
अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक कोई चीज़		**सिवुम :** इम्तिसाले अम्रे शर-अ़, कि शारेअ़	
दुआ़ से बुज़ुर्ग तर नहीं ।	50	ने उस पर ताकीद फ़रमाई, न मांगने पर	
दुआ़ से आ़जिज़ न हो कि कोई शख़्स		ग़ज़बे इलाही की वईद आई ।	54
दुआ़ के साथ हलाक न होगा ।	51	**चहारुम :** इत्तिबाए़ सुन्नत कि हुज़ूरे अक़्दस	
दुआ़ मुसल्मानों का हथियार है और दीन		صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم अक्सर अवक़ात दुआ़ मांगते	
का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर ।	51	और औरों को भी ताकीद फ़रमाते ।	55
जो बला उतर चुकी और जो अभी न		**पन्जुम :** दफ़्ए़ बला व हुसूले मुद्दआ़ ।	55
उतरी, दुआ़ सब से नफ़्अ़ देती है ।	51	**दुआ़ बन्दे की तीन बातों से ख़ाली**	
दुआ़ इ़बादत का मग़ज़ है ।	52	**नहीं होती :**	
दुआ़ सलाहे़ मोमिन है ।	52	(1) उस का गुनाह बख़्शा जाता है ।	55
जो अल्लाह तआ़ला से दुआ़ न करे,		(2) या दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है।	55
अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाए ।	53	(3) या उस के लिये आख़िरत में भलाई	
दुआ़ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है।	54	जम्अ़ की जाती है ।	55

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
फ़स्ले दुवुम आदाबे दुआ व अस्बाबे इजाबत में	57	नज़र ब ग़ैर, जब बिज़्ज़ात नज़र	
बेशक अल्लाह तआला दुआ क़बूल नहीं		ब ग़ैर हो नज़र ब ग़ैर है ।	65
फ़रमाता किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की ।	57	फ़ाइदए जलीला : इस्तिआनत बिलग़ैर व	
ह़दीसे सह़ीह़ की ता'रीफ़ । (ह़ाशिया)	58	तवस्सुल ब मह़बूबाने ख़ुदा का इम्तियाज़ । (ह़ाशिया)	65
जब नींद ग़-लबा करे तो ज़िक्र		मह़बूबाने ख़ुदा से तवस्सुल, नज़र ब	
व नमाज़ मुल्तवी कर दो ।	58	ख़ुदा है न कि नज़र ब ग़ैर ।	65
दिल को ह़त्तल इम्कान ख़यालाते ग़ैर से पाक करे ।	59	ग़ैरे ख़ुदा के लिये तवाज़ोअ़ ह़राम है ।	65
रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ास मह़ल्ले नज़र दिल है ।	59	तवाज़ोए लिल्लाह और तवाज़ोए लि	
बदन व लिबास व मकान, पाक व		ग़ैरिल्लाह के बारे में इमामे अहले सुन्नत	
नज़ीफ़ व त़ाहिर हों ।	59	رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नफ़ीस बह़स ।	65
दुआ से पहले कोई अ़-मले सालेह़ करे ।	59	अपने उस्ताद के लिये तवाज़ोअ़ करो और	
दुआ से पहले स-दक़ा बहुत मुअस्सिर है ।	59	अपने शागिर्दों के लिये तवाज़ोअ़ करो	
जिन के ह़ुक़ूक़ इस के ज़िम्मे हों, अदा		और सरकश आ़लिम न बनो ।	66
करे या उन से मुआ़फ़ करा ले ।	60	जो किसी ग़नी के लिये उस के ग़िना के	
खाने पीने लिबास व कस्ब में ह़राम से एह़तियात़ करे ।	60	सबब तवाज़ोअ़ करे, उस का दो तिहाई	
ह़राम ख़्वार व ह़राम कार की दुआ		दीन जाता रहे ।	66
अक्सर रद होती है ।	60	निगाह नीची रखे, वरना مَعَاذَ اللہ ज़वाले	
दुआ से पहले गुज़श्ता गुनाहों से तौबा करे ।	61	बसर का ख़ौफ़ है ।	67
वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़		दुआ के लिये अव्वल व आख़िर ह़म्दे	
ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े ।	61	इलाही बजा लाए ।	68
किन अवक़ात में नवाफ़िल पढ़ना मक्रूह		ह़म्द का मुख़्तसर और जामेअ़ कलिमा	
है ? (ह़ाशिया)	61	अव्वल व आख़िर नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और	
दुआ के वक़्त बा वुज़ू, क़िब्ला रू, मुअद्दब		इन के आल व अस्ह़ाब पर दुरूद भेजिये ।	68
दो ज़ानूं बैठे या घुटनों के बल खड़ा हो ।	62	दुआ अल्लाह तआला से ह़िजाब में है	
आ'ज़ा को ख़ाशेअ़ और दिल को ह़ाज़िर करे ।	63	जब तक मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और इन	
अल्लाह तआला ग़ाफ़िल दिल की दुआ		के अहले बैत पर दुरूद न भेजी जाए ।	69
नहीं सुनता ।	63	दुआ त़ाइर है और दुरूद शहपर,	
सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े ख़ुदा ।	64	त़ाइरे बे पर क्या उड़ सकता है !	69

उ़न्वान	सफ़ह़ा
तसव्वुरे अ़-ज़मत व जलाले इलाही में डूब जाए।	69
अगर इस मुबारक तसव्वुर ने वोह ग़-लबा किया कि ज़बान बन्द हो गई तो سبحان الله! येह ख़ामोशी हज़ार अ़र्ज़ से ज़ियादा काम देगी।	69
अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम रह़मतों को, जो बा वुजूदे गुनाह, इस के ह़ाल पर फ़रमाता रहा, याद कर के शरमिन्दा हो।	70
येह शर्म बाइसे दिल शिकस्तगी होगी और अल्लाह तआ़ला दिले शिकस्ता से बहुत क़रीब है।	70
जिस के लिये दुआ़ के दरवाज़े खुलते हैं, इजाबत के दरवाज़े भी खुल जाते हैं।	70
अल्लाह عزّوجلّ को उस के मह़बूब नामों से पुकारे।	70
तीन मर्तबा "اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ" कहने की फ़ज़ीलत।	70
पांच मर्तबा "یَا رَبَّنَا" कहने की फ़ज़ीलत।	71
अल्लाह तआ़ला के अस्मा व सिफ़ात और उस की किताबों ख़ुसूसन क़ुरआन और मलाएका व अम्बियाए किराम बिल ख़ुसूस हुज़ूर सय्यिदुल अनाम عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उस के औलिया व अस्फ़िया बित्तख़्सीस हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رضی اللہ عنہ से तवस्सुल और उन्हें अपने इन्जाहे ह़ाजात का ज़रीआ़ करे।	71
अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ वसीला ढूंडो।	71
"या मुह़म्मद" कहना कैसा ? (ह़ाशिया)	72
उ़-मरे फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के चचा के वसीले से दुआ़ करना।	72
सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رضی اللہ عنہ की अपने मु-तवस्सिलीन को बिशारतें।	73
अपनी उ़म्र में जो नेक अ़मल ख़ालिसन लि वज्हिल्लाह हुवा हो, उस से तवस्सुल करे।	73
क़िस्सए अस्ह़ाबिर्रक़ीम। (ह़ाशिया)	73
दुआ़ में हाथ उठाने के त़रीक़े।	75
आस्मान क़िब्लए दुआ़ है।	75
हाथ खुले रखे, कपड़े वग़ैरा से पोशीदा न हों।	76
दुआ़ नर्म व पस्त आवाज़ से हो कि अल्लाह तआ़ला समीअ़ व क़रीब है।	76
आहिस्ता दुआ़, ज़ाहिर दुआ़ से सत्तर मर्तबा बेहतर है।	77
ह़ाजते आख़िरत को मुक़द्दम रखे कि अम्रे अहम की तक़्दीम ज़रूरी है।	77
अल्लाह तआ़ला दुआ़ में इल्ह़ाह़ करने वालों को दोस्त रखता है।	79
अ़दद त़ाक़ हो कि अल्लाह वित्र है वित्र को दोस्त रखता है।	81
दुआ़ फ़हमे मा'ना के साथ हो।	81
रोना न आए तो रोने का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक है।	81
एक नक़्क़ाल की बख़्शिश।	81
दुआ़ अ़ज़्म व जज़्म के साथ हो।	82
ह़दीसे मुबा-रका में वारिद दुआ़ : "اِنْ تَغْفِرِ اللّٰهُمَّ تَغْفِرْ جَمًّا... اِلخ" के मा'ना।	82

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुआ जामेअ़, **क़लीलुल्लफ़्ज़ व कसीरुल मा'ना** हो ।	83	जो दुआ करे और येह समझे कि मेरी दुआ क्या क़बूल होगी ! उस की दुआ मक़्बूल न होगी ।	95
आख़िर ज़माने के लोग दुआ में ह़द से बढ़ जाएंगे ।	83	दुआ करते करते मलाल न लाए बल्कि निशाते क़ल्ब के साथ अ़र्ज़ करे ।	96
एक जामेअ़ दुआ ।	83-84	मुशा–कला की ता'रीफ़ । (ह़ाशिया)	96
दुआ में सज्अ़ और तकल्लुफ़ से बचे ।	84	जब कोई प्यारा ख़ुदाए तआ़ला का दुआ करता है जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام कहते हैं : इलाही ! तेरा बन्दा तुझ से कुछ मांगता है । हुक्म होता है ठहरो, अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को उस की आवाज़ पसन्द है ।	99
राग और ज़मज़मे से एह़तिराज़ करे ।	85	जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ दुआ करता है, फ़रमाता है : इस का काम जल्दी कर दो ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह है ।	99
जो दुआएं ह़दीसों में वारिद हैं इन्हीं पर इक्तिसार करे कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कोई ह़ाजते नेक दूसरे के मांगने को न छोड़ी ।	85	यह़्या बिन सई़द क़त्तान का तआ़रुफ़ । (ह़ाशिया)	99
अपने लिये दुआ मांगे तो सब अहले इस्लाम को उस में शरीक कर ले ।	86	तुम्हारी दुआ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ की थी, क़बूल न हुई ।	101
दुआए ख़ास व आ़म में वोह फ़र्क़ है जो ज़मीन व आस्मान में ।	87	शैतान की भी दुआ क़बूल हुई कि उसे क़ियामत तक मोहलत मिली ।	104
मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के लिये इस्तिग़्फ़ार करने वाले के फ़ज़ाइल ।	87	फ़राग़ दस्ती की ह़ालत में दुआ की कसरत करे ।	105
वालिदैन व मशाइख़ के लिये भी ज़रूर दुआ करे ।	89	जिस अम्र का अन्जाम यक़ीनन न मा'लूम हो कि अपने लिये कैसा है बिला शर्ते ख़ैर व सलाह़ दुआ न करे ।	106
दुआ वालिदैन के लिये सुन्नते क़दीमा है कि ह़ज़रते नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वक़्त से जारी ।	90	दुआ तन्हाई में करे ।	107
पहले अपने नफ़्स के लिये दुआ मांगे, फिर वालिदैन व दीगर अहले इस्लाम को शरीक करे ।	91	पोशीदा की एक दुआ अ़लानिया की सत्तर दुआ के बराबर है ।	107
आमीन कहना, हारून عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है ।	94	आ'ला ह़ज़रत رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का अ़जीब ख़्वाब ।	107

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
जब क़स्दे दुआ़ हो पहले मिस्वाक कर ले।	108	ने'मतें वहशी होती हैं, इन्हें शुक्र से मुक़य्यद करो।	113
पान, तम्बाकू, कच्चा लहसन, पियाज़		**फ़स्ले सिवुम अवक़ाते इजाबत में**	
खाने वालों के लिये अहम मस्अला।	108	शबे क़द्र।	115
मिस्वाक रब को राज़ी करने वाली है।	108	रोज़े अ़-रफ़ा या'नी नहुम ज़िल हिज्जा।	115
दुआ़ करते करते नींद ग़ालिब हो जगह		माहे र-मज़ान।	115
बदल दे यूं भी न जाए तो वुज़ू कर ले		शबे **जुमुआ़** व रोज़े **जुमुआ़**।	115
यूं भी न जाए तो मौक़ूफ़ करे।	109	ठीक आधी रात।	115
ह़ालते ग़ज़ब में बद दुआ़ का क़स्द न		साअ़ते जुमुआ़ का बयान।	115
करे कि ग़ज़ब अ़क़्ल को छुपा लेता है।	110	आ़लिमुल किताबैन कौन ?	116
दुआ़ में तकब्बुर और शर्म से बचे।	110	बुध के दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान।	120
दुआ़ में जैसे कि बुलन्द आवाज़ न चाहिये,		मस्जिद को जाते वक़्त।	120
निहायत पस्त भी न करे और इस क़दर तो		वक़्ते अज़ान।	120
ज़रूर है कि अपने कान तक आवाज़ पहुंचे।	110	वक़्ते तक्बीर।	120
दुआ़ में सिर्फ़ मुद्दआ़ पर नज़र न रखे बल्कि		दरमियाने अज़ान व इक़ामत।	120
नफ़्से दुआ़ को मक़्सूद बिज़्ज़ात जाने।	110	जब इमाम "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" कहे।	120
अपनी दुआ़ पर क़नाअ़त न करे बल्कि सु-लहा		पन्जगाना फ़र्ज़ों के बा'द।	120
व अत़्फ़ाल व मसाकीन और बेवा औ़रतों के साथ		सज्दे में।	121
नेक सुलूक कर के उन से भी दुआ़ चाहे।	111	बा'दे तिलावते क़ुरआने मजीद।	121
अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद में है जब तक		बा'दे इस्तिमाए़ क़ुरआन शरीफ़।	121
बन्दा अपने मुसल्मान भाई की मदद में है।	111	वक़्ते ख़त्मे क़ुरआने करीम।	122
फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ मदीनए मुनव्वरह		जब मुसल्मान जिहाद में सफ़ बांधें।	122
के बच्चों से अपने लिये दुआ़ कराते।	112	जब कुफ़्फ़ार से लड़ाई गर्म हो।	122
मुसल्मान मुब्तला की दुआ़ ग़नीमत जानो।	112	आबे ज़मज़म पी कर।	122

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
अबू ज़र رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ब्ले ज़ुहूरे इस्लाम		रजब की चांद रात।	126
महीना भर सिर्फ़ आबे ज़मज़म पीना।	122	शबे बराअत।	126
जब रोज़ा इफ़्त़ार करे।	122	शबे ई़दुल फ़ित़्र	126
मींह बरसते में।	123	शबे ई़दुल अज़्ह़ा।	126
जब मुर्ग़ अज़ान दे।	123	रात की पहली तिहाई।	127
मुर्ग़ मला-इ-कए रह़मत को देख कर बोलता		रात का पिछला सुलुस।	127
है उस वक़्त अल्लाह का फ़ज़्ल मांगो।	123	अज़ान सुनने में बा'दे حَیَّ عَلَی الْفَلَاح।	127
मुर्ग़ के आज़ान देते वक़्त की दुआ।	123	तिलावते सूरए अन्आ़म में दो इस्मे	
जहां चालीस मुसल्मान जम्अ़ हों उन		जलालत के माबैन।	127
में एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होगा।	123	क़िराअते "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" में	
ज़िक्रे ख़ुदा और रसूल की मजलिस में।	123	जब अस्माए अस्ह़ाबे बद्र पर पहुंचे।	127
मुसल्मान मय्यित के पास ख़ुसूसन		**फ़स्ले चहारुम अम्किनए इजाबत में।**	
जब उस की आंखें बन्द करें।	124	मत़ाफ़।	128
उस वक़्त नेक ही बात मुंह से निकालो कि जो		मुल्तज़म।	128
कुछ कहोगे फ़िरिश्ते उस पर आमीन कहेंगे।	124	मुल्तज़म पर दुआए जिब्राईल علیہ السلام।	129
रिक़्क़ते क़ल्ब के वक़्त दुआ ग़नीमत		मुल्तज़म पर पढ़ी जाने वाली दुआ।	129
जानो कि वोह रह़मत है।	124	मुस्तजार।	129
सूरज ढलते।	124	दाख़िले बैत।	130
साअ़ते अव्वाबीन कौन सी है ?	124	ज़ेरे मीज़ाब।	130
रात को सोने से जाग कर।	125	ह़त़ीम।	130
रात को सोते से जाग कर पढ़ी जाने		ह़-जरे अस्वद।	130
वाली दुआ।	125	रुक्ने यमानी ख़ुसूसन जब कि त़वाफ़	
बा'दे क़िराअत सूरए इख़्लास।	126	करते वहां गुज़र हो।	131

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
रुक्ने यमानी पर पढ़ी जाने वाली दुआ।	131	मस्जिदुल फ़त्ह़ में, ख़ुसूसन बुध के	
ख़लफ़े मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام।	131	दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान।	135
नज़्दे ज़मज़म।	131	बाक़ी मसाजिदे त़य्यिबा कि हुज़ूरे	
सफ़ा।	132	अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब हैं।	135
मर्वह।	132	वोह कूएं जिन्हें हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم	
मस्आ ख़ुसूसन दोनों मीले सब्ज़ के		की त़रफ़ निस्बत है।	136
दरमियान।	132	ज-बले उहुद शरीफ़।	136
अ़-रफ़ात, ख़ुसूसन नज़्दे मौक़िफ़े नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم		हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तमाम	
मुज़्दलिफ़ा, ख़ुसूसन **मश्अ़रुल ह़राम।**	132	मशाहिदे मु-तबर्रका।	136
मिना।	132	मज़ाराते बक़ीअ़ व उहुद।	136
जमराते सलासा।	132	मज़ारे मुत़ह्हर अबू ह़नीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ	
नज़र गाहे का'बा जहां कहीं हो।	132	के पास।	136
मस्जिदे न-बवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।	133	इमाम शाफ़ेई رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान।	136
जहां एक मरतबा दुआ क़बूल हो वहां		इमाम शाफ़ेई की ह़ाजत रवाई।	136
फिर दुआ करे।	133	मज़ारे मुबारक ह़ज़रत इमाम मूसा	
ख़्वाह अपनी किसी दुआ का क़बूल		काज़िम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ।	137
देखे, ख़्वाह दूसरे मुसल्मान भाई की।	133	वोह इस्तिजाबते दुआ के लिये	
औलिया व उ़-लमा की मजालिस।	133	तिरयाक़े मुजर्रब है।	137
येह वोह लोग हैं कि इन के पास बैठने		तुरबते सरापा ब-र-कत हुज़ूर	
वाला बद बख़्त नहीं रहता।	134	सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ।	137
मुवा-ज-हए शरीफ़ा हुज़ूर सय्यिदुश्शाफ़िईन		मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार सय्यिदुना	
صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।	134	मा'रूफ़ कर्ख़ी।	137
दुआ यहां क़बूल न होगी तो कहां होगी !	134	सो बार सूरए इख़्लास वहां पढ़ कर जो चाहे	
मिम्बरे अत़्हर के पास।	135	अल्लाह तआला से मांगे, ह़ाजत पूरी हो।	138
मस्जिदे अक़्दस के सुतूनों के नज़्दीक।	135	मरक़दे मुबारक ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब	
मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ में।	135	नवाज़ मुईनुल ह़क़्क़े वद्दीन चिश्ती।	138

उ़न्वान	सफ़ह़ा
मलिकुल उ़-लमा अबू बक्र मस्ऊ़द काशानी और इन की ज़ौजए मुत़ह्हरा फ़क़ीहा फ़ाज़िला ह़ज़रते फ़ाति़मा के बैनल मज़ारैन।	138
ह़ज़रत सय्यिद अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ु-रशी व ह़ज़रत सय्यिदी इब्ने रसलान के मज़ारों के दरमियान।	139
इमाम अश्हब व इब्नुल क़ासिम के मज़ारों के दरमियान खड़े हो कर सो बार क़ुल हुवल्लाह शरीफ़ पढ़े फिर रू ब क़िब्ला जो दुआ़ करे क़बूल हो।	139
मरक़दे इमाम इब्ने लाल मुह़द्दिस अह़मद बिन अ़ली हमदानी رَحمۃُ اللہ تعالٰی के पास।	140
तमाम औलिया व सु-लह़ा व मह़बूबाने ख़ुदा तआ़ला की बारगाहें, ख़ानक़ाही आराम गाहें।	140
ह़ज़रत निज़ामुद्दीन औलिया رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ का इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ पर करम।	140
फ़स्ले पन्जुम इस्मे आ'ज़म व कलिमाते इजाबत में।	
आयते करीमा।	143
आयते करीमा की फ़ज़ीलत।	143
दो2 आयतों में इस्मे आ'ज़म।	145
बा'ज़ उ़-लमा "یَا بَدِیْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام" को इस्मे आ'ज़म कहते हैं।	146
बा'ज़ उ़-लमा ने "یَا اَللّٰہُ یَا رَحْمٰنُ یَا رَحِیْمُ" को इस्मे आ'ज़म कहा।	146
ह़ज़रते ज़ैद बिन सामित رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ की दुआ़।	147
उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہا की दुआ़।	148
इस्मे आ'ज़म "رَبِّ رَبِّ" है।	148
इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ का ख़्वाब में इस्मे आ'ज़म देखना।	149
इस्मे आ'ज़म "اَلْحَیُّ الْقَیُّوْم" है।	149
इस्मे आ'ज़म कलिमए तौह़ीद है।	149
इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी व बा'ज़ सूफ़िायाए किराम ने कलिमए "ھُوَ" को इस्मे आ'ज़म बताया।	149
''अल्लाह'' इस्मे आ'ज़म है।	150
इस्मे जलालत के मु-तअ़ल्लिक़ हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللہ عنہ का फ़रमान।	150
बा'ज़ उ़-लमा ने **''बिस्मिल्लाह''** शरीफ़ को इस्मे आ'ज़म कहा।	150
''बिस्मिल्लाह'' के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ का इर्शाद।	150
इजाबत के पांच कलिमे।	150
"یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ"-	151
पांच बार "یَا رَبَّنَا"।	151
"یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام"-	151
जिब्राईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की लाई गई दुआ़।	151

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
फ़स्ले शशुम मवानेए़ इजाबत में ।		हो, हुसूले मस्ऊल ही के साथ क़बूल होना ज़रूर नहीं ।	157
अगर दुआ़ क़बूल न हो, तो उसे अपना क़ुसूर समझे, ख़ुदाए तआ़ला की शिकायत न करे ।	153	हिक्मते इलाही है कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ उस से त़लब करता है और वोह बराहे मेह्रबानी तेरी दुआ़ को इस सबब से कि तेरे ह़क़ में मुज़िर है, रद फ़रमाता है ।	159
उस की अ़त़ा में नुक़्सान नहीं, तेरी दुआ़ में नुक़्सान है ।	153	ऐसा रद, क़बूल से बेहतर ।	159
दुआ़ चन्द सबब से रद होती है :	153	कभी दुआ़ के बदले सवाबे आख़िरत देना मन्ज़ूर होता है ।	159
किसी शर्त़ या अदब का फ़ौत होना ।	153	**वोह छ[6] अश्ख़ास जिन की दुआ़ क़बूल नहीं होती :**	
ह़राम खाने, पीने, पहनने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ।	153	वोह कि वीराने मकान में उतरे ।	159
गुनाहों से तलव्वुस ।	154	वोह मुसाफ़िर कि सरे राह मक़ाम करे या'नी सड़क से बच कर न ठहरे, बल्कि ख़ास रास्ते ही पर नुज़ूल करे ।	159
दुआ़ से पहले मज़्लूमों के हुक़ूक़ वापस करना और उन से अपने क़ुसूर बख़्शवाना और ख़ुदा के सामने तौबा व इस्तिग़्फ़ार और तर्के मआ़सी पर अ़ज़्मे मुसम्मम करना लाज़िम है ।	154	वोह जिस ने ख़ुद अपना जानवर छोड़ दिया, अब ख़ुदा से दुआ़ करता है कि उसे रोक दे ।	160
चुग़ुल ख़ोरी का वबाल ।	154	वोह जिस के निकाह़ में कोई बद ख़ुलुक़ औ़रत हो और वोह उसे त़लाक़ न दे ।	160
हुक़ूक़ुल इ़बाद तलफ़ करने की सज़ा ।	155	वोह जिस का किसी पर कुछ आता था और उस के गवाह न कर लिये ।	160
च्यूंटी की दुआ़ से मींह बरसेगा ।	156	वोह जिस ने सफ़ीह बे अ़क़्ल को माल सिपुर्द कर दिया ।	160
येह ख़ुदा की रह़मत है कि पथ्थर नहीं पड़ते ।	156	इस से मुराद येही कि उस ख़ास मादे में उन की दुआ़ न सुनी जाएगी न येह कि जो ऐसा करे मुत़्लक़न उस की कोई दुआ़ किसी अम्र में क़बूल न हो ।	161
इस्तिग़्नाए मौला, वोह ह़ाकिम है मह़कूम नहीं, ग़ालिब है मग़्लूब नहीं, मालिक है ताबेअ़ नहीं, अगर तेरी दुआ़ क़बूल न फ़रमाई तुझे नाख़ुशी और ग़ुस्से, शिकायत और शिक्वे की मजाल कब है ।	156-7		
दुआ़ कि शराइत़ व आदाब की जामेअ़			

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
इन उमूर में अ़-दमे क़बूल का सबब ज़ाहिर कि येह काम ख़ुद अपने हाथों के किये हैं।	161	या ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करे कि इस से वस्वसा पैदा होता है।	166
वीराने में पड़ाव के नुक़्सानात।	161	या औ़रत से हम बिस्तरी के वक़्त बिस्मिल्लाह न कहे कि शैत़ान शरीक हो जाता है।	167
रास्ते पर क़ियाम के ख़त़रात।	161	बुरा तुख़्म बुरा ही फल लाता है।	167
शब को सरे राह न उतरो कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ से जिसे चाहे राह पर फैलने की इजाज़त देता है।	161	या ज़मीन के सूराख़ों में पेशाब करे कि कभी सांप वग़ैरा जानवरों का घर या जिन्न का मकान होता और इन्सान ईज़ा पाता है।	167
क्या वाहि़दे क़हहार को आज़माता या مَعَاذَ اللہ! उसे अपना मह़कूम ठहराता है!	161	नज़र ह़क़ है मर्द को क़ब्र और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है।	168
मैं अपने रब को आज़माता नहीं।	162		
दैन की ता'रीफ़। (ह़ाशिया)	163	या तन्हा सफ़र करे कि फ़ुस्साक़ इन्सो जिन्न से मुज़र्रत पहुंचती है और हर काम में दिक़्क़त पड़ती है।	168
ख़ुद कर्दा का इ़लाज ढूंडने वालों की दुआ़ भी मक़्बूल नहीं।	165		
रात को ऐसे वक़्त घर से बाहर निकले कि लोग सो गए हों पाउं की पहचल रास्तों से मौक़ूफ़ हो गई हो सही़ह़ ह़दीस में इस से मुमा-न-अ़त फ़रमाई कि इस वक़्त बलाएं मुन्तशिर होती हैं।	165	या हंगामे जिमाअ़ शर्मगाहे ज़न की त़रफ़ निगाह करे कि مَعَاذَ اللہ! अपने या बच्चे या दिल के अन्धे होने का बाइ़स है।	168
		या उस वक़्त बातें करे कि बच्चे के गूंगे होने का एह़तिमाल है।	168
बिस्मिल्लाह शरीफ़ न पढ़ने के नुक़्सानात।	165	खड़े खड़े पानी पिया करे कि दर्दे जिगर का मूरिस है।	169
या बच्चे को मग़रिब के वक़्त घर से बाहर निकाले कि उस वक़्त शयात़ीन मुन्तशिर होते हैं।	165		
या खाने से बे हाथ धोए सो रहे कि शैत़ान चाटता और مَعَاذَ اللہ! बरस का बाइ़स होता है।	166	या फ़ासिक़ों, फ़ाजिरों, बद वज़्ओ़ं, बद मज़्हबों के पास निशस्त बरख़ास्त करे कि अगर बिलफ़र्ज़ सोह़बते बद के असर से बचा तो **मुत्तहम** ज़रूर हो जाएगा।	169
बरस की ता'रीफ़। (ह़ाशिया)	166		

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
या लोगों के रास्तों में ख़्वाह उन की निशस्त बरख़ास्त की जगह पाख़ाना पेशाब करे कि आप ही गालियां खाएगा।	169
या सफ़र से पलट कर बिग़ैर इत्तिलाअ़ किये रात को अपने घर में चला आए कि मक्रूह देखने का एह्तिमाल है।	169
ख़ादिमे ह़दीस जानता है कि अक्सर ह़दीस में बा'ज़ बातों का तज़्किरा और उन के ज़िक्र से उन के हज़ार इम्साल की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हैं।	170
तुम أَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر करोगे या अल्लाह तआ़ला तुम पर तुम्हारे बदों को मुसल्लत़ कर देगा, फिर तुम्हारे नेक दुआ़ करेंगे तो क़बूल न होगी।	171
किसी सूरत में दुआ़ क़बूल न होना यक़ीनी क़त़ई नहीं, न इस से येह मुराद कि ऐसी ह़ालतों में दुआ़ को मह्ज़ फ़ुज़ूल व ना मक़्बूल जान कर बाज़ रहें।	171
दुआ़ जालिबे अम्नो अमान है।	171
दुआ़ नूरे ज़मीन व आस्मान है।	171
दुआ़ बाइसे रिज़ाए रह़मान है।	171
मक़्सूद इन उमूर से रोकना है कि येह दुआ़ व इजाबत में ह़िजाब और असर के लिये सद्दे बाब होते हैं, तो इन से बचना लाज़िम और जिस से वाक़ेअ़ हुए अगर हनूज़ मौजूद हैं तो इन का इज़ाला ज़रूर।	171
फ़स्ले हफ़्तुम किन किन बातों की दुआ़ न करनी चाहिये ?	
दुआ़ में ह़द से न बढ़े।	172
मुह़ाल की अक़्साम। (ह़ाशिया)	172
मर्दाने ख़ुदा पर अगर चालीस दिन गुज़रें कि कोई इ़ल्लत व क़िल्लत न पहुंचे तो इस्तिग़्फ़ार व इनाबत फ़रमाते हैं कि मबादा बाग ढीली न कर दी गई हो।	173
जुनून व जुज़ाम व बरस व कूरी व त़ाऊ़न की ता'रीफ़ात। (ह़ाशिया)	174
ऐसे अम्र के बदलने की दुआ़ मांगना जिस पर क़लम जारी हो चुका।	175
लग़्व और बे फ़ाएदा दुआ़ न करे।	176
गुनाह की दुआ़ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए या कोई फ़ाह़िशा ज़िना करे कि गुनाह की त़लब भी गुनाह है।	176
क़त़्ए रेह़्म की दुआ़ न करे।	177
अल्लाह तआ़ला से ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार ग़नी है।	177
जब मांगो ख़ुदा से तो फ़िरदौस मांगो।	177
जब तू दुआ़ मांगे बहुत मांग कि तू करीम से मांगता है।	178
जूते का दुवाल टूटे तो वोह भी ख़ुदा से मांग।	178
हांडी का नमक भी मुझ से मांग।	178
बिला ज़रूरत ख़सीस चीज़ मांगना ह़माक़त है, उ़म्दा शै मांगे कि ख़ुदा करीम है और हर चीज़ पर क़ादिर।	179

उन्वान	सफ़हा
दुन्या ज़लील और इस की तमाम मताअ़ बआं कसरत निहायत क़लील ।	179
रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ़ न करे कि मुसल्मान की ज़िन्दगी उस के ह़क़ में ग़नीमत है ।	180
नेकूकार के वासित़े ज़िन्दगी ने'मत और बदकार के लिये ज़िन्दगी निक्मत ।	181
कोई तुम से मौत की आरज़ू न करे मगर जब कि ए'तिमाद नेकी करने पर न रखता हो ।	182
दुन्यवी मुज़र्रतों से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुज़र्रत के ख़ौफ़ से जाइज़ ।	183
बे ग़-रज़े सह़ीह़ शर-ई़ किसी के मरने और ख़राबी की दुआ़ न मांगे ।	183
जो शख़्स औरों की हलाकत व ख़राबी चाहता है वोह सब से ज़ियादा हलाक व ख़राब होता है । (ह़ाशिया)	183
ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी यमन के मश्हूर क़बीले दौस के फ़र्द थे ।	184
"ख़ुदाया ! दौस को हिदायत फ़रमा और उन को यहां ले आ ।"	185
"ख़ुदाया ! सक़ीफ़ को हिदायत फ़रमा ।"	186
अ़त़िय्या कहते हैं : "مُعْتَدِيْن" से वोह लोग मुराद हैं जो लोगों के कोसने में ह़द से बढ़ते हैं ।	186
सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जनाबे इलाही में अ़र्ज़ की : "ख़ुदाया ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई घर वाला न छोड़ ।"	187
ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़िब्त़ियों पर दुआ़ की : "ख़ुदाया ! इन के माल मिटा दे और इन के दिलों पर सख़्ती कर कि वोह ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देखें ।"	187
हमारे पैग़म्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी अह़यानन बा'ज़ कुफ़्फ़ार पर दुआ़ करना साबित है ।	188
किसी मुसल्मान को येह बद दुआ़ न करे कि तू काफ़िर हो जाए, कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक कुफ़्र है ।	188
किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊ़न न कहे, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक मुस्तह़िक़े ला'नत पर भी ला'नत न कहे ।	188
अह़ादीसे करीमा से ला'नत की मज़म्मत ।	189
जिस शख़्स का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी जैसे : अबू जह्ल, अबू लहब, फ़िरऔ़न, शैत़ान, हामान, उस पर ला'नत जाइज़ ।	192
शैख़े मुह़क़्क़िक़ फ़रमाते हैं : "ला'नत करना किसी पर जाइज़ नहीं सिवा उस के जिस के काफ़िर मरने की मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़बर दी ।"	193
बहुत मुह़क़्क़िक़ीन उ़-लमा यज़ीद पर ला'नत में तवक़्क़ुफ़ करते हैं ।	194

उ़न्वान	सफ़ह़ा
यज़ीद की तक्फ़ीर और इस की ला'न के बारे में तीन गुरौह हैं : (ह़ाशिया)	
इमाम अह़मद इसे काफ़िर और ला'नत इस पर जाइज़ कहते हैं।	194
बा'ज़ उ़-लमा इस की तक्फ़ीर व ला'न से इन्कार करते हैं।	195
और बा'ज़ उ़-लमा इस की तक्फ़ीर व ला'न में तवक़्क़ुफ़ करते हैं और येही राजेह़ और येही अस्लम और येही हमारे अइम्मए हुदा का मज़्हबे असह़ह़ व अक़्वम है।	196
इस ख़बीस ने मुस्लिम बिन उ़क़्बा मुर्री को मदीनए सकीना पर भेज कर सत्तरह सो मुहाजिरीन व अन्सार व ताबिईने किबार को शहीद कराया।	196
मलाएका व अम्बिया कि ब हुक्मे जनाबे किब्रिया किसी पर ला'नत करते हैं ब सबबे इम्तिसाले अम्र के मश्कूर व माजूर होते हैं।	197
इमाम अ़ब्दुल्लाह याफ़ेई य-मनी फ़रमाते हैं : किसी मुसल्मान पर ला'नत अस्लन जाइज़ नहीं और जो किसी मुसल्मान पर ला'नत करे वोह मल्ऊ़न है।	198
शैख़ मुह़क़्क़िक़े देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अस्ल आदत व शेवए अहले सुन्नत तर्के सब्बो ला'न है।	198
शीआ़ ख़वारिज को काफ़िर कहते और उन पर ला'नत करते हैं और ख़वारिज शीआ़ को काफ़िर व मल्ऊ़न जानते हैं। (ह़ाशिया)	198
हमारे उ़-लमा ने तस्रीह़ फ़रमाई कि अगर किसी के कलाम में निनानवे वजह कुफ़्र की निकलती हों और एक वजह इस्लाम की तो मुफ़्ती पर वाजिब है कि वज्हे इस्लाम की त़रफ़ मैल करे।	199
हमारे अइम्मा फ़रमाते हैं : "हम अहले क़िब्ला से किसी को काफ़िर नहीं कहते।"	199
ज़रूरिय्याते दीन : "वोह मसाइले दीन हैं जिन को हर ख़ास व आ़म जानते हों।" (ह़ाशिया)	199
अ़वाम से मुराद वोह मुसल्मान हैं जो त़ब्क़ए उ़-लमा में शुमार न किये जाते हों, मगर उ़-लमा की सोह़बत से शरफ़ याब हों और मसाइले इ़ल्मिय्या से ज़ौक़ रखते हों। (ह़ाशिया)	199
"जो ज़रूरिय्याते दीन से किसी शै के मुन्किर को काफ़िर न जाने, ख़ुद काफ़िर है।"	200
"क़ुरआने अ़ज़ीम" व नमाज़ पढ़े, रोज़ा रखे, ज़कात दे, ह़ज करे और साथ ही बुत को भी सज्दा करे तो क़त्अ़न काफ़िर होगा।	200
अइम्मए दीन व उ़-लमाए मोअ़्-त-मदीन ने तस्रीह़ फ़रमा दी है कि अहले क़िब्ला से मुराद वोह हैं "जो तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान रखते हैं।"	201
जो ज़रूरिय्याते दीन से एक बात का मुन्किर हो वोह अहले क़िब्ला ही से नहीं, उस की तक्फ़ीर में शक भी कुफ़्र है न कि इन्कार।	201

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
"अल्लाह तआ़ला की सिफ़तें अ-ज़ली हैं, न ह़ादिस, न मख़्लूक़ तो जो उन्हें मख़्लूक़ या ह़ादिस बताए या इन के बारे में तवक़्क़ुफ़ करे या शक लाए वोह काफ़िर है।"	201	"दीन हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही का नाम है।"	217
नेचरियों की वज़ाह़त। (ह़ाशिया)	202	**फ़स्ले हश्तुम उन लोगों के बयान में जिन की दुआ़ क़बूल होती है :**	
किसी मुसल्मान को येह बद दुआ़ कि तुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो न दे।	203	मुज़्त़र।	218
जो काफ़िर मरा والعياذ بالله تعالى उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत ह़राम है।		मज़्लूम अगर्चे फ़ाजिर हो, अगर्चे काफ़िर हो,	218
कुफ़्फ़ार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कुफ़्र है।	204	बादशाहे आ़दिल।	218
इस दुआ़ कि "ख़ुदाया सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे" के बारे में इमामे अहले सुन्नत رضی اللہ تعالٰی عنہ की तह़क़ीक़।	208	मर्दे सालेह़।	218
अपने और अपने अह़बाब के नफ़्स व अहलो माल व वलद पर बद दुआ़ न करे क्या मा'लूम कि वक़्ते इजाबत हो और बा'दे वुक़ूए़ बला फिर नदामत हो।	212	मां बाप का फ़रमां बरदार।	219
वालिदैन की अपनी औलाद के ह़क़ में बद दुआ़ मक़्बूल होने या न होने के बारे में इमामे अहले सुन्नत की शानदार तह़क़ीक़।	212	मुसाफ़िर	219
तह़सीले ह़ासिल की दुआ़ न करे म-सलन : मर्द कहे : इलाही ! मुझे मर्द कर दे कि येह इस्तिह्ज़ा है।	215	रोज़ादार।	220
दुआ़ में ह़ज्र व तंगी न करे। म-सलन : यूं न मांगे कि तन्हा मुझ पर रह़्म फ़रमा, या सिर्फ़ मुझे और मेरे फ़ुलां फ़ुलां दोस्तों को ने'मत बख़्श।	216	मुसल्मान कि मुसल्मान के लिये उस की ग़ैबत में दुआ़ मांगे।	220
		वालिदैन की दुआ़ अपनी औलाद के ह़क़ में।	222
		औलाद की दुआ़ वालिदैन के ह़क़ में।	222
		ह़ाजी की दुआ़ जब तक अपने घर पहुंचे।	222
		उ़म्रह करने वाला।	223
		मरीज़ कि इस की दुआ़ मिस्ले दुआ़ए मलाएका है।	223
		मुब्तला की दुआ़ मुस्तजाब है।	224
		मोमिने मुब्तला की दुआ़ ग़नीमत जानो।	224
		वोह तीन शख़्स जिन की दुआ़ अल्लाह तआ़ला रद नहीं करता।	224
		फ़स्ले नहुम उन आ'माले सालिह़ा में जिन के करने वाले को किसी दुआ़ की ह़ाजत नहीं।	
		अव्वल : दुरूद शरीफ़।	228

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुवुम : ज़िक्रे इलाही।	230	दूसरी **मुअ़ल्लक़।**	244
सिवुम : तिलावते कु़रआने मजीद।	231	क़ज़ा में **तग़य्युर** क़ज़ा के मुताबिक़ रवा है।	244
बुज़ुर्गी कलामे इलाही की तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे बुज़ुर्गिये रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ, उस की तमाम मख़्लूक़ पर।	232	ह़दीसे मुरसल की ता'रीफ़। (ह़ाशिया)	245
		क़ज़ाए **मुबरम** क्यूंकर क़ाबिले रद हो सकती है!	245
		क़ज़ाए **मुअ़ल्लक़** दो 2 क़िस्म है :	
फ़स्ले दहुम मब्ह़स दुआ़ के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द नफ़ीस सुवाल व जवाब में।		एक **मुअ़ल्लक़ मह़्ज़।**	246
		दूसरी **मुअ़ल्लक़ शबीह बिल मुबरम।**	246
बा'ज़ उ़-लमा तर्के दुआ़ को औला जानते हैं।	233	**तफ़्वीज़** येह कि अपने काम दूसरे के सिपुर्द कीजिये अब चाहे वोह सियाह व सपेद कुछ करे, अस्लन दख़्ल न दीजिये, आ़म अज़ीं कि अपने दिल को भाए या ना पसन्द आए।	249
सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बला के वक़्त दुआ़ न मांगी।	233		
इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सात दिन या चालीस दिन आग में रहे और उस वक़्त सोलह बरस के थे। (ह़ाशिया)	233	**रिज़ा व तस्लीम** येह कि अपना इरादा उस के इरादे में फ़ना हो जाए जो कुछ वोह चाहे अपना दिल भी उसी को पसन्द करे और उस के ख़िलाफ़ की ख़्वाहिश न रखे।	249
उ़-लमा कहते हैं : जो चीज़ बे मांगे मिलती है उस से कि मांगने से ह़ासिल हो, बेहतर होती है।	234		
अक्सर उमूर, ख़ुसूसन मुबाह़ात व मन्दूबात में दिल का फ़तवा ए'तिबारे तमाम रखता है।	236	इल्ह़ाह़ व ज़ारी में मसरूफ़ होना ऐ़न रिज़ाए मौला है न कि इस के ख़िलाफ़।	250
दुरूद शरीफ़ भी दुआ़ है कि ब इज्माए उम्मते मर्ह़ूमा उ़म्र में एक बार हर मुसल्मान पर फ़र्ज़े क़त़ई और इ़न्दल मुह़क़्क़िक़ीन हर बार कि ज़िक्र शरीफ़ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आए वाजिब है।	238	सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं : जब तक बन्दा अपनी ख़्वाहिश से दस्त बरदार नहीं होता गर्द इस दौलत की उस के दामन को नहीं छूती।	251
तफ़्वीज़ के मा'ना।	240	हुक्म तसव्वुफ़ का मानिन्दे हुक्मे फ़िक़्ह के आ़म नहीं बल्कि ब इख़्तिलाफ़े अह़वाल व मवाजीद व अज़्वाक़ मुख़्तलिफ़ होता है।	251
क़ज़ा दो 2 क़िस्म है :			
एक **मुबरम।**	243		

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
जो फ़िक़्ह ह़ासिल करे और तसव्वुफ़ से		जो शख़्स आदमी से सुवाल करता है	
वाक़िफ़ न हो मु-तकल्लफ़ है और जो		तीन ख़राबियों में पड़ता है।	265
तसव्वुफ़ ह़ासिल करे और इ़ल्मे फ़िक़्ह से		अस्ल येह है कि सुवाल ब क़दरे ह़ाजत दुरुस्त	
ग़ाफ़िल हो ज़िन्दीक़ है और जो दोनों जम्अ़		है और ह़ाजत ब इख़्तिलाफ़े अश्ख़ास व अवक़ात	
करे **मुह़क़्क़िक़** है।	251	व अह़वाल व अम्सार मुख़्तलिफ़।	268
كُنْ فقيهاً صوفياً ولا تكن صوفياً فقيهاً.	252	ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल फ़ी नफ़्सिही क़बीह़ है	
उ़-लमा फ़रमाते हैं : जो शख़्स नबी		और इस की इजाज़त ब वज्हे ज़रूरत।	268
صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई बात निकाले		सुवाल करना किन शराइत़ के तह़त दुरुस्त है ?	268
उस के मुंह पर मारी जाए।	253	इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :	
बिश्र ह़ाफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی का वाक़िआ़।	255	अस्ल ह़ाजतें तीन हैं।	269
पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ल्क़ की		बा'ज़े भीक मांगते हैं कि ह़ज को जाएंगे,	
हिदायत व रहनुमाई के लिये तशरीफ़ लाए		येह भी ह़राम और उन्हें देना भी ह़राम,	
बा'ज़ अवक़ात ह़ुज़ूर औला को छोड़ कर		फ़क़ीर को ह़ज नफ़्ल है और सुवाल ह़राम।	270
अदना को इख़्तियार फ़रमाते।	256	स-दक़े को ह़क़ीर न जानो अगर्चे बकरी	
ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم शारेअ़ हैं ह़ुज़ूर		का जला हुवा खुर हो।	275
का फ़े'ल आ़म उम्मत की इक़्तिदा के लिये है।	257	मस्जिद के साइल को देने का मस्अला।	278
बा'ज़ वक़्त दुआ़ और बा'ज़ वक़्त इस का		सुवाल में ज़ियादा तमल्लुक़ व चापलूसी	
तर्क औला है और सिफ़त इस की ब इशारए		न करे कि शाने इस्लाम के ख़िलाफ़ है।	279
क़ल्ब मा'लूम होती है।	259	मद्दाह़ों के मुंह में ख़ाक झोंक दो।	279
अहले तलवीन कौन ?	259	जो बे इ़ल्म क़ुरआन के मा'ना में कुछ	
अहले तम्कीन कौन ?	259	कहे, वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।	282
इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का क़ौमे लूत़ के बारे में अपने		जो नसब में अपने बाप के सिवा दूसरे की त़रफ़	
रब عَزَّوَجَلَّ से मुजा-दला की तफ़्सील। (ह़ाशिया)	261	अपने को निस्बत करे उस पर अल्लाह तआ़ला	
तज़्यील		और फ़िरिश्तों और आदमियों, सब की ला'नत है।	284
ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल क़बीह़ लि ज़ातिही है।	263	अल्लाह तआ़ला न उस का फ़र्ज़ क़बूल	
उ़-लमा फ़रमाते हैं : तर्के सुवाल हर ह़ाल में औला है।	263	करे न नफ़्ल।	285

उन्वान	सफ़्हा
शर-ए मुत़ह्हर में नसब बाप से लिया जाता है न (कि) मां से।	285
जिस की मां सय्यिदानी हो अगर्चे इस वजह से वोह एक फ़ज़ीलत रखता है मगर ज़िन्हार सय्यिद न हो जाएगा।	285
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल फ़र्ज़े ऐन है।	287
आ़लमे अस्बाब में रह कर तर्के अस्बाब गोया इब्त़ाले ह़िक्मते इलाहिय्यह है।	289
सुवाल बे ज़रूरते शरइय्या अपने लिये ह़राम है और मिस्कीन व ह़ाजत मन्द मुसल्मानों के लिये मांगना ह़लाल बल्कि सुन्नत से साबित है।	291
अइम्मए दीन फ़रमाते हैं : जो अपने आप को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्क न जाने, ह़लावते सुन्नत उस के मज़ाक़े जान तक न पहुंचे।	294
ख़ातिमा चन्द तरकीब नमाज़े ह़ाजत में	
तरकीबे अव्वल 1।	295
ह़दीस में "या मुह़म्मद" है, मगर इस की जगह "या रसूलल्लाह" कहना चाहिये।	296
तरकीबे दुवुम 2।	297
येह तरकीब अपने बे वुक़ूफ़ों और अब्लहों को न सिखाओ कि गुनाहों पर दलेरी न करें।	298
तरकीबे सिवुम 3।	298
अपने अह़्मक़ों को येह दुआ़ न सिखाओ कि इस से ना फ़रमानी पर इस्तिआ़नत करेंगे।	298
तरकीबे चहारुम 4।	298
तरकीबे पन्जुम 5।	299
तरकीबे शशुम 6।	300
तरकीबे हफ़्तुम 7।	301
तरकीबे हश्तुम 8।	303
अह़मद बिन ह़र्ब व इब्राहीम बिन अ़ली व अबू ज़-करिय्या व ह़ाकिम ने कहा : हम ने इस का तजरिबा किया तो ह़क़ पाया।	303
फ़क़ीर ने भी चन्द बार तजरिबा किया, तीरे बे ख़त़ा पाया।	303
सज्दे बल्कि क़ा'दे बल्कि क़ियाम के सिवा नमाज़ के किसी फे'ल में क़ुरआने अ़ज़ीम की तिलावत ह़दीस व फ़िक़्ह दोनों से मन्अ़ है, यहां तक कि सह्वन पढ़े तो सज्दा लाज़िम और अ़-मदन पढ़े तो इआ़दा वाजिब।	305
हमारे अइम्मा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के नज़्दीक एक निय्यत में दिन को चार रक्अ़त से ज़ियादा मक्रूह है और रात को आठ से ज़ाइद।	305
मगर दिन की कराहत मुत्तफ़क़ अ़लैह और शब की कराहत में इख़्तिलाफ़ है।	305
तरकीबे नहुम 9।	306
"अबान बिन अबी इ़याश" पर इमामे अहले सुन्नत का कलाम।	307
तरकीबे दहुम 10।	308
ज़ईफ़ अह़ादीस के क़ाबिले अ़मल होने पर अहले कमाल का इज्माअ़ है।	311
मआख़िज़ो मराजेअ़।	314

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"**दुआ मोमिन का हथियार है**" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से **इस किताब** को पढ़ने की "**17 निय्यतें**"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

("المعجم الکبیر" للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵، داراحیاء التراث العربی بیروت)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾2﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾3﴿ कुरआनी आयात और ﴾4﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾5﴿ जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾6﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾7﴿ इस रिवायत "عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَۃُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حلیۃ الاولیاء،حدیث:۱۰۷۵۰،ج۷،ص۳۳۵،دارالکتب العلمیۃ بیروت) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴾8﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾9﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर

लाइन करूंगा ﴾10﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इ़ल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾11﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾12﴿ इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी (موطأ امام مالك، ج٢،ص٤٠٧،رقم: ١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾13﴿ इस किताब के मुत़ा-लए़ का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा। ﴾14﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा ''فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।'' (پ١٤، النحل:٤٣) पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾15﴿ जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा ﴾16﴿ जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ﴾17﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई़ ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान ''**निय्यत का फल**'' और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** और **पेम्फ़लेट मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ और **अल मदीनतुल इल्मिय्या**

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे वलिय्ये ने'मत, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن बे मिसाल ज़िहानत व फ़त़ानत, कमाल द-रजा फ़क़ाहत और क़दीम व जदीद उ़लूम में कामिल दस्त-रस व महारत रखते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तक़्रीबन एक हज़ार कुतुब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पचपन से ज़ाइद उ़लूमो फ़ुनून में तबह़्हुरे इल्मी पर दाल्ल हैं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की जिन क़-लमी काविशों को बैनल अक़्वामी शोहरत ह़ासिल हुई उन में ''कन्ज़ुल ईमान'', ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' और ''फ़तावा र-ज़विय्या'' (तख़्रीज शुदा 33 जिल्दें) भी शामिल हैं, आख़िरुज़्ज़िक्र तो उ़लूमो फ़ुनून का ऐसा बह़्रे बे करां है जो बे शुमार व मुस्तनद मसाइल और तह़क़ीक़ाते नादिरा को अपने अन्दर समोए हुए है, जिसे पढ़ कर क़द्रदान इन्सान बे साख़्ता पुकार उठता है कि इमामे अहले

सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुज्तहिदाना बसीरत का परतव हैं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुतुब रहती दुन्या तक मुसल्मानों के लिये मश्अ़ले राह हैं। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की जुम्ला तसानीफ़ का ह़स्बे इस्तित़ाअ़त ज़रूर मुत़ा–लआ़ करे।

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु–तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़–लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	(2) शो'बए तख़रीजे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब	(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब	(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब–र–कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब–र–कत,

हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुता-लआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

प्यारे इस्लामी भाइयो !

दुआ, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا से मुनाजात करने, उस की कु़र्बत ह़ासिल करने, उस के फ़ज़्लो इन्आ़म के मुस्तह़िक़ होने और बख़्शिश व मग़्फ़िरत का परवाना ह़ासिल करने का निहायत आसान और मुजर्रब ज़रीआ़ है। इसी त़रह़ दुआ़ प्यारे मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मु–तवारिस सुन्नत, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا के प्यारे बन्दों की मु–तवातिर आ़दत, दर ह़क़ीक़त इ़बादत बल्कि मग़्ज़े इ़बादत, और गुनहगार बन्दों के ह़क़ में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا की त़रफ़ से एक बहुत बड़ी ने'मत व सआ़दत है।

दुआ़ की अहम्मिय्यत और वुक़्अ़त का अन्दाज़ा खु़द कु़रआने पाक में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا के इर्शाद :

﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ﴾ (1)

और ﴿اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ﴾ (2) फ़रमाने, और आ़–लमीन पर निहायत ही रऊफ़ो रह़ीम रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) "मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं अ़न्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।" (پ۲٤، المؤمن: ٦٠) यहां इ़बादत से मुराद दुआ़ है। ("फ़ज़ाइले दुआ़", स. 48)

(2) "मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब वोह मुझे पुकारे।" (پ۲، البقرة: ۱۸٦) ("फ़ज़ाइले दुआ़", स. 48)

के पैदा होते ही अपनी उम्मत के ह़क़ में ((ربِّ هب لي اُمّتي))[1] फ़रमाने, रोज़े मह़शर भी ((أنا لها))[2] पुकारने फिर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में सर ब सुजूद रह कर उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमा कर बख़्शवाने और अह़ादीसे मुबा-रका में बार बार तरग़ीब दिलाने और न मांगने की सूरत में रब्बे जलील का निहायत सख़्त हुक्म : ((من لا يدعوني أغضب عليه))[3] सुनाने से बख़ूबी लगाया जा सकता है ।

दुआ़ की अहम्मिय्यत बयान करते हुए इसी किताब की फ़स्ले अव्वल में रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं :

"**ऐ अ़ज़ीज़ !** दुआ़ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है कि परवर्द गार تَقَدَّسَ وَتَعَالٰى ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई और उन को ता'लीम की, ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं, और दफ़्ए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं ।"

चुनान्चे दुआ़ के इस क़दर मुफ़ीद और नफ़्अ़ बख़्श होने के बा वुजूद इस से इस्तिफ़ादा इसी सूरत में मुम्किन है जब कि इस के शराइत़ व आदाब भी मल्ह़ूज़े ख़ातिर रहें वरना ऐन मुम्किन है कि दुआ़ करना फ़ाएदा मन्द न हो ।

---

1 "ख़ुदाया मेरी उम्मत को मेरे वासिते़ बख़्श दे ।"

("الكلام الأوضح في تفسير سورة الم نشرح"موسوم به" انوار جمال مصطفى "، ص١٠٤، شبير بدادرز)

2 मैं इस काम के लिये हूं या'नी तुम्हारी शफ़ाअ़त मेरे ज़िम्मे है ।

"صحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب كلام الرب عزوجل... إلخ، الحديث: ٧٥١٠، ج٤، ص٥٧٧.

3 या'नी "जो मुझ से दुआ़ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा ।"

("كنز العمال"، الحديث: ٣١٢٤، الجزء الثاني، ج١، ص٢٩)

इसी किताब की फ़स्ले दुवुम में दुआ के शराइत़ व आदाब का मुफ़स्सल बयान मौजूद है, यहां मौक़अ़ की मुना–सबत से सूरए मुअमिन की आयते करीमा नम्बर 60 के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल, बदरुल अमासिल सय्यिद मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी की बयान कर्दा तफ़्सीर से एक निहायत जामेअ़ इक़्तिबास मुला–ह़ज़ा फ़रमाएं :

"अल्लाह तआ़ला बन्दों की दुआ़एं अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमाता है और इन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : एक इख़्लास दुआ़ में, दूसरे येह कि क़ल्ब ग़ैर की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो, तीसरे येह कि वोह दुआ़ किसी अम्रे मम्नूअ़ पर मुश्तमिल न हो, चौथे येह कि अल्लाह तआ़ला की रह़मत पर यक़ीन रखता हो, पांचवीं येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ़ मांगी क़बूल न हुई जब इन शर्तों से दुआ़ की जाती है क़बूल होती है ह़दीस शरीफ़ में है कि दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल होती है या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या उस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है।"

("ख़ज़ाइनुल इरफ़ान", स. 754, मत़्बूआ़ मर्कज़े अहले सुन्नत ब–रकाते रज़ा, हिन्द)

मुख़्तसर येह कि ज़ेरे नज़र किताब दुआ़ से मु–तअ़ल्लिक़ जुम्ला अह़काम की जामेअ़ होने के साथ साथ कई क़ुरआनी आयात की तफ़्सीर, अह़ादीस की तशरीह़, इ़ल्मे कलाम से मु–तअ़ल्लिक़ चन्द निहायत अहम अ़क़ाइद की तह़क़ीक़, बा'ज़ तह़क़ीक़ त़लब फ़िक़्ही मसाइल की तफ़्सील, और बा'ज़ नादिर व नायाब अहम इफ़ादों और वज़ाह़तों के साथ एक ज़बर दस्त इ़ल्मी शाहकार है।

चुनान्चे इस जलीलुल क़द्र इ़ल्मी तह़क़ीक़ी और दुआ़ के मौज़ूअ़ पर ला जवाब किताब की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस

"अल मदीनतुल इल्मिय्या" के शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عليه के इन म-दनी उ-लमाए किराम : मुहम्मद यूनुस अ़ली अ़त्तारी म-दनी, मुहम्मद काशिफ़ सलीम अ़त्तारी म-दनी, सय्यिद अ़क़ील अह़मद अ़त्तारी म-दनी, ह़ामिद अ़ली अ़त्तारी, क़ारी इस्माईल अ़त्तारी म-दनी, मुह़म्मद गुल फ़राज़ अ़त्तारी म-दनी سَلَّمَهُمُ اللهُ تعالٰى ने दोबारा त़ब्अ़ होने से पहले पिछली त़बाअ़त को काफ़ी ह़द तक बर क़रार रखते हुए अ़वाम इस्लामी भाइयों की आसानी के पेशे नज़र मज़ीद ह़वाशी, तस्हीलात, और अह़ादीसे मुबा-रका, फ़िक़्ही जुज़्इय्यात, और दीगर दूसरी इ़बारात की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज के साथ इस किताब को अज़ सरे नौ मुरत्तब किया, लिहाज़ा मुसल्सल मेह़नत और जां फ़िशानी के साथ इस काम को मुकम्मल करने पर येह म-दनी उ़-लमाए किराम निहायत दादो तह़सीन के मुस्तह़िक़ हैं।

ज़ैल में दी गई तफ़्सील मुला-ह़ज़ा फ़रमाने के बा'द कुछ ह़द तक इन उ़-लमाए किराम की मेह़नत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, इस किताब की त़बाअ़त से पहले इन उमूर को मल्हूज़ रखा गया :

1. आयात व अह़ादीस और दीगर इ़बारात के ह़वाला जात की मक़्दूर भर तख़्रीज की गई है।

2. मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी और उन की तस्हील का एहतिमाम किया गया है ताकि आ़म क़ारी को भी येह "किताब" पढ़ने में दुश्वारी मह़सूस न हो।

3. मुख़्तसर तस्हीलें मतन ही में ब्रेकेट में कर दी गई हैं, जब कि त़वील तस्हीलों की तरकीब ह़ाशिया में की गई है ताकि रब्ते़ इ़बारत में ख़लल न आए।

4. आयाते कुरआनिया को मुनक़्क़श ब्रेकेट ﴿ ﴾, म-तने अह़ादीस को डबल ब्रेकेट (( )), किताबों के नाम और दीगर अहम इ़बारात को Inverted commas "" से मुमताज़ किया गया है।

5. इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जहां ख़ुद ब्रेकेट में कलाम फ़रमाया है उसे बड़े मोटे फ़ोंट ( ) से मुमताज़ किया गया है।

6. जिन आयाते कुरआनिया का मतन में तरजमा नहीं किया गया था उन का ह़ाशिये में "कन्ज़ुल ईमान" से तरजमा कर दिया गया है।

7. अ़-रबी दुआओं पर मुकम्मल ए'राब का एहतिमाम किया गया है ताकि पढ़ने में ग़-लती न हो।

8. मुश्किल अल्फ़ाज़ पर भी ह़त्तल इम्कान ए'राब की तरकीब की गई है ताकि तलफ़्फ़ुज़ की ग़-लती न हो।

9. किताब को ह़त्तल इम्कान अग़लात़ से पाक करने की ग़रज़ से इस का एक से ज़ाइद नुस्ख़ों से, एक से ज़ाइद मरतबा तक़ाबुल किया गया है।

10. अ़-रबी इ़बारात का ह़ाशिया में तरजमा किया गया है।

11. अ़-रबी और फ़ारसी अश्आ़र का तरजमा भी ह़त्तल इम्कान अश्आ़र की सूरत में किया गया है।

12. नई गुफ़्त-गू नई सत़र में दर्ज की गई है ताकि पढ़ने वालों को ब आसानी मसाइल समझ आ सकें।

13. अ़लामाते तरक़ीम म-सलन : फ़ुल स्टॉप (।), कोमा (,), कालिन (:) वग़ैरा का भी एहतिमाम किया गया है।

14. फ़ेहरिस्त में अहम निकात को जुदा जुदा लिख कर पूरे रिसाले का इज्माली ख़ाका पेश कर दिया गया है।

15. आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त, मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नाम बमअ़ मत़ाबेअ़ ज़िक्र कर दी गई है।

इस "**किताब**" के पेश करने में आप को जो ख़ूबियां दिखाई दें वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे करम, उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के फ़ैज़ से हैं और जो ख़ामियां नज़र आएं उन में यक़ीनन हमारी कोताही है।

क़ारिईन ख़ुसूसन उ़-लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُمْ से गुज़ारिश है कि इस "**किताब**" पर काम के मे'यार को मज़ीद बेहतर बनाने के सिल्सिले में हमें अपनी क़ीमती आराअ से तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं।

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इस "**किताब**" को अ़वाम व ख़वास के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए!

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمْ

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

मुख़्तसर हालात ह़ज़रत मुसन्निफ़ अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّہُ الْمَلِکُ الْمُنْعَام

(अज़ आ़लिमे शरीअ़त, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن)

वोह जनाब फ़ज़ाइल मआब, ताजुल उ़-लमा, रअ-सुल फु-ज़लाअ, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, बक़िय्यतुस्सलफ़, हुज्जतुल ख़लफ़, رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ وَأَرْضَاهُ وَفِيْ أَعْلٰى غُرَفِ الْجِنَانِ بَوَّأَهٗ स-लख़े जुमादिल आख़िरह या ग़ुर्रए रजब(1) 1246 सि.हि. क़ुदसिय्या को रौनक़ अफ़्ज़ाए दारे दुन्या हुए अपने वालिदे माजिद ह़ज़रत मौलाए आ'ज़म, बह़्रे ग़त़म्त़म फ़ज़ाइल पनाह आ़रिफ़ बिल्लाह साह़िबे कमालाते बाहिरा व करामाते ज़ाहिरा ह़ज़रत मौलाना मौलवी मुह़म्मद रज़ा अ़ली ख़ां साह़िब رَوَّحَ اللّٰهُ رُوْحَهٗ وَنَوَّرَ ضَرِيْحَهٗ से इक्तिसाबे उ़लूम फ़रमाया بِحَمْدِ اللّٰه मन्सब शरीफ़ इ़ल्म का पाया ज़ुर्वए उ़ल्या को पहुंचाया

راست میگویم ویزداں نہ پسند وجز راست[1]

कि जो दिक़्क़ते अन्ज़ार व ह़िद्दते अफ़्कार व फ़हमे साइब व राए साक़िब ह़ज़रते ह़क़ جَلَّ وَعَلَا ने इन्हें अ़ता फ़रमाई इन दियार व अम्सार में इस की नज़ीर नज़र न आई फ़िरासते सादिक़ा की येह ह़ालत थी कि जिस मुआ़-मले में जो कुछ फ़रमाया वोही ज़ुहूर में आया, अ़क़्ले मआ़श व मआ़द दोनों का बर वज्हे कमाल इज्तिमाअ़ बहुत कम सुना यहां आंखों देखा इ़लावा बरीं सख़ावत व शुजाअ़त व उ़लुव्वे हिम्मत व करम व मुरुव्वत व स-दक़ाते

---

(1) या'नी जुमादिल आख़िरह की आख़िरी तारीख़ या रजब की चांद रात।

1. सच कहता हूं और अल्लाह तआ़ला सच ही पसन्द फ़रमाता है। 12

ख़ुफ़्या व मुबर्राते जलिय्या व बुलन्दिये इक़्बाल व दबदबा व जलाल व मुवालाते फ़ु-क़रा और अम्रे दीनी में अ़-दमे मुबालात ब अग़्निया, हुक्काम से उ़ज़्लत, रिज़्क़े मौरूस पर क़नाअ़त وغیر ذالک फ़ज़ाइले जलीला व ख़साइले जमीला का ह़ाल वोही कुछ जानता है जिस ने इस जनाब की ब-र-कते सोह़बत से शरफ़ पाया है।

این نہ بحر است کہ در کوزۂ تحریر آید[1]

मगर सब से बढ़ कर येह कि इस ज़ाते गिरामी सिफ़ात को ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सुल्ताने रिसालत عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّحِیَّۃ की ग़ुलामी व ख़िदमत और हुज़ूरे अक़्दस के आ'दा पर ग़लज़त व शिद्दत के लिये बनाया था بِحَمْدِاللہ इन के बाज़ूए हिम्मत व त़न-त़-नए सौलत ने इस शह्र को फ़ितनए मुख़ालिफ़ीन से यक्सर पाक कर दिया कोई इतना न रहा कि सर उठाए या आंख मिलाए यहां तक कि 26 शा'बान 1293 सि. हिजरी को मुना-ज़-रए दीनी का आम ए'लान मुसम्मा बिह बनाम तारीख़ी "इस्लाहे ज़ाते बैन" त़ब्अ़ कराया और सिवा महरे सुकूत या आ़रे फ़िरार व ग़ोग़ाए जुह्हाल व इ़ज्ज़ो इज़्तिरार के कुछ जवाब न पाया, "फ़ितनए शश मिसल" का शो'ला कि मुद्दत से सर ब फ़लक कशीदा था और तमाम अक़्त़ारे हिन्द में अहले इ़ल्म उस के इत़्फ़ा पर अ़रक़ रेज़ व गिर्वीदा, इस जनाब की अदना तवज्जोह में بِحَمْدِاللہ सारे हिन्दूस्तान से ऐसा फ़िरौ हुवा कि जब से कान ठन्डे हैं, अहले फ़ितना का बाज़ार सर्द है ख़ुद इस के नाम से जलते हैं मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की येह ख़िदमत रोज़े अज़ल से इस जनाब के लिये वदीअ़त थी जिस की क़दरे तफ़्सील रिसाला : "تنبیہ الجُھَّال بإلھام الباسط المتعال" में मत़्बूअ़ हुई وَذَالِکَ فَضْلُ اللہِ یُؤْتِیْہِ مَنْ یَّشَاءُ

[1] येह वोह दरिया नहीं जो तह़रीर के कूज़े में आ जाए। 12

तसानीफ़े शरीफ़ा इस जनाब की सब उ़लूमे दीन में हैं नाफ़ेए़ मुस्लिमीन व दाफ़ेए़ मुफ़्सिदीन وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن अज़ां जुम्ला "الكلام الأوضح في تفسير سورة ألم نشرح" कि मुजल्लदे कबीर है उ़लूमे कसीरा पर मुश्तमिल "وسيلة النجاة" जिस का मौज़ूअ़ ज़िक्रे ह़ालात सय्यिदे काएनात है صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم "سرور القلوب في ذكر المحبوب" मुजल्लद वसीत़ कि मत़्बअ़ नवल किशोर में छपी, "جواهر البيان في أسرار الأركان" जिस की ख़ूबी देखने से तअ़ल्लुक़ रखती है।

ذوق ایں می نشناسی بخدا تانہ چشی[1]

फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ने सिर्फ़ इस के ढाई सफ़ह़ों की शर्ह़ में एक रिसाला मुसम्मा बिह "زواهر الجنان من جواهر البيان" मुलक़्क़ब बनाम तारीख़ी "سلطنة المصطفى في ملكوت كُلِّ الورى" तालीफ़ किया, "أصول الرَّشاد لقمع مباني الفساد" जिस में वोह क़वाइदे ईज़ाह़ व इस्बात जिन के बा'द नहीं मगर सुन्नत को क़ुव्वत और बिदअ़ते नज्दिय्या को मौते ह़सरत, "هداية البرية إلى الشريعة الأحمدية" कि दस फ़िर्क़ों का रद है येह किताबें मत़्बअ़ सुब्ह़े सादिक़ सीतापूर में त़ब्अ़ हुई, "إذاقة الأثام لمعاني عمل المولد والقيام" कि अपनी शान में अपना नज़ीर नहीं रखती और اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْعَزِیْز अ़न्क़रीब शाएअ़ होगी[2], "فضل العلم والعلماء" एक मुख़्तसर रिसाला कि बरेली में त़ब्अ़

---

1. इस शराबे त़हूर की लज़्ज़त बख़ुदा चखे बिग़ैर तू नहीं जान सकता। 12
2. पहली बार मत़्बअ़ अहले सुन्नत में त़ब्अ़ हुई और शाएअ़ हो चुकी मुद्दत से एक नुस्ख़ा भी अब बाक़ी न रहा अब اِنْ شَآءَ اللّٰه दोबारा त़ब्अ़ हो कर शाएअ़ होगी। 12

हुवा, "إزالة الأوهام" रद्दे नज्दिय्या, "تزكية الإيقان ردِّ تقوية الإيمان" कि येह अ-श-रए कामिला ज़मानए ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ में तब्यीज़ पा चुका, "الكواكب الزهراء في فضائل العلم وآداب العلماء" जिस की तख़रीजे अह़ादीस में फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ने रिसाला : "النجوم الثواقب في تخريج أحاديث الكواكب" लिखा, "الرواية الروية في الأخلاق النبويّة"، "النقادة النقوية في الخصائص النبويّة"، "لمعة النبراس في آداب الأكل واللباس"، "التمكُّن في تحقيق مسائل التزيُّن"، "أحسن الوعاء لآداب الدعاء"، "خير المخاطبة في المحاسبة والمراقبة"، "هداية المشتاق إلى سير الأنفس والآفاق"، "إرشاد الأحباب إلى آداب الاحتساب"، "أجمل الفكر في مباحث الذكر"، "عين المشاهدة لحسن المجاهدة"، "تشوّق الأداة إلى طريق محبّة اللّٰه"، "نهاية السعادة في تحقيق الهمة والإرادة"، "أقوى الذريعة إلى تحقيق الطريقة والشريعة"، "ترويج الأرواح في تفسير الانشراح" इन पन्दरह रसाइल माबैन व जीज़ व वसीत़ के मुसव्वदात मौजूद हैं जिन की तब्यीज़ की फ़ुरसत ह़ज़रत मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ ने न पाई फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ का क़स्द है कि इन्हें साफ़ कर के एक मुजल्लद में त़ब्अ़ कराए اِنْ شَآءَاللّٰه سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی

که حلوا به تنها نباید خورد[1]

इन के सिवा और तसानीफ़े शरीफ़ा के मुसव्वदे बस्तों में मिलते हैं मगर मुन्तशिर जिन के अज्ज़ा अव्वल, आख़िर या वस्त़ से गुम हैं उन के बारे में ह़सरत व मजबूरी है।

---

1 ह़ल्वा तन्हा नहीं खाना चाहिये। 12

ग़रज़ उ़म्र इस जनाब के तरवीजे दीन व हिदायते मुस्लिमीन व निकाते आ'दा व ह़िमायते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में गुज़री جَزَاهُ اللهُ مِنَ الْإِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِيْنَ خَيْرَ جَزَاءٍ آمين.

पन्जुम जुमादल ऊला 1294 सि.हि. को मारह्रा मुत़ह्हरा में दस्ते ह़क़ परस्त ह़ज़रत आक़ाए ने'मत दरियाए रह़मत, सय्यिदुल वासिलीन, स–नदुल कामिलीन, क़ुत़्बे अवाना व इमामे ज़माना हुज़ूरे पुरनूर **सय्यिदुना व मुर्शिदुना मौलाना व मअ्वाना ज़ुख़्रती लि यौमी व ग़दी** ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद शाह आले रसूल अह़मदी ताजदारे मस्नदे मारह्रा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ وَأَرْضَاهُ وَأَفَاضَ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِهٖ وَنُعْمَاهُ पर श–रफ़े बैअ़त ह़ासिल फ़रमाया हुज़ूर पीरो मुर्शिदे बरह़क़ ने मिसाल ख़िलाफ़त व इजाज़ते जमीअ़ सलासिल व स–नदे ह़दीस अ़त़ा फ़रमाई येह ग़ुलामे नाकारा भी उसी जल्सा में इस जनाब के तुफ़ैल इन ब–रकात से शरफ़ याब हुवा। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

छब्बीस शव्वाल 1295 सि. हिजरी को बा वुजूदे शिद्दते अ़लालत व क़ुव्वते ज़ो'फ़ ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ख़ास त़ौर पर बुलाने से कि ((من رآني في المنام فقد رآني))[1] अ़ज़्मे ज़ियारत व ह़ज मुसम्मम फ़रमाया येह ग़ुलाम और चन्द अस्ह़ाब व ख़ुद्दाम हमराहे रिकाब थे हर चन्द अह़बाब ने अ़र्ज़ की, कि अ़लालत की येह ह़ालत है आयन्दा साल पर मुल्तवी फ़रमाइये, इर्शाद किया : मदीनए त़य्यिबा के क़स्द से क़दम दरवाज़ा से बाहर रख लूं फिर चाहे रूह़ उसी वक़्त परवाज़ कर जाए देखने वाले जानते हैं कि तमाम मशाहिद में तन्दुरुस्तों से किसी बात में कमी न

---

[1] رواه البخاري والترمذي عن أنس رضي الله تعالى عنه. ١٢

"صحيح البخاري"، كتاب التعبير، باب من رأى النبي صلى الله عليه وسلم في المنام، الحديث: ٦٩٩٤، ج٤، ص٤٠٧.

و"سنن الترمذي"، كتاب الرؤيا، باب في قول النبي: ((من رآني... إلخ))، الحديث: ٢٢٨٣، ج٤، ص١٢٢.

फ़रमाई बल्कि वोह मरज़ ही ख़ुद नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के एक आबख़ूरा में दवा अ़ता फ़रमाने से कि [1]((من رآني فقد رأى الحق)) ह़द्दे मन्अ़ पर न रहा, वहां ह़ज़रते अजल्लुल उ़-लमा, अक्मलुल फ़ु-ज़ला, ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अह़मद ज़ैनी दह़लान शैख़ुल ह़रम वग़ैरा उ़-लमाए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से मुकर्रर स-नदे ह़दीस ह़ासिल फ़रमाई ।

स-लख़े ज़िल क़ा'दह रोज़ पंजशम्बा वक़्ते ज़ोहर 1297 सि. हिजरिय्या क़ुदसिय्या को इकावन51 बरस पांच महीने की उ़म्र में ब आ़रिज़ए इस्हाले द-मवी (या'नी ख़ूनी दस्त) शहादत पा कर शबे जुमुआ़ अपने वालिदे माजिद قُدِّسَ سِرُّهٗ के कनार में जगह पाई ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ﴾ रोज़े विसाल नमाज़े सुब्ह़ पढ़ ली थी और हुनूज़ वक़्ते ज़ोहर बाक़ी था कि इन्तिक़ाल फ़रमाया नज़्अ़ में सब ह़ाज़िरीन ने देखा कि आंखें बन्द किये मु-तवातिर सलाम फ़रमाते थे जब चन्द अन्फ़ास बाक़ी रहे हाथों को आ'ज़ाए वुज़ू पर यूं फेरा गोया वुज़ू फ़रमाते हैं यहां तक कि इस्तिन्शाक़ भी फ़रमाया سُبْحٰنَ الله ! वोह अपने त़ौर पर ह़ालते बेहोशी में नमाज़े ज़ोहर भी अदा फ़रमा गए जिस वक़्त रूहे पुर फ़ुतूह़ ने जुदाई फ़रमाई फ़क़ीर सिरहाने ह़ाज़िर था وَاللّٰهُ الْعَظِيْم एक नूरे मलीह़ अ़लानिया नज़र आया कि सीने से उठ कर बर्क़े ताबिन्दा की त़रह़ चेहरे पर चमका और जिस त़रह़ लम्आ़ने ख़ुरशीद आईने में जुम्बिश करता है येह ह़ालत हो कर ग़ाइब हो गया इस के साथ ही रूह़ बदन में न थी, पिछला कलिमा ज़बाने फ़ैज़े तरजुमान से निकला लफ़्ज़े **"अल्लाह"** था व बस और अख़ीर तह़रीर

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب التعبير، باب من رأى النبي صلى الله عليه وسلم في المنام، الحديث: ٦٩٩٤، ج٤، ص٤٠٧.

कि दस्ते मुबारक से हुई "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" थी कि इन्तिक़ाल से दो रोज़ पहले एक काग़ज़ पर लिखी थी बा'दहू फ़क़ीर ने हुज़ूर पीरो मुर्शिदे बरहक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को रुअ-या में देखा कि हज़रते वालिद قُدِّسَ سِرُّہُ الْمَاجِدُ के मरक़द पर तशरीफ़ लाए, गुलाम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर यहां कहां أو لفظاً هذا معناه फ़रमाया : आज से या फ़रमाया : अब से हम यहीं रहा करेंगे, رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی رَحْمَةً وَّاسِعَة

ذهب الذين يعاش فى أكنافهم　　　وبقيت فى ناس كجلد الأجرب

ليهن رعاء الناس وليفرح الجهل　　　بعدك لا يرجو البقا من له عقل

اللّٰهم ارحمهما وأرض عنهما وأكرم نزلهما، وأفض علينا من بركاتهما، آمين، برحمتك يا أرحم الراحمين وصلى اللّٰه تعالٰى على سيدنا ومولانا محمد وآله وصحبه أجمعين . آمين.

मुनाजात

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो	जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो
या इलाही भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को	शादिये दीदारे ह़ुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो
या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख़्त रात	उन के प्यारे मुंह की सुब्ह़े जां फ़िज़ा का साथ हो
या इलाही जब पड़े मह़शर में शोरे दारो गीर	अम्न देने वाले प्यारे पेश्वा का साथ हो
या इलाही जब ज़ुबानें बाहर आएं प्यास से	साह़िबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुरशीदे ह़श्र	सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गर्मिये मह़शर से जब भड़कें बदन	दामने मह़बूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही नामए आ'माल जब खुलने लगें	ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो
या इलाही जब बहें आंखें ह़िसाबे जुर्म में	उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ़ का साथ हो
या इलाही जब ह़िसाबे ख़न्दए बे जा रुलाए	चश्मे गिर्याने शफ़ीए़ मुर्तजा का साथ हो
या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां	उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो
या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़	आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े	रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़िदा का साथ हो
या इलाही जो दुआ़ए नेक मैं तुझ से करूं	क़ुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए

दौलते बेदार इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ السَّمِيْعِ الْقَرِيْبِ الْمَجِيْدِ الْمُجِيْبِ، قَرِيْبٌ رَبُّنَا فَنُنَاجِيْهِ لَا بَعِيْدٌ فَنُنَادِيْهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّجِيِّ النَّجِيْبِ الْمُنَاجِي الْحَبِيْبِ الْبَشِيْرِ النَّذِيْرِ الدَّاعِيْ إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهِ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ وَعَلٰى اٰلِهِ الْكِرَامِ وَصَحْبِهِ الْعِظَامِ الدَّاعِيْنَ رَبَّهُمْ وَالنَّاسُ نِيَامٌ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، إِمَامُ الدُّعَاةِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِيْنَ إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ.(1)

اٰمِيْنَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

---

(1) सब ख़ूबियां अल्लाह तआ़ला को जो सुनने वाला, अपने बन्दों से नज़्दीक, बुज़ुर्गी वाला, अपने बन्दों की दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाने वाला, हमारा परवर्द गार नज़्दीक है कि उस से आहिस्ता कहें न दूर कि उसे पुकारें और दुरूदो सलाम हो उस पर जो नजात दिलाने वाले, उ़म्दा नसब वाले, अपने रब के हु़ज़ूर मुनाजात करने वाले, उस के प्यारे, ख़ुश ख़बरी देने वाले, डर सुनाने वाले, अल्लाह की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाले, चमका देने वाले रोशन आफ़्ताब हैं, और दुरूदो सलाम हो उन की मुअ़ज़्ज़ज़ आल और अ़-ज़मत वाले सह़ाबा पर जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़एं मांगते जब कि लोग ख़्वाबे ग़फ़्लत में होते । और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और उस के रसूल, तमाम दुआ़ करने वालों के इमाम हैं । क़ियामत तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पर और इन की तमाम आल व अस्ह़ाब पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए । آمين يا ربَّ العالمين.

أَمَّا بَعْدُ

येह रिसाला है दुआ़ के आदाब व फ़ज़ाइल और इजाबत के मवानेअ़ व वसाइल[1] और इस के मु-तअ़ल्लिक़ नफ़ीस मसाइल में, मुसम्मा बिह (बनाम) "أحسن الوعاء لآداب الدعاء" तस्नीफ़े लतीफ़ आ'ला ह़ज़रत, दाइये सुन्नत, राइये शरीअ़त, अफ़्ज़लुल मुह़क़्क़िक़ीन, अक्मलुल मुदक़्क़िक़ीन[2], ह़ज़रत मौलाना मौलवी मुह़म्मद नक़ी अ़ली ख़ान साह़िब, मुह़म्मदी, सुन्नी, ह़-नफ़ी, क़ादिरी, ब-रकाती, बरेल्वी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ وَاَرْضَاهُ وَجَعَلَ الْجَنَّةَ مَصِيْرَهُ وَمَثْوَاهُ[3] कि फ़क़ीरे ना सज़ा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अह़मद रज़ा غَفَرَ اللّٰهُ تَعَالٰى لَهٗ وَاَصْلَحَ عَمَلَهٗ[4] ने इस का श-रफ़े ख़िदमत लिया और ख़ास मुसव्वदए ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ से मुबय्यज़ा किया ।[5]

अस्नाए तब्यीज़ में कहीं वज़ाह़ते मुराम, कहीं इज़ाह़ते अवहाम, कहीं मुना-स-बते मक़ाम के लिये फ़क़ीर ने ज़ियादाते कसीरा कीं[6] कि अस्ल रिसाले से न क़दर (या'नी : अहम्मिय्यत में तो नहीं)

---

1. या'नी येह "रिसाला" उन चीज़ों के बयान में है जो दुआ़ की क़बूलिय्यत में रुकावट या दुआ़ की क़बूलिय्यत का सबब बनती हैं ।
2. नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नत की त़रफ़ बुलाने और शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ की ख़िदमत करने वाले, सब से अच्छी तह़क़ीक़ करने वाले, और बेहतरीन बारीक बीन।
3. अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हो और उन्हें हम से राज़ी करे, और जन्नत उन का ठिकाना बनाए।
4. अल्लाह तआ़ला इस की मग़्फ़िरत फ़रमाए और इस के आ'माल को अच्छा करे।
5. या'नी मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के हाथ की लिखी हुई तह़रीर "أحسن الوعاء لآداب الدعاء" को साफ़ सुथरा कर के तरतीब दिया।
6. या'नी : किताब को आख़िरी शक्ल देते वक़्त कहीं मक़्सद की वज़ाह़त, कहीं इश्काल का इज़ाला और कहीं मौक़अ़ मुना-सबत की रिआ़यत करते हुए तफ़्सील भी बयान की।

बल्कि मिक्दार में बढ़ गई तो मुनासिब हुवा कि इन्हें रिसालए मुस्तक़िला क़रार दीजिये और अस्ल के लिये बजाए शर्ह व ज़ैल समझ कर बनाम "ذيل المدّعاء لأحسن الوعاء" मुसम्मा कीजिये ।[1]

अस्ल रिसाला से इन ज़ियादात के इम्तियाज़ का येह त़रीक़ा रखा कि उन के शुरूअ़ में قال الرضاء और आख़िर में इस शक्ल ﴾ का ख़ते हिलाली लिखा।

इस मुबारक रिसाले के मत़ालिबे नफ़ीसा (उ़म्दा अब्ह़ास) का दस[10] फ़स्ल पर इख़्तिताम और आख़िर में एक तज़्यील (ज़मीमा) और एक ख़ातिमा पर इन्तिहाए कलाम।

والحمد للّٰه وليّ الإنعام والصلاة على محمّد واله والسلام.[2]

फ़स्ले अव्वल : फ़ज़ाइले दुआ़ में।

फ़स्ले दुवुम : आदाबे दुआ़ व अस्बाबे इजाबत में।

फ़स्ले सिवुम : अवक़ाते इजाबत में।

फ़स्ले चहारुम : अम्किनए इजाबत में।

फ़स्ले पन्जुम : इस्मे आ'ज़म व कलिमाते इजाबत में।

फ़स्ले शशुम : मवानेए इजाबत में।

---

1. या'नी : इस तफ़्सील और वज़ाह़त के बा वुजूद मेरी येह तह़रीर, वालिदे मोह़तरम के रिसाले के मुक़ाबले में सिर्फ़ मिक्दार में बढ़ी न कि क़दरो मन्ज़िलत में चुनान्चे येह एक मुस्तक़िल रिसाले की सूरत इख़्तियार कर गई, लिहाज़ा अस्ल मतन के लिये बत़ौरे "शर्ह व ह़ाशिया" इस का नाम "ذيل المدعاء لأحسن الوعاء" तज्वीज़ किया।

2. और तमाम ता'रीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिये जो फ़ज़्लो एह़सान वाला, और दुरूदो सलाम हो नबिय्ये रह़मत और उन की आले ज़ीशान पर, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।

फ़स्ले हफ़्तुम : किन किन बातों की दुआ़ न करनी चाहिये।

फ़स्ले हश्तुम : उन लोगों के बयान में जिन लोगों की दुआ़ क़बूल होती है।

फ़स्ले नहुम : उन आ'माले सालिहा में जिन के करने वाले को किसी दुआ़ की हाजत नहीं।

फ़स्ले दहुम : मब्ह़स दुआ़ के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द नफ़ीस सुवाल व जवाब में।

तज़्यील : ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल के हुक्म में।

ख़ातिमा : चन्द तरकीब नमाज़े ह़ाजत में। أفاد قدّس سرّہ

(जिसे मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़ाएदा मन्द होने की वजह से बयान फ़रमाया।)

फ़स्ले अव्वल फ़ज़ाइले दुआ़ में

قال الرضاء : फ़ज़ाइले दुआ़ में अह़ादीस ब कसरत हैं, दस[10] इस फ़स्ल में मज़्कूर होंगी आयन्दा भी ज़िम्ने कलाम में बहुत अह़ादीस आएंगी। ﴿وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ﴾[1]

قال اللّٰه عَزَّوَجَلَّ:

﴿اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾

"मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब वोह मुझे पुकारे।"

(پ٢، البقرة: ١٨٦)

और फ़रमाता है :

﴿اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

"मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा।" (پ٢٤، المؤمن: ٦٠)

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ﴾

"जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं अ़न्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।" (پ٢٤، المؤمن: ٦٠)

यहां इ़बादत से मुराद दुआ़ है।

قال الرضاء : और फ़रमाता है :

﴿فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ﴾

---

1 और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

"तो क्यूं न हुवा जब आई थी उन पर हमारी त़रफ़ से सख़्ती तो गिड़-गिड़ाए होते लेकिन सख़्त हो गए हैं दिल उन के।" (پ۷، الأنعام: ٤٣)

इस आयत से तर्के दुआ पर तहदीदे शदीद निकली।[1]

ह़दीस 1 : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है[2] :

"मैं अपने बन्दे के गुमान के पास हूं।" या'नी वोह जैसा गुमान मुझ से रखता है मैं उस से वैसा ही करता हूं, ((وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِي)) "और मैं उस के साथ हूं जब मुझ से दुआ करे।"

قال الرضاء : येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की।[3]

أقـول : अल्लाह तआला का इ़ल्म व क़ुदरत से साथ होना तो हर शै के लिये है, येह ख़ास मइय्यते करम व रह़मत है, जो दुआ करने वाले को मिलती है। इस से ज़ियादा क्या दौलत व ने'मत होगी

---

1. या'नी इस आयते मुबा-रका में दुआ के छोड़ देने पर शदीद ख़ौफ़ दिलाया जा रहा है।
2. **ह़दीसे क़ुदसी :** هو ما نقل إلينا عن النبي صلّى الله عليه وسلم مع إسناده إيّاه إلى ربّه عزّوجلّ. ("تيسير مصطلح الحديث"، الباب الأول، الفصل الرابع، ص١٢٦)
   या'नी ह़दीसे क़ुदसी वोह ह़दीस है जिस के रावी हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم हों और निस्बत अल्लाह तआला की त़रफ़ हो।
3. "صحيح مسلم"، كتاب الذكر والدعاء... إلخ، باب فضل الذكر والدعاء... إلخ، الحديث: ٢٦٧٥، ص١٤٤٢.

कि बन्दा अपने मौला की मइय्यत से मुशर्रफ़ हो हज़ार ह़ाजत रवाइयां इस पर निसार और लाख मक़्सद व मुराद इस के तसद्दुक़। ﴾[1]

ह़दीस 2 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم :

"अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक कोई चीज़ दुआ़ से बुज़ुर्ग तर नहीं।"[2]

قال الرضاء : इसे तिरमिज़ी व इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ने उन्हीं सह़ाबी (या'नी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) से रिवायत किया। ﴾

ह़दीस 3 : नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने रब तबा-र-क व तआ़ला से नक़्ल फ़रमाते हैं :

"ऐ फ़रज़न्दे आदम ! तू जब तक मुझ से दुआ़ करता और मेरा उम्मीद वार रहेगा, मैं तेरे गुनाह कैसे ही हों मुआ़फ़ फ़रमाता रहूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं।"

قال الرضاء: رواه الترمذي عن أنس بن مالک رضي الله تعالى عنه. ﴾[3]

---

1 या'नी : अल्लाह तआ़ला अपनी सिफ़ते इ़ल्म व क़ुदरत से तो हर चीज़ के साथ है, लेकिन उस का वोह ख़ास क़ुर्ब, जो दुआ़ करने वाले को मिलता है, इतनी बड़ी ने'मत व सआ़दत है कि अगर इस ने'मत पर बन्दे की हज़ारों मक़्बूल दुआ़एं और मुरादें भी क़ुरबान हो जाएं तो कम हैं।

2 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في فضل الدعاء، الحديث: ٣٣٨١، ج٥، ص٢٤٣.

3 इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया। "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في فضل التوبة ... إلخ، الحديث: ٣٥٥١، ج٥، ص٣١٨-٣١٩.

हदीस 4 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم :

"दुआ से आजिज़ न हो कि कोई शख़्स दुआ के साथ हलाक न होगा।"

قال الرضاء: رواه عنه ابن حبّان والحاكم.(1)

हदीस 5 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم :

"दुआ मुसल्मानों का हथियार है और दीन का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर।"

قال الرضاء: رواه الحاكم عن أبي هريرة وكأبي يعلى عن علي رضي الله تعالى عنهما.(2)

हदीस 6 : मन्कूल कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم :

"जो बला उतर चुकी और जो अभी न उतरी, दुआ सब से नफ़्अ देती है, तो दुआ इख़्तियार करो ऐ ख़ुदा के बन्दो !"

قال الرضاء: رواه الترمذي والحاكم عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما.(3)

---

1. इस हदीस को इब्ने हब्बान और हाकिम ने हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٦١، ج٢، ص١٦٤.

2. इस हदीस को हाकिम ने हज़रते अबू हुरैरा और इसी की मिस्ल अबू या'ला ने हज़रते अली رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٥٥، ج٢، ص١٦٢.

3. इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी और हाकिम ने हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، باب في دعاء النبي... إلخ، الحديث: ٣٥٥٩، ج٥، ص٣٢٢.

हदीस 7 : वारिद कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

"बला उतरती है फिर दुआ उस से जा मिलती है तो दोनों कुश्ती लड़ते रहते हैं क़ियामत तक।"

या'नी दुआ उस बला को उतरने नहीं देती।

قال الرضاء: رواه البزّار والطبراني والحاكم عن أمّ المؤمنين رضي الله تعالى عنها. [1]

हदीस 8 : मरवी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

"दुआ इबादत का मग़ज़ है।"

قال الرضاء: رواه الترمذي عن أنس رضي الله تعالى عنه. [2]

हदीस 9 : मज़्कूर कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

"क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारे रिज़्क़ वसीअ कर दे, रात दिन अल्लाह तआला से दुआ मांगते रहो कि दुआ सलाहे मोमिन (या'नी मोमिन का हथियार) है।"

---

1 इस हदीस को बज़्ज़ार, त-बरानी और हाकिम ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٥٦، ج٢، ص١٦٢.

2 इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، باب ما جاء في فضل الدعاء، الحديث: ٣٣٨٢، ج٥، ص٢٤٣.

قال الرضاء: رواه أبو يعلى عن جابر بن عبد الله رضي الله تعالى عنهما.﴾[1]

हदीस 10 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم :

''जो अल्लाह तआला से दुआ न करे, अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब फ़रमाए।''

قال الرضاء: أخرجه أحمد وابن أبي شيبة والبخاري في "الأدب المفرد" والترمذي وابن ماجه والحاكم عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.[2]

और येह मा'ना बा'ज़ अहादीसे क़ुदसी में भी आए।

أخرجه العسكري في "المواعظ" عنه عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم قال: ((قال الله تعالى: من لا يدعوني أغضب عليه)).

या'नी : अल्लाह तआला फ़रमाता है : ''जो मुझ से दुआ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा।''[3] **العِياذ بالله تعالى.﴾**

---

1. इस हदीस को अबू या'ला ने हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया। "مسند أبي يعلى"، الحديث: ١٨٠٦، ج٢، ص٢٠١-٢٠٢.

2. इस हदीस को इमाम अहमद व इब्ने अबी शैबा, और इमाम बुख़ारी ने ''अल अ-दबुल मुफ़रद'' में और इमाम तिरमिज़ी व इब्ने माजह और हाकिम ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٤٩، ج٢، ص١٦٠.

3. "كنز العمال"، الباب الثامن، الفصل الأول، الحديث: ٣١٢٤، الجزء الثاني، ج١، ص٢٩، (بحواله "مواعظ").

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ़ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है कि परवर्द गार تَقَدَّسَ وَتَعَالٰی (पाक और बुलन्दो बाला) ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई और उन को ता'लीम की, ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं, और दफ़्ए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं ।(1)

एक दुआ़ से आदमी को **पांच फ़ाएदे** ह़ासिल होते हैं :

अव्वल : आ़बिदों के गुरौह में दाख़िल होता है कि दुआ़ फ़ी नफ़्सिही (या'नी बज़ाते ख़ुद) इ़बादत बल्कि सर्रे इ़बादत (या'नी इ़बादत का मग़ज़) है ।

दुवुम : वोह इक़रारे इ़ज्ज़ो नियाज़े[1] दाई व ए'तिराफ़ ब क़ुदरत व करमे इलाही पर दलालत करती है ।

सिवुम : इम्तिसाले अम्रे शर-अ़, कि शारेअ़ ने उस पर ताकीद फ़रमाई, न मांगने पर ग़-ज़बे इलाही की वई़द आई ।(2)

---

(1) मुश्किलात को ह़ल करने में दुआ़ से ज़ियादा असर करने वाली और आफ़ात व बलिय्यात को टालने में दुआ़ से ज़ियादा बेहतरीन कोई चीज़ नहीं ।

1. या'नी जो शख़्स दुआ़ करता है वोह अपने इ़ज्ज़ व एह़तियाज का इक़रार और अपने परवर्द गार के करम व क़ुदरत का ए'तिराफ़ करता है । ١٢ منہ

(2) या'नी : दुआ़ मांगना शरीअ़ते मुत़ह्हरा के हुक्म की बजा आ-वरी है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا ने फ़रमाया : ﴿اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ٢٤، المؤمن:٦٠) "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा" और दुआ़ न मांगने वाले के बारे में अ़ज़ाब की वई़द है जैसा कि ह़दीसे पाक में आया : "जो मुझ से दुआ़ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा ।"

चहारुम : इत्तिबाए सुन्नत कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात दुआ मांगते और औरों को भी ताकीद फ़रमाते।[1]

पन्जुम : दफ़्ए बला व हुसूले मुद्दआ (बला टलने और मुराद पूरी होने) कि ब हुक्मे ﴿اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾[2] व ﴿اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾[3]

आदमी अगर बला से पनाह चाहता है ख़ुदाए तआला पनाह देता है और जो वोह किसी बात की तलब करता है अपनी रह़मत से उस को अता फ़रमाता है या आख़िरत में सवाब बख़्शता है।

सरवरे मा'सूम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से रिवायत है :

"दुआ बन्दे की तीन बातों से ख़ाली नहीं होती :

(1) या उस का गुनाह बख़्शा जाता है

(2) या दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है

(3) या उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ की जाती है कि जब बन्दा अपनी उन दुआओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब

---

1 कि दुआ से आफ़ात व बलिय्यात दूर होती हैं और मक़्सूद ह़ासिल होता है।

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।" (پ۲٤، المؤمن:٦٠)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "दुआ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।" (پ۲، البقرة:١٨٦)

(क़बूल) न हुई थीं तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती और सब यहीं के वासिते़ जम्अ़ रहतीं ।"(1)

मगर ऐसे शख़्स को, कि अपनी दुआ़ का क़बूल होना और ब सूरते अ़-दमे हुसूले मुद्दआ़ सवाबे आख़िरत उस के इ़वज़ मिलना चाहता है, मुनासिब कि दुआ़ में इस के आदाब की रिआ़यत करे ।(2) وَاللّٰہُ الْمُوَفِّق. (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है)

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في جامع الدعوات ... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.

2 या'नी जो शख़्स येह चाहता है कि उस की दुआ़ क़बूल हो जाए या इस के इ़वज़ आख़िरत में सवाब का ख़ज़ाना हाथ आए, तो उसे चाहिये कि दुआ़ में आदाबे दुआ़ को मल्हूज़े ख़ाति़र रखे ।

फ़स्ले दुवुम आदाबे दुआ व अस्बाबे इजाबत में

قال الرضاء : आदाबे दुआ जिस क़दर हैं, सब अस्बाबे इजाबत हैं कि इन का इज्तिमाअ़ اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْعَزِيْز मूरिसे इजाबत होता है, बल्कि इन में बा'ज़ ब मन्ज़िलए शर्त़ हैं जैसे : हुज़ूरे क़ल्ब व सलाते अ़लन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और बा'ज़ दीगर मुह़-सनात व मुस्तह़-सनात ।(1)

ثم أقول : यहां कोई अदब ऐसा नहीं जिसे ह़क़ीक़तन शर्त़ कहिये, ब ई मा'ना कि इजाबत उस पर मौक़ूफ़ हो, कि अगर वोह न हो तो इजाबत ज़िन्हार न हो ।(2) अब येह हुज़ूरे क़ल्ब ही है जिस की निस्बत ख़ुद ह़दीस में इर्शाद हुवा :

((واعلموا أنّ الله لا يستجيب دعاءً من قلب غافل لاهٍ))(3)

"ख़बरदार हो ! बेशक अल्लाह तआ़ला दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की ।"

ह़ालां कि बारहा सोते में जो मह़ज़ बिला क़स्द ज़ुबान से निकल

---

(1) जितने भी आदाबे दुआ हैं वोह सब क़बूलिय्यत का सबब हैं अगर दुआ में इन को जम्अ़ कर लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुआ की क़बूलिय्यत का बाइ़स होंगे बल्कि बा'ज़ आदाब ऐसे हैं कि जो दुआ में शर्त़ की हैसिय्यत रखते हैं जैसे : यक्सूई के साथ दुआ करना, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना और दीगर नेक उमूर बजा ला कर दुआ करना ।

(2) बहर ह़ाल यहां शर्त़ अपने ह़क़ीक़ी मा'ना में नहीं है कि अगर वोह न पाई जाए तो दुआ हरगिज़ क़बूल ही न हो ।

(3) "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في جامع الدعوات ... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.

و"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٦٠، ج٢، ص١٦٤.

जाए मक़्बूल हो जाता है व लिहाज़ा ह़दीसे सह़ीह़[1] में इर्शाद हुवा : "जब नींद ग़-लबा करे तो ज़िक्र व नमाज़ मुल्तवी कर दो, मबादा (कहीं ऐसा न हो कि) करना चाहो इस्तिग़्फ़ार और नींद में निकल जाए कोसना।"[2]

तो साबित हुवा कि यहां शर्त़ ब मा'निये ह़क़ीक़ी नहीं, बल्कि येह मक़्सूद कि इन शराइत़ का इज्तिमाअ़ हो तो वोह दुआ़ बर वज्हए कमाल है और इस में तवक़्क़ोए इजाबत को निहायत क़ुव्वत ख़ुसूसन जब कि मुह़-सनात को भी जामेअ़ हो, और अगर शराइत़ से ख़ाली हो तो फ़ी नफ़्सिही वोह रिजाए क़बूल नहीं, ब मह़्ज़ करम व रह़मत या तवाफ़ुक़े साअ़ते इजाबत, क़बूल हो जाना दूसरी बात है[3] येह फ़ाएदा ज़रूर मुला-ह़ज़ा रखिये। अब शुमारे आदाब की त़रफ़ चलिये।

---

1 ह़दीसे सह़ीह़ : ما اتّصل سنده بنقل العدل الضابط عن مثله إلى منتهاه من غير شذوذ ولا علة.
("تيسير مصطلح الحديث"، الباب الأول، الفصل الثاني، ص٣٣)

या'नी : "वोह ह़दीस जिस के तमाम रावी आ़दिल और ताम्मुज़्ज़ब्त़ हों, उस की सनद इब्तिदा से इन्तिहा तक मुत्तसिल हो नीज़ वोह ह़दीस इल्लते ख़फ़िय्या क़ादिह़ा और शज़ूज़ से भी मह़फ़ूज़ हो।"

2 "صحيح البخاري"، كتاب الوضوء، باب الوضوء من النوم ... إلخ، الحديث: ٢١٢، ج١، ص٩٤.

و"سنن الترمذي"، كتاب الصلاة، باب ما جاء في الصلاة عند النعاس، الحديث: ٣٥٥، ج١، ص٣٧٢.

3 बहर ह़ाल येह बात साबित हुई कि यहां शराइत़ अपने ह़क़ीक़ी मा'नों में नहीं कि इन शराइत़ के बिग़ैर दुआ़ क़बूल ही न हो, हां ! इतना ज़रूर है कि अगर येह शराइत़ दुआ़ में जम्अ़ हो जाएं तो दुआ़ कामिल है और इस में क़बूलिय्यत का इम्कान क़वी, बिल ख़ुसूस जब कि वोह दीगर नेक उमूर को भी शामिल हो, इस के बर अ़क्स अगर दुआ़ शराइत़ व आदाब से ख़ाली हो तो उस की क़बूलिय्यत की उम्मीद नहीं, हां अलबत्ता करम व रह़मते इलाही हो जाए या दुआ़ की क़बूलिय्यत की घड़ी हो और दुआ़ क़बूल हो जाए तो और बात है।

आदाबे दुआ कि आयात व अहादीसे सहीहा मोअ-त-बरा व इर्शादाते उ-लमाए किराम से साबित, जिन की रिआयत إِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى ज़रूर बाइसे इजाबत (क़बूलिय्यत का सबब) हो।

قال الرضاء : वोह साठ[60] हैं। इकावन[51] हज़रते मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ज़िक्र फ़रमाए और नव[9] फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰى لَهٗ ने बढ़ाए।﴾

अदब 1 : दिल को हत्तल इम्कान ख़यालाते ग़ैर (दूसरों के ख़यालात) से पाक करे।

قال الرضاء : रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ास महल्ले नज़र (ख़ास नज़रे करम फ़रमाने की जगह) दिल है।

((إنّ اللّٰه لا ينظر إلى صوركم وأموالكم ولكن ينظر إلى قلوبكم وأعمالكم.))[1]﴾

अदब 2, 3, 4 : बदन व लिबास व मकान, पाक व नज़ीफ़ व ताहिर हों।

قال الرضاء : कि अल्लाह तआला नज़ीफ़ है, नज़ाफ़त को दोस्त रखता है।﴾

अदब 5 : दुआ से पहले कोई अ-मले सालेह करे कि ख़ुदाए करीम की रहमत उस की तरफ़ मु-तवज्जेह हो।

قال الرضاء : स-दक़ा, ख़ुसूसन पोशीदा, इस अम्र में अ-सरे तमाम रखता है (या'नी दुआ की क़बूलिय्यत में बहुत मुअस्सिर है)

---

1 "बेशक अल्लाह तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों की तरफ़ नहीं देखता, अलबत्ता वोह तुम्हारे दिलों और आ'माल को देखता है।"

2 "صحيح مسلم"، كتاب البرّ والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم... إلخ، الحديث: ٢٥٦٤، ص١٣٨٧.

(1) ﴿قَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَیْ نَجْوٰكُمْ صَدَقَةً﴾ वुजूब अगर मन्सूख़ है, तो इस्तिहबाब हनूज़ बाक़ी है।﴾(2)

अदब 6 : जिन के हुक़ूक़ इस के ज़िम्मे हों, अदा करे या उन से मुआफ़ करा ले।

قال الرضاء : ख़ल्क़ (या'नी बन्दों) के मुता-लबात गरदन पर ले कर दुआ के लिये हाथ उठाना ऐसा है जैसे कोई शख़्स बादशाह के हुज़ूर भीक मांगने जाए और हालत येह हो कि चार तरफ़ से लोग उसे चिमटे दाद व फ़रियाद का शोर कर रहे हैं, उसे गाली दी, उसे मारा, उस का माल ले लिया, उसे लूटा, ग़ौर करे उस का येह हाल क़ाबिले अता व नवाल है या लाइक़े सज़ा व नकाल, وحسبنا الله ذو الجلال.﴾(3)

अदब 7 : खाने पीने लिबास व कस्ब में हराम से एहतियात करे कि हराम ख़्वार व हराम कार (हराम खाने वाले और हराम काम करने वाले) की दुआ अक्सर रद होती है।

---

❶ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अपनी अर्ज़ से पहले कुछ स-दक़ा दे लो।" (پ۲۸، المجادلة:۱۲)

❷ आयते करीमा में "قَدِّمُوْا" के सीग़ए अम्र के सबब इस आयते करीमा से साबित हुवा कि दुआ से पहले स-दक़ा करना वाजिब है मगर चूंकि इस आयते करीमा से साबित शुदा हुक्म मन्सूख़ हो चुका है चुनान्चे वाजिब तो नहीं अलबत्ता अब भी मुस्तहब ज़रूर है।

("التفسير الكبير"، المجادلة، تحت الآية: ۱۲، الجزء التاسع والعشرون، ج۱۰، ص۴۹۵).

❸ या'नी वोह शख़्स जो बादशाह के हुज़ूर हाज़िर हो कर फ़रियाद कर रहा है और हालत येह है कि उस ने किसी का माल लूटा किसी को गाली दी, आया वोह इन्आम दिये जाने और मेहरबानी किये जाने का मुस्तहिक़ है या सज़ा दिये जाने का! और अल्लाह तआला अ-ज़मत वाला हमें काफ़ी है।

अदब 8 : दुआ से पहले गुज़श्ता गुनाहों से तौबा करे।

قال الرضاء : कि ना फ़रमानी पर क़ाइम रह कर अ़ता मांगना बे ह़याई है।﴾

अदब 9 : वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े कि जालिबे रह़मत है और रह़मत, मूजिबे ने'मत।(1)

---

❶ या'नी अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दुआ़ से पहले इख़्लास के साथ दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़े कि रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ का सबब है, और रह़मत, ने'मते इलाही के हुसूल का बाइ़स है।

बारह वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है :

(1) तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक कि इस दरमियान में सिवा दो रक्अ़त सुन्नते फ़ज्र के कोई नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं।

(2) अपने मज़हब की जमाअ़त के लिये इक़ामत हुई तो इक़ामत से ख़त्मे जमाअ़त तक नफ़्ल व सुन्नत पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, अलबत्ता अगर नमाज़े फ़ज्र क़ाइम हो चुकी और जानता है कि सुन्नत पढ़ेगा जब भी जमाअ़त मिल जाएगी अगर्चे क़ा'दह में शिर्कत होगी, तो हुक्म है कि जमाअ़त से अलग और दूर सुन्नते फ़ज्र पढ़ कर शरीके जमाअ़त हो और जो जानता है कि सुन्नत में मश्ग़ूल होगा तो जमाअ़त जाती रहेगी और सुन्नत के ख़याल से जमाअ़त तर्क की येह ना जाइज़ व गुनाह है और बाक़ी नमाज़ों में अगर्चे जमाअ़त मिलना मा'लूम हो सुन्नतें पढ़ना जाइज़ नहीं।

(3) नमाज़े अ़स्र से आफ़्ताब ज़र्द होने तक नफ़्ल मन्अ़ है, नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ कर के तोड़ दी थी उस की क़ज़ा भी इस वक़्त में मन्अ़ है और पढ़ ली तो ना काफ़ी है, क़ज़ा उस के ज़िम्मे से साक़ित़ न हुई।

(4) ग़ुरूबे आफ़्ताब से फ़र्ज़े मग़रिब तक। मगर इमाम इब्नुल हुमाम ने दो रक्अ़त ख़फ़ीफ़ का इस्तिस्ना फ़रमाया।

(5) जिस वक़्त इमाम अपनी जगह से ख़ुत़बए जुमुआ़ के लिये खड़ा हुवा उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ़ ख़त्म होने तक नमाज़े नफ़्ल मक्रूह है, यहां तक कि जुमुआ़ की सुन्नतें भी। =

अदब 10, 11, 12 : दुआ के वक़्त बा वुज़ू क़िब्ला रू, मुअद्दब (बा अदब) दो ज़ानू बैठे या घुटनों के बल खड़ा हो।

قال الرضاء : या ब निय्यते शुक्रे तौफ़ीफ़े दुआ व इल्तिजाए इलल्लाह, सज्दा करे कि येह सूरत सब से ज़ियादा कुर्बे रब की है, قاله رسول الله صلّى الله عليه وآله وسلّم. (1)

= (6) ऐन ख़ुत़्बे के वक़्त अगर्चे पहला हो या दूसरा और जुमुआ का हो या ख़ुत़्बए ईदैन या कुसूफ़ व इस्तिस्क़ा व ह़ज व निकाह़ का हो हर नमाज़ ह़त्ता कि क़ज़ा भी ना जाइज़ है, मगर साह़िबे तरतीब के लिये ख़ुत़्बए जुमुआ के वक़्त क़ज़ा की इजाज़त है।

(7) नमाज़े ईदैन से पेश्तर नफ़्ल मक्रूह है, ख़्वाह घर में पढ़े या ईदगाह व मस्जिद में।

(8) नमाज़े ईदैन के बा'द नफ़्ल मक्रूह है, जब कि ईदगाह या मस्जिद में पढ़े, घर में पढ़ना मक्रूह नहीं।

(9) अ़-रफ़ात में जो ज़ोहर व अ़स्र मिला कर पढ़ते हैं, उन के दरमियान में और बा'द में भी नफ़्ल व सुन्नत मक्रूह है।

(10) मुज़्दलिफ़ा में जो मग़रिब व इ़शा जम्अ़ किये जाते हैं, फ़क़त़ उन के दरमियान में नफ़्ल व सुन्नत पढ़ना मक्रूह है, बा'द में मक्रूह नहीं।

(11) फ़र्ज़ का वक़्त तंग हो तो हर नमाज़ यहां तक कि सुन्नते फ़ज्र व ज़ोहर मक्रूह है।

(12) जिस बात से दिल बटे और दफ़्अ़ कर सकता हो उसे बे दफ़्अ़ किये हर नमाज़ मक्रूह है म-सलन पाख़ाने या पेशाब या रियाह़ का ग़-लबा हो मगर जब वक़्त जाता हो तो पढ़ ले फिर फेरे। यूहीं खाना सामने आ गया और उस की ख़्वाहिश हो ग़रज़ कोई ऐसा अम्र दरपेश हो जिस से दिल बटे ख़ुशूअ़ में फ़र्क़ आए उन वक़्तों में भी नमाज़ पढ़ना मक्रूह है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द : 1, ह़िस्सए सिवुम, स. 455, 457)

(1) या'नी : अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ व इल्तिजा करने की तौफ़ीक़ मिलने पर, सज्दए शुक्र की निय्यत से सज्दा करे कि बन्दा सज्दे में सब से ज़ियादा अपने रब के क़रीब होता है, जैसा कि रसूलुल्लाह صلّى الله تعالى عليه وسلّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा इस से ज़ियादा कभी अपने रब से क़रीब नहीं होता, तो सज्दे में दुआ ज़ियादा मांगो।"

وقيّدنا بنية الشكر؛ لأنّ السجود بلا سبب حرام عند الشافعيّة وليس بشيء عندنا إنّما هو مباح لا لك ولا عليك كما نصّوا عليه.﴾[1]

अदब 13, 14 : आ'ज़ा को ख़ाशेअ़ और दिल को ह़ाज़िर करे।[2]

ह़दीस में है : "अल्लाह तआ़ला ग़ाफ़िल दिल की दुआ़ नहीं सुनता।"[3]

ऐ अ़ज़ीज़ ! हैफ़ (अफ़्सोस) है कि ज़ुबान से उस की क़ुदरत व करम का इक़रार कीजिये और दिल औरों की अ़-ज़मत और बड़ाई से पुर हो। बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर से शिकायत की, कि हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होती जवाब आया : मैं उन की दुआ़ किस त़रह़ क़बूल करूं कि वोह ज़ुबान से दुआ़ करते हैं और दिल उन के ग़ैरों की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहते हैं।[4]

---

1. हम ने शुक्र की निय्यत के साथ सज्दे को इस लिये ख़ास किया कि बिग़ैर किसी सबब के सज्दा करना शाफ़िइय्यों के नज़्दीक ह़राम और हम ह़-नफ़िय्यों के नज़्दीक मह़ज़ मुबाह़ या'नी जाइज़ है, कि इस के करने या न करने पर न सवाब न अ़ज़ाब जैसा कि उ़-लमाए किराम ने इस पर नुसूस बयान फ़रमाई।
انظر" ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجود التلاوة، ج٢، ص٧٢٠.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر، ج١، ص١٣٦.
2. या'नी : ज़ाहिर बदन से आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार हो और दिल ह़ाज़िर हो।
3. "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في جامع الدعوات... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.
4. "روح البيان"، پ٨، الأعراف، تحت الآية: ٥٦، ج٣، ص١٧٨.
و"الرسالة القشيرية"، باب الدعاء، ص٢٩٩.

ऐ अ़ज़ीज़ ! जब तक तू दिल से अपनी और तमाम ख़ल्क़ की हस्ती, ख़ुदाए तआ़ला की हस्ती में गुम न करे, रह़मते ख़ास्सा कि अज़ल से मुख़्लिसों के लिये मख़्सूस है, तेरी त़रफ़ कब मु-तवज्जेह हो। जो शख़्स जब्बार बादशाह के हुज़ूर अपनी बड़ाई और अ़-ज़मत का दा'वा करे या बादशाह उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो और वोह किसी चूबदार (नोकर) या अहल कार की त़रफ़ नज़र रखे सज़ावारे ज़ज्र है (या'नी मलामत के लाइक़ है), न कि मुस्तह़िक़्क़े इन्आ़म (या'नी इन्आ़म का मुस्तह़िक़)।

एक दिन ह़ज़रत ख़्वाजा सुफ़्यान सौरी قُدِّسَ سِرُّہٗ नमाज़ पढ़ाते थे, जब इस आयत पर पहुंचे ﴿اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ﴾ ''तुझी को हम पूजते हैं और तुझी से हम मदद चाहते हैं'', रोते रोते बेहोश हो गए, जब होश में आए, लोगों ने ह़ाल पूछा फ़रमाया : उस वक़्त मुझे येह ख़याल आया कि अगर ग़ैब से निदा हो : ऐ काज़िब ख़मोश ! क्या हमारी ही सरकार तुझे झूट बोलने के लिये रह गई, रात दिन रिज़्क़ की तलाश में कू ब कू (दर बदर) फिरता है और बीमारी के वक़्त त़बीबों से इल्तिजा करता है और हम से कहता है मैं तुझी को पूजता हूं और तुझी से मदद चाहता हूं, तो मैं इस बात का क्या जवाब दूं ?(1)

ऐ अ़ज़ीज़ ! वहां दिल पर नज़र है न कि ज़ुबान पर

ما زباں را ننگریم وقال را
ما دواں را بنگریم وحال را(2)

---

1 ''روح البیان''، پ ۱، الفاتحۃ، تحت الآیۃ: ۵، ج ۱، ص ۲۰.

2 *ज़बानो क़ाल की जानिब कभी होती नहीं माइल*
मेरी रह़मत दिले ख़स्ता तुम्हारी ही त़रफ़ माइल

चाहिये कि दिल व ज़ुबान को मुवाफ़िक़ और ज़ाहिर व बातिन को मुताबिक़ और जमीअ़ मा सिवाए अल्लाह से रिश्तए उम्मीद क़त्अ़ करे न नफ़्स से काम, न ख़ल्क़ से ग़रज़ रखे, ता शाहिदे मक़्सूद जल्वा गर हो और गौहरे मक़्सद हाथ आए ।(1)

قال الرضاء : नज़र ब ग़ैर, जब बिज़्ज़ात नज़र ब ग़ैर हो नज़र ब ग़ैर है बल्कि ह़क़ीक़तन मा'ना बिज़्ज़ात मक़्सूद व मुराद हों तो क़त्अ़न शिर्क व कुफ़्र ।(2)

मह़बूबाने[1] ख़ुदा से तवस्सुल, नज़र ब ख़ुदा है न कि नज़र ब ग़ैर ।(3) व लिहाज़ा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम ने इस का हुक्म दिया, जिस का ज़िक्र अदब 22 में आता है । इस की नज़ीर तवाज़ोअ़ है (इस की मिसाल बुज़ुर्गों की ता'ज़ीम व तौक़ीर वाला मस्अला है) उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ग़ैरे ख़ुदा के लिये तवाज़ोअ़ ह़राम है ।

---

❶ अपने दिल व ज़ुबान और अपने ज़ाहिर व बातिन को एक सा करे कि जो ज़ुबान से मांगे दिल भी उसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा सब से उम्मीद मुन्क़तेअ़ कर के अपनी उम्मीद गाह सिर्फ़ उसी की ज़ात को बनाए और मुराद बर आने तक अपनी इसी कैफ़िय्यत को बर क़रार रखे ।

❷ ग़ैरे ख़ुदा को मुईन व मददगार मानना इस त़रह़ कि वोही मुईन व मददगार है "नज़र ब ग़ैर" कहलाता है और अगर ह़क़ी-क़तन उसी ग़ैरे ख़ुदा को बिज़्ज़ात (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर) ह़क़ीक़ी मुराद और मक़्सूदे अस्ली समझ कर अपना मुईन व मददगार माने तो येह खुला कुफ़्रो शिर्क है, या यूं समझें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा ग़ैरों से मदद मांगना "नज़र ब ग़ैर" है, चुनान्चे अगर येह अ़क़ीदा रखे कि ग़ैर ही बिज़्ज़ात (या'नी अल्लाह की अ़त़ा के बिग़ैर) अज़ ख़ुद देने वाला है तो येह अ़क़ीदा यक़ीनी त़ौर पर कुफ़्रो शिर्क है । हां अलबत्ता ! अल्लाह के नेक बन्दों से तवस्सुल या'नी उन को अपना वसीला बनाना येह "नज़र ब ग़ैर" है ही नहीं, जिस की तफ़्सील ख़ुद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान फ़रमा रहे हैं ।

1. **फ़ाइदए जलीला :** इस्तिआ़नत बिलग़ैर व तवस्सुल ब मह़बूबान का इम्तियाज़ ।

❸ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को अपनी ह़ाजत रवाई के लिये वसीला बनाना दर ह़क़ीक़त अल्लाह तआ़ला ही से मांगना है न कि किसी और से ।

"फ़तावा हिन्दिय्या" व "मुल्तक़त़" वग़ैरहुमा में है : "اَلتَّوَاضُعُ لِغَيْرِ اللّٰهِ حَرَامٌ".[1] ह़ालां कि मुअ़ज़्ज़मामाने दीन के लिये तवाज़ोअ़ क़त्अ़न मामूर बिही है (या'नी दीनी पेश्वाओं की ता'ज़ीम का हुक्म तो यक़ीनी त़ौर पर दिया गया है) ख़ुद येही उ़-लमा इस का हुक्म देते हैं। ह़दीस में है :

((تــواضــعــوا لــمــن تعلّمون منه وتواضعوا لمن تعلّمونه ولا تكونوا جبابرة العلماء)).[2]

"अपने उस्ताद के लिये तवाज़ोअ़ करो और अपने शागिर्दों के लिये तवाज़ोअ़ करो और सरकश आ़लिम न बनो।"

नीज़ ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : "जो किसी ग़नी के लिये उस के ग़िना के सबब तवाज़ोअ़ करे, "**ذَهَبَ ثُلُثَا دِيْنِهٖ**" उस का दो तिहाई दीन जाता रहे।"[3]

तो वजह वोही है कि माले दुन्या के लिये तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी) रू ब ख़ुदा नहीं येह ह़राम हुई और येही तवाज़ोअ़ **लि ग़ैरिल्लाह** है और इ़ल्मे दीन के लिये तवाज़ोअ़ रू ब ख़ुदा है, इस का हुक्म आया, और येह ऐ़न तवाज़ोअ़ लिल्लाह है। येह नुक्ता हमेशा याद रखने का है कि इसी को भूल कर वहाबिया व मुश्रिकीन इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ में पड़े।[4] ﴿والعياذ بالله ربّ العالمين.﴾

---

1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثامن والعشرون، ج٥، ص٣٦٨.
و"الدر المختار"، كتاب الحظر والإباحة، باب الاستبراء وغيره، ج٩، ص٦٣٢.

2 "فيض القدير"، الحديث: ٣٣٨١، ج٣، ص٣٦٠.
و"شعب الإيمان"، الحديث: ١٧٨٩، ج٢، ص٢٨٧.

3 "شعب الإيمان"، الحديث: ١٠٠٤٣، ج٧، ص٢١٣.

4 (तो वजह वोही है......) से मुराद येह है कि जिस त़रह़ किसी मुअ़ज़्ज़मे दीनी की ता'ज़ीम तवाज़ोअ़ लि ग़ैरिल्लाह नहीं =

अदब 15 : निगाह नीची रखे, वरना مَعَاذَاللّٰه ज़वाले बसर का ख़ौफ़ है (या'नी नज़र कमज़ोर हो जाने का अन्देशा है) ।

قال الرضاء : येह अगर्चे ह़दीस में दुआ़ए नमाज़ के लिये वारिद, मगर उ़-लमा इसे आ़म फ़रमाते हैं ।﴿

= है क्यूं कि ह़दीसे पाक में इस का हुक्म दिया गया है तो येह तवाज़ोअ़ ख़ुदा के लिये हुई इसी त़रह़ अल्लाह के नेक बन्दों से तवस्सुल दर ह़क़ीक़त अल्लाह ही से मांगना है न कि ग़ैरुल्लाह से मांगना क्यूं कि क़ुरआनो ह़दीस में कई जगह इन बुज़ुर्गों से तवस्सुल का हुक्म दिया गया है लिहाज़ा येह हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल हुवा येह नुक्ता हमेशा याद रखने का है कि इस नुक्ते को वहाबियों और मुश्रिकों ने भुला दिया, चुनान्चे नसारा तो इस क़दर बढ़े कि उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शान में इस क़दर ग़ुलू (मुबा-लग़ा) किया कि उन्हें उस ﴿لَمۡ یَلِدۡ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ﴾ की शान वाली पाक ज़ात का बेटा कहने लगे और इधर वहाबियों, देव बन्दियों ने इस क़दर आ़जिज़ व लाचार समझा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ियां कर बैठे ।

करे मुस्त़फ़ा की इहानतें खुले बन्दों उस पे येह जुरअतें
कि मैं क्या नहीं हूं मुह़म्मदी ! अरे हां नहीं, अरे हां नहीं

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 80, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयां रहे
फिर कहे मरदक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 111, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

(मरदक : ज़लील व घटिया आदमी को कहते हैं) ।

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

("अर मुग़ाने मदीना", स. 64, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

अदब 16 : दुआ के लिये अव्वल व आख़िर ह़म्दे इलाही बजा लाए कि अल्लाह तआ़ला से ज़ियादा कोई अपनी ह़म्द को दोस्त रखने वाला नहीं, थोड़ी ह़म्द पर बहुत राज़ी होता और बे शुमार अ़ता फ़रमाता है।

ह़म्द का मुख़्तसर व जामेअ़ कलिमा :

((لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ))(1)

और ((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا تَقُوْلُ وَخَيْرًا مِمَّا نَقُوْلُ))(2) है

قال الرضاء : यूंही ((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا يُوَافِيْ نِعَمَكَ وَيُكَافِئُ مَزِيْدَ كَرَمِكَ))(3) वग़ैरा ज़ालिक कि अह़ादीस में वारिद।

अदब 17 : अव्वल व आख़िर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के आल व अस्ह़ाब पर दुरूद भेजिये कि दुरूद अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मक़्बूल है और परवर्द गारे करीम इस से बरतर कि अव्वल व आख़िर को क़बूल फ़रमाए और वस्त़ (दरमियान) को रद कर दे।

अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ह़दीस में है : "दुआ ज़मीन व आस्मान के दरमियान रोकी जाती है जब तक तू अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न भेजे बुलन्द नहीं होने पाती।"(4)

---

1. या'नी मैं तेरी ह़म्दो सना ऐसी नहीं कर सका जैसी ह़म्दो सना तू ख़ुद अपने लिये करता है।
("صحيح مسلم"، كتاب الصلاة، باب ما يقال في الركوع والسجود، الحديث: ٤٨٦، ص٢٥٢)

2. ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये ह़म्दो सताइश है जैसा कि तू ख़ुद फ़रमाए और इस से बेहतर है जो हम कहें।
("سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء في عقد التسبيح، الحديث: ٣٥٣١، ج٥، ص٣٠٩)

3. ऐ रब हमारे! सारी ख़ूबियां तुझी को कि तेरी ने'मतों के बदले और तेरे मज़ीद इन्आ़मात के मुक़ाबले में हों। ("الترغيب والترهيب"، الحديث: ٢٤٣٦، ج٢، ص٢٨٨، بألفاظ متقاربة)

4. "سنن الترمذي"، كتاب الوتر، باب ما جاء في فضل الصلاة على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم، الحديث: ٤٨٦، ج٢، ص٢٩.

قال الرضاء : बल्कि बैहक़ी व अबुश्शैख़ सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهٗ से रावी हुज़ूर सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ((الدعاء محجوب عن الله حتى يصلّى على محمّد وأهل بيته)).[1]

"दुआ़ अल्लाह तआ़ला से ह़िजाब में है जब तक मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इन के अहले बैत पर दुरूद न भेजी जाए।"

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ़ ताइर है और दुरूद शहपर, ताइरे बे पर क्या उड़ सकता है ![2]

अदब 18 : अब कि मांगने का वक़्त आया, तसव्वुरे अ़-ज़-मतो जलाले इलाही में डूब जाए (या'नी : अल्लाह तआ़ला की अ़-ज़-मतो शान के तसव्वुर में गुम हो जाए)।

قال الرضاء : अगर इस मुबारक तसव्वुर ने वोह ग़-लबा किया कि ज़ुबान बन्द हो गई तो سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह ख़ामोशी हज़ार अ़र्ज़ से ज़ियादा काम देगी वरना इस क़दर तो ज़रूर कि मूरिसे ह़या व अदब व ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ होगा (या'नी येह ज़ुबान का ख़ामोश होना ह़या व अदब और ज़ाहिर व बातिन से उस की बारगाह में ह़ाज़िरी का बाइ़स होगा) कि येही रूहे दुआ़ है दुआ़ बे इस के तने बे जान (बे जान जिस्म) और तने बे जान से उम्मीद जहालत।

---

1. "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ٣٢١٢، ج١، الجزء الثاني، ص٣٥، (بحواله ابوالشيخ). و"شعب الإيمان"، باب في تعظيم النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وإجلاله وتوقيره، الحديث: ١٥٧٦، ج٢، ص٢١٦، بتصرف قليل.

2. परिन्दे के बाज़ू का सब से बड़ा पर कि जिस के बिग़ैर कोई परिन्दा परवाज़ नहीं कर सकता उसे शहपर कहा जाता है। या'नी दुआ़ एक परिन्दा और दुरूदे पाक उस के शहपर की मानिन्द है लिहाज़ा ऐसा परिन्दा जिस का शहपर ही न हो वोह क्या उड़ेगा ऐसे ही वोह दुआ़ जो दुरूदे पाक से ख़ाली हो क्यूंकर मक़्बूल हो सकती है !

अदब 19 : अल्लाह तआला की अज़ीम रह़मतों को, जो बा वुजूदे गुनाह, इस के ह़ाल पर फ़रमाता रहा, याद कर के शरमिन्दा हो।

قال الرضاء : येह शर्म बाइ़से दिल शिकस्तगी होगी और अल्लाह तआला दिले शिकस्ता से बहुत क़रीब है। ह़दीसे क़ुदसी में है : ((أنا عند المنكسرة قلوبُهم لأجلي))[1] और नीज़ तसव्वुरे रह़मत जुरअते अ़र्ज़ पर बाइ़स होगा।

((ومن فتحت له أبواب الدعاء فتحت له أبواب الإجابة))[2].

"जिस के लिये दुआ के दरवाज़े खुलते हैं, इजाबत (क़बूलिय्यत) के दरवाज़े भी खुल जाते हैं।"

अदब 20 : अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ की क़ुदरते कामिला और अपने इ़ज्ज़ो एह़तियाज पर नज़र करे कि मूजिबे इल्ह़ाहो ज़ारी है (या'नी गिर्या व ज़ारी का बाइ़स है)।

अदब 21 : शुरूअ़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उस के मह़बूब नामों से पुकारे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआला ने इस्मे पाक "अर-ह़मुर्राह़िमीन" पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है कि जो शख़्स इसे तीन बार कहता है, फ़िरिश्ता निदा करता है : मांग कि "अर-ह़मुर्राह़िमीन" तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा।"[3]

---

1. या'नी : मैं टूटे दिल वालों के पास हूं।
("فيض القدير"، حرف الهمزة، تحت الحديث: ١٠٥٥، ج١، ص٦٦٣، بألفاظ متقاربة)

2. "المصنف" لابن أبي شيبة، كتاب الدعاء، في فضل الدعاء، الحديث: ٢، ج٧، ص٢٣، بألفاظ متقاربة.

3. "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير...إلخ، باب إنّ للّٰه ملكاً موكلاً ... إلخ، الحديث: ٢٠٤٠، ج٢، ص٢٣٩.

और पांच बार "या रब्बना" कहना भी निहायत मुअस्सिरे इजाबत है (या'नी दुआ की क़बूलिय्यत में बहुत असर रखता है) । कुरआने मजीद में इस लफ़्ज़े मुबारक को पांच बार ज़िक्र कर के इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ﴿فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ﴾ "तो उन की दुआ क़बूल की उन के रब ने ।" (پ٤، ال عمران: ١٩٥)

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्कूल है : "जो शख़्स इ़ज्ज़ के वक़्त पांच बार "या रब्बना" कहे, अल्लाह तआला उसे उस चीज़ से जिस का ख़ौफ़ रखता है, अमान बख़्शे और जो चीज़ चाहता है, अ़ता फ़रमाए फिर येह आयतें तिलावत कीं : ﴿رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا﴾ إلى قوله تعالى: ﴿اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ﴾ (پ٤، ال عمران: ١٩١-١٩٤)[1] और अस्माए हुस्ना का फ़ज़्ल खुद पोशीदा नहीं ।" (या'नी अल्लाह तआला के मुबारक नामों की फ़ज़ीलत और इन की ब-र-कत तो ज़ाहिर ही है) ।

अदब 22 : अल्लाह तआला के अस्मा व सिफ़ात और उस की किताबों खुसूसन कुरआन और मलाएका व अम्बियाए किराम बिल खुसूस हुज़ूर सय्यिदुल अनाम عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ और उस के औलिया व अस्फ़िया बित्तख़्सीस (खुसूसन) हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُم से तवस्सुल और इन्हें अपने इन्जाहे ह़ाजात का ज़रीआ करे (या'नी : इन तमाम को अपनी ह़ाजात के पूरा होने के लिये वसीला बनाए) कि मह़बूबाने खुदा के वसीले से दुआ क़बूल होती है ।

قال الرضاء: قال الله تعالى: ﴿وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ﴾

"अल्लाह तआला की त़रफ़ वसीला ढूंडो ।" (پ٦، المائدة: ٣٥)

---

1 "روح المعاني"، پ ٣، آل عمران، تحت الآية: ١٩٤، ج٢، الجزء٤، ص٥١٢.
و"الجامع لأحكام القرآن" للقرطبي، ج٢، الجزء الرابع، ٢٤٤.

सहीह़ ह़दीस में नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाया कि यूं दुआ की जाए :

((اَللّٰهُـمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُکَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْکَ بِنَبِيِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِکَ إِلٰى رَبِّيْ فِي حَاجَتِيْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى لِيْ)).[1]

"इलाही मैं तुझ से मांगता और तेरी त़रफ़ तवज्जोह करता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वसीले से जो मेहरबानी के नबी हैं, या रसूलल्लाह ! मैं ने हुज़ूर के वसीले से अपने रब की त़रफ़ तवज्जोह की अपनी इस ह़ाजत में कि मेरे लिये पूरी हो ।"

"सहीह़ बुख़ारी" में है, अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने दुआ की : **إنّا نتوسّل إليک بعمّ نبينا صلى الله عليه وسلم فاسقنا.**[2]

"इलाही ! हम तेरी त़रफ़ तवस्सुल करते हैं, अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कि बाराने रह़मत भेज ।"

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٥٨٩، ج٥، ص٣٣٦.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١٧٢٤٠، ج٦، ص١٠٧.

नोट : ह़दीसे पाक में "**या मुह़म्मद**" है । मगर इस की जगह "**या रसूलल्लाह**" कहना चाहिये कि सहीह़ मज़हब में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करना ना जाइज़ है । उ़-लमा फ़रमाते हैं : अगर रिवायत में वारिद हो जब भी तब्दील कर लें । येह मस्अला मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के रिसाला : "**تجلي اليقين بأنّ نبينا سيد المرسلين**" में मुफ़स्सल व मुशर्रह़ मज़्कूर है ।

(انظر للتفصيل "الفتاوى الرضوية"، ج٣٠، ص١٥٧.)

2 "صحيح البخاري"، كتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله تعالى عليه وسلم، باب ذكر لعباس بن عبد المطلب رضي الله عنه، الحديث: ٣٧١٠، ج٢، ص٥٣٧.

हुज़ूरे गौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं :

"من استغاث بي في كربة كشفت عنه ومن نادى باسمي في شدة فرجت عنه ومن توسّل بي في حاجة قضيت له."(1)

"जो किसी तक्लीफ़ में मुझ से मदद मांगे वोह तक्लीफ़ दूर हो और जो किसी सख़्ती में मेरा नाम ले कर पुकारे वोह सख़्ती दफ़्अ़ हो और जो किसी ह़ाजत में मुझे वसीला करे, वोह ह़ाजत रवा हो।"

और फ़रमाते है : "إذا سألتم الله فاسئلوا بي."(2)

"जब तुम अल्लाह तआ़ला से सुवाल करो तो मेरे वसीले से मांगो, तुम्हारी मुराद पूरी होगी।"

येह मज़ामीन ब असानीदे सह़ीह़ा (या'नी सह़ीह़ स-नदों से) इस जनाब से अइम्मए दीन व अकाबिरे मोअ़-त-मदीन ने रिवायत फ़रमाए।

अदब 23 : अपनी उ़म्र में जो नेक अ़मल ख़ालिसन लि वज्हिल्लाह हुवा हो, उस से तवस्सुल करे कि जालिबे रह़मत है (या'नी रह़मते इलाही का सबब है)।

قال الرضاء : क़िस्सए अस्ह़ाबिर्रक़ीम इस पर दलीले काफ़ी।(3)

---

1 "بهجة الأسرار"، ذكر فضل أصحابه وبشراهم، ص١٩٧.

2 "بهجة الأسرار"، ذكر كلمات أخبربها عن نفسه محدثا... إلخ، ص٥٤.

3 "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" वग़ैरा में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुना कि फ़रमाते हैं : "अगले ज़माने के तीन शख़्स कहीं जा रहे थे सोने के वक़्त एक ग़ार के पास पहुंचे उस में येह तीनों शख़्स दाख़िल हो गए पहाड़ की एक चट्टान ऊपर से गिरी जिस ने ग़ार को बन्द कर दिया उन्हों ने कहा : अब =

= इस से नजात की कोई सूरत नहीं बजुज़ इस के कि तुम ने जो कुछ नेक काम किया हो उस के ज़रीए से अल्लाह से दुआ करो, एक ने कहा : ऐ अल्लाह ! मेरे वालिदैन बहुत बूढ़े थे जब मैं जंगल से बकरियां चरा कर लाता तो दूध दोह कर सब से पहले उन को पिलाता उस से पहले न अपने बाल बच्चों को पिलाता न लौंडी गुलाम को देता एक दिन मैं जंगल में दूर चला गया रात में जानवरों को ले कर ऐसे वक़्त आया कि वालिदैन सो गए थे मैं दूध ले कर उन के पास पहुंचा तो वोह सोए हुए थे बच्चे भूक से चिल्ला रहे थे मगर मैं ने वालिदैन से पहले बच्चों को पिलाना पसन्द न किया और येह भी पसन्द न किया कि उन्हें सोते से जगा दूं दूध का पियाला हाथ पर रखे हुए उन के जागने के इन्तिज़ार में रहा यहां तक कि सुब्ह़ चमक गई और वोह जागे और दूध पिया, ऐ अल्लाह ! अगर मैं ने येह काम तेरी ख़ुशनूदी के लिये किया है तो इस चट्टान को कुछ हटा दे उस का कहना था कि चट्टान कुछ सरक गई मगर इतनी नहीं हटी कि येह लोग ग़ार से निकल सकें, दूसरे ने कहा : ऐ अल्लाह ! मेरे चचा की एक लड़की थी जिस को मैं बहुत मह़बूब रखता था मैं ने उस के साथ बुरे काम का इरादा किया उस ने इन्कार कर दिया वोह क़ह़ूत़ की मुसीबत में मुब्तला हुई मेरे पास कुछ मांगने को आई मैं ने उसे एक सो बीस[120] अशरफ़ियां दीं कि मेरे साथ ख़ल्वत करे वोह राज़ी हो गई जब मुझे उस पर क़ाबू मिला तो बोली कि ना जाइज़ त़ौर पर इस मोहर का तोड़ना तेरे लिये ह़लाल नहीं करती। उस काम को गुनाह समझ कर मैं हट गया और अशरफ़ियां जो दे चुका था वोह भी छोड़ दीं, इलाही ! अगर येह काम तेरी रिज़ा जूई के लिये मैं ने किया है तो इस को हटा दे उस के कहते ही चट्टान कुछ सरक गई मगर इतनी नहीं हटी कि निकल सकें, तीसरे ने कहा : ऐ अल्लाह ! मैं ने चन्द शख़्सों को मज़दूरी पर रखा था उन सब को मज़दूरियां दे दीं एक शख़्स अपनी मज़दूरी छोड़ कर चला गया उस की मज़दूरी को मैं ने बढ़ाया या'नी उस से तिजारत वग़ैरा कोई ऐसा काम किया जिस से उस में इज़ाफ़ा हुवा उस को बढ़ा कर मैं ने बहुत कुछ कर लिया वोह एक ज़माने के बा'द आया और कहने लगा : ऐ ख़ुदा के बन्दे ! मेरी मज़दूरी मुझे दे दे, मैं ने कहा : येह जो कुछ ऊंट, गाय, बैल, बकरियां गुलाम तू देख रहा है येह सब तेरी ही मज़दूरी का है सब ले ले, बोला : ऐ बन्दए ख़ुदा ! मुझ से मज़ाक़ न कर मैं ने कहा : मज़ाक़ =

अदब 24 : ब कमाले अदब हाथ आस्मान[1] की त़रफ़ उठा कर सीने या शानों या चेहरे के मुक़ाबिल लाए या पूरे उठाए यहां तक कि बग़ल की सपेदी ज़ाहिर हो, येह इब्तिहाल है (या'नी गिर्या व ज़ारी के साथ दुआ़ करना है) ।

अदब 25 : हथेलियां फैली रखे ।

قال الرضاء : या'नी उन में ख़म न हो कि आस्मान क़िब्लए दुआ़ है, सारी कफ़े दस्त

= नहीं करता हूं येह सब तेरा ही है ले जा वोह सब कुछ ले कर चला गया, इलाही ! अगर येह काम मैं ने तेरी रिज़ा के लिये किया है तो इसे हटा दे वोह पथ्थर हट गया येह तीनों उस ग़ार से निकल कर चले गए ।

("صحيح البخاري"، كتاب الإجارة، باب من استأجر أجيرا... إلخ، الحديث: ٢٢٧٢، ج٢ ،ص٦٧.)

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने भी मज़्कूरा क़िस्से को मुख़्तसरन "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 23 के सफ़्ह़ा 539, 540 पर बयान फ़रमाया है ।

1. बा'ज़ अहादीस से मुस्तफ़ाद कि त़-लबे ने'मत की दुआ़ हो तो कफ़े दस्त (हथेली) सूए आस्मान करे और रद्दे बला की तो पुश्ते दस्त । मगर "अबू दावूद" वग़ैरा की ह़दीस में है कि पुश्ते दस्त से दुआ़ न करो और बा'ज़ अवक़ात दुआ़ के वक़्त सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से इशारा भी आया और इमाम मुह़म्मद बिन ह़-नफ़िय्या से मन्क़ूल कि दुआ़ चार क़िस्म है :

अव्वल : दुआ़ए रग़बत (या'नी किसी चीज़ के हुसूल की दुआ़), इस में बत़्ने कफ़ (हथेली का पेट) जानिबे आस्मान हो ।

दुवुम : दुआ़ए रहबत (या'नी किसी चीज़ से बचने की दुआ़), इस में पुश्ते दस्त अपने चेहरे की त़रफ़ हो ।

सिवुम : दुआ़ए तज़र्रोअ़ (या'नी गिड़-गिड़ाने वाली दुआ़), इस में **ख़िन्सर** व **बिन्सर** (छुंगलिया और इस के बराबर वाली उंगली) बन्द और वुस्त़ा व इब्हाम (दरमियानी उंगली और अंगूठा) का ह़ल्क़ा कर के **मुसब्बह़ा** (शहादत की उंगली) से इशारा करे ।

चहारुम : दुआ़ए ख़ुफ़्या कि बन्दा सिर्फ़ दिल से अ़र्ज़ करे, ज़बान न हिलाए ।

("البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، ج٢، ص٧٧). ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

मुवा–ज–हए आस्मान रहे ।[1]﴾

अदब 26 : हाथ खुले रखे, कपड़े वग़ैरा से पोशीदा न हों।

قال الرضاء : हाथ उठाना और करीम के हुज़ूर फैलाना, इज़्हारे इ़ज्ज़ व फ़क़्र के लिये मश्रूअ़ हुवा (आ़जिज़ी और फ़क़ीरी ज़ाहिर करने के लिये जाइज़ हुवा), तो इन का छुपाना इस के मुख़िल (ख़लल का बाइ़स) होगा। जिस त़रह़ इ़मामे के पेच पर सज्दा मक्रूह हुवा कि अस्ल मक़्सूदे सुजूद या'नी इज़्हारे तज़ल्लुल (इ़ज्ज़ो इन्किसारी) में ख़लल अन्दाज़ है। नमाज़ में मुंह छुपाना मक्रूह हुवा कि सूरते तवज्जोह के ख़िलाफ़ है अगर्चे रब عَزَّوَجَلَّ से कुछ निहां (पोशीदा) नहीं।

هذا ما ظهر لي، والله تعالٰى أعلم.[2]﴾

अदब 27 : दुआ़ नर्म व पस्त आवाज़ से हो कि अल्लाह तआ़ला समीअ़ व क़रीब है जिस त़रह़ चिल्लाने से सुनता है इसी त़रह़ आहिस्ता।

قال الرضاء : बल्कि वोह उसे भी सुनता है जो हनूज़ (अभी) ज़ुबान तक अस्लन न आया या'नी दिलों का इरादा, निय्यत, ख़त़रा कि जैसे उस का इ़ल्म तमाम मौजूदात व मा'दूमात को मुह़ीत़ (घेरे हुए) है यूंही उस के सम्अ़ व बसर जमीअ़ मौजूदात को आ़म व शामिल हैं अपनी ज़ात व सिफ़ात और दिलों के इरादात व ख़त़रात और तमाम आ'यान व आ'राज़े काएनात हर शै को देखता भी है और सुनता भी न उस का देखना रंग व ज़ौ (रंग व रोशनी) से ख़ास न उस का सुनना आवाज़ के साथ

---

1 या'नी उंग्लियों समेत पूरी हथेली आस्मान की त़रफ़ रहे।

2 येह वोह गौहर पारे हैं जो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ज़ाहिर फ़रमाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला है।

मख़्सूस (किसी आवाज़ का मोह़ताज) ﴿اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ﴾.[1] ﴿

﴿اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً﴾ (پ۸، الأعراف: ۵۵).

"अल्लाह तआ़ला से आ़जिज़ी और आहिस्तगी के साथ दुआ़ मांगो।"

﴿اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ﴾ (پ۸، الأعراف: ۵۵).

"वोह ह़द से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता।"

सय्यिदुना इमाम ह़-सने मुज्तबा इब्ने मौला मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "आहिस्ता दुआ़ ज़ाहिर दुआ़ से सत्तर70 मर्तबा (या'नी द-रजे) बेहतर है।"[2]

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم अक्सर दुआ़ करते और उन की आवाज़ अच्छी न सुनी जाती, एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : **يا رسول الله أقريب ربّنا فنناجيه أم بعيد فنناديه؟** "या रसूलल्लाह ! हमारा रब नज़्दीक है कि उस से आहिस्ता कहें या दूर कि उस को पुकारें ?" जवाब आया : ﴿اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ﴾ "जब मेरे बन्दे तुझ से मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं", ﴿اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ "दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जिस वक़्त मुझ से दुआ़ मांगे।"[3] (پ۲، البقرة: ۱۸۶)

अदब 28 : दुआ़ मांगने में ह़ाजते आख़िरत को मुक़द्दम रखे कि अम्रे अहम की तक़्दीम ज़रूरी है और आयए करीमा :

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह सब कुछ देखता है।" (پ۲۹، الملك: ۱۹)

2. "المصنف" لعبد الرزاق، كتاب الجامع، باب الدعاء، الحديث: ۱۹۸۱۵، ج۱۰، ص۵۲.

3. "الدر المنثور"، تحت الآية: ﴿وإذا سألك... إلخ﴾، ج۱، ص۴۶۹.

﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً﴾[1] इस के मुनाफ़ी नहीं (मुख़ालिफ़ नहीं) कि ह़-स-नए दुन्या से वोह नेकियां और ख़ूबियां जो आख़िरत में काम आएं, मुराद ले सकते हैं इ़लावा बरीं (बा वुजूदे कि) तक़्दीमे दुन्या ब ए'तिबार तक़द्दुमे ज़मानी, मुनाफ़ी इस ए'तिबार के नहीं।[2]

قال الرضاء : या'नी "فِي الدُّنيَا حَسَنَةً" फ़रमाया है न कि "حَسَنَةَ الدُّنيَا" और ह़-सनाते दीन, कि मूरिसे ह़-स-नए आख़िरत हैं सब दुन्या ही में मिलते हैं तो कलिमए जामिआ़ है न कि सिर्फ़ ह़-सनाते दुन्यविय्या से ख़ास।﴿[3]

अदब 29 : दुआ़ में निहायत आ़जिज़ी व इल्ह़ाह़ करे (या'नी गिर्या व ज़ारी करे)।

---

1. तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे।" (پ۲، البقرة: ۲۰۱)

2. जब दुआ़ मांगे आख़िरत की ह़ाजात को पहले ज़िक्र करे क्यूं कि अहम काम पहले ज़िक्र किया जाता है आयए करीमा में : ﴿فِي الدُّنيَا حَسَنَةً﴾ के अल्फ़ाज़ पहले आए हैं येह हमारी बात के मुख़ालिफ़ नहीं क्यूं कि "ह़-स-नए दुन्या" से वोह नेकियां मुराद ले सकते हैं जो आख़िरत में फ़ाएदा दें, मज़ीद येह कि ज़माने के लिह़ाज़ से दुन्या का पहले ज़िक्र करना हमारे क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं। इस बात की तफ़्सील ख़ुद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **قال الرضاء** कह कर फ़रमा रहे हैं।

3. या'नी नेकियां, आख़िरत की भलाइयों का सबब हैं और येह दुन्या ही में मिलती हैं लिहाज़ा येह कलिमा "فِي الدُّنيَا حَسَنَةً" दुन्या व आख़िरत की भलाइयों को शामिल हुवा न कि सिर्फ़ दुन्यवी भलाइयों को।

زور را بگزار وزاری را بگیر
رحم سوئے زار آید اے فقیر[1]

जिस क़दर इधर से आ़जिज़ी ज़ियादा उधर से लुत़्फ़ो करम ज़ाइद

بپائے بوس تو دست کسے رسد کہ مدام
چو آستانہ بدیں در ہمیشہ سر دارد[2]

مـن كـان أضـعـف   كان الربّ به ألطف[3]

ख़ाक से ज़ियादा कोई बा नियाज़ न था इसी वासित़े आफ़्ताबे इनायत, अ़र्शो कुर्सी और फ़लक व मलक (आस्मानों और फ़िरिश्तों) को छोड़ कर इस पर चमका।

قـال الـرضـاء : ह़दीस में है कि अल्लाह तआला दुआ में इल्ह़ाह़ करने (गिड़-गिड़ाने) वालों को दोस्त रखता है।[4]

رواه الطبـراني في "الـدعـاء" وابن عدي في "الكامل" والإمام الترمذي في "النوادر" والبيهقي في "شعب الإيمان" والقضاعي وأبو الشيخ

---

❶ *तू छोड़ दे तकब्बुर हो भाई मेरे आ़जिज़*
छाई है उस पे रह़मत करता है जो तवाज़ोअ़

❷ तेरी रह़मत किसे नहीं पहुंचती जो तेरे दर को थाम लेता है हमेशा सरदार रहता है।

❸ या'नी जो ज़ियादा नियाज़ मन्द व ख़स्ता ह़ाल हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ज़ियादा लुत़्फ़ो करम फ़रमाता है।

❹ "شعب الإيمان"، باب ما جاء في الرجاء من الله تعالى، الحديث: ١١٠٨، ج٢، ص٣٨.
و"كتاب الدعاء" للطبراني، باب ما جاء في فصل لزوم الدعاء، الحديث: ٢٠، ص٢٨.

﴿عن عائشة رضي الله تعالى عنها.﴾[1]

अदब 30 : दुआ में तकरार चाहिये।

قـال الـرضـاء : तकरारे सुवाल (या'नी बार बार मांगना) सिदक़े त़लब (सच्ची तड़प) पर दलील है और येह उस करीमे ह़क़ीक़ी की शान है कि तकरारे सुवाल से मलाल नहीं फ़रमाता बल्कि न मांगने पर ग़ज़ब फ़रमाता है : ((من لم يسأل الله يغضبْ عليه)).[2]

ब ख़िलाफ़ बनी आदम कि कैसा ही करीम हो कस्रते सुवाल व शिद्दते तकरार (बार बार मांगे जाने) व हुजूमे साइलान (और मांगने वालों की कसरत) से किसी न किसी वक़्त दिल तंग होता है।

الله يغضب إن تركت سؤاله
وبني آدم حين يسأل يغضب[3]

﴿نسأل الله العفو والعافية عدد السائلين وعدد المسائل، والحمد لله رب العالمين.﴾[4]

---

1 इस ह़दीस को त़-बरानी ने "किताबुद्दुआ", इब्ने अ़दी ने "अल कामिल", इमाम ह़कीम तिरमिज़ी ने "नवादिर" और बैहक़ी ने "शु-अ़बुल ईमान" में और क़ज़ाई व अबुश्शैख़ ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضي الله تعالى عنها से रिवायत किया।

2 या'नी जो अल्लाह عزوجل से अपनी ह़ाजत त़लब नहीं करता अल्लाह عزوجل उस पर ग़ज़ब फ़रमाता है।

("سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء في فضل الدعاء، الحديث: ٣٣٨٤، ج٥، ص٢٤٤).

3 *ग़ज़ब फ़रमाए उस पर जो न मांगे ह़ाजतें अपनी*
बनी आदम है कि इस को ग़ज़ब आता है मंगता पर

4 हम उस पाक परवर्द गार عزوجل से इस क़दर मुआ़फ़ी व जुम्ला बलिय्यात से आ़फ़िय्यत त़लब करते हैं जिस क़दर ह़ाजत मन्द और उन की ह़ाजतें हैं और सब ख़ूबियां अल्लाह عزوجل को जो परवर्द गार सारे जहान वालों का।

अदब 31 : अ़दद ता़क़ हो कि अल्लाह वित्र है (या'नी अकेला है), वित्र को दोस्त रखता है (या'नी : ता़क़ अ़दद को पसन्द फ़रमाता है) पांच बेहतर है और सात का अ़दद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को निहायत मह़बूब और अक़ल मर्तबा तीन (सब से कम द-रजा तीन का) है इस से कम न मांगे ह़दीस में है : ''बन्दा दुआ़ करता है परवर्द गार क़बूल नहीं फ़रमाता, फिर दुआ़ करता है फिर क़बूल नहीं फ़रमाता, फिर दुआ़ करता है उस वक़्त परवर्द गार तआ़ला फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाता है : ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे ने ग़ैर को छोड़ कर मेरी त़रफ़ रुजूअ़ की मैं ने उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाई।''(1)

अदब 32 : दुआ़ फ़हमे मा'ना (मा'ना को समझने) के साथ हो।

قال الرضاء : लफ़्ज़े बे मा'ना, क़ालिबे बे जान है। (या'नी बे मा'ना लफ़्ज़, बे जान जिस्म की त़रह़ है।)

अदब 33 : आंसू टपक्ने में कोशिश करे अगर्चे एक ही क़त़रा हो कि दलीले इजाबत (क़बूलिय्यत की दलील) है। रोना न आए तो रोने का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक है।

قال الرضاء: ((من تَشبّه بقوم فهو منهم)).(2)

एक नक़्क़ाल (नक़्ल उतारने वाला) सूफ़ियाए किराम की नक़्लें करता बा'दे मौत बख़्शा गया कि हमारे मह़बूबों की सूरत तो बनाता था अगर्चे बत़ौरे हंसी के।

येह सूरत बनाना ब निय्यते तशब्बोह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर है न कि औरों के दिखाने को कि वोह रिया है और ह़राम, येह

---

1 "كتاب الدعاء" للطبراني، باب ما جاء في فضل لزوم الدعاء، الحديث: ٢١، ص٢٨.

2 या'नी जो किसी क़ौम से मुशा-बहत इख़्तियार करे वोह उन्ही में से है।

"سنن أبي داود"، كتاب اللباس، باب في لبس الشهرة، الحديث:٤٠٣١، ج٤، ص٦٢.

नुक्ता याद रहे।﴿

अदब 34 : दुआ अ़ज़्म व जज़्म (या'नी पुख़्ता इरादे और यक़ीन) के साथ हो यूं न कहे कि इलाही ! तू चाहे तो मेरी येह ह़ाजत रवा फ़रमा कि अल्लाह तआ़ला पर कोई जब्र करने वाला नहीं।

قال الرضاء: وأما قوله صلى الله عليه وسلم:

((إن تغفر اللّٰهم تغفر جمّا وأيُّ عبدٍ لک لا ألَمّا)).(2)

رواه الترمذي والحاكم عن ابن عباس رضي اللّٰه تعالى عنهما وصحّحاه فليس "إن" فيه للشکّ بل للتعليل کقولک لابنک: "إن کنت ابني فافعل کذا" أي: افعله وامتثل أمري؛ لأنّک ابني وکقولهم: "إن کنت سلطاناً فأعط الجزيل"، فالمعنى اغفر کثيراً؛ لأنّک غفار.﴾(3)

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الدعوات، باب ليعزم المسألة... إلخ، الحديث:٦٣٣٨-٦٣٣٩، ج٤، ص ٢٠٠.

2 या'नी "ऐ रब हमारे ! अगर तू बख़्शिश फ़रमाता है तो अपने बन्दों के सारे गुनाहों को बख़्श दे तेरा कौन सा बन्दा है जिस से गुनाह सरज़द न होता हो।"

"سنن الترمذي"، كتاب التفسير، باب ومن سورة النجم، الحديث: ٣٢٩٥، ج٥، ص١٨٧.

3 रहा येह ए'तिराज़ कि मुस्तफ़ा करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी इस त़रह़ दुआ फ़रमाई कि "ऐ रब हमारे ! अगर तू बख़्शिश फ़रमाता है तो अपने बन्दों के सारे गुनाहों को बख़्श दे तेरा कौन सा बन्दा है जिस से गुनाह सरज़द न होता हो।" इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी व ह़ाकिम ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया और सह़ीह़ क़रार दिया। मज़्कूरा बाला ए'तिराज़ का जवाब येह है कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुबारक कलाम में लफ़्ज़े "إِنْ" ब मा'ना "अगर" शक और तअ़ज्जुब की बिना पर नहीं कि ऐ अल्लाह ! अगर तू मग़्फ़िरत फ़रमाना चाहे तो मग़्फ़िरत फ़रमा दे बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुबारक कलाम में लफ़्ज़े "إن" ता'लील या'नी वजह बयान करने =

अदब 35 : दुआ जामेअ़, क़लीलुल्लफ़्ज़ व कसीरुल मा'ना हो तत्वीले बे जा से एह्तिराज़ करे।(1)

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़दीस में है : "आख़िर ज़माने के लोग दुआ में ह़द से बढ़ जाएंगे और आदमी को इस क़दर दुआ किफ़ायत करती है कि ख़ुदाया ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं मुझे बिहिश्त (या'नी जन्नत) अ़ता फ़रमा और इस क़ौल व फ़े'ल की जो इस से नज़्दीक करे, तौफ़ीक़ दे।"(2)

बा'ज़ किताबों में है : येह दुआ जामेअ़ व काफ़ी है :

= के लिये है कि ऐ मौला ! तू अपने बन्दों की बख़्शिश फ़रमा इस लिये कि तू ही बख़्शिश फ़रमाने वाला है। जैसा कि बाप अपने बेटे से कहता है कि अगर तू मेरा बेटा है तो येह काम कर या'नी तू मेरा हुक्म मान और येह काम कर डाल इस लिये कि तू मेरा बेटा है। इसी त़रह़ रिआ़या में से किसी का ह़ाकिम से कहना कि अगर तू ह़ाकिम है तो मुझ पर अ़ताओं की बारिश फ़रमा या'नी मुझे अ़तिय्यात से नवाज़ दे, येह नहीं कि अगर तू ह़ाकिम है तो दे वरना नहीं।

चुनान्चे मज़्कूरा ह़दीसे पाक के मा'ना येह होंगे कि ऐ परवर्द गार ! हमारी बख़्शिश फ़रमा, इस लिये कि तू ख़ूब बख़्शिश फ़रमाने वाला है।

(1) या'नी दुआ में कलाम को बिला ज़रूरत त़वील करने से परहेज़ करे और ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करे जिस के मफ़्हूम में वुस्अ़त हो, म-सलन : "رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً" कि इस मुख़्तसर से कलाम में दोनों जहां की भलाइयां मांग ली गईं, और ज़हे नसीब ! कि येही परहेज़ आ़म गुफ़्त-गू में भी हो कि फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू से आदमी का वक़ार ख़त्म हो जाता है। इस पर मज़ीद येह कि मह़शर में हर हर लफ़्ज़ को पढ़ कर सुनाना पड़ेगा। وَالعِيَاذُ بِاللّٰه

(2) "إحياء علوم الدين"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٥.

"رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ".

"ख़ुदाया हमें दुन्या व आख़िरत की भलाई इनायत फ़रमा और दोज़ख़ की आग से बचा।" (پ۲، البقرة: ۲۰۱)

अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे ने दुआ़ की : "ख़ुदाया मुझे बिहिश्त में एक सपेद (सफ़ेद) मह़ल दे कि जाते वक़्त मेरे दहने हाथ पर पड़े।" फ़रमाया : "ऐ बेटा ! ख़ुदा से बिहिश्त का सुवाल कर और दोज़ख़ से पनाह चाह, फ़ुज़ूल बातों से क्या फ़ाएदा।"(1)

अदब 36 : दुआ़ में सज्अ़ और तकल्लुफ़ से बचे कि बाइसे शग़्ले क़ल्ब व ज़वाले रिक़्क़त है।(2) ह़दीस में आया : ((إيّاكم والسجعَ في الدعاء)).(3)

قال الرضاء : और हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ़ओं में सज्अ़ का आना, सज्अ़ का आना है न कि सज्अ़ का लाना और मह़ज़ूर मुसज्जअ़ करना है न कि मुसज्जअ़ होना कि मुशव्विशे ख़ात़िर वोही है न कि येह, व लिहाज़ा ह़ज़रत मुसन्निफ़े

ل فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً اَي: رَحْمَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً اَي: اَلْجَنَّةَ. ۱۲منہ قُدِّسَ سِرُّہٗ

या'नी दुन्या में भलाई से मुराद रह़मत और आख़िरत में भलाई से मुराद जन्नत है।

1 "سنن ابن ماجه"، كتاب الدعاء، باب كراهية الاعتداء في الدعاء، الحديث: ٣٨٦٤، ج٤، ص٢٨٢.

2 या'नी : दुआ़ में जान बूझ कर हम क़ाफ़िया व हम वज़्न जुम्ले इस्ति'माल न किये जाएं कि इस से यक्सूई ख़त्म होती है और रिक़्क़त जाती रहती है।

3 "दुआ़ में सज्अ़ से बचो।"

"إحياء علوم الدين"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٥.

و "اتحاف السادة المتقين"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج٥، ص٢٤٩.

अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने लफ़्ज़े "तकल्लुफ़" ज़ियादा फ़रमाया ।﴾[1]

अदब 37 : राग और ज़म्ज़मे (तरन्नुम) से एह़तिराज़ करे कि ख़िलाफ़े अदब है ।

अदब 38 : अल्लाह तआ़ला से अपनी कुल ह़ाजतें मांगे ।

قال الرضاء : इस की तह़क़ीक़ ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ अ़न्क़रीब इफ़ादा फ़रमाएंगे ।﴾

अदब 39 : बेहतर है कि जो दुआ़एं ह़दीसों में वारिद और अक्सर मत़ालिबे दुन्या व आख़िरत (या'नी दुन्या व आख़िरत की मुरादों) को जामेअ़ हैं इन्हीं पर इक्तिसार (इक्तिफ़ा) करे कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कोई ह़ाजते नेक दूसरे के मांगने को न छोड़ी ।

قال الرضاء : मगर कोई दुआ़ए मासूर (क़ुरआनो ह़दीस में वारिद दुआ़एं) मुअ़य्यन न करे कि ता'यीन व इदामत (हमेशगी) बाइ़से ज़वाले रिक़्क़त व क़िल्लते ह़ुज़ूर होती है ।﴾

अदब 40 : जब अपने लिये दुआ़ मांगे तो सब अहले इस्लाम को उस में शरीक कर ले ।

قال الرضاء : कि अगर येह ख़ुद क़ाबिले अ़त़ा नहीं किसी

---

[1] या'नी दुआ़ में जिस सज्अ़ से बचने का ह़ुक्म है उस से मुराद क़स्दन अपने कलाम को हम वज़्न व हम क़ाफ़िया करना है क्यूं कि मुमा-न-अ़त की वजह ध्यान बटना और यक्सूई ख़त्म होना है और अगर किसी का कलाम बिला तकल्लुफ़ मुसज्जअ़ (या'नी हम वज़्न व हम क़ाफ़िया) होता हो तो येह हरगिज़ मन्अ़ नहीं, लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से जो मुसज्जअ़ दुआ़एं मन्क़ूल हैं वोह हरगिज़ हरगिज़ इस मुमा-न-अ़त के तह़त दाख़िल नहीं कि वोह बिला तकल्लुफ़ हैं इसी वजह से मुसन्निफ़ मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने लफ़्ज़े "तकल्लुफ़" की क़ैद का इज़ाफ़ा फ़रमाया है ।

बन्दे का तुफ़ैली हो कर मुराद को पहुंच जाएगा।﴾

अबुश्शैख़ अस्बहानी ने साबित बुनानी से रिवायत की : "हम से ज़िक्र किया गया जो शख़्स मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के लिये दुआए ख़ैर करता है क़ियामत को जब उन की मजलिसों पर गुज़रेगा एक कहने वाला कहेगा : येह वोह है कि तुम्हारे लिये दुन्या में दुआए ख़ैर करता था पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे और जनाबे इलाही में अ़र्ज़ कर के बिहिश्त में ले जाएंगे।"

यहां तक कि ह़दीस में है : "जो शख़्स नमाज़ में मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ न करे वोह नमाज़ नाक़िस है।"(1)

قال الرضاء : येह भी अबुश्शैख़ ने रिवायत की और खु़द क़ुरआने अ़ज़ीम में इर्शाद होता है :

﴿وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ﴾

"मग़्फ़िरत मांग अपने गुनाहों की और सब मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों के लिये।" (پ٢٦، محمد: ١٩)

ह़दीस में है नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِيْ" (ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा) कहते सुना, फ़रमाया : "अगर आ़म करता तो तेरी दुआ़ मक़्बूल होती।"(2)

---

1 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، أمكنة الإجابة، الحديث: ٣٣٧٨، ج١، الجزء الثاني، ص٤٩، (بحواله ابوالشيخ).

2 "ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، آداب الصلاة، مطلب: في الدعاء بغير العربية، ج٢، ص٢٨٦.

दूसरी ह़दीस में है : एक ने "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ" (ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रह़म फ़रमा) कहा। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपनी दुआ में ता'मीम कर कि दुआए ख़ास व आम में वोह फ़र्क़ है जो ज़मीन व आस्मान में।"(1)

सह़ीह़ ह़दीस में फ़रमाते हैं : "जो सब मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों के लिये इस्तिग़फ़ार करे अल्लाह तआ़ला उस के लिये हर मुसल्मान मर्द व मुसल्मान औरत के बदले एक नेकी लिखेगा।

رواه الطبراني في "الكبير" عن عبادة بن الصامت رضي الله تعالىٰ عنه **بسند جيّد.**(2)

---

1 "مراسيل أبي داود"، باب ما جاء في الدعاء، ص٨.

و"رد المحتار"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، آداب الصلاة، مطلب: في الدعاء بغير العربية، ج٢، ص٢٨٦.

"**अपनी दुआ में ता'मीम कर**" या'नी किसी मख़्सूस शख़्स ही के लिये दुआ करने के बजाए तमाम मुसल्मानों को अपनी दुआ में शामिल कर कि किसी ख़ास शख़्स के लिये दुआ और सब मुसल्मानों के लिये दुआ, सवाब और क़बूलिय्यत के ए'तिबार से ज़मीन व आस्मान का सा फ़र्क़ रखती है।

2 इस ह़दीस को त़-बरानी ने "मो'जमे कबीर" में जय्यद सनद के साथ ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया।

"مجمع الزوائد"، كتاب التوبة، باب الاستغفار للمؤمنين والمؤمنات، الحديث: ١٧٥٩٨، ج١٠، ص٣٥٢، (بحوالہ طبرانی).

و"الجامع الصغير"، الحديث: ٨٤٢٠، ص٥١٣، (بحوالہ طبرانی).

और फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो हर रोज़ मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों के लिये सत्ताईस27 बार इस्तिग़फ़ार करे उन लोगों में हो जिन की दुआ मक़्बूल होती है और उन की ब-र-कत से ख़ल्क़ (या'नी मख़्लूक़) को रोज़ी मिलती है।"

رواه أيضاً عن أبي الدرداء رضي الله تعالى عنه بسند حسن. (1)

ख़तीब की हदीस में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला को कोई दुआ इस से ज़ियादा महबूब नहीं कि आदमी अ़र्ज़ करे :

((اَللّٰھُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ رَحْمَةً عَامَّةً))". (2)

"इलाही ! उम्मते मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर आम रहमत फ़रमा।"

और इमाम मुस्तग़्फ़िरी की हदीस में येह लफ़्ज़ हैं :

((اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ مَغْفِرَةً عَامَّةً))" (3)

"इलाही ! उम्मते मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आम मग़्फ़िरत फ़रमा।"

अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हदीस में आया : "जो तमाम मुसल्मान मर्दों और औरतों के लिये इस्तिग़फ़ार करे बनी आदम के जितने बच्चे पैदा हों सब उस के लिये इस्तिग़फ़ार करें यहां

---

1 इस हदीस को भी इमाम त़-बरानी ने "मो'जमे कबीर" में ब स-नदे हसन हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।
"مجمع الزوائد"، كتاب التوبة، باب الاستغفار للمؤمنين والمؤمنات، الحديث: ١٧٦٠٠، ج١٠، ص٣٥٢، (بحوالہ طبرانی).

2 "الكامل" لابن عدي، ج٥، ص٥٠٦.

3 "ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، مطلب: في الدعاء بغير العربية، ج٢، ص٢٨٦.

तक कि वफ़ात पाए।" رواه أبو الشيخ الأصبهاني (इस ह़दीस को अबुश्शैख़ अस्बहानी ने रिवायत किया है।)

फ़क़ीर ने इस बारे में इस लिये अह़ादीस ब कसरत नक़्ल कीं कि मुसल्मानों को रग़बत हो। बा'ज़ त़बाएअ़ (त़बीअ़तें) दुआ़ में बुख़्ल करती हैं और नहीं जानतीं कि ख़ुद येह उन ही का नुक़्सान है। मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों की दुआ़ए ख़ैर में मला-इ-कए आस्मान मश्ग़ूल हैं

﴿وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ﴾ [1] جَعَلَنَا اللّٰهُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَحَشَرَنَا فِيْهِمْ بِمَنِّهٖ، آمين.﴾ [2]

अदब 41 : साथ ही वालिदैन व मशाइख़ के लिये भी ज़रूर दुआ़ करे मां बाप मूजिबे ह़याते ज़ाहिरी हैं।

قال الرضاء : और मशाइख़ बाइ़से ह़याते बात़िनी, बाप पिदरे आबो गिल है और पीर व उस्ताज़ पिदरे रूह़ व दिल।[3]

ذا أبو الروح لا أبو النطف.[4]

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी मांगते हैं।" (پ۲۵، الشورى: ۵)
2. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मुसल्मान रखे और अपने करम से इन ही के साथ हमारा ह़श्र फ़रमाए। امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم !
3. अपनी दुआ़ में वालिदैन के साथ साथ अपने पीरो मुर्शिद और अपने असातिज़ा के लिये भी दुआ़ करे क्यूं कि वालिदैन तो जिस्मानी ज़िन्दगी का सबब हैं और येह ह़ज़रात रूह़ानी ज़िन्दगी का ज़रीआ़ हैं।
4. पीर व उस्ताद रूह़ के बाप हैं न कि जिस्म के।

जब कि वोह हक़ व रशाद के पीर व उस्ताज़ हों, वरना ज़हर व क़हरे जां गुसिल (जान लेवा)[1]

اے بسا ابلیس آدم روئے ہست[2]

हदीस में है : "जो शख़्स नमाज़ पढ़े और उस में मां बाप के लिये दुआ न करे वोह नमाज़ नाक़िस है।" और दुआ वालिदैन के लिये सुन्नते क़दीमा है कि हज़रते नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم के वक़्त से जारी। अल्लाह तआला उन से हिकायत फ़रमाता है : ﴿رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ﴾.[3]

قال الرضاء : और हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم से हिकायत फ़रमाई :

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ﴾[4]

---

1 या'नी वोह पीर व उस्ताज़ ख़ुद भी शरीअ़त के पाबन्द हों और अपने मुरीदीन व तलामिज़ा को भी शर-ई अह़काम की बजा आ-वरी के लिये ताकीद करते हों और सब से बढ़ कर येह कि वोह मुसल्मान सहीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हों वरना उन की शागिर्दी व सोहबत जान लेवा ज़हरे क़ातिल कि आख़िरत में ख़ुद भी पशेमान व परेशान और अपने मुरीदीन व तलामिज़ा के लिये भी वबाले जान। बिल ख़ुसूस ! आज कल बे अ़मल व बद अ़क़ीदा नाम निहाद पीरों का दौर दौरा है। मुसल्मानों पर लाज़िम कि ऐसों से ख़ुद भी बचें और अपने अक़्रिबा को भी बचाएं और किसी को भी परखने के लिये शरीअ़त के तराज़ू को इस्ति'माल में लाएं कि वोह शर-ई अह़काम पर किस क़दर अ़मल पैरा है और किस त़रह़ के अ़क़ाइद व नज़रियात रखता है कहीं वोह गुस्ताख़ व बे दीन तो नहीं क्यूं कि अस्ल मे'यार ख़िर्क़े आदत, शो'बदे दिखाना नहीं बल्कि शर-ई अह़काम की बजा आ-वरी और अ़क़ाइद व नज़रियात में क़ुरआनो सुन्नत व सलफ़ सालिहीन की मुवा-फ़क़त है।

2 या'नी कभी इब्लीस आदमी की शक्ल में आता है।

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ मेरे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को।" (پ۲۹، نوح: ۲۸)

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।" (پ۱۳، إبراهيم: ٤١)

दूसरी जगह इर्शाद होता है : ﴿رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا﴾.[1]

अदब 42 : सुन्नत यूं है कि पहले अपने नफ़्स के लिये दुआ मांगे, फिर वालिदैन व दीगर अहले इस्लाम को शरीक करे।

قال الرضاء : सईद बिन यसार कहते हैं : मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास बैठा था, एक शख़्स को याद कर के मैं ने उस के लिये दुआ़ए रह़मत की ह़ज़रते इब्ने उ़मर ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : "पहले अपने नफ़्स से इब्तिदा कर।"

رواه ابن أبي شيبة.[2]

इमाम नख़ई फ़रमाते हैं : "जब दुआ़ करे, अपने नफ़्स से इब्तिदा करे, तुझे क्या ख़बर कि कौन सी दुआ़ क़बूल हो जाए।"[3]

और सिहाह़[4] में साबित कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब किसी के लिये दुआ़ फ़रमाते अपने नफ़्से नफ़ीस से इब्तिदा फ़रमाते और बारहा हुज़ूरे अक़्दस से इस का ख़िलाफ़ भी साबित।

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला।" (پ١٥، بنیٓ إسرآئیل: ٢٤)
2. इस ह़दीस को इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया। "المصنّف" لابن أبي شيبة، كتاب الدعاء، باب من قال: إذا دعوت فابدأ بنفسك، الحديث: ٤، ج٧، ص٣٣.
3. المرجع السابق.
4. **सिह़ाह़**, येह लफ़्ज़ "सह़ीह़" की जम्अ़ है और इस से मुराद ह़दीस की वोह किताबें हैं जिन में अक्सर सह़ीह़ ह़दीसों का एहतिमाम किया गया हो म-सलन "सह़ीहुल बुख़ारी", "सह़ीह़ मुस्लिम" वग़ैरा।

इमाम बदरुद्दीन ज़रकशी "ह़वाशी इब्नुस्सलाह़" में यूं तत़्बीक़ देते हैं कि अगर अपने और दूसरे के लिये एक ही बात की दुआ़ करे, तो अपने नफ़्स से इब्तिदा करे म-सलन : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ (ऐ अल्लाह ! मेरी और मेरे वालिदैन की बख़्शिश फ़रमा) और अगर मुद्दआ़ ग़ैरे ग़ैर हो (दूसरे के लिये कोई और दुआ़ करनी हो) तो इख़्तियार है । जैसे : اَللّٰھُمَّ اشْفِ فُلَانًا وَّاغْفِرْ لِيْ (ऐ अल्लाह ! मेरे फ़ुलां भाई को शिफ़ा दे और मेरी बख़्शिश फ़रमा) या اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِيْ وَاقْضِ دَيْنَ فُلَان (ऐ अल्लाह ! मुझ पर रह़्म फ़रमा और मेरे फ़ुलां भाई से क़र्ज़ का बोझ उतार दे) ।

और "शर्हे़ अ़क़ीदए बुरहानिया" में है कि दुआ़ में अपने नफ़्स पर भाई मुसल्मानों को मुक़द्दम रखे मगर येह मर्तबा ईसार[1] का है । ह़दीस में है : "जब बन्दा अपने भाई मुसल्मान के लिये दुआ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : लब्बैक ऐ मेरे बन्दे ! और मैं पहले तुझ से शुरूअ़ करूंगा ।"[2] इस से बढ़ कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि इजाबत (क़बूलिय्यत) में इस से बिदायत (इब्तिदा) होगी तो मक़ामे ईसार मक़ामे आ़ली व शरीफ़ है ।" येह लिख कर अख़ीर में इख़्तियार दे दिया कि فإن شاء بدء بنفسه وإن شاء بدء بغيره، انتهى.[3]

---

1 ईसार : هو تقديم الغير على النفس وحظوظها الدنياوية ورغبة في الحظوظ الدينية. "हुज़ूज़े दीनिया (या'नी दीनी सवाब के ह़ुसूल) में रग़्बत के बाइ़स किसी दूसरे शख़्स को दुन्यावी चीज़ों में अपने ऊपर तरजीह़ देना ।"
("الجامع لأحكام القرآن"، الحشر، تحت الآية: ٩، الجزء الثامن عشر، ص٢١.)

2 "إحياء علوم الدين"، كتاب آداب الألفة... إلخ، الباب الثاني، ج٢، ص٢٣٢.

3 आख़िर में साह़िबे "अ़क़ीदए बुरहानिया" लिखते हैं कि अब अगर चाहे तो अपने आप से दुआ़ में पहल करे और अगर चाहे तो अपने दूसरे भाई को मुक़द्दम करे ।

अ़ल्लामा शहाब ख़फ़्फ़ाजी मिसरी "नसीमुर्रियाज़" में फ़रमाते हैं : इन अक़्वाल में यूं जम्अ़ कर सकते हैं कि हर अम्र के लिये एक मक़ाम जुदागाना है और हर शख़्स के लिये उस की निय्यत, انتہی ।

أقول : ज़ाहिरन येह ईसार मक़ामे ख़वास है और अ़वाम को तक़्दीमे नफ़्स (पहले अपने लिये दुआ़ मांगना) ही मुनासिब । व लिहाज़ा शारेअ़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कि आ़म के लिये तशरीअ़ फ़रमाते, अक्सर येही मन्क़ूल बल्कि फ़क़ीर के ख़याल में नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दुआ़ में अपने नफ़्से अक़्दस को औरों से मुअख़्ख़र (या'नी पीछे) रखना साबित हो । हां दुआ़ **लिल गै़र** पर इक्तिसार बारहा हुवा है (हां ! कई मर्तबा ऐसा हुवा कि सिर्फ़ दूसरे के लिये ही दुआ़ फ़रमाई है) और ह़दीसे सह़ीह़ : [1]((ابدأ بنفسک ثم بمن تعول)) से भी इस मा'ना पर इस्तिदलाल कर सकते हैं । शर-ए़ मुत़ह्हर में ह़क़्क़े नफ़्स, ह़क़्क़े गै़र पर बेशक मुक़द्दम । وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی اَعْلَم۔

अदब 43 : ह़त्तल वुस्अ़ अवक़ात व अमा-कने इजाबत की रिआ़यत करे ।[2]

अदब 44 : आमीन पर ख़त्म करे कि दुआ़ की मोह्र है ।

---

❶ अपने आप से इब्तिदा कीजिये फिर वोह जो आप की कफ़ालत में हैं ।

("فتح القدير"، كتاب أدب القاضي، مسائل منثور من كتاب القضاء، ج٦، ص٤٣٦)

❷ या'नी जिन जिन अवक़ात व मक़ामात से मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीस या अक़्वाल, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मन्क़ूल कि उन अवक़ात या मक़ामात में मौला तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो करम अपने बन्दों के शामिले ह़ाल रहता है उन अवक़ात व मक़ामात की रिआ़यत करते हुए उन में ख़ास तौर पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर दुआ़ करे ।

नोट : इन अवक़ात व मक़ामात को जानने के लिये इसी किताब में तीसरी और चौथी फ़स्ल का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये ।

قال الرضاء : और सुनने वाले को भी आमीन कहना चाहिये

استناناً بسنّة هارون عليه الصلاة والسلام **فإنّ موسى كان يدعو وهارون يؤمّن كما في الحديث عنه** صلى الله تعالى عليه وعليهما وسلم. ﴾(1)

अदब 45 : बा'दे फ़राग़ (दुआ से फ़ारिग़ होने के बा'द) दोनों हाथ चेहरे पर फेरे कि वोह ख़ैरो[1] ब-र-कत जो ब ज़रीअए दुआ हासिल हुई अशरफ़ुल आ'ज़ा या'नी चेहरे से मुलाक़ी (या'नी मस) हो।

---

(1) या'नी हज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत पर अमल करते हुए दुआ के बा'द आमीन कहे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दुआ फ़रमाते थे और हारून عَلَيْهِ السَّلَام आमीन कहते जैसा कि हदीसे पाक में हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल है।

"صحيح ابن خزيمة"، كتاب الإمامة، باب ذكر ما كان الله عزوجل خصّ نبيه صلى الله عليه وسلم بالتأمين... إلخ، الحديث: ١٥٨٦، ج٣، ص٣٩.

[1] **عن ابن مسعود عن النبي صلى الله عليه وسلم أنّه قال: ((إذا رفعتم أيديكم إلى الله ودعوتم وسألتموه حوائجكم فامسحوا أيديكم على وجوهكم فإن الله حي كريم يستحيي من عبده إذا رفع يديه وسأل أن يردّهما خائبين فامسحوا هذا الخير على وجوهكم)).**

या'नी जब तुम अपने हाथ ख़ुदाए तआला की तरफ़ उठा कर दुआ व सुवाल करो उन्हें मुंह पर फेर लो कि ख़ुदाए तआला शर्म व करम वाला है, जब बन्दा अपने दोनों हाथ उठाता और सुवाल करता है तो अल्लाह तआला ख़ाली हाथ फेरने से शरमाता है पस उस ख़ैर को अपने मूंहों पर मस्ह करो या'नी ख़ुदाए करीम हाथ ख़ाली नहीं फेरता। किसी तरह की भलाई और ख़ैरो ख़ूबी ख़्वाह वोही ख़ैर जिस के लिये दुआ की या दूसरी ने'मत ज़रूरत मर्हमत फ़रमाता है : ब नज़र उस रहमत व ब-र-कत के दुआ के बा'द मुंह पर हाथ फेरना मुक़र्रर हुवा, ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ

अदब 46 : अल्लाह جَلَّ جَلَالُہٗ के सअ़ते रह़मत व सिदक़े वा'दा (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की वुस्अ़त और सच्चे वा'दे) ﴿اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ﴾[1] पर नज़र कर के इस्तिजाबते दुआ़ (दुआ़ की क़बूलिय्यत) पर यक़ीने कामिल रखे कि करीम साइल को मह़रूम नहीं फेरता।

ह़दीस में है : ((ادعوا الله وأنتم موقنون بالإجابة)).[2]

"अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो इस ह़ाल पर कि तुम्हें इजाबत (क़बूलिय्यत) का यक़ीन हो।"

जो दुआ़ करे और येह समझे कि मेरी दुआ़ क्या क़बूल होगी ! उस की दुआ़ मक़्बूल न होगी।

قال الله تعالى : ((اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ))[3] इसी वजह से कहते हैं कि दुआ़ के वक़्त अपना गुनाह याद न करे कि इस का ख़याल यक़ीने इजाबत में ख़लल डालेगा और ता़अ़त (नेकी) को भी बतौ़रे इस्तिह़क़ाक़ न याद करे कि उ़ज्ब व नाज़ (ख़ुद पसन्दी व ग़ुरूर) में मुब्तला करेगा और तज़र्रोअ़ व शिकस्तगी (आ़जिज़ी व इन्किसारी) में मुख़िल होगा।[4]

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।" (پ٢٤، المؤمن: ٦٠)
2. "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.
3. या'नी मैं अपने बन्दे के गुमान के मुता़बिक़ उस के साथ मुआ़-मला फ़रमाता हूं।
"صحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب قول الله: ﴿يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ﴾، الحديث: ٧٥٠٥، ج٤، ص٥٧٤.
4. दुआ़ मांगते वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला और उस का वा'दा जो क़ुरआन में है कि "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा" को पेशे नज़र रख कर अपनी दुआ़ की क़बूलिय्यत पर कामिल यक़ीन रखे कि मेरी दुआ़ ज़रूर क़बूल होगी ह़दीसे मुबा-रका में भी इस का हुक्म दिया गया है क्यूं कि वोह करीम है और करीम के शायान नहीं कि वोह साइल को मह़रूम कर दे और जो दुआ़ करने के बा'द क़बूलिय्यत में शक करे तो उस की दुआ़ क़बूल क्यूंकर हो सकती है कि ख़ुद रब्बुल इ़ज़्ज़त =

अदब 47 : दुआ़ करते करते मलाल न लाए बल्कि निशाते़ क़ल्ब (खु़शदिली) के साथ अ़र्ज़ करे : (1) .((فإنّ الله لا يملّ لا تملّوا))

قال الرضاء: وفي لفظ: ((لا يسأم حتى تسأموا)) والمولى سبحنه وتعالٰى منزّه عن الملالة والسآمة وإنّما هو من باب المشاكلة.﴾(2)

= फ़रमाता है : ''मैं अपने बन्दे के गुमान से नज़्दीक हूं'' येही वजह है कि उ़-लमा ने दौराने दुआ़ अपने गुनाहों को याद करने से मन्अ़ फ़रमाया है कि येह क़बूलिय्यते दुआ़ में शक पैदा करेगा इसी त़रह़ अपनी इ़बादतों और नेक कामों को बत़ौरे इस्तिह़क़ाक़ पेशे नज़र न रखे या'नी यूं न समझे : ऐ अल्लाह ! मैं ने फुलां नेक काम किया था लिहाज़ा मैं ह़क़दार हूं कि तू मुझे फुलां चीज़ अ़त़ा फ़रमा, या मेरी फुलां दुआ़ क़बूल फ़रमा कि इस त़रह़ कहने से इस में अपने आ'माल पर नाज़ और खु़द पसन्दी जैसी बुराइयां पैदा होंगी और आ़जिज़ी व इन्किसारी जो दुआ़ में मत़्लूब है वोह जाती रहेगी।

❶ ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाल से पाक है, तुम भी अपने आप को मलाल में मुब्तला न करो।'' ("صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب فضيلة العمل... إلخ، الحديث: ٧٨٥، ص٣٩٥)

❷ एक रिवायत में यूं है : ((لا يسأم حتى تسأموا)) या'नी अल्लाह तआ़ला मलूल नहीं होता, यहां तक कि तुम मलाल न करो। ("صحيح مسلم"، الحديث: ٧٨٥، ص٣٩٥) और वोह परवर्द गार तो मलाल (या'नी उक्ताने) से पाक, मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है और येह जो उस की त़रफ़ निस्बत की गई येह बाबे मुशा-कला से है।

मुशा-कला से मुराद येह है कि : ''किसी शै के मा'ना व मफ़्हूम को किसी ऐसे दूसरे लफ़्ज़ के ज़रीए़ अदा किया जाए जो उस के लिये **मौज़ूअ़ लह** नहीं (या'नी वज़अ़ नहीं किया गया) लेकिन मौज़ूअ़ लह के साथ इस्ति'माल होता है'', जैसे मज़्कूरा ह़दीस में लफ़्ज़े "لا يسأم"، "حتى تسأموا" के साथ वाक़ेअ़ हुवा।

= كما بيّنه في "ثمرات الأوراق": المشاكلة في اللغة: هي المماثلة، وهي في المصطلح: "ذكر الشيء

अदब 48 : दुआ के क़बूल में जल्दी न करे।

हदीस शरीफ़ में है कि खुदाए तआला तीन आदमियों की दुआ क़बूल नहीं करता एक वोह कि गुनाह की दुआ मांगे, दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त्ए रेहम हो, तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे, कि मैं ने दुआ मांगी, अब तक क़बूल न हुई ऐसा शख़्स घबरा कर दुआ छोड़ देता है और

=

بغير لفظه لموافقة القرائن ومشاكلتها" كقوله تعالى: ﴿**وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا**﴾ فالجزاء عن السيئة في الحقيقة غير سيئة والأصل وجزاء سيئة عقوبة.

ومنه قوله تعالى: ﴿**تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَا أَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ**﴾ والأصل تعلم ما في نفسي ولا أعلم ما عندك لأن الحق تعالى وتقدس لا تستعمل لفظة النفس في حقه إلا أنها استعملت هنا للمماثلة والمشاكلة كما تقدم.

ومنه قوله تعالى: ﴿**ومكروا ومكر الله**﴾ والأصل وأخذهم الله.

وفي الحديث قوله: ((**فإن الله لا يمل حتى تملّوا**)) الأصل فإنّ الله لا يقطع عنكم فضله حتى تملّوا عن مسألته، فوضع " **لا يمل** " موضع "لا يقطع الثواب" على جهة المشاكلة وهو مما وقع فيه لفظ المشاكلة أولاً."

وكذا في "تحرير التحبير": (باب المشاكلة: وهي أن يأتي المتكلم في كلامه أو الشاعر في شعره باسم من الأسماء المشتركة في موضعين فصاعداً من البيت الواحد، وكذلك الاسم في كل موضع من الموضعين مسمى غير الأول، تدل صيغته عليه بتشاكل إحدى اللفظتين الأخرى في الخط واللفظ، ومفهومهما مختلف).

(انظر "تحرير التحبير في صناعة الشعر والنثر"، و"ثمرات الأوراق" في المكتبة الشاملة)

मत़लब से मह़रूम रहता है।(1)

ऐ अज़ीज़ ! तेरा परवर्द गार फ़रमाता है :

﴿اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾

"मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं, जब मुझ से दुआ़ मांगे।" (پ٢،البقرہ: ١٨٦)

﴿وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾

"दुआ़ बहुत मांगो और मुझ को अपनी मुसीबत के वक़्त याद करो ताकि बला से नजात पाओ।" (پ١٠،الأنفال: ٤٥)

﴿فَلَنِعْمَ الْمُجِیْبُوْنَ﴾

"हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं।" (پ٢٣،الصّٰفّٰت: ٧٥)

﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

"मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊं।" (پ٢٤،المؤمن: ٦٠)

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से मह़रूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है :

﴿وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ﴾ "साइल को न झिड़क।"

(پ٣٠،الضحٰی: ١٠).

आप किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है कि तेरी दुआ़ के क़बूल करने में देर करता है।

1 "صحیح مسلم"، كتاب الذكر والدعاء، باب بيان أنه يستجاب للداعي ما لم يعجل... إلخ، الحديث: ٢٧٣٥، ص١٤٦٣.

इब्ने अबी शैबा व बैहक़ी व साबूनी की ह़दीस में है : हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब कोई प्यारा ख़ुदाए तआ़ला का दुआ़ करता है जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام कहते हैं : इलाही ! तेरा बन्दा तुझ से कुछ मांगता है। हुक्म होता है ठहरो ف, अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।"

خوش همی آید مرا آواز او
وان خدایا گفتن وآں راز او (1)

और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ दुआ़ करता है, फ़रमाता है : इस का काम जल्दी कर दो ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह (ना पसन्द) है।(2)

यह्या बिन सईद बिन क़त्तान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (3) ने जनाबे बारी को ख़्वाब में देखा अ़र्ज़ की :

ف : क़बूल में देर से न घबराने के बयान में।

(1) *पसन्द आती है मुझ को तो वोही आवाज़ ऐ बन्दे !*
तू जिस में राज़ कहता है मुझे पुकार उठता है

(2) "شعب الإيمان"، فصل في ذكر ما في الأوجاع... إلخ، الحديث: ١٠٠٣٤، ج٧، ص٢١١.

(3) आप का पूरा नाम अबू सईद यह्या बिन सईद बिन फ़र्रूख़ क़त्तान तमीमी बसरी है आप ह़दीस के बहुत बड़े इमाम हैं, इब्ने अ़म्मार कहते हैं कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी ने आप से आप की ह़यात में ही दो हज़ार ह़दीसें रिवायत कीं, इब्राहीम बिन मुह़म्मद तैमी फ़रमाते हैं : मैं ने इल्मुर्रिजाल का आप से ज़ियादा माहिर नहीं देखा, इमाम ख़लीली फ़रमाते हैं कि सुफ़्यान सौरी को आप की कुव्वते ह़ाफ़िज़ा पर ह़ैरत होती थी, आप का इन्तिक़ाल सफ़र 198 सि.हि. में हुवा। (ماخوذ من "تهذيب التهذيب" لابن حجر، ج٩، ص٢٣٤-٢٣٧)

इलाही ! मैं अक्सर दुआ़ करता हूं और तू क़बूल नहीं फ़रमाता हुक्म हुवा : ऐ यह़्या ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं इस वासिते़ तेरी दुआ़ में ताख़ीर करता हूं ।(1)

قال الرضاء : सगाने दुन्या(2) के उम्मीद वारों को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी में गुज़ारते हैं सुब्ह़ो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं और वोह हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, बार नहीं देते, झिड़क्ते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार डाली, येह ह़ज़रत गिरह (अपने पल्ले) से खाते घर से मंगाते बेकार बेगार की बला उठाते हैं और वहां बरसों गुज़रें हनूज़ रोज़े अव्वल है मगर येह न उम्मीद तोड़ें न पीछा छोड़ें और **अह़्-कमुल ह़ाकिमीन, अक्रमुल अक्रमीन** عَزَّ جَلَالُہٗ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी, साह़िब पढ़ा तो था कुछ असर न हुवा, येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं ।(3)

---

1 "الرسالة القشيرية"، باب الدعاء، ص۲۹۷.

2 सगान, सग की जम्अ़ है और सग फ़ारसी में कुत्ते को कहते हैं चूंकि अहलुल्लाह رَحِمَهُمُ الله अरबाबे इक़्तिदार से दूर ही रहते हैं और येह त़ब्क़ा उ़मूमन ज़ुल्मो सितम और ग़ुरूर व तकब्बुर से बच नहीं सकता, इक़्तिदार के नशे में न जाने येह हुक्काम अपने आप को क्या समझे होते हैं । इसी लिये आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इन को सगाने दुन्या कह कर मुख़ात़ब किया ।

3 बा'ज़ अवक़ात दुन्यवी अफ़्सरान किसी को आयन्दा मुला-ज़मत की उम्मीद दिला कर बिला उजरत काम लेते और त़रह़ त़रह़ से नख़रे दिखाते हैं मज़ीद येह कि उस उम्मीद वार को अपने अख़्राजात वग़ैरा भी अपने पल्ले से देने पड़ते हैं, इन तमाम मुसीबतों और बलाओं के बा वुजूद दुन्यवी लालच का ह़ाल येह है कि उम्मीद ख़त्म नहीं होती और सालहा साल इस उम्मीद पर लगा देते हैं कि कभी न कभी तो नोकरी मिल ही जाएगी और इसी वजह से उन के दफ़ातिर के सुब्ह़ शाम =

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((يستجاب لأحدكم ما لم يعجل يقول: دعوت فلم يستجب لي)).[1]

"तुम्हारी दुआ़ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ़ की थी, क़बूल न हुई।"

और फिर बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (वज़ाइफ़ व दुआ़ओं) के असर से बे ए'तिक़ाद बल्कि अल्लाह के वा'दा व करम से बे ए'तिमाद[2] وَالْعِيَاذُ بِاللهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَاد

ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गिरीबान में मुंह डालो, अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो, तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे कि हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें और

= चक्कर लगाते हैं, और वोह अफ़्सर हैं कि इन्हें मुंह तक नहीं लगाते, इन्हें झिड़कियां खिलाते, और वोह बरसा बरस गुज़र जाने के बा वुजूद इसे पहला दिन समझते हैं। दुन्यादार अफ़्सरों के बारे में तो इन दुन्या चाहने वालों का येह त़र्ज़े अ़मल......! लेकिन ग़ैब से रोज़ी देने वाले अह़-कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ की बारगाह में......! पहली बात तो कोई अपनी अ़र्ज़ी देता ही नहीं और देते भी हैं तो उक्ताते, घबराते हुए कि कल का होता काम आज बल्कि अभी हो जाए, अगर किसी ने हु़सूले मक़्सद के लिये कोई वज़ीफ़ा बताया भी तो अभी हफ़्ता भर भी न पढ़ा था कि शिक्वा करना शुरूअ़ कर दिया कि मैं ने वज़ाइफ़ भी किये लेकिन कुछ असर नहीं हुवा, और इतना बे वुक़ूफ़ है कि येह नहीं जानता कि वोह शिक्वा कर के अपने लिये दुआ़ की क़बूलिय्यत का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर चुका है।

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٦١٩، ج٥، ص٣٤٨.

2 या'नी बा'ज़ लोग तो गुस्से में आपे से इतना बाहर हो जाते हैं कि दुआ़ओं और वज़ाइफ़ पर भरोसा और यक़ीन ही ख़त्म कर बैठते हैं बल्कि बा'ज़ का तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम व इनायत और उस के क़बूलिय्यते दुआ़ के वा'दे पर से भी ए'तिमाद उठ जाता है।

अगर "ग़रज़ दीवानी होती है" कह भी दिया और उस ने न किया तो अस्लन महल्ले शिकायत न जानोगे कि हम ने कब किया था जो वोह करता। अब जांचो कि तुम मालिके अ़लल इत्लाक़ عَزَّ جَلَالُہٗ के कितने अह़काम बजा लाते हो। उस का हुक्म बजा न लाना और अपनी दर-ख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (ज़बर दस्ती/नाचार) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है, ओ अह़मक़! फिर फ़र्क़ देख अपने सर से पाउं तक नज़्रे ग़ौर कर, एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं, तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और सर से पाउं तक सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फु-ज़लात का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रोशनी, बे ह़िसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं, फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों किस मुंह से शिकायत करता है, तू क्या जाने कि[1] तेरे लिये भलाई काहे में है, तू क्या जाने कि[2] कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि[3] इस दुआ़ के इ़वज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है, और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली पिछली से आ'ला है। हां बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लई़न ने तुझे अपना सा कर लिया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ سُبْحَانَہٗ وَتَعَالٰی (1)

ऐ ज़लील ख़ाक! ऐ आबे नापाक! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ को ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने, अपना

---

(1) ऐसे लोग जो हुसूले मक़्सद में ताख़ीर के सबब दुआ़ और वज़ाइफ़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम व इनायत पर से भरोसा व ए'तिमाद खो बैठते हैं ऐसे बे ह़या, बे शर्म लोगों को कहा जाए कि तुम अपने गिरीबान में तो झांको अगर तुम्हारा कोई दोस्त तुम्हें =

पाक मु-तआ़ली (बुलन्दो बाला) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देते हैं, लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार।

ओ बे सब्रे ! ज़रा भीक मांगना सीख, इस आस्ताने रफ़ीअ़ (बुलन्द बारगाह) की ख़ाक पर लौट जा और लिपटा रह और टिकटिकी

= कोई काम कहे और तुम न करो और जब तुम को उसी दोस्त से कोई काम पड़ जाए तो पहले तो उस से कहते हुए तुम्हें शर्म आएगी कि मैं किस मुंह से उसे कहूं ! और अगर अपनी ग़रज़ में दीवाने हो जाओ और उसे कह भी दो और वोह न करे तो तुम्हें बिलकुल ना गवार न गुज़रेगा कहोगे कि मैं ने उस का कौन सा काम किया था जो वोह करता, अब सोचने का मक़ाम है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कितने अह़कामात मानते हो ! उस के अह़कामात पर अ़मल पैरा न होने के बा वुजूद ज़बर दस्ती येह चाहो कि दुआ़ क़बूल की जाए तो येह बे ह़याई नहीं तो और क्या है ! और ऐ अह़मक़ जाहिल ! अपने सर से पाउं तक ही ग़ौर कर ले कि तेरे जिस्म के हर हर रूएं में हर लम्ह़े हर घड़ी उस की हज़ारहा ने'मतों और करम की बारिश बरस रही है कि तू सोता भी है तो उस के मा'सूम फ़िरिश्ते तेरी ह़िफ़ाज़त करते हैं, तेरी ना फ़रमानियों और गुनाहों के बा वुजूद तेरा सर से पाउं तक सह़ीह़ सलामत व सिह़्ह़त मन्द होना, वबाओं और बलाओं से तेरा मह़फ़ूज़ होना, निज़ामे हाज़िमा की दुरुस्ती, ख़ून की गर्दिश, आ'ज़ा में क़ुव्वत, आंखों की रोशनी, अल ग़रज़ बे शुमार ने'मतें बिन मांगे तुझे अ़ता हो रही हैं फिर अगर तेरी कोई आरज़ू वोह भी तेरी अपनी ना फ़रमानी व ग़-लत़ी की वजह से पूरी न भी हो तो किस मुंह से शिक्वे करता है तुझे क्या मा'लूम कि तेरे लिये किस काम में भलाई हो, तुझे क्या ख़बर कि तुझ पर कैसी आफ़त आने वाली थी कि इस दुआ़ की ब-र-कत से टल गई, तुझे क्या मा'लूम कि इस दुआ़ के सबब तुझे कितना सवाब अ़ता हुवा कि तू रोज़े क़ियामत उस सवाब को देखे तो तमन्ना करे कि काश मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती, ब ज़ाहिर दुआ़ क़बूल न होने की इन तीनों वुजूहात में से हर बा'द वाली वजह पहली वजह से आ'ला और अफ़्ज़ल है, हां ! अगर दुआ़ क़बूल न होने की वजह से तेरा उस पर से ए'तिमाद व भरोसा उठ गया तो जान ले कि शैत़ान ने तुझे वस्वसे में डाल कर अपना सा कर दिया, और अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى की पनाह।

बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं बल्कि उसे पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ मह़रूम न फिरेगा[1] कि

من دقّ باب الكريم انفتح[2]

وباللّٰه التوفيق

अदब 49 : अपने गुनाह व ख़त़ा पर नज़र कर के दुआ़ को तर्क न करे कि शैत़ान की भी दुआ़ क़बूल हुई और उसे क़ियामत तक मोहलत मिली ﴿اِنَّکَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ﴾[3]

कहते हैं फ़िरऔ़न दिन भर ख़ुदाई का दा'वा करता और रात को दुआ़ व ज़ारी में मश्ग़ूल रहता इसी सबब से जाहो ह़शम व माल व मुल्क उस का मुद्दत तक क़ाइम रहा।[4]

روزِ موسیٰ پیشِ حق نالاں شدے

---

1. ऐ बे सब्र ! उस करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भीक मांगने का ढंग और सलीक़ा तो सीख, उस बुलन्दो बाला परवर्द गार की बारगाह में पड़ा रह, और हमा वक़्त उसी के करम पर इस उम्मीद पर टिकटिकी बांधे रख कि अभी मुराद बर आएगी, अभी ह़ाजत पूरी होगी, ज़हे नसीब कि उस परवर्द गार को पुकारते हुए और उस से मुनाजात करते हुए उस की याद में ऐसा डूब जा कि तुझे तेरा मक़्सद व मुराद कुछ याद न रहे, और इस बात का यक़ीने कामिल कर ले कि येह वोह दर है जिस में ना मुरादी है ही नहीं।
2. जो करीम का दरवाज़ा खट-खटाता है तो वोह उस पर खुल जाता है।
3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तू मोहलत वालों में है।" (پ۲۳، ص:۸۰)
4. "मस्नविये मौलाना रूम" (मुतर्जम), दफ़्तरे अव्वल, स. 61

نیم شب فرعون هم گریاں شدے
کیں چه غل است اے خدا بر گرد نم
گر نه غل باشد که گوید من مهم (1)

ऐ अ़ज़ीज़ो ! वोह अर-ह़मुर्राह़िमीन है उस से ना उम्मीद होना मुसल्मान की शान नहीं जो काफ़िरों को ने'मत से मह़रूम नहीं रखता, तुझे कब मह़रूम करेगा।

اے کریمے که از خزانۂ غیب
گبرو ترسا وظیفه خور داری (2)
دوستاں را کجا کنی محروم
تو که با دشمناں نظر داری (3)

अदब 50 : तन्दुरुस्ती व ख़ुशी व फ़राग़ दस्ती की ह़ालत में दुआ़ की कसरत करे ताकि सख़्ती व रन्ज में भी दुआ़ क़बूल हो।

ह़दीस में है :

((مَنْ سَرَّه أن يستجيب الله له عند الشدائد والكُرَب فليكثر الدعاء في الرَّخاء))

---

❶ इन अश्आ़र का मफ़्हूम पिछली बात में मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने बयान फ़रमा दिया है।

❷ *ख़ज़ाना ग़ैब का तेरे खुला है बुत परस्तों पर*
तू नसरानी, यहूदी भी कभी मह़रूम न छोड़े

❸ *जो फ़रमाए करम ऐसा कि दुश्मन भी रहें शादां*
है तू तो दोस्ते अ़त्तारी ! रहे मह़रूम क्यूंकर तो

1. जिस को येह पसन्द हो कि मुश्किलात के वक़्त अल्लाह तआ़ला उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाए तो उस को चाहिये कि आसाइश के वक़्त दुआ़ की कसरत करे।

("سنن الترمذي"، باب ما جاء أن دعوة المسلم مستجابة، الحديث: ٣٣٩٣، ج٥، ص٢٤٨.)

अदब 51 : जिस अम्र का अन्जाम यक़ीनन न मा'लूम हो कि अपने लिये कैसा है बिला शर्ते ख़ैर व सलाह़ दुआ न करे।

قال الرضاء : मुम्किन है कि जिसे येह अपने ह़क़ में ख़ैर जानता है अन्जाम उस का बुरा हो और बिल अ़क्स तो अपने मुंह से अपनी मुज़र्रत (नुक़्सान की दुआ) मांगना होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿عَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ﴾

"क़रीब है कि तुम किसी चीज़ को मक्रूह समझोगे और वोह तुम्हारे लिये बेहतर है और क़रीब है कि तुम किसी चीज़ को दोस्त रखोगे और वोह तुम्हारे लिये बुरी है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।" (پ۲، البقرۃ: ۲۱۶)

और फ़रमाता है : ﴿عَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ یَجْعَلَ اللّٰهُ فِیْهِ خَیْرًا كَثِیْرًا﴾

"क़रीब है कि तुम बा'ज़ चीज़ों को ना पसन्द करोगे और अल्लाह तआला उन में ख़ैरे कसीर रखेगा।" (پ٤، النسآء: ١٩)

लिहाज़ा दुआ यूं चाहिये कि इलाही ! अगर मेरे लिये येह अम्र (काम) दीन व दुन्या व आख़िरत में बेहतर है तो अ़ता फ़रमा।

जिस की ख़ैरिय्यत व मुज़र्रत यक़ीनी है जिस में दूसरा पहलू नहीं वहां इस शर्त व इस्तिस्ना की ह़ाजत नहीं। म-सलन : "इलाही ! मैं तुझ से जन्नत मांगता हूं। इलाही ! मुझ को दोज़ख़ से बचा।" आमीन

येह वोह इकावन[51] आदाब हैं जो ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इफ़ादा फ़रमाए अब फ़क़ीर غفراللہ تعالٰی لہٗ नव[9] और ज़िक्र करता है कि साठ[60] का अ़दद कामिल हो। وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق :

अदब 52 : दुआ़ तन्हाई में करे।

ह़दीस में आया है : "पोशीदा की एक दुआ़ अ़लानिया की सत्तर दुआ़ के बराबर है।"

رواه أبو الشيخ والديلمي عن أنس رضي الله تعالى عنه.(1)

फ़ाइदए अ़जीबा : अख़ीर मुहर्रम 1304 सि.हि. में फ़क़ीर ने बदायूं मद्रसा त़य्यिबा क़ादिरिय्या में ख़्वाब देखा कि "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" निहायत ख़ुश ख़त़ व मह़श्शा मेरे सामने है। उस के ह़ाशिये पर ग़ालिबन ब रिवायते इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह ह़दीस लिखी है कि

الدعاء في الشمس مرّة أفضل من الدعاء في الظلّ سبع عشرة مرة

"या'नी धूप में एक बार दुआ़ साए में सत्तर बार की दुआ़ से बेहतर है।"

इस मज़्मून की ह़दीस फ़क़ीर की नज़र से कहीं न गुज़री ह़ज़रत अ़ज़ीमुल ब-र-कत मौलाना मौलवी मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर साह़िब क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُم से भी इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) फ़रमाया : "मेरे ख़याल में भी नहीं।" وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

इसी त़रह़ अब कोई चन्द महीने हुए और सय्यिद शाह फ़ज़्ल हुसैन साह़िब पंजाबी फ़क़ीर से "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" पढ़ते थे एक दिन फ़क़ीर ने अपने मकान में ख़्वाब देखा कि "जामेअ़ सह़ीह़" मत़्बूअ़ मत़्बए अह़मदी पेशे नज़र है और उस में जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की एक असरे मौक़ूफ़ में किसी मुअज़्ज़िन की अज़ान का ज़िक्र और उस पर बह़स है कि उस की अज़ान मुत़ाबिक़े सुन्नत है या नहीं इस पर ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : قد سمعه أفقه بلدنا وأعظمهم علماً أبو حنيفة

(1) "مسند الفردوس" للديلمي، باب الدال، الحديث: ٢٨٦٩، ج١، ص٣٨٧

या'नी उस की अज़ान क्यूंकर सहीह़ न हो ह़ालां कि उसे सुना है हमारे शह्र के अक्मले फु-क़हा व आ'ज़मे उ़-लमा अबू ह़नीफ़ा ने।

ख़्वाब की बातें अक्सर तावील त़लब होती हैं तो ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ह़ज़रते इमाम पर **ज़मानन तक़द्दुम** कुछ मुज़िर नहीं, وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعۡلَم

अदब 53 : जब क़स्दे दुआ हो पहले मिस्वाक कर ले कि अब अपने रब से मुनाजात करेगा, ऐसी ह़ालत में राइह़ए **मु-तग़य्यरा** (या'नी मुंह की बदबू) सख़्त ना पसन्द है ख़ुसूसन हुक़्क़ा पीने वाले, ख़ुसूसन तम्बाकू खाने वालों को इस अदब की रिआयत ज़िक्र व दुआ व नमाज़ में निहायत अहम है, कच्चा लह्सन पियाज़ खाने पर हुक्म हुवा कि मस्जिद में न आए[1] वोही हुक्म यहां भी होगा, मअ़ हाज़ा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मिस्वाक रब को राज़ी करने वाली है।"[2] और ज़ाहिर है कि रिज़ाए रब बाइ़से हुसूले अरब है (अल्लाह तआला की रिज़ा, मुराद मिलने का सबब है)।

अदब 54 : जहां तक मुम्किन हो दुआ ब ज़बाने अ़-रबी करे "गु-ररुल अफ़्कार" वग़ैरा में हमारे उ़-लमा ने तस्रीह़ फ़रमाई कि ग़ैरे अ़-रबी में दुआ मक्रूह है।[3]

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب نهي من أكل ثوماً وبصلاً أو كراثاً أو نحوها، الحديث: ٥٦٤، ص٢٨٢.

2 "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب سواك الرطب واليابس للصائم، الحديث: ١٩٣٣، ج١، ص٦٣٧.

3 "ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، مطلب في الدعاء بغير العربية، ج٢، ص ٢٨٥، (بحوالہ "غرر الأفكار").

وما وقع في "النهر" و"الدر"[1] من التحريم فمحمله ما إذا لم يعلم معناه كمثل الرقية بالعجمية.[2]

इमाम वलवालिजी फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआ़ला ग़ैरे अ़-रबी को दोस्त नहीं रखता" और फ़रमाते हैं : "अ़-रबी में दुआ़ इजाबत से ज़ियादा क़रीब होती है।"[3]

मैं कहता हूं : मगर जो अ़-रबी न समझता हो और मा'ना सीख कर ब तकल्लुफ़ उन की त़रफ़ ख़याल ले जाना मुशव्विशे ख़ातिर (इरादे को तशवीश में डालता) व मुख़िल्ले हुज़ूर (यक्सूई में रुकावट) हो वोह अपनी ही ज़बान में अल्लाह तआ़ला को पुकारे कि हुज़ूर व यक्सूई अहम उमूर है।

अदब 55 : अगर दुआ़ करते करते नींद ग़ालिब हो जगह बदल दे यूं भी न जाए तो वुज़ू कर ले यूं भी न जाए तो मौक़ूफ़ करे। सह़ीह़ ह़दीस में इस की वसिय्यत फ़रमाई कि मबादा (ख़ुदा न ख़्वास्ता) इस्तिग़फ़ार करना चाहे और ज़बान से अपने लिये बद दुआ़ निकल जाए।[4]

---

1 "النهر الفائق"، كتاب الصلاة، فصل إذا أراد الدخول في الصلاة كبر، ج١، ص٢٢٤.
و"الدر المختار"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ج٢، ص٢٨٥.

2 "नहरुल फ़ाइक़" और "दुर्रे मुख़्तार" में जो ग़ैरे अ़-रबी में दुआ़ को ह़राम फ़रमाया वोह हुक्म उस वक़्त है कि जब ग़ैरे अ़-रबी में दुआ़ करने वाला उन अल्फ़ाज़ के मा'ना न जानता हो जैसा कि ग़ैरे अ़-रबी में मन्तर वग़ैरा या झाड़ फूंक करना जैसा कि बा'ज़ अवरादो वज़ाइफ़ या मन्तर वग़ैरा फ़ारसी में होते हैं कि पढ़ने वाला उन के मा'ना नहीं जानता इस त़रह़ पढ़ने में अन्देशा है कि मा'ना न जानते हुए कोई बात ख़िलाफ़े शर-अ़ कह जाए।

3 "الولوالجية"، كتاب الطهارة، الفصل التاسع، ج١، ص٩٠.

4 "صحيح البخاري"،باب الوضوء من النوم ... إلخ، الحديث: ٢١٢، ج١ ،ص ٩٤
و"سنن الترمذي"،باب ما جاء في الصلاة عند النعاس، الحديث: ٣٥٥، ج١، ص٣٧٢.

अदब 56 أقول : हालते ग़ज़ब में बद दुआ का क़स्द न करे कि ग़ज़ब अ़क़्ल को छुपा लेता है क्या अ़जब कि बा'दे ज़वाले ग़ज़ब ख़ुद उस बद दुआ पर नादिम हो, इस मज़्मून को ह़दीस : ((لا يقضي القاضي وهو غضبان))[1] से इस्तिम्बात़ कर सकते हैं।

अदब 57 : दुआ में तकब्बुर और शर्म से बचे म-सलन तन्हाई में दुआ ब निहायत तज़र्रोअ़ व इल्ह़ाह़ (गिर्या व ज़ारी और गिड़गिड़ा कर) कर रहा है। अपना मुंह ख़ूब गिड़गिड़ाने का बना रहा है अब कोई आ गया तो इस ह़ालत से शरमा कर मौक़ूफ़ कर दिया। येह सख़्त ह़माक़त और مَعَاذَالله, अल्लाह की जनाब में तकब्बुर से मुशाबेह है उस के हुज़ूर गिड़गिड़ाना मूजिबे हज़ारां इ़ज़्ज़त है, न कि مَعَاذَالله ख़िलाफ़े शानो शौकत।

अदब 58 : दुआ में जैसे कि बुलन्द आवाज़ न चाहिये, निहायत पस्त भी न करे और इस क़दर तो ज़रूर है कि अपने कान तक आवाज़ पहुंचे। बिग़ैर इस के मज़हबे राजेह़ पर कोई कलाम व क़िराअत, कलाम व क़िराअत नहीं ठहरता।

وقال الله تعالى: ﴿وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيلًا﴾[2]

अदब 59 : दुआ में सिर्फ़ मुद्दआ पर नज़र न रखे बल्कि नफ़्से दुआ को मक़्सूदे बिज़्ज़ात जाने कि वोह ख़ुद इ़बादत बल्कि मग़्ज़े इ़बादत है मक़्सद

---

1 या'नी : गुस्से के वक़्त क़ाज़ी कोई फ़ैसला न करे।

"سنن ابن ماجه"، كتاب الأحكام، باب لا يحكم الحاكم وهو غضبان، الحديث: ٢٣١٦، ج٣، ص٩٣، ملتقطاً.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो, न बिलकुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो।" (پ١٥، بني إسرآئيل: ١١٠)

मिलना न मिलना दर कनार, लज़्ज़ते मुनाजात, नक़्दे वक़्त है ।[1] وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْن. (सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये जो सब जहानों का पालने वाला है) ।

अदब 60 : तन्हा अपनी दुआ़ पर क़नाअ़त न करे बल्कि सु-लहा व अत्फ़ाल (या'नी नेक लोगों और बच्चों) व मसाकीन और बेवा औ़रतों के साथ नेक सुलूक कर के उन से भी दुआ़ चाहे कि अक़्रब ब क़बूल है (या'नी क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब है) ।

अव्वलन : जब एह़सान किया वोह राज़ी होंगे और दिल से उस के लिये दुआ़ करेंगे और मुसल्मान की दुआ़ मुसल्मान के लिये उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजू-दगी) में निहायत जल्द क़बूल होती है ।

सानियन : उन की रिज़ा मन्दी से अल्लाह राज़ी होगा । नबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद में है जब तक बन्दा अपने मुसल्मान भाई की मदद में है और जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे अल्लाह तआ़ला उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाए ।"[2]

सालिसन : उन का मुंह इस के लिये दुआ़ में इस के मुंह से बेहतर होगा।

मन्क़ूल है ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़िताब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ़ मांग जिस से तूने गुनाह न किया । अ़र्ज़ की इलाही ! वोह मुंह कहां से लाऊं ? (येह अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तवाज़ोअ़ है

---

1 या'नी : दुआ़ में सिर्फ़ अपना मक़्सद पेशे नज़र नहीं होना चाहिये बल्कि दुआ़ जो कि ख़ुद इ़बादत का मग़्ज़ है वोह पेशे नज़र होना चाहिये, मक़्सद ह़ासिल होना तो दूर की बात है इस वक़्त तो वोह मुनाजात जो वोह अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में कर रहा है उस की लज़्ज़तों में गुम हो जाना उस का मत़्लूब व मक़्सूद होना चाहिये ।

2 "صحیح مسلم"، کتاب الذکر والدعاء... إلخ، باب فضل الاجتماع... إلخ، الحدیث: ۲۶۹۹، ص۱۴۴۷-۱۴۴۸.

वरना वोह यक़ीनन हर गुनाह से मा'सूम हैं) फ़रमाया : "औरों से दुआ करा, कि उन के मुंह से तूने गुनाह न किया।"(1)

अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ मदीनए मुनव्वरह के बच्चों से अपने लिये दुआ कराते कि दुआ करो उ़मर बख़्शा जाए।

और साइम (रोज़ादार) व ह़ाजी व मरीज़ व मुब्तला से दुआ कराना असर तमाम रखता है। इन तीन की ह़दीसें तो फ़स्ल हश्तुम में आएंगी और मुब्तला वोह जो किसी दुन्यवी बला में गिरिफ़्तार हो येह मरीज़ से आ़म हो।

अबुश्शैख़ ने "किताबुस्सवाब" में अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ((اغتنموا دعوة المؤمن المبتلى))

"मुसल्मान मुब्तला की दुआ ग़नीमत जानो।"(2)

फ़ाएदा :

जब मत़लब ह़ासिल हो उसे ख़ुदाए तआ़ला की इ़नायत व मेह्रबानी समझे, अपनी चालाकी व दानाई न जाने। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوْتِیْتُهٗ عَلٰی عِلْمٍ﴾

"जब आदमी को तक्लीफ़ पहुंचती है हम से दुआ करता है। फिर

---

(1) "मस्नविये मौलाना रूम" (मुतर्जम), दफ़्तरे सिवुम, स. 4

(2) "جامع الأحاديث" للسيوطي، الهمزة مع الغين، الحديث: ٣٤٤٦، ج٢، ص٦

जब हम उसे ने'मत देते हैं कहता है येह मुझे अपनी दानाई से मिली।" (پ٢٤، سورة الزمر: ٤٩)

﴿بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ﴾

"बल्कि वोह ने'मत आज़माइश है।" (پ٢٤، الزمر: ٤٩)

कि देखें हमारा एह़सान मानता है या नहीं।

﴿وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾

"लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।" (پ٩، الأعراف: ١٨٧)

और उस ने'मत को अपनी दानाई का नतीजा समझते हैं। ऐसा शख़्स फिर अगर दुआ़ करता है क़बूल नहीं होती। जो करीम का एह़सान नहीं मानता लाइक़े अ़त़ा नहीं मस्तूजिबे (या'नी मुस्तह़िक़े) सज़ा है।

﴿مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا﴾

"जो हमारी याद से मुंह फैरे, उस के लिये है तंग ज़िन्दगानी।" (پ١٦، طٰه: ١٢٤)

قال الرضاء : ज़ाहिर है कि जब ने'मत मिले शुक्र वाजिब है कि क़ाइम रहे और ज़ियादा मिले। ह़दीस शरीफ़ में है : "ने'मतें वह़शी होती हैं, इन्हें शुक्र से मुक़य्यद करो।"(1)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ﴾

"और बेशक अगर तुम शुक्र करोगे, मैं तुम्हें ज़ियादा दूंगा।" (پ١٣، إبراهيم: ٧)

---

(1) لم نعثر على هذا الحديث ولكن عن بعض السلف: (النعم وحشية فقيدوها بالشكر).
(إحياء علوم الدين"، كتاب الصبر والشكر، الشطر الثاني، الركن الثاني، ج٤، ص١٥٦).

फ़ाएदा :

قال الرضاء : ह़दीस में क़बूले दुआ देखने के वक़्त येह दुआ इर्शाद फ़रमाई :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ)).[1]

وَبِهٖ تمّ فصل الآداب، واللّٰه تعالى أعلم بالصواب.[2]

---

❶ सब ख़ूबियां उस मा'बूदे करीम को जिस की ज़ात व इ़ज़्ज़त व जलाल ही पर तमाम अच्छाइयों का मुन्तहा है।

"المستدرك"، كتاب الدعاء، الدعاء إذا شفي من مرض...إلخ، الحديث: ٢٠٤٣، ج٢، ص٢٤١.

و"الحصن الحصين"، ما يقول من استجيب دعاؤه، ص٣٥.

❷ और इसी के साथ आदाबे दुआ की फ़स्ल मुकम्मल हुई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही सब से ज़ियादा दुरुस्ती को जानने वाला है।

फ़स्ले सिवुम अवक़ाते इजाबत में

قال الرضاء : वोह अवक़ात व ह़ालात कि जिन में ब नज़र इर्शादे अह़ादीस व अइम्मए दीन, उम्मीदे इजाबत بِحَمْدِاللّٰہِ क़वी है, पेंतालीस[45] हैं।

अज़ आं जुम्ला (उन में से) छत्तीस[36] ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ज़िक्र फ़रमाए और नव[9] फ़क़ीर غَفَرَاللّٰہُ تَعَالٰی لَہٗ ने बढ़ाए।﴿

अव्वल (1) : शबे क़द्र।

قال الرضاء : कि बक़ौले अक्सर शबे बिस्तो हफ़्तुम माहे र-मज़ान है।﴿ (या'नी र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब है)।

दुवुम (2) : रोज़े अ़-रफ़ा या'नी नहुम ज़िल ह़िज्जा। (येह आ़म है ह़ाजी व ग़ैरे ह़ाजी के लिये मगर ह़ाजी के लिये इस में भी ख़ुसूसिय्यत है।)

قال الرضاء : ख़ुसूसन बा'दे ज़वाल ख़ुसूसन अ़-रफ़ात में।﴿

सिवुम (3) : माहे र-मज़ान मुत़्लक़न।

चहारुम (4) : शबे जुमुआ़।

पन्जुम (5) : रोज़े जुमुआ़।

शशुम (6) : ठीक आधी रात कि इस वक़्त तजल्लिये ख़ास होती है।

हफ़्तुम (7) : सह़र।

قال الرضاء : या'नी रात का छटा ह़िस्सा रहे।﴿

हश्तुम (8) : साअ़ते जुमुआ़ या'नी क़ब्ले ग़ुरूबे शम्स (या'नी जुमुआ़ के दिन मग़रिब से ज़रा पहले) कि अक्सर अक़्वाल में साअ़ते मरजुव्वह वोही है (या'नी जुमुआ़ की वोह साअ़त जिस में क़बूलिय्यते दुआ़ की उम्मीद ज़ियादा है)।

قال الرضاء : साअ़ते जुमुआ़ के बारे में अगर्चे अक़्वाले उ़-लमा चालीस से मु-तजाविज़ हुए (या'नी बढ़ गए) मगर क़वी व राजेह़ व मुख़्तार अकाबिर मुह़क़्क़िक़ीन व जमाअ़ाते कसीरए अइम्मए दीन दो[2] क़ौल हैं (या'नी वोह क़ौल जिसे अकाबिर मुह़क़्क़िक़ीन उ़-लमा और कसीर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ الله ने इख़्तियार फ़रमाया दो हैं) :

एक वोह जिस की त़रफ़ ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ وَنُوِّرَ قَبْرُهٗ ने इशारा फ़रमाया या'नी साअ़ते अख़ीरए रोज़े जुमुआ़ ग़ुरूबे आफ़्ताब से कुछ ही पहले एक लत़ीफ़ वक़्त।

"अश्बाह" में फ़रमाया : "हमारा येही मज़्हब है आ़म्मए मशाइख़े ह़-नफ़िय्या इसी त़रफ़ गए।"[1]

यूं ही "ततार ख़ानिया" में इसे हमारे मशाइख़े किराम का मस्लक ठहराया।[2]

और येह मज़्हब है **आ़लिमुल किताबैन** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम व ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का।[3]

और इसी त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाई सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने।[4]

---

1 "الأشباه والنظائر"، الفن الثاني: الفوائد، كتاب الصلاة، ص١٣٩.

2 "التتارخانية"، كتاب الصلاة، الفصل الخامس والعشرون، نوع آخر من هذا الفصل، فضائل الجمعة، ج٢، ص ٨٤.

3 क़ब्ले इस्लाम सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا यहूदियों के आ़लिम थे। चुनान्चे क़ुरआने पाक व तौरेत शरीफ़ दोनों के आ़लिम होने की वजह से "**आ़लिमुल किताबैन**" या'नी दो आस्मानी किताबों के आ़लिम कहलाते हैं।

4 "الموطأ" للإمام مالك، كتاب الجمعة، باب: ما جاء في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٢٤٦، ج١، ص١١٥-١١٦، ملخصاً.

و"شعب الايمان"، باب في الصلاة، فضل الجمعة، الحديث: ٢٩٧٥، ج٣، ص٩١-٩٣.

और ऐसा ही मन्कूल है ह़ज़रते बतूल ज़हरा صَلَوَاتُ اللّٰہِ وَسَلَامُہٗ عَلٰی اَبِیْھَا وَعَلَیْھَا से ।(1)

और सईद बिन मन्सूर ब स-नदे सह़ीह़ अबू स-लमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान से रावी कि कुछ सह़ाबए किराम ने जम्अ़ हो कर साअ़ते जुमुआ़ का तज़्किरा फ़रमाया, फिर सब इस क़ौल पर मुत्तफ़िक़ हो कर मु-तफ़र्रिक़ हुए (या'नी सब इस क़ौल पर इत्तिफ़ाक़ करने के बा'द जुदा हुए) कि वोह रोज़े जुमुआ़ की पिछली साअ़त है।(2)

और येही मज़हब है इमाम शाफ़ेई व इमाम मुह़म्मद व इमाम इस्ह़ाक़ बिन राहवैह व इब्नुज़्ज़म्लकानी और इन के तिल्मीज़ (शागिर्द) अ़लाई वग़ैरहुम उ़-लमा का।(3)

इमाम अबू अ़म्र बिन अ़ब्दुल बर ने फ़रमाया : "इस बाब में इस से साबित तर कोई क़ौल नहीं।"(4)

फ़ाज़िल अ़ली क़ारी ने कहा : "येह तमाम अक़्वाल से ज़ियादा लाइक़े ए'तिबार है।"

इमाम अह़मद फ़रमाते हैं : "अक्सर अह़ादीस इसी पर हैं"(5) व लिहाज़ा ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इसी को इख़्तियार फ़रमाया।

दूसरा क़ौल जब इमाम मिम्बर पर बैठे उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ़ के सलाम तक साअ़ते मौऊ़दा है (या'नी येह वोह साअ़त है जिस में

---

1 "شعب الإيمان"، باب في الصلاة، فضل الجمعة، الحديث: ٢٩٧٧، ج٣، ص٩٣.

2 "فتح الباري"، كتاب الجمعة، باب الساعة التي في يوم الجمعة، تحت الحديث: ٩٣٥، ج٣، ص٣٦٥، (بحواله سعيد بن منصور).

3 "فتح الباري"، كتاب الجمعة، باب الساعة... إلخ، تحت الحديث: ٩٣٥، ج٣، ص٣٦٥.

4 المرجع السابق.

5 المرجع السابق.

दुआ़ की क़बूलिय्यत का वा'दा है) ।

येह ह़दीसे मरफ़ूअ़[1] अबी मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में मन्सूस (या'नी बयान) हुवा ।[2]

इमाम मुस्लिम ने फ़रमाया : "येह सब अक़्वाल से असह़्ह़ और अह़सन है ।" (या'नी येह क़ौल सब अक़्वाल से ज़ियादा अच्छा और सह़ीह़ तर है ।) [3]

और इसी को इमाम बैहक़ी व इमाम इब्नुल अ़-रबी व इमाम क़ुरतुबी ने इख़्तियार किया ।[4]

इमाम न-ववी ने फ़रमाया : "येही सह़ीह़ बल्कि सवाब है ।" (या'नी ह़क़ है ।)[5]

और इसी त़रह़ "रौज़ा" व "दुर्रे मुख़्तार" में इस की तस्ह़ीह़ की ।[6]

---

1 **ह़दीसे मरफ़ूअ़ :** هو ما ينتهي إلى النبي صلى الله عليه وعلى آله وصحبه وسلم غايةُ الإسناد या'नी : "वोह ह़दीस जिस की सनद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तक पहुंचती हो ह़दीसे मरफ़ूअ़ कहलाती है ।" ("نزهة النظر في توضيح نخبة الفكر"، ص١٠٤)

2 "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٨٥٣، ص٤٢٥.

3 "فتح الباري"، كتاب الجمعة، باب الساعة التي في يوم الجمعة، تحت الحديث: ٩٣٥، ج٣، ص٣٦٥.

4 المرجع السابق.

5 "شرح النووي" على المسلم، كتاب الجمعة، فصل في ذكر الساعة التي تقبل ...إلخ، ج١، ص٢٨١.

6 "الدر المختار"، كتاب الصلاة، ج٣، ص٤٧-٤٨. و"فتح الباري"، كتاب الجمعة، باب الساعة التي... إلخ، تحت الحديث: ٩٣٥، ج٣، ص٣٦٥، (بحواله"روضه").

दलाइले त़-रफ़ैन ''फ़त्हुल बारी'' वग़ैरा में मब्सूत़[1] और इन्साफ़ येह है कि दोनों जानिब काफ़ी कुव्वतें हैं त़ालिबे ख़ैर को चाहिये कि दोनों वक़्त दुआ़ में कोशिश करे।

येह त़रीक़ा जम्अ़ का इमाम अह़मद वग़ैरा अकाबिर से मन्क़ूल, और बेशक इस में उम्मीद अक़्वी व अतम (या'नी इस में ज़ियादा कामिल व क़वी उम्मीद है) और मुसा-द-क़ते मत़्लूब की तवक़्क़ोअ़ आ'ज़म (या'नी मुराद बर आने की बहुत तवक़्क़ोअ़ है) وَاللّٰہُ سُبْحَانَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ۔

मैं कहता हूं : इस दूसरे क़ौल पर इस माबैन (दरमियान) में दुआ़ दिल से होगी। या ज़ुबान से दुआ़ का मौक़अ़ बा'द अत्तहिय्यात व दुरूद के मिलेगा, ख़्वाह जल्सए बैनस्सज्दतैन में, जब कि इमाम भी वहां क़दरे तवक़्क़ुफ़ करे, فَافْہَم ﴾[2]

---

❶ या'नी मज़्कूरा दोनों अक़्वाल की ताईद में कसीर दलाइल किताब ''फ़त्हुल बारी'' वग़ैरा में तफ़्सीलन मज़्कूर हैं।

انظر للتفصيل: "فتح الباري"، كتاب الجمعة، باب الساعة التي في يوم الجمعة، تحت الحديث: ٩٣٥، ج٣، ص٣٦٥.

❷ या'नी जुमुआ़ के दिन क़बूलिय्यते दुआ़ के बाब में दूसरी अहम साअ़त, इमाम के मिम्बर पर आने के बा'द से फ़र्ज़े जुमुआ़ के सलाम फैरने तक है जिस पर दलाइल भी आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाए, बहर ह़ाल इस दौरान दिल से ही दुआ़ मांगी जाएगी क्यूं कि इस दौरान किसी भी क़िस्म का कलाम मन्अ़ है इसी की त़रफ़ इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने ''فَافْہَم'' से इशारा फ़रमाया है, हां अलबत्ता ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस दौरान भी दो वक़्त ऐसे बताए हैं जिन में ज़ुबान से दुआ़ मांगी जा सकेगी।

नहुम (9) : रोज़े चार शम्बा (बुध) ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान।

قال الرضاء : खुसूसन मस्जिदुल फ़त्ह़ में कि मसाजिदे मदीना से एक मस्जिद है। फ़स्ले आयन्दा (स. 135) में इस की ह़दीस मज़्कूर होगी।﴾

दहुम (10) : मस्जिद को जाते वक़्त।

याज़्दहुम (11) : वक़्ते अज़ान।

قال الرضاء : ह़दीस में है : इस वक़्त दरहाए आस्मान (आस्मान के दरवाज़े) खोले जाते हैं।﴾[1]

दुवाज़्दहुम (12) : वक़्ते तक्बीर।

सीज़्दहुम (13) : दरमियाने अज़ान व इक़ामत।

चहार दहुम (14) : जब इमाम "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" कहे।

قال الرضاء : यहां दुआ वोही "आमीन" है या दिल में मांगे।﴾

पांज़्दहुम (15) ता नूज़्दहुम (19) : पन्जगाना फ़र्ज़ों के बा'द।

قال الرضاء : رواه الترمذي والنسائي عن أبي أمامة رضي الله تعالى عنه[2]

---

[1] "المصنف" لابن أبي شيبة، كتاب الدعاء، الساعة التي يستجاب فيها الدعاء، الحديث: ٧، ج٧، ص٣٥.

[2] इसे इमाम तिरमिज़ी व नसाई ने ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٥١٠، ج٥، ص٣٠٠.

बल्कि हर नमाज़ के बा'द

كما رواه الطبراني في "الكبير" عن العِرباض بن سارية رضي الله تعالٰى عنه مرفوعاً[1]

और कलामे मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ में ब इत्तिबाए ह़दीस अव्वल फ़राइज़े पन्जगाना की तख़्सीस इन की फ़ज़ीलत व मज़िय्यत (उ़म्दगी) के सबब से है। [2]﴿كما أفاده علي القارئ في "الحرز".﴾

बिस्तुम (20) : सज्दे में।

قال الرضاء : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बन्दा इस से ज़ियादा कभी अपने रब से क़रीब नहीं होता, तो सज्दे में दुआ ज़ियादा मांगो।"﴾[3]

बिस्त व यकुम (21) : बा'दे तिलावते क़ुरआने मजीद।

बिस्त व दुवुम (22) : बा'दे इस्तिमाए क़ुरआन शरीफ़ (तवज्जोह से तिलावते क़ुरआन सुनने के बा'द)।

---

❶ जैसा कि इमाम त़-बरानी ने मो'जमे कबीर में ह़ज़रते इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरफ़ूअ़न रिवायत किया।

قد وجدنا في "المعجم الكبير" الحديث: ٦٤٧، ج١٨، ص٢٥٩ عن العرباض بن سارية، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: (من صلى صلاة فريضة فله دعوة مستجابة، ومن ختم القرآن فله دعوة مستجابة)، ولكن قال الخفاجي في "نسيم الرياض"، ج٤، ص٨٥ تحت رواية عثمان بن حُنيف رضي الله عنه (اللّٰهم إني أسألك وأتوجه.....اللّٰهم شفعه في...الخ): ومنه علم استحباب الدعاء عقب الصلاة.

❷ जैसा कि मुल्ला अ़ली क़ारी ने "अल ह़िर्ज़ुस्समीन" में इस का इफ़ादा फ़रमाया है।

❸ "صحيح مسلم"، باب ما يقال في الركوع والسجود، الحديث: ٤٨٢، ص ٢٥٠

बिस्त व सिवुम (23) : वक़्ते ख़त्मे क़ुरआने करीम।

قال الرضاء : ख़ुसूसन क़ारी (या'नी पढ़ने वाले) के लिये कि ब इर्शादे ह़दीस शरीफ़ एक दुआ ज़रूर मुस्तजाब (मक़्बूल) है।[1]

बिस्त व चहारुम (24) : जब मुसल्मान जिहाद में सफ़ बांधें।

बिस्त व पन्जुम (25) : जब कुफ़्फ़ार से लड़ाई गर्म हो।

बिस्त व शशुम (26) : आबे ज़मज़म पी कर।

قال الرضاء : ह़दीस में फ़रमाया : ((زمزم لما شرب له))[2], "ज़मज़म उस लिये है जिस लिये पिया जाए।" صحّحه الإمام ابن الجزري[3] या'नी जिस निय्यत से पिया जाए वोह ह़ासिल हो।

सह़ीह़ ह़दीस में है : अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ब्ले ज़ुहूरे इस्लाम महीना भर सिर्फ़ आबे ज़मज़म पिया मक्का में पोशीदा थे कुछ खाने को न मिलता तन्हा इस मुबारक पानी ने खाने पानी दोनों का काम दिया और बदन निहायत तरो ताज़ा और फ़र्बा हो गया।[4]

बिस्त व हफ़्तुम (27) : जब रोज़ा इफ़्त़ार करे।

---

1 "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٦٤٧، ج١٨، ص٢٥٩.

2 "سنن ابن ماجه"، كتاب الحج، باب: الشرب من زمزم، الحديث: ٣٠٦٢، ج٣، ص ٤٩٠.

3 इमाम इब्नुल जज़्री ने इस ह़दीसे मुबा-रका की तस्ह़ीह़ फ़रमाई।

"الحصن الحصين"، أدعية الحج، ص٨٩.

4 "صحيح مسلم"، كتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل أبي ذر، الحديث: ٢٤٧٢، ص١٣٤١-١٣٤٣.

बिस्त व हश्तुम (28) : मींह बरसते में।

बिस्त व नहुम (29) : जब मुर्ग़ अज़ान दे।

قال الرضاء : येह सब अवक़ात ह़दीस में आए हैं और मुर्ग़ बोलने के बाब में इर्शाद हुवा है कि वोह मला-इ-कए रह़मत को देख कर बोलता है उस वक़्त अल्लाह का फ़ज़्ल मांगो।[1] फ़क़ीर उस वक़्त येह दुआ मांगता है : ''يَا ذَا الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ صَلِّ عَلٰى فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِ الْعَظِيْمِ''۔[2]

सियुम (30) : मज्मए मुसल्मानान में।

قال الرضاء : उ़-लमा फ़रमाते हैं : जहां चालीस मुसल्मान जम्अ़ हों उन में एक वलिय्युल्लाह (अल्लाह का वली) ज़रूर होगा।[3]

सी व यकुम (31) : ज़िक्रे ख़ुदा और रसूल की मजलिस में।

قال الرضاء : सह़ीह़ ह़दीस शरीफ़ में है कि इन की दुआ पर फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं।[4]

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب بدء الخلق، باب خير مال المسلم غنم...إلخ، الحديث: ٣٣٠٣، ج٢، ص٤٠٥-٤٠٦.

2 ऐ बड़े फ़ज़्ल वाले ! अपने फ़ज़्ले अ़ज़ीम या'नी मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ले अ़ज़ीम का सुवाल करता हूं।

3 "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٠٢، ج١، ص١٩٠.
و"الجامع الصغير"، الحديث: ٧١٤، ص٥٠.
و"فيض القدير"، تحت الحديث: ٧١٤، ج١، ص٤٩٧.

4 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ١٨٧٢، الجزء الأول، ج١، ص٢٢٢.

सी व दुवुम (32) : मुसल्मान मय्यित के पास ख़ुसूसन जब उस की आंखें बन्द करें।

قال الرضاء : यहां भी ह़दीस शरीफ़ में आया कि उस वक़्त नेक ही बात मुंह से निकालो कि जो कुछ कहोगे फ़िरिश्ते उस पर आमीन कहेंगे।﴾[1]

सी व सिवुम (33) : वक़्ते रिक़्क़ते दिल।

قال الرضاء : नबी صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से ह़दीस में है :

"रिक़्क़ते क़ल्ब (या'नी दिल की नरमी और गिर्या वग़ैरा) के वक़्त दुआ ग़नीमत जानो कि वोह रह़मत है।"

أخرجه الديلمي عن أبي بن كعب رضي الله تعالٰى عنه ﴾[2]

सी व चहारुम (34) : सूरज ढलते।

قال الرضاء : ह़दीस में है : "इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खुलते हैं।"[3]

नीज़ ह़दीस **ह़सन बि तुरुक़िही** में फ़रमाया :

"जब साए पलटें और हवाएं चलें तो अपनी ह़ाजात अ़र्ज़ करो कि वोह साअ़त अव्वाबीन की है" (या'नी वोह वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

1 "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب في إغماض الميت... إلخ، الحديث: ٩٢٠، ص٤٥٨.

2 दैलमी ने ह़ज़रते अबी बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इस ह़दीस की तख़रीज की।
"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ٣٣٦٧، الجزء الثاني، ج١، ص٤٨، (بحوالہ دیلمی).

3 "سنن ابن ماجه"، ابواب اقامة الصلوات والسنّة فيها، باب في الأربع الركعات قبل الظهر، الحديث:١١٥٧، ج٢، ص٤٠.

त़रफ़ रुजूअ़ करने वालों का है)।

رواه الديلمي وأبو نعيم عن ابن أبي أوفى رضي الله عنه.[1]

सी व पन्जुम (35) : रात को सोने से जाग कर।

قال الرضاء : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो रात को सोते से जागे फिर कहे :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ.[2]

इस के बा'द اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ (ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा) कहे। या फ़रमाया : "दुआ़ मांगे, क़बूल हो और अगर वुज़ू कर के दो रक्अ़त पढ़े नमाज़ मक़्बूल हो।"

---

1 इस ह़दीस को दैलमी व अबू नुऐ़म ने इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया।

"حلية الأولياء"، الحديث: ١٠٤٧٤، ج٧، ص٢٦٧.

و"فيض القدير"، حرف الهمزة، تحت الحديث: ٧٧١، ج١، ص٥٢٣.

و"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ٣٣٤٥-٤٦، الجزء الثاني، ج١، ص٤٦.

2 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाहत है। सब ख़ूबियां उसी को और वोह हर शै पर क़ुदरत रखता है। सब ख़ूबियां उसी को रवा सब पाकी उसी के लिये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और बिग़ैर उस की ताईद के बुराई से बचने की कुछ क़ुदरत नहीं और न ही नेकी पर कुछ क़ुव्वत।

رواه البخاري، وأبو داود والترمذي والنسائي وابن ماجه عن عبادة بن الصامتِ رضي الله تعالٰى عنه. ﴾[1]

सी व शशुम (36) : बा'दे क़िराअते सूरए इख़्लास **وغیر ذلک**

قال الرضاء : येह वोह अवक़ात हैं कि ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ज़िक्र फ़रमाए।

अब नव⁹ फ़क़ीर ज़ाइद करता है।

सी व हफ़्तुम (37) : रजब की चांद रात।

सी व हश्तुम (38) : शबे बराअत।

सी व नहुम (39) : शबे ईदुल फ़ित्र

चेहलुम (40) : शबे ईदुल अज़्हा।

ابن عساكر عن أبي أمامة رضي الله تعالٰى عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم: ((خمس ليال لا تردّ فيهن الدعوة أوّل ليلة من رجب وليلة النصف من شعبان وليلة الجمعة وليلة الفطر وليلة النحر)).[2]

---

1 इस ह़दीसे मुबा-रका को इमाम बुख़ारी, अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसाई और इब्ने माजह ने ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"صحيح البخاري"، باب فضل من تعار من الليل فصلّى، الحديث: ١١٥٤، ج١، ص٣٩١.

2 इब्ने अ़साकिर ने ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से रिवायत किया कि "पांच रातें ऐसी हैं जिन में दुआ़ रद नहीं की जाती, रजब की पहली रात और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब या'नी शबे बराअत और शबे जुमुआ़ और शबे ईदुल फ़ित्र या'नी चांदरात और शबे नह़्र या'नी ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम की दसवीं शब।"

("ابن عساكر"، حرف الباء، بندار بن محمد بن أبو القاسم الفارسي الصوفي، ج١٠، ص٤٠٨.)

चेहेल व यकुम (41) : रात की पहली तिहाई ।(1)

चेहेल व दुवुम (42) : रात का पिछला सुलुस (या'नी आख़िरी तिहाई) ।

चेहेल व सिवुम (43) : अज़ान सुनने में बा'दे حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ।

चेहेल व चहारुम (44) : तिलावते सूरए अन्आ़म में दो इस्मे जलालत के माबैन या'नी आयए करीमा :

﴿مِثْلَ مَآ اُوْتِیَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَیْثُ یَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ﴾(2)

में दोनों लफ़्ज़े अल्लाह के दरमियान दुआ़ करे ।

चेहेल व पन्जुम (45) : क़िराअते "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" में जब अस्माए अस्ह़ाबे बद्र पर पहुंचे رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن ।

ह़ज़रते मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ का वोह छत्तीस36 ज़िक्र कर के "وغیر ذٰلک" फ़रमाना ख़ुद बताता था कि इन्हीं में ह़स्र नहीं और भी हैं । तो फ़क़ीर का येह नव9 बढ़ाना उसी कलिमा "وغیر ذٰلک" की शर्ह़ थी और हनूज़ ह़स्र नहीं ।(3)

وفضل الله أطيب وأكثر والحمد لله ربّ العلمين.﴾(4)

---

1. तिहाई रात या'नी मग़रिब के बा'द से फ़ज्र के वक़्त से पहले तक के वक़्त को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम करने पर पहला ह़िस्सा ।
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला, अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे ।" (پ۸، الأنعام: ۱۲٤)
3. या'नी ऐसा नहीं कि क़बूलिय्यत के तमाम मवाक़ेअ़ बयान कर दिये गए हों बल्कि मज़्कूरा अवक़ात के इ़लावा और भी हो सकते हैं ।
4. और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल सब से उ़म्दा व कसीर है और सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो परवर्द गार सारे जहान वालों का ।

फ़स्ले चहारुम अम्किनए इजाबत में[1]

قال الرضاء : वोह चवालीस हैं। तेईस23 ज़िक्र फ़रमूदए ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ और इक्कीस21 मुल्ह़क़ाते फ़क़ीर[2] ﴿غفر اللّٰہ تعالٰی لہٗ﴾

अव्वल (1) : मत़ाफ़।

قال الرضاء : येह वस्त़े मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में एक गोल क़िृत्आ है, संगे मरमर से मफ़रूश (या'नी ज़मीन का वोह टुकड़ा जिस पर संगे मरमर बिछा हुवा है) उस के बीच में का'बए मुअ़ज़्ज़मा है यहां त़वाफ़ करते हैं, ज़मानए अक़्दसे हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم में मस्जिद इसी क़दर थी, [3]﴿أَفَادَهُ الْمُصَنِّفُ قُدِّسَ سِرُّهٗ فِي "الْجَوَاهِرِ"۔﴾

दुवुम (2) : मुल्तज़म।

قال الرضاء : येह का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारे शर्क़ी के पारए जुनूबी का नाम है, जो दरमियाने दरे का'बा व संगे अस्वद वाक़ेअ़ है, यहां लिपट कर दुआ़ करते हैं.[4]

---

1. अम्किना, मकान की जम्अ़ है, और यहां मुराद येह है कि वोह मक़ामात जहां दुआ़ क़बूल होती है।
2. **मुल्ह़क़ात, मुल्ह़क़** की जम्अ़ है या'नी वोह चीज़ें जो बा'द में मिला दी गई हों।
3. येह बात मुसन्निफ़ (मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान قُدِّسَ سِرُّہٗ) ने अपनी किताब "جواهر البيان في أسرار الأركان" में बत़ौरे इफ़ादा बयान फ़रमाई। ("जवाहिरुल बयान", फ़स्ले चहारुम, स. 175 व 193)
4. मुल्तज़म वोह मक़ाम है जो का'बतुल्लाह शरीफ़ की मश्रिक़ी दीवार के जुनूबी हि़स्से में ह़-जरे अस्वद और बाबे का'बा के दरमियान वाक़ेअ़ है येही वोह मक़ाम है जहां लोग लिपट लिपट कर दुआ़एं मांगते हैं।

मुल्तज़म से तो गले लग के निकाले अरमां
अ-दबो शौक़ का यां बाहम उलझना देखो

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 95)

हृदीस शरीफ़ में है : हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मैं जब चाहूं जिब्राईल को देख लूं कि मुल्तज़म से लिपटा हुवा कह रहा है : ''((يَا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ لَا تُزِلْ عَنِّي نِعْمَةً أَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ))."[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के करम से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस गदाए बे नवा को भी येह दुआ करामत फ़रमाई बारहा मुल्तज़म से लिपट कर अ़र्ज़ किया है :

((يَـا وَاجِـدُ يَـا مَـاجِدُ لَا تُـزِلْ عَـنِّـي نِعْمَةً أَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ)) अर-ह़मुर्राहि़मीन عَمَّ نَوَالُهُ से उम्मीदे क़बूल है।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ أَجْمَعِيْنَ.﴿

सिवुम (3) : मुस्तजार कि रुक्ने शामी व यमानी के दरमियान मुहाज़िये मुल्तज़म (मुल्तज़म के सामने वाली दीवार में) वाक़ेअ़ है।

قَـالَ الـرِّضَـاء : या बर क़ियासे साबिक़ यूं कहिये कि येह का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारे ग़र्बी के पारए जुनूबी का नाम है, जो दरमियान दरे मस्दूद व रुक्ने यमानी वाक़ेअ़ है।﴾[2]

---

❶ ऐ हर शै को अपनी क़ुदरत से मौजूद करने वाले ! ऐ बुज़ुर्गी वाले ! मुझ से अपनी ने'मत को दूर न फ़रमाना, जो तूने मुझे अ़ता फ़रमाई।

"مرقاة المفاتيح"، كتاب الدعوات، باب أسماء الله تعالى، تحت الحديث: ٢٢٨٨، ج٥، ص١٠٦.

❷ मुस्तजार वोह मक़ाम है जो का'बतुल्लाह शरीफ़ की मग़रिबी दीवार के जुनूबी हिस्से में रुक्ने यमानी और दरे मस्दूद के दरमियान वाक़ेअ़ है।

दरे मस्दूद की वज़ाहत करते हुए रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपनी किताब "जवाहिरुल बयान" में इर्शाद फ़रमाते हैं : "यहां दरवाज़ा था हृज्जाज (या'नी हृज्जाज बिन यूसुफ़) ने बन्द कर दिया।" ("जवाहिरुल बयान", स. 175) =

चहारुम (4) : दाख़िले बैत (बैतुल्लाह शरीफ़ की इ़मारत के अन्दर)।

पन्जुम (5) : ज़ेरे मीज़ाब।[1]

शशुम (6) : ह़त़ीम।[2]

हफ़्तुम (7) : ह़-जरे अस्वद।[3]

= आशिक़े आ'ला ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی अपनी मायानाज़ तालीफ़ "रफ़ीक़ुल ह़-रमैन" में मुस्तजार के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : "रुक्ने यमानी और शामी के बीच में मग़रिबी दीवार का वोह ह़िस्सा जो "मुल्तज़म" के मुक़ाबिल या'नी ऐन पीछे की सीध में वाक़ेअ़ है।" ("रफ़ीक़ुल ह़-रमैन", स. 37)

(1) अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی इर्शाद फ़रमाते हैं : **"मीज़ाबे रह़मत"** "सोने का परनाला येह रुक्ने इ़राक़ी व शामी की शिमाली दीवार पर छत पर नस्ब है, उस से बारिश का पानी ह़त़ीम में निछावर होता है।" मज़ीद इस पर बत़ौरे ह़ाशिया इर्शाद फ़रमाते हैं : "मेरी नाक़िस मा'लूमात के मुत़ाबिक़ मक्के मदीने के ताजदार صلی اللہ تعالی علیہ والہٖ وسلم का अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में चेहरए नूरबार मीज़ाबे रह़मत की त़रफ़ है।"

("रफ़ीक़ुल ह़-रमैन", स. 37, 38)

ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे
अब्रे रह़मत का यहां ज़ोरे बरसना देखो

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 94)

(2) **ह़त़ीम :** "का'बए मुअ़ज़्ज़मा की शिमाली दीवार के पास निस्फ़ दाएरे की शक्ल में फ़सील (या'नी बाउन्ड्री) के अन्दर का ह़िस्सा। ह़त़ीम का'बा शरीफ़ ही का ह़िस्सा है और इस में दाख़िल होना ऐन का'बतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होना है।"

("रफ़ीक़ुल ह़-रमैन", स. 37)

(3) **ह़-जरे अस्वद :** येह वोह जन्नती पथ्थर है जो का'बतुल्लाह शरीफ़ के जुनूब मश्रिक़ी कोने में वाक़ेअ़ रुक्ने अस्वद में नस्ब है, मुसल्मान इसे चूमते और इस्तिलाम कर के अपने गुनाह धुलवाते हैं।

धो चुका ज़ुल्मते दिल बोसए संगे अस्वद
ख़ाक बोसिये मदीना का भी रुत्बा देखो

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 95)

हश्तुम (8) : रुक्ने यमानी।[1]

قال الرضاء : खुसूसन जब कि त़वाफ़ करते वहां गुज़र हो। ह़दीस शरीफ़ में है : यहां

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ"[2] कहे, हज़ार फ़िरिश्ते आमीन कहेंगे, رواه ابن ماجه.[3]

नहुम (9) : ख़ल्फ़े मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم। (मक़ामे इब्राहीम के पीछे)

दहुम (10) : नज़्द ज़मज़म (चाहे ज़मज़म के पास)

---

1 येह यमन की जानिब मग़रिबी कोना है। ("रफ़ीकुल ह़-रमैन", स. 36)

ऐमने तूर का था रुक्ने यमानी में फ़रोग़
शो'लए तूर यहां अन्जुमन आरा देखो

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 95)

नोट : इन तमाम मक़ामात की तफ़्सील और ह़ज व उ़म्रह के मसाइल व आदाब से आगाही के लिये "जवाहिरुल बयान", "अन्वारुल बिशारह" "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सए शशुम और "रफ़ीकुल ह़-रमैन" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

2 ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से दुन्या व आख़िरत में मुआ़फ़ी और हर बुराई से आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं। ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या व आख़िरत की भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा।

3 "مسند الفردوس" للديلمي، باب الواو، الحديث: ٧٣٣٢، ج٢، ص٣٩٧.

و في رواية ابن ماجه: يسأل عطاء بن أبي رباح عن الركن اليماني وهو يطوف بالبيت فقال عطاء حدثني أبو هريرة أنّ النبي صلى الله عليه وسلم قال: ((وكل به سبعون ملكا فمن قال: اللهم إنّي أسألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار قالوا: آمين)).

(سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب فضل الطواف، الحديث: ٢٩٥٧، ج٣، ص٤٣٩.)

याज़्दहुम (11) : सफ़ा।

दुवाज़्दहुम (12) : मर्वह।

सीज़्दहुम (13) : मस्आ़ ख़ुसूसन दोनों मीले सब्ज़ के दरमियान।[1]

चहार दहुम (14) : अ़-रफ़ात, ख़ुसूसन नज़्दे मौक़िफ़े नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم।

पांज़्दहुम (15) : मुज़्दलिफ़ा, ख़ुसूसन मश्अ़रुल ह़राम (या'नी ज-बले क़ुज़ह़)।

शांज़ दहुम (16) : मिना।

हफ़्दहुम (17), हज़्दहुम (18), नूज़्दहुम (19) : ज-मराते सलासा।[2]

बिस्तुम (20) : नज़र गाहे का'बा[3] जहां कहीं हो और इन अमाकिन से बा'ज़ में इजाबत बा'ज़ के नज़्दीक, बा'ज़ अवक़ात से ख़ास है।

قال الرضاء: أشار إليه الفاضل عليّ القارئ في "شرح اللباب" وبسطه الطحطاوي في "حاشيتي الدرّ ومراقي الفلاح".

---

1. **मस्आ़ :** मक़ामे सअ्य या'नी सफ़ा व मर्वह के दरमियान का रास्ता, ख़ुसूसन जब दोनों सब्ज़ निशानों के दरमियान पहुंचे कि वोह भी क़ुबूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम है।
2. मिना और मक्का के बीच में तीन सुतून बने हैं उन को जमरा कहते हैं पहला मिना से क़रीब जम्रए ऊला कहलाता है और बीच का जम्रए वुस्त़ा और अख़ीर का मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब है जम्रतुल अ़-क़बा। ("बहारे शरीअ़त", जि. 1, ह़िस्सए शशुम, स. 1139)
3. जहां कहीं से का'बा शरीफ़ नज़र आए वोह जगह भी मक़ामे क़ुबूलिय्यत है।

قلت: وإن قيل بالتعميم فالفضل عميم.﴾[1]

बिस्त व यकुम (21) : मस्जिदे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ।

बिस्त व दुवुम (22) : मकाने इस्तिजाबते दुआ़, जहां एक मर्तबा दुआ़ क़बूल हो वहां फिर दुआ़ करे।

قال تعالىٰ: ﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ﴾.[2]

قال الرضاء : ख़्वाह अपनी किसी दुआ़ का क़बूल देखे, ख़्वाह दूसरे मुसल्मान भाई की जिस त़रह़ सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلٰى نَبِيِّنَا الْكَرِيْمِ وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمُ ने ह़ज़रते मरयम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पर फ़ज़्ले आ'ज़मे रब्बे अकरम और बे फ़स्ल के मेवे उन्हें मिलना देख कर वहीं अपने लिये फ़रज़न्द अ़त़ा होने की दुआ़ की जिस की त़रफ़ मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इस आयए करीमा की तिलावत से इशारा फ़रमाया।﴾

बिस्त व सिवुम (23) : औलिया व उ़-लमा की मजालिस نَفَعَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى بِبَرَكَاتِهِمْ أَجْمَعِيْنَ (अल्लाह तआ़ला हमें तमाम ही औलिया व उ़-लमा की ब-र-कतों से नफ़्अ़ पहुंचाए)।

---

1. आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अ़ल्लामा फ़ाज़िल मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "लुबाबुल मनासिक" की शर्ह़ "मस्लके मु-तक़स्सित़" में इस की त़रफ़ इशारा फ़रमाया, और अ़ल्लामा त़ह़त़ावी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने "दुर्रे मुख़्तार" व "मराक़िल फ़लाह़" के ह़वाशी में इस को तफ़्सील से बयान किया, जब कि इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फरमाते हैं : मैं कहता हूं कि अगर उन जगहों में दुआ़ की क़बूलिय्यत को आ़म कहा जाए या'नी किसी वक़्त के साथ मख़्सूस न किया जाए तो भी बईद नहीं क्यूं कि येही अल्लाह के फ़ज़्लो करम के ज़ियादा मुवाफ़िक़ है।

2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यहां पुकारा ज़-करिय्या ने अपने रब को (या'नी दुआ़ मांगी)। (پ۳،آل عمران:۳۸)

قال الرضاء : रब عَزَّوَجَلَّ सहीह़ ह़दीसे क़ुदसी में फ़रमाता है :

((هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ)).

“येह वोह लोग हैं कि इन के पास बैठने वाला बद बख़्त नहीं रहता।”(1)

अब फ़क़ीर अपनी ज़ियादात को गिनाए।

बिस्त व चहारुम (24) : मुवा-ज-हए शरीफ़ा हुज़ूर सय्यिदुश्शाफ़िईन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।(2)

इमाम इब्नुल जज़्री फ़रमाते हैं : “दुआ यहां क़बूल न होगी तो कहां होगी !”(3)

أقول : आयए करीमा : **﴿وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا﴾** इस पर दलीले काफ़ी है। سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى हर त़रह़ मुआफ़ कर सकता है, मगर इर्शाद होता है कि “अगर वोह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें, तेरे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और

---

1 ”صحيح مسلم“، كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب فضل مجالس الذكر، الحديث: ٢٦٨٩، ص١٤٤٤.

2 इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुवा-जहा शरीफ़ की ता'यीन करते हुए फ़रमाते हैं : “ज़ेरे क़िन्दील उस चांदी की कील के जो ह़ुजरए मुत़ह्हरा की जुनूबी दीवार में चेह्‌रए अन्वर के मुक़ाबिल लगी है।” (“फ़तावा र-ज़विय्या”, जि. 10, स. 765)

अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي “रफ़ीक़ुल ह़-रमैन” में बत़ौरे ह़ाशिया इर्शाद फ़रमाते हैं : “लोग उ़मूमन (सुनहरी जाली में मौजूद) बड़े सूराख़ को मुवा-जहा शरीफ़ समझते हैं बल्कि मैं ने कई उर्दू किताबों में भी येही देखा है” मज़ीद फ़रमाते हैं : “मैं ने इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मुवा-जहा शरीफ़ की निशान देही की है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه सह़ीह़ भी येही है।” (“रफ़ीक़ुल ह़-रमैन”, स. 187)

3 ”الحصن الحصين“، أماكن الإجابة، ص٣١.

अल्लाह से मुआफ़ी मांगें और रसूल उन की बख़्शिश चाहे तो ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।" (پ٥، النساء: ٦٤)

येही तो वोह नुक्तए इलाहिय्यह है जिसे गुम कर के वहाबिया चाहे ज़लाल में पड़े (या'नी गुमराही के गढ़े में गिरे) وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن.

बिस्त व पन्जुम (25) : मिम्बरे अत़्हर के पास ।

बिस्त व शशुम (26) : मस्जिदे अक़्दस के सुतूनों के नज़दीक ।

बिस्त व हफ़्तुम (27) : मस्जिदे कुबा शरीफ़ में ।

बिस्त व हश्तुम (28) : मस्जिदुल फ़त्ह़ में, ख़ुसूसन रोज़े चहार शम्बा बैनज़्ज़ोहर वल अ़स्र (ख़ुसूसन बुध के दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान) ।

इमाम अह़मद ब स-नदे जय्यद और बज़्ज़ार वग़ैरहुमा जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रावी : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे फ़त्ह़ में तीन दिन दुआ़ फ़रमाई, दो शम्बा, सह शम्बा, चहार शम्बा (या'नी पीर, मंगल और बुध के दिन) । चहार शम्बा के दिन दोनों नमाज़ों के बीच में इजाबत फ़रमाई गई कि ख़ुशी के आसार चेहरए अन्वर पर नुमूदार हुए । जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब मुझे कोई अम्रे मुहिम (अहम काम) ब शिद्दत पेश आता है, मैं इस साअ़त में दुआ़ करता हूं इजाबत ज़ाहिर होती है ।[1]

बिस्त व नहुम (29) : बाक़ी मसाजिदे त़य्यिबा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब हैं ।[2]

---

1 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١٤٥٦٩، ج٥، ص٨٧.

2 या'नी ऐसी मस्जिदें जिन को सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से श-रफ़े निस्बत ह़ासिल है जैसे : मस्जिदे ग़मामा, मस्जिदे **क़िब्लतैन** वग़ैरा ।

सियुम (30) : वोह कूएं जिन्हें हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ निस्बत है।

सी व यकुम (31) : ज-बले उहुद शरीफ़ (या'नी उहुद पहाड़)।

सी व दुवुम (32) : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तमाम मशाहिदे मु-तबर्रका।(1)

सी व सिवुम (33) :, सी व चहारुम (34) : मज़ाराते बक़ीअ़ व उहुद।

बिस्त व दुवुम (22), व बिस्त व सिवुम (23) के सिवा येह बत्तीस[32] मक़ामात ह़-रमैन त़य्यिबैन और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात में थे।

सी व पन्जुम (35) : मज़ारे मुत़ह्हर अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास।(2)

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ता और क़ब्रे इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास जा कर दुआ़ मांगता हूं, अल्लाह तआ़ला रवा (पूरी) फ़रमाता है।"

येह मज़मून इमाम इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई ने

"**خيرات الحسان في مناقب الإمام الأعظم أبي حنيفة النعمان**" में नक़्ल फ़रमाया।(3)

---

(1) "मशाहिद" मश्हद की जम्अ़ है जिस के मा'ना ह़ाज़िर होने की जगह के हैं या'नी वोह तमाम मक़ामात जहां हमारे आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ज़ाहिरी ह़याते मुबा-रका में तशरीफ़ ले गए, जैसे : सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बाग़ वग़ैरा।

(2) आप का नाम नो'मान बिन साबित है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 80 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 699 सि.ई. में पैदा हुए और आप का विसाल 150 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 767 सि.ई. बग़दाद में हुवा और वहीं ख़ैज़रान के मक़्बरे के मश्रिक़ी जानिब आप का मज़ार वाक़ेअ़ है।

(माख़ूज़ अज़ "उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया", जि. 1, स. 783)

(3) "الخيرات الحسان"، الفصل الخامس والثلاثون في تأدب الأئمة معه في مماته كما هو في حياته وإنّ قبره يزار لقضاء الحوائج، ص ٢٣٠.

सी व शशुम (36) : मज़ारे मुबारक ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ।[1]

इमामे शाफ़ेई قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं : "वोह इस्तिजाबते दुआ़ के लिये तिरयाक़े मुजर्रब है।" (या'नी दुआ़ के क़बूल होने में निहायत तजरिबा शुदा अ़मल है)[2]

सी व हफ़्तुम (37) : तुर्बते सरापा ब-र-कत हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ।[3]

सी व हश्तुम (38) : मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी قَدَّسَ اللّٰہُ تَعَالٰی سِرَّہٗ ।[4]

---

1. आप की विलादत 7 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 128 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 745 सि.ई. में हुई और 25 रजब 183 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 799 सि.ई. में आप ने दारुल बक़ा की त़रफ़ कूच किया, मश्हूर रिवायत के मुत़ाबिक़ आप को ज़हर दे कर शहीद किया गया, आप का मज़ारे पुर अन्वार "काज़िमीन" में है। (माख़ूज़ अज़ "उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया", जि. 21, स. 810, 811, व "इस्लामी इन्साईक्लोपीडिया", जि. 2, स. 1581)

2. "لمعات التنقیح"، کتاب الجنائز، باب زیارۃ القبور، ج٤، ص٣٧٨

3. आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इस्मे मुबारक अ़ब्दुल क़ादिर बिन मूसा बिन अ़ब्दुल्लाह है आप सिल्सिलए क़ादिरिय्या के बानी, मश्हूर आ़लिम और वाइज़ हैं, आप का शुमार औलियाए किबार और सूफ़ियाए इ़ज़ाम में होता है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 471 सि.हि. में पैदा हुए और 561 सि.हि. में वफ़ात पाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मज़ारे पुर अन्वार "बग़दाद शरीफ़" में वाक़ेअ़ है। ("الأعلام" للزرکلي، ج٤، ص٤٧)

4. आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम मा'रूफ़ बिन फ़ीरोज़ कर्ख़ी है, आप की दुआएं अक्सर क़बूल हुवा करती थीं, आप मश्हूर सूफ़ी और ज़ाहिद बुज़ुर्ग हैं सय्यिदुना सिरी सक़त़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के शागिर्दों में से हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 200 सि.हि. में रिह़लत फ़रमाई, आप का मज़ार "**बग़दाद शरीफ़**" में दरियाए दिजला के बाएं कनारे में मरजए़ अ़वाम व ख़वास है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्रे अत़्हर के तवस्सुल से लोग शिफ़ायाब होते थे, अहले बग़दाद कहा करते थे : आप का मज़ारे अक़्दस (हुसूले शिफ़ा और इजाबते दुआ़ के लिये) तिरयाक़े मुजर्रब है। ("الرسالة القشيرية"، ص٢٦، "الأعلام" للزركلي، ج٧، ص٢٦٩، "وفيات الأعيان"، ج٤، ص٤٤٥-٤٤٦)

अ़ल्लामा ज़रक़ानी ''शर्हे मवाहिब'' में फ़रमाते हैं : ''वहां इजाबत मुजर्रब है।'' कहते हैं सो100 बार सूरए इख़्लास वहां पढ़ कर जो चाहे अल्लाह तआ़ला से मांगे, ह़ाजत पूरी हो। (1) ذكره في الفصل الأوّل من المقصد السابع.

सी व नहुम (39) : मरक़दे मुबारक ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुल ह़क़्क़े वद्दीन चिश्ती قُدِّسَ سِرُّهٗ।(2)

चेहलुम (40) : ह़ज़रते इमाम मलिकुल उ़-लमा अबू बक्र मस्ऊ़द काशानी और इन की ज़ौजए मुत़ह्हरा फ़क़ीहा फ़ाज़िला ह़ज़रते फ़ात़िमा قَدَّسَ اللّٰهُ تَعَالٰى أَسْرَارَهُمَا के **बैनल मज़ारैन** (या'नी इन दोनों बुज़ुर्गों के मज़ारों के दरमियान)(3)

---

(1) इस बात को अ़ल्लामा ज़रक़ानी ने ''**अल मवाहिबुल्लदुन्निय्यह**'' की शर्ह़ में मक़्सदे साबेअ़ की फ़स्ले अव्वल में ज़िक्र फ़रमाया।

"شرح المواهب" للزرقاني، المقصد السابع، الفصل الأوّل في وجوب محبته واتباع سنته والاقتداء بهديه وسيرته صلى الله عليه وسلم، ج٩، ص١٣٨.

(2) ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन अजमेरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हिन्दूस्तान में सिल्सिलए चिश्तिय्या के बानी हैं, आप की विलादत 536 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1141 सि.ई. में बताई जाती है, आप की वफ़ात 633 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1236 सि.ई. में हुई, आप का मज़ार हिन्दूस्तान के शह्‌र ''**अजमेर शरीफ़**'' में वाक़ेअ़ है।

(माख़ूज़ अज़ ''उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया'', जि. 7, स. 645, 646)

(3) मलिकुल उ़-लमा अ़लाउद्दीन अबू बक्र मस्ऊ़द काशानी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का शुमार ''**ह़लब**'' के जलीलुल क़द्र फु-क़हाए किराम में किया जाता है, आप ने इ़ल्मे फ़िक़्ह अ़लाउद्दीन समर क़न्दी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से ह़ासिल किया बा'द में आप ने अपने उस्ताद की किताब ''तोह़फ़ा'' की शर्ह़ बनाम ''बदाइउ़स्सनाएअ़'' की जिसे देख कर आप के उस्ताद बहुत ख़ुश हुए और अपनी आ़लिमा, फ़क़ीहा बेटी फ़ात़िमा का निकाह़ आप से करा दिया आप का इन्तिक़ाल 587 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1191 सि.ई. में हुवा, इन की तदफ़ीन शह्‌र ''**ह़लब**'' में इन्ही की ज़ौजा के पहलू में हुई।

(الماخوذ من "الجواهر المضية"، ج٢، ص٢٤٤-٢٤٦)

ذكره العلامة الشامي في "ردّ المحتار".[1]

चेहल व यकुम (41) : यूं ही ह़ज़रत सय्यिदी अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़-रशी[2] व ह़ज़रत सय्यिदी इब्ने रसलान[3] قَدَّسَ اللّٰهُ تَعَالٰی سِرَّهُمَا के मज़ारों के दरमियान।

ذكره الزرقاني في الفصل المذكور.[4]

इन के मज़ारात बैतुल मुक़द्दस में हैं।

चेहल व दुवुम (42) : क़िराफ़ा में इमाम अश्हब व इब्नुल क़ासिम رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی के मज़ारों के दरमियान खड़े हो कर सो100 बार कुल हुवल्लाह शरीफ़ पढ़े फिर रू ब क़िब्ला जो दुआ करे क़बूल हो।[5] ذكره أيضاً ثمّه.

---

1 इस बात को अ़ल्लामा शामी ने "रद्दुल मुह़तार" में ज़िक्र किया।

2 अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद क़-रशी का शुमार मग़रिब व मिस्र के अकाबिर शुयूख़ में होता है आप ने छ सो शुयूख़ से इस्तिफ़ादा किया, कसीर लोगों ने आप से तह़सीले इ़ल्म किया, आप की करामात मश्हूर हैं 599 सि.हि. में आप ने "**बैतुल मुक़द्दस**" में इन्तिक़ाल किया, और वहीं पर आप का मज़ार शरीफ़ वाक़ेअ़ है।

("شرح المواهب" للزرقاني، المقصد السابع، الفصل لأول، ج٩، ص٦٦)

3 आप का नाम अह़मद बिन हु़सैन बिन ह़सन शाफ़ेई़ है आप इब्ने रसलान की कुन्यत से मश्हूर हैं, 773 सि.हि. या 775 सि.हि. में मक़ामे "रमला" (जो कि फ़लिस्ती़न में वाक़ेअ़ है) में आप की विलादत हुई, और आप की वफ़ात "बैतुल मुक़द्दस" में हुई।

(ماخوذ من "معجم المؤلفين"، ج١، ص١٢٨)

4 इसे अ़ल्लामा ज़रक़ानी ने फ़स्ले मज़्कूर (मक़्सदे साबेअ़ की फ़स्ले अव्वल) में ज़िक्र फ़रमाया।

"شرح المواهب" للزرقاني، المقصد السابع، الفصل الأوّل في وجوب محبته واتباع سنته والاقتداء بهديه وسيرته صلى الله عليه وسلم، ج٩، ص٦٦.

5 इसे भी अ़ल्लामा ज़रक़ानी ने वहीं पर (या'नी मक़्सदे साबेअ़ की फ़स्ले अव्वल में) ज़िक्र फ़रमाया।

चेहेल व सिवुम (43) : मरक़दे इमाम इब्ने लाल मुहद्दिस अहमद बिन अली हमदानी رَحِمَهُ اللهُ تَعَالٰی के पास ।[1]

ذكره في "كشف الظنون" عن القاضي ابن شهبة عند ذكر "معجم الصحابة" له.[2]

चेहेल व चहारुम (44) : इसी तरह तमाम औलिया व सु-लहा व महबूबाने खुदा तआला की बारगाहें, ख़ानक़ाही आराम गाहें ।

نَفَعَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى بِبَرَكَاتِهِمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اٰمِيْن.[3]

सत्तरहवीं शरीफ़ माहे फ़ाख़िर रबीउल आख़िर 1293 हि. में कि फ़क़ीर को इक्कीसवां साल था, आ'ला हज़रत मुसन्निफ़े अल्लाम सय्यिदुनल वालिद قُدِّسَ سِرُّهُ الْمَاجِد व हज़रत मुहिब्बुर्रसूल जनाब मौलाना मौलवी मुहम्मद अब्दुल क़ादिर साहिब क़ादिरी बदायूनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराहे रिकाब हाज़िरे बारगाहे बेकस पनाह हुज़ूरे पुरनूर महबूबे इलाही निज़ामुल हक़्क़े वद्दीन सुल्तानुल औलिया رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَعَنْهُمْ हुवा । हुजरए मुक़द्दसा के चार तरफ़ मजालिसे बातिला लह्वो सुरूद गर्म थीं शोरो ग़ोग़ा से कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती दोनों हज़राते आलियात

---

1. आप का नाम अहमद बिन अली हमदानी शाफ़ेई है, इब्ने लाल के नाम से मश्हूर हैं, आप 307 सि.हि. में पैदा हुए और 398 सि.हि. में इन्तिक़ाल फ़रमाया, क़ाज़ी इब्ने शहबा अपनी "तारीख़" में आप की तस्नीफ़ "मो'जमुस्सहाबा" का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि आप की क़ब्रे मुबारक के पास दुआएं क़बूल होती हैं ।

("كشف الظنون"، ج٢، ص١٧٣٦، و"هدية العارفين"، ج١، ص٦٩)

2. येह बात क़ाज़ी इब्ने शहबा ने अपनी "तारीख़" में इब्ने लाल की तस्नीफ़ "मो'जमुस्सहाबा" का ज़िक्र करते हुए कही जिसे हाजी ख़लीफ़ा ने भी "कश्फ़ुज़्ज़ुनून" में "मो'जमुस्सहाबा" के ज़िक्र में बयान फ़रमाई । "كشف الظنون"، ج٢، ص١٧٣٦

3. अल्लाह तआला हमें इन मुक़द्दस हज़रात की ब-र-कतों से दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ पहुंचाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अपने क़ुलूबे मुत़्मइन्नह के साथ ह़ाज़िरे मुवा-ज-हए अक़्दस हो कर मश्ग़ूल हुए इस फ़क़ीरे बे तौक़ीर ने हुजूमे शोरो शर से ख़ाति़र परेशान पाई दरवाज़ए मुत़ह्हरा पर खड़े हो कर ह़ज़रत सुल्त़ानुल औलिया से अ़र्ज़ की, कि ऐ मौला ! ग़ुलाम जिस लिये ह़ाज़िर हुवा येह आवाज़ें उस में ख़लल अन्दाज़ हैं (लफ़्ज़ येही थे या इन के क़रीब बहर ह़ाल मज़्मूने मा'रूज़ा येही था) येह अ़र्ज़ कर के बिस्मिल्लाह कह कर दहना पाउं दरवाज़ए हुज्रए त़ाहिरा में रखा ब औ़ने रब्बे क़दीर वोह सब आवाज़ें दफ़्अ़तन गुम थीं । मुझे गुमान हुवा कि येह लोग ख़ामोश हो रहे, पीछे फिर कर देखा तो वोही बाज़ार गर्म था । क़दम कि रखा था बाहर हटाया फिर आवाज़ों का वोही जोश पाया फिर बिस्मिल्लाह कह कर दहना पाउं अन्दर रखा بِحَمْدِاللّٰه फिर वैसे ही कान ठन्डे थे अब मा'लूम हुवा कि येह मौला का करम और ह़ज़रत सुल्त़ानुल औलिया की करामत और इस बन्दए नाचीज़ पर रह़मत व मऊ़नत है शुक्रे इलाही बजा लाया और ह़ाज़िरे मुवा-ज-हए आ़लिया हो कर मश्ग़ूल रहा कोई आवाज़ न सुनाई दी जब बाहर आया फिर वोही ह़ाल था कि ख़ानक़ाहे अक़्दस के बाहर क़ियाम गाह तक पहुंचना दुश्वार हुवा फ़क़ीर ने येह अपने ऊपर गुज़री हुई गुज़ारिश की, कि अव्वल तो वोह ने'मते इलाही थी और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ﴾

"अपने रब की ने'मतों को लोगों से ख़ूब बयान कर ।" (پ۳۰،الضحى:۱۱)

मअ़ हाज़ा इस में ग़ुलामाने औलियाए किराम के लिये बिशारत और मुन्किरों पर बला व ह़सरत है ।(1)

---

(1) निज़ामुद्दीने वल ह़क़ सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की करामत बयान करने की वजह बयान फ़रमाते हुए =

इलाही ! सदक़ा अपने मह़बूबों का हमें दुन्या व आख़िरत व क़ब्रो ह़श्र में अपने मह़बूबों के ब-रकाते बे पायां से बहरा मन्द फ़रमा।

فإنّک أنت الکریم وإنّ الکریم لا یقطع عوائدہ والحمد للّٰہ ربّ العالمین وصلی اللّٰہ تعالٰی علی سیدنا محمد وسائر المحبوبین وبارک وسلم آمین.﴾[1]

= इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ الرَّحْمَة इर्शाद फ़रमाते हैं : येह करामत इस लिये बयान फ़रमाई कि येह वाक़िआ़ मेरे साथ पेश आना मेरे लिये एक ने'मत है और क़ुरआने करीम में ने'मत के चरचे का हुक्म है और दूसरी वजह येह है कि जहां इस में औलियाउल्लाह के मानने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी और ढारस है वहीं औलियाउल्लाह की अ़-ज़्-मतों और इन की करामतों का इन्कार करने वालों के लिये दुख व ह़सरत है, लिहाज़ा अगर किसी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली या किसी नेक बन्दे की कोई करामत ज़ाहिर हो तो अच्छी निय्यतों के साथ उसे बयान करना सवाब का बाइ़स है।

1 बेशक तू ही करीम है और करीम अपनी ने'मतें और भलाइयां नहीं रोकता और सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो परवर्द गार सारे जहान वालों का और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा व मौला मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने तमाम मह़बूब बन्दों पर अपनी रह़मतें, ब-र-कतें और सलामती नाज़िल फ़रमाए। आमीन !

फ़स्ले पन्जुम इस्मे आ'ज़म व कलिमाते इजाबत में

قال الرضاء : यहां बीस बिशारतें हैं, नव9 ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ज़िक्र फ़रमाई और ग्यारह फ़क़ीर सगे कूए क़ादिरी غَفَرَاللّٰہُ تَعَالٰی لَہٗ ने बढ़ाई ।﴾

बिशारत (1) : ह़दीस में आयए करीमा : ﴿لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ ق صلے اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾ [1] की निस्बत फ़रमाया : "येह इस्मे आ'ज़म है जो इस के साथ दुआ़ करे क़बूल हो ।"[2]

उ़-लमा फ़रमाते हैं : आयए करीमा क़बूले दुआ़ ख़ुसूसन दफ़्ए़ बला में असरे तमाम रखती है ।

قال الرضاء : सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला का वोह इस्मे आ'ज़म न बता दूं कि जब वोह उस से पुकारा जाए, इजाबत करे (या'नी क़बूल फ़रमाए) और जब उस से सुवाल किया जाए अ़ता फ़रमाए ? वोह वोह दुआ़ है जो यूनुस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने तीन तारीकियों में की थी : ﴿لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ ق صلے اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾ किसी ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ! येह ख़ास यूनुस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये था या सब मुसल्मानों के लिये है ? फ़रमाया : मगर तू ने ख़ुदा तआ़ला का

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा ।" (پ۱۷، الأنبیاء: ۸۷)

2 "المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء ... إلخ، الحديث: ۱۹۰۸، ج۲، ص۱۸٤ و"الحصن الحصين"، ص۳۳.

इर्शाद न सुना कि ﴿فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ या'नी : "पस हम ने यूनुस की दुआ क़बूल फ़रमाई और उसे ग़म से नजात दी और यूंही नजात देंगे ईमान वालों को।" (پ۱۷، الأنبياء: ۸۸)

رواه أحمد والترمذي والنسائي والحاكم مطوّلاً واللفظ له والبيهقي والضياء في "المختارة". ﴾[1]

बिशारत (2) : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को कहते सुना :

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ.[2]

इर्शाद फ़रमाया : "क़सम ख़ुदा की तूने अल्लाह तआला से वोह इस्मे आ'ज़म ले कर सुवाल किया कि जब इस से सुवाल किया जाता है, अल्लाह तआला अता करता है और जब इस से दुआ की जाती है, क़बूल फ़रमाता है।"

قال الرضاء: رواه أحمد وابن أبي شيبة وأبو داود والترمذي

---

1 इस हदीस को अहमद, तिरमिज़ी, नसाई, बैहक़ी और हाकिम ने तफ़्सील से बयान किया है, और अल्फ़ाज़े हदीस हाकिम की रिवायत के हैं, और ज़िया मक्दिसी ने "मुख़्तारा" में इस हदीस को रिवायत किया है।

"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء... إلخ، الحديث: ۱۹۰۸، ج۲، ص۱۸٤، بتصرّف

2 ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से इस गवाही के तुफ़ैल सुवाल करता हूं कि बेशक तू ही मा'बूद है तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तू अकेला व बे नियाज़ है कि न तेरी कोई औलाद है और न तू किसी से पैदा हुवा, और तेरे जोड़ का कोई नहीं।

والنسائي وابن ماجه وابن حبان والحاكم.[1]

इमाम अबुल ह़सन अ़ली मक़्दिसी व इमाम अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़िरी व इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी वग़ैरहुम अइम्मा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस की अस्नाद में कोई त़ा'न नहीं और दरबारए इस्मे आ'ज़म येह सब अह़ादीस से जय्यद व सह़ीह़ तर है।"﴾[2]

बिशारत (3) : एक ह़दीस में आया, इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है :

﴿اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ﴾[3]

﴿الٓمّٓ ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ﴾[4] और

قال الرضاء: رواه ابن أبي شيبة وأبو داود والترمذي وابن ماجه

---

❶ इस ह़दीसे मुबा-रका को इमाम अह़मद, इब्ने अबी शैबा, अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्ने माजह, इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने रिवायत किया।

"المسند" للإمام أحمد، ج۹، ص۱۰، الحديث: ۲۳۰۱۳.

و"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب الدعاء، الحديث: ۱٤۹۳-۹٤، ج۲، ص۱۱۳.

❷"الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في كلمات يستفتح بها الدعاء...إلخ، تحت الحديث:۱، ج۲، ص۳۱۷.

و"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج۱۱، ص۱۸۸-۱۸۹.

❸ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेह्रबान।" (پ۲، البقرة: ۱٦۳)

❹ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला।" (پ۳، ال عمران: ۱-۲)

عن أسماء بنت يزيد رضي الله تعالىٰ عنها. ﴾[1]

बिशारत (4) : बा'ज़ उ़-लमा ''يَا بَدِيعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَام''[2] को इस्मे आ'ज़म कहते हैं।

قال الرضاء : सरी बिन यह्या قُدِّسَ سِرُّهٗ बा'ज़ औलिया से रावी : मैं दुआ़ करता था अल्लाह तआ़ला से कि मुझे इस्मे आ'ज़म दिखा दे, मुझे आस्मान में एक सितारा नज़र पड़ा जिस पर लिखा था :

''يَا بَدِيعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَام'' ﴾

बिशारत (5) : बा'ज़ उ़-लमा ने ''يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ'' को इस्मे आ'ज़म कहा।

बिशारत (6) : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ैद बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को यूं दुआ़ करते सुना :

---

1 इस ह़दीसे मुबा-रका को इब्ने अबी शैबा, अबू दावूद, तिरमिज़ी और इब्ने माजह ने ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत किया है।
"سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء في جامع الدعوات... إلخ الحديث: ٣٤٨٩، ج٥، ص٢٩١.
و"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب الدعاء، الحديث: ١٤٩٦، ج٢، ص١١٤.

2 या'नी ''ऐ ज़मीन व आस्मानों को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !''

3 "الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء، الترغيب في كلمات يستفتح...إلخ، الحديث: ٥، ج٢، ص٣١٨.
و"مسند أبي يعلى"، حديث أبي بصرة الغفاري، الحديث: ٧١٧١، ج٦، ص١٨٨.
و"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٨.

اَللّٰھُمَّ إِنِّي أَسْأَلُکَ بِأَنَّ لَکَ الْحَمْدُ لَا إِلٰـهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَکَ لَا شَرِيْکَ لَکَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ. (1)

फ़रमाया : ''येह अल्लाह का वोह इस्मे आ'ज़म है कि जब इस से पुकारा जाए, इजाबत करे और जब मांगा जाए अ़ता फ़रमाए।''

أخرجه أحمد وابن أبي شيبة والأربعة وابن حبان والحاكم عن أنس رضي الله تعالى عنه. (2)

बिशारत (7) : ह़दीस में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने यूं दुआ की :

---

(1) ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से इस बात के वसीले से सुवाल करता हूं कि सब ख़ूबियां तुझी को हैं कोई मा'बूद नहीं मगर तू अकेला, तेरा कोई शरीक नहीं, ऐ मेह्रबान ! ऐ बहुत एह्सान फ़रमाने वाले ! ऐ आस्मानों और ज़मीन को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! ऐ आप ज़िन्दा ! ऐ औरों को क़ाइम रखने वाले।

(2) अह़मद, इब्ने अबी शैबा और अस्ह़ाबे सु-नने अर-बआ़ या'नी तिरमिज़ी, अबू दावूद, नसाई, इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस ह़दीस की तख़रीज की।

"المسند" للإمام أحمد، الحديث: ١٣٨٠٠، ج٤، ص٥٢٨.

و"سنن ابن ماجه"، كتاب الدعاء، باب اسم الله الأعظم، الحديث: ٣٨٥٨، ج٤، ص٢٧٦.

و"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٩٩، ج٢، ص١٨١.

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَدْعُوكَ اللّٰهَ وَأَدْعُوكَ الرَّحْمٰنَ وَأَدْعُوكَ الْبَرَّ الرَّحِيمَ وَأَدْعُوكَ بِأَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ أَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي.[1]

नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इन में इस्मे आ'ज़म है।"

رواه ابن ماجه.[2]

बिशारत (8) : अबू दरदा व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "इस्मे आ'ज़म "رَبِّ رَبِّ" है।"

رواه الحاكم.[3]

ह़दीस में आया नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा "يَا رَبِّ يَا رَبِّ" कहता है, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : **लब्बैक**, "ऐ मेरे बन्दे ! मांग कि तुझे दिया जाए।"

---

1. या'नी : "ऐ अल्लाह ! मैं तुझे अल्लाह, रह़मान, और बर्र रह़ीम कह कर पुकारती हूं, और ऐ अल्लाह ! मैं तेरे तमाम अस्माए हुस्ना के वसीले से, जो मैं जानती हूं और जो नहीं जानती, तेरी बारगाह में दुआ़ करती हूं कि मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रह़्म फ़रमा।"
2. इस ह़दीस को इब्ने माजह ने रिवायत किया।
"سنن ابن ماجه"، كتاب الدعاء، باب اسم الله الأعظم، الحديث: ٣٨٥٩، ج٤، ص٢٧٨.
3. इस ह़दीस को ह़ाकिम ने रिवायत किया।
"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٩٠٣، ج٢، ص١٨٢

رواه ابن أبي الدنيا عن عائشة رضي الله تعالى عنها.[1]

बिशारत (9) : ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़्वाब में देखा कि इस्मे आ'ज़म "اَللّٰهُ اَللّٰهُ اَللّٰهُ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ" है।[2]

बिशारत (10) :[3] अबू उमामा बाहली सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के शागिर्द क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान शामी कहते हैं : इस्मे आ'ज़म "اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" (आप ज़िन्दा औरों को क़ाइम रखने वाला) है।[4]

बिशारत (11) : इमाम क़ाज़ी इ़याज़ ने बा'ज़ उ़-लमा से नक़्ल फ़रमाया : "इस्मे आ'ज़म कलिमए तौह़ीद है।"[5]

बिशारत (12) : इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी व बा'ज़ सूफ़ियाए किराम ने कलिमा "هُــوَ" को इस्मे आ'ज़म बताया।[6]

बिशारत (13) : जुम्हूर उ़-लमा फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह**"

---

1. इस ह़दीस को इब्ने अबिद्दुन्या ने उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत किया।

"الترغيب والترهيب"، كتاب الذكر والدعاء الحديث: ١١، ج٢، ص ٣٢٠، (بحوالہ ابن ابی الدنیا).

و"فتح الباري"، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩، (بحوالہ ابن ابی الدنیا).

2. अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।

"فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩

3. बिशारत 10 ता 20 शारेह़ या'नी मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ज़िक्र फ़रमूदा हैं।

4. "الحصن الحصين" في بيان اسم الله تعالى الأعظم، ص٣٣.

5. "فتح الباري"، كتاب الدعوات، باب لله مائة اسم غير واحدة، ج١١، ص١٨٩

6. "الحاوي للفتاوي"، الدر المنظم في الاسم الأعظم، ج١، ص٤٧٣.

و "التفسير الكبير" للرازي، ج١، ص١٣٩-١٤٠، وج٢، ص١٥٠-١٥٢.

इस्मे आ'ज़म है । [1] كذا عزاه إليهم القارئ.

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : शर्त़ येह है कि तू अल्लाह कहे और उस वक़्त तेरे दिल में अल्लाह तआ़ला के सिवा कुछ न हो ।[2]

बिशारत (14) : बा'ज़ उ़-लमा ने "**बिस्मिल्लाह**" शरीफ़ को इस्मे आ'ज़म कहा ।

हुज़ूर ग़ौसुस्स-क़लैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल कि "**बिस्मिल्लाह**" ज़ुबाने आ़रिफ़ से ऐसी है जैसे "كُنْ" कलामे ख़ालिक़ से ।[3]

बिशारत (15) : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो इन पांच कलिमों से निदा करे अल्लाह तआ़ला से जो कुछ मांगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाए :

((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)).[4]

---

1 जैसा कि मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इसे जुम्हूर उ़-लमा की त़रफ़ मन्सूब किया । "مرقاة المفاتيح" شرح مقدمة الكتاب، ج١، ص٤١.

2 "بهجة الأسرار"، ذكر فصول من كلامه مرصعاً... إلخ، ص١٣٥

3 المرجع السابق.

4 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, सारी बादशाहत उसी के लिये है और सब ख़ूबियां उसी को, और वोह तो सब कुछ कर सकता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ के बिग़ैर बुराई से बचने की कुछ त़ाक़त नहीं और न ही नेकी करने की कुछ क़ुव्वत । =

बिशारत (16) : ऊपर गुज़रा कि जो शख़्स "يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ" तीन बार कहे फ़िरिश्ता कहता है : मांग कि "**अर-ह़मुर्राहि़मीन**" ने तेरी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई ।(1)

बिशारत (17) : पांच बार "يَا رَبَّنَا" कहने का फ़ज़्ल इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से गुज़रा ।(2)

बिशारत (18) : येही ख़ासिय्यत अस्माए हुस्ना की है ।

बिशारत (19) : नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को "يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَام" (ऐ अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !) कहते सुना, फ़रमाया : मांग कि तेरी दुआ क़बूल हुई ।(3)

बिशारत (20) : इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ह़दीस में है : हुज़ूर **सय्यिदुल मुर-सलीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

जिब्राईल मेरे पास कुछ दुआएं लाए और अ़र्ज़ की : जब हुज़ूर को कोई ह़ाजत पेश आए इन्हें पढ़ कर दुआ मांगिये :

= "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٨٤٩، ج١٩، ص٣٦١.

و"المعجم الأوسط" للطبراني، من اسمه مطلب، الحديث: ٨٦٣٤، ج٦، ص٢٣٨.

و"مجمع الزوائد"، كتاب الأدعية، باب فيما يستفتح به الدعاء... إلخ، الحديث: ١٧٢٦٤، ج١٠، ص٢٤١.

1 "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، باب إن لله ملكاً... إلخ، الحديث: ٢٠٤٠، ج٢، ص٢٣٩.

2 जैसा कि फ़स्ले दुवुम में अदब नम्बर 21 के तह़त गुज़रा ।

3 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في عقد التسبيح باليد، الحديث: ٣٥٣٨، ج٥، ص٣١٢.

((يَا بَدِيعَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا صَرِيخَ الْمُسْتَصْرِخِينَ يَاغِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِينَ يَا كَاشِفَ السُّوْءِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ يَا إِلٰهَ الْعَالَمِينَ بِكَ أُنْزِلَ حَاجَتِي وَأَنْتَ أَعْلَمُ بِهَا فَاقْضِهَا)).[1]

---

1 ऐ आस्मानों और ज़मीन को बे किसी नुमूना के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ अ-ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! ऐ फ़रियाद रसों की फ़रियाद रसी फ़रमाने वाले ! ऐ मदद चाहने वालों की मदद फ़रमाने वाले ! ऐ सब आफ़तों को दूर फ़रमाने वाले ! ऐ सब से ज़ियादा मेह्रबान ! ऐ परेशान ह़ालों की दुआ क़बूल फ़रमाने वाले ! ऐ सब जहां वालों के मा'बूदे बरह़क़ ! तेरी ही त़रफ़ से मेरी ह़ाजत आई और तू ही उस को ज़ियादा जानता है तो तू उस ह़ाजत को रवा फ़रमा ।

"المعجم الأوسط" الحديث: ١٤٥، ج١، ص٥٥.

و"مجمع الزوائد"، كتاب الأدعية، باب الأدعية المأثورة عن رسول الله... إلخ، الحديث: ١٧٣٩٦، ج١٠، ص٢٨٤، بألفاظ متقاربة.

لم نعثر على هذا الحديث عن ابن عباس ولكن وجدناه عن حذيفة بن اليمان رضي الله تعالى عنهما.

फ़स्ले शशुम मवानेए इजाबत में

قال الرضاء : वोह पन्दरह15 हैं। पांच5 इफ़ादए ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ और दस10 ज़ियादते फ़क़ीरे ह़क़ीर غُفِرَ لَهٗ ।

ऐ अ़ज़ीज़ ! अगर दुआ क़बूल न हो, तो उसे अपना क़ुसूर समझे, ख़ुदाए तआ़ला की शिकायत न करे कि उस की अ़ता में नुक़्सान नहीं, तेरी दुआ में नुक़्सान है।(1)

उस के अल्ताफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर

तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

هرچه هست از قامت ناساز وبے اندام ماست

ورنہ تشریف تو بربالائے کس کوتاہ نیست (2)

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ चन्द सबब से रद होती है :

पहला सबब : किसी शर्त़ या अदब का फ़ौत होना और येह तेरा क़ुसूर है, अपनी ख़त़ा पर नादिम न होना और ख़ुदा की शिकायत करना, निरी बे ह़याई है।

قال الرضاء : नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "एक शख़्स सफ़रे दराज़ (त़वील सफ़र) करे, बाल उलझे, कपड़े गर्द में अटे (मैले कुचैले), अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ फैलाए और **या रब ! या रब !** कहे और उस का खाना ह़राम से और पीना ह़राम से और पहनना ह़राम से

---

1 या'नी उस मौला करीम عَزَّوَجَلَّ की अ़ता में कोई कमी नहीं, कमी तो तेरे दुआ करने में है

2 *किसी पर कम नहीं फ़ज़्लो करम तेरा मेरे मौला*

येह बद आ'मालियों का है नतीजा कि परेशां हूं

और परवरिश पाई ह़राम से, तो उस की दुआ़ कहां क़बूल हो !"(1)

सफ़र और इस परेशां ह़ाली का ज़िक्र इस लिये फ़रमाया कि येह ज़ियादा जालिबे रह़मत व मूरिसे इजाबत होते हैं (या'नी रह़मत को ज़ियादा खींच लाने वाले और दुआ़ की क़बूलिय्यत का बाइ़स होते हैं), ब ईं हमा (इस के बा वुजूद) जब अक्ल व शुर्ब (खाना पीना) ह़राम से है, उम्मीदे इजाबत नहीं ।

दूसरा सबब : गुनाहों से तलव्वुस (गुनाहों में मुब्तला रहना) ।

قال الرضاء : अगर्चे येह भी सबबे अव्वल में दाख़िल था मगर ब वज्हे मुह़्तम बिश्शान होने के (या'नी ज़ियादा अहम्मिय्यत का ह़ामिल होने की वजह से) जुदा ज़िक्र फ़रमाया ।﴿

इसी वासित़े दुआ़ से पहले मज़्लूमों के हुक़ूक़ वापस करना और उन से अपने क़ुसूर बख़्शवाना और ख़ुदा के सामने तौबा व इस्तिग़्फ़ार और तर्के मआ़सी (गुनाहों के छोड़ने) पर अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) करना लाज़िम है ।

का'ब अह़बार से मन्क़ूल : ज़मानए ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में क़ह़्त़ पड़ा, आप बनी इस्राईल को ले कर तीन बार दुआ़ के वासित़े गए मींह न बरसा (या'नी बारिश न हुई), अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य भेजी : "ऐ मूसा ! मैं तेरी और तेरे साथ वालों की दुआ़ क़बूल न करूंगा कि तुम में एक नम्माम (चुग़ुल ख़ोर) है कि एक का ऐ़ब दूसरे से बयान करता है ।" अ़र्ज़ की : ऐ रब ! वोह कौन है कि उस को हम अपने गुरौह से निकाल दें ? हुक्म आया : "मैं तुम्हें नमीमी (चुग़ुल ख़ोरी) से

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقة من الكسب الطيب وتربيتها، الحديث: ١٠١٥-٢٣٠١، ص٥٠٧.

و"سنن الترمذي"، كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة البقرة، الحديث: ٣٠٠٠، ج٤، ص٤٦٤-٤٦٥.

मन्अ़ करता हूं और ख़ुद ऐसा करूं ?" मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सब को तौबा का हुक्म किया बा'दे तौबा दुआ़ मांगते ही मींह बरसा ।(1)

सुफ़्यान सौरी رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی कहते हैं : बनी इस्राईल सात7 बरस क़हूत़ में मुब्तला रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे हमेशा पहाड़ों में निकल जाते और आ़जिज़ी व तज़र्रोअ़ के साथ दुआ़ मांगते और रोते मगर रह़मते इलाही उन के ह़ाल पर अस्लन तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई : "अगर तुम मेरी त़रफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे घुटने घिस जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और तुम्हारी ज़बानें दुआ़ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में से किसी दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल न करूं और किसी रोने वाले पर रह़्म न फ़रमाऊं, जब तक मज़्लूमों को उन के हुक़ूक़ वापस न कर दें ।" पस बनी इस्राईल ने मज़्लूमों को उन के ह़क़ वापस किये, उसी दिन मींह बरसा ।(2)

मालिक बिन दीनार رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی कहते हैं : बनी इस्राईल अय्यामे क़ह़्त़ में मींह की दुआ़ के लिये निकले, पैग़म्बरे वक़्त عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई : "इन से कह दे कि तुम मेरी त़रफ़ निकलते हो नापाक बदनों के साथ, और हथेलियां मेरी त़रफ़ उठाते हो जिन से तुम ने ख़ूने नाह़क़ किये, और तुम ने अपने पेट ह़राम माल से भरे हैं अब तुम पर मेरा ग़ज़ब सख़्त हो गया और तुम को सिवा ज़ियादा मुझ से दूर होने के दुआ़ से कुछ फ़ाएदा न मिलेगा ।"(3)

---

1 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧

2 المرجع السابق.

3 المرجع السابق.

या'नी अपने गुनाहों और ना फ़रमानियों में ह़द से बढ़ने के सबब तुम्हारा ह़ाल येह हो गया है कि अब तुम्हारी दुआ़एं तुम्हें मेरे क़रीब करने के बजाए तुम्हें मुझ से मज़ीद दूर कर देंगी ।

और अबू सिद्दीक़ नाजी से रिवायत है ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मींह की दुआ़ के वासिते़ बाहर निकले एक च्यूंटी को देखा अपने पाउं आस्मान की त़रफ़ उठाए कहती है : "इलाही ! मैं भी तेरी ख़ल्क़ से एक मख़्लूक़ हूं और हम को तेरे रिज़्क़ से बे परवाही नहीं हो सकती, पस तू हम को औरों के गुनाहों के सबब हलाक न कर।" सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह देख कर फ़रमाया : लौट चलो कि इस च्यूंटी की दुआ़ से मींह बरसेगा।[1]

औज़ाई़ कहते हैं : लोग मींह की दुआ़ के लिये निकले बिलाल बिन सा'द ने ख़ुदा की ता'रीफ़ व सना कर के कहा : ऐ ह़ाज़िरीन ! क्या तुम अपने गुनाह पर इक़्रार नहीं करते हो ? सब ने कहा : हम इक़्रार करते हैं। फिर कहा : इलाही ! तू फ़रमाता है : ﴿مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ﴾[2] और हम अपनी गुनहगारी पर इक़्रार करते हैं पस मग़्फ़िरत तेरी हमारी अम्साल के वासिते़ है (हम जैसे लोगों के लिये ही है) इलाही ! हम को बख़्श दे और हम पर रह़्म कर और हम को पानी दे, फिर अपने हाथ उठाए और मींह बरसा।[3]

किसी ने मालिक बिन दीनार से कहा : मींह के लिये दुआ़ कीजिये, फ़रमाया : "तुम मींह बरसने में देर समझते हो और मैं पथ्थर बरसने में", या'नी तुम समझते हो कि मींह बरसने में देर हो गई और मैं कहता हूं येह ख़ुदा की रह़मत है कि पथ्थर नहीं पड़ते।[4]

तीसरा सबब : इस्तिग़्नाए मौला। वोह ह़ाकिम है मह़कूम नहीं,

---

1 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : : "नेकी वालों पर कोई राह नहीं।" (پ١٠، التوبة: ٩١)

3 "إحياء العلوم"، كتاب الأذكار والدعوات، الباب الثاني، ج١، ص٤٠٧

4 المرجع السابق.

ग़ालिब है मग़लूब नहीं,मालिक है ताबेअ़ नहीं, अगर तेरी दुआ क़बूल न फ़रमाई तुझे नाखुशी और गुस्से, शिकायत और शिक्वे की मजाल कब है, जब ख़ासों के साथ येह मुआ-मला है कि जब चाहते हैं अ़ता करते हैं जब चाहते मन्अ़ फ़रमाते हैं तो तू किस शुमार में है कि अपनी मुराद पर इसरार करता है![1] ﴿وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓی اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ﴾[2]

قال الرضاء : उस का इस्तिग़ना ह़क़, उस का वा'दा ह़क़, उस की बात तमाम, उस की रह़मत आ़म, दुआ कि शराइत़ व आदाब की जामेअ़ हो, हुसूले मस्ऊल ही के साथ क़बूल होना ज़रूर नहीं, दफ़्ए़ बला है, सवाबे उ़क्बा है, जैसा कि आता है और ब ई हमा उस पर कुछ वाजिब नहीं।[3]

---

❶ या'नी अल्लाह तआ़ला हर चीज़ से ग़नी है हर ख़ूबी व सिफ़त उसी के वासिते़ है वोह जो चाहे करे किसी को मजाले उफ़ तक नहीं है उस का तो अपने नेक बन्दों के साथ येह मुआ-मला है कि जब चाहता है उन को देता है और जब चाहता है उन को उस चीज़ की त़लब से मन्अ़ फ़रमा देता है तो अगर उस ने तेरी दुआ क़बूल नहीं फ़रमाई तो तेरी क्या मजाल कि तू नाखुशी का इज़्हार करे या उस की बारगाह में शिक्वे शिकायत करते हुए बार बार उसी चीज़ के हुसूल की दुआ मांगे !

❷ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते ।" (پ۱۲، یوسف: ۲۱)

❸ वोह बे नियाज़ है, उस का वा'दा सच्चा है, उस की बात हो कर रहती है, उस की रह़मत सब को शामिल है चुनान्चे अगर दुआ में शराइत़ व आदाब का मुकम्मल ख़याल व लिहाज़ रख भी लिया जाए तो येह बात ज़रूरी नहीं कि जो चीज़ दुआ में मांगी जा रही है वोही चीज़ ह़ासिल भी हो जाए, हो सकता है कि उस पर कोई बला व मुसीबत आने वाली थी जो इस दुआ की वजह से टल गई हो, येह भी मुम्किन है कि इस दुआ के सबब उस के हाथ नेकियों का ऐसा बे बहा ख़ज़ाना आया हो जो आख़िरत में काम आए बहर ह़ाल अगर बयान कर्दा दोनों सूरतें न भी हों तो वोह रब عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़्लक़ है जो चाहे करे उस पर किसी का ज़ोर नहीं और न ही उस पर कुछ देना वाजिब व लाज़िम।

﴿يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ﴾[1] ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ﴾[2] न उस के गि़नाए मुत़्लक़ में कोई शक ﴿اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ﴾[3] न उस के किसी वा'दे या वई़द में फ़र्क़ आना मुम्किन, ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ﴾[4] ﴿مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ﴾[5] आह.....! आह.....! आह.....!

جگر خوں میشود زیں یاد مارا
زاستغنائے حق فریاد مارا[6]

لا ملجأ من اللّٰه إلا إليه وحسبنا اللّٰه ونعم الوكيل وصلّى اللّٰه تعالٰى على النبي الرحمة المُهدَاة أقرب وسيلة إلى اللّٰه وآله وصحبه بالتبجيل.﴾[7]

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह जो चाहे करे।" (پ۱۳، إبراهيم: ۲۷)
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।" (پ٦، المائدة: ١)
3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है, सब ख़ूबियों सराहा।" (پ۲۱، لقمان: ۲٦)
4. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता।" (پ۱۳، الرعد: ۳۱)
5. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं।" (پ۲٦، ق: ۲۹)
6. या'नी उस की याद से हमारा जिगर टुकड़े टुकड़े हो जाए तो भी हमें उसी बे नियाज़ से फ़रियाद है।
7. कोई पनाह नहीं सिवाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को बस है और क्या ही अच्छा कारसाज़ ! और अल्लाह तआ़ला रह़मत व नरमी वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के तमाम आल व अस्ह़ाब पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जो उस की त़रफ़ हमारे सब से क़रीबी वसीला हैं।

चौथा सबब : हि़क्मते इलाही है कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ उस से त़लब करता है और वोह बराहे मेह्रबानी तेरी दुआ़ को इस सबब से कि तेरे ह़क़ में मुज़िर है, रद फ़रमाता है, म-सलन तू जोयाए सीमो ज़र है और इस में तेरे ईमान का ख़त़रा है या तू ख़्वाहाने तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत है और वोह इ़ल्मे ख़ुदा में मूजिबे नुक़्साने आ़क़िबत है, ऐसा रद, क़बूल से बेहतर। [1] ﴿عَسٰۤی اَنۡ تُحِبُّوۡا شَیۡئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمۡ﴾ पर नज़र कर और इस रद का शुक्र बजा ला।[2]

पांचवां सबब : कभी दुआ़ के बदले सवाबे आख़िरत देना मन्ज़ूर होता है, तू हुत़ामे दुन्या (दुन्यवी साज़ो सामान) त़लब करता है और परवर्द गार नफ़ाइसे आख़िरत (आख़िरत की उ़म्दा चीज़ें) तेरे लिये ज़ख़ीरा फ़रमाता है, येह जाए शुक्र है (शुक्र का मक़ाम है) न (कि) मक़ामे शिकायत।

قال الرضاء :

सबब 6 ता सबब 11 : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "तीन शख़्स हैं कि तेरा रब उन की दुआ़ नहीं क़बूल करता :

एक वोह कि वीराने मकान में उतरे।

दूसरा वोह मुसाफ़िर कि सरे राह मक़ाम करे या'नी सड़क से बच कर न ठहरे, बल्कि ख़ास रास्ते ही पर नुज़ूल करे (या'नी उतरे)।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।" (پ۲، البقرۃ: ۲۱۶)

2 बा'ज़ अवक़ात दुआ़ क़बूल न होने में हि़क्मते ख़ुदा वन्दी येह होती है कि तू जो मांग रहा है वोह तेरे लिये नुक़्सान देह है म-सलन : तू मालो दौलत मांगता है लेकिन वोह तेरे ईमान के लिये ख़त़रनाक है, तू सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत का सुवाल करता है लेकिन इस में तेरी आख़िरत का नुक़्सान है, ऐसी दुआ़ का क़बूल न होना ही बेहतर है तो ऐसी दुआ़ के रद पर तुझे चाहिये कि शुक्रे ख़ुदा वन्दी बजा ला।

तीसरा वोह जिस ने खुद अपना जानवर छोड़ दिया, अब खुदा से दुआ करता है कि उसे रोक दे ।"

أخرجه الطبراني في "الكبير" عن عبد الرحمن بن عائذ رضي الله تعالى عنه **بسند حسن**.(1)

और फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "तीन शख़्स अल्लाह तआला से दुआ करते हैं और उन की दुआ क़बूल नहीं होती :

एक वोह जिस के निकाह में कोई बद खुलुक़ (बद अख़्लाक़) औरत हो और वोह उसे तलाक़ न दे ।

दूसरा वोह जिस का किसी पर कुछ आता था और उस के गवाह न कर लिये ।

तीसरा वोह जिस ने सफ़ीह बे अक़्ल को माल सिपुर्द कर दिया हालां कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : सफ़ीहों (बे वुक़ूफ़ों) को अपने माल न दो ।"

أخرجه الحاكم عن أبي موسى الأشعري رضي الله تعالى عنه **بسند نظيف**.(2)

---

❶ इस हदीस को त-बरानी ने "मो'जमे कबीर" में स-नदे हसन के साथ हज़रते अब्दुर्रहमान बिन आइद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया ।

"مجمع الزوائد"، كتاب الحجّ، باب أدب السفر، الحديث: ٥٢٩٧، ج٣، ص٤٨٨ (بحوالہ طبرانی)

❷ इस हदीस को हाकिम ने हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से स-नदे नज़ीफ़ के साथ रिवायत किया ।

"المستدرك"، تفسير سورة النساء، باب: ثلاثة يدعون الله فلا يستجاب لهم، الحديث: ٣٢٣٥، ج٣، ص٢٣.

तो येह छ[6] हुए जिन की निस्बत तस्रीह़ फ़रमाई कि इन की दुआ़ क़बूल नहीं होती।

أقول وبالله التوفيق : मगर ज़ाहिरन इस से मुराद येही कि उस ख़ास माद्दे में उन की दुआ़ न सुनी जाएगी न येह कि जो ऐसा करे मुत़्लक़न उस की कोई दुआ़ किसी अम्र में क़बूल न हो और इन उमूर में अ़-दमे क़बूल का सबब ज़ाहिर कि येह काम ख़ुद अपने हाथों के किये हैं।

वीराने मकान में उतरने वाला उस की मुज़र्रतों (नुक़्सानात) से आगाह है, फिर अगर वहां चोरी हो या कोई लूट ले या जिन्न ईज़ा पहुंचाएं तो येह बातें ख़ुद उस की क़बूल की हुई हैं, अब क्यूं उन के रफ़अ़ की दुआ़ करता है !

यूंही जब रास्ते पर क़ियाम किया तो हर क़िस्म के लोग गुज़रेंगे, अब अगर चोरी हो जाए, या हाथी घोड़े के पाउं से कुछ नुक़्सान, रात को सांप वग़ैरा से ईज़ा पहुंचे इस का अपना किया हुवा है। नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "शब को सरे राह न उतरो (या'नी रात को रास्ते में पड़ाव न डालो) कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ से जिसे चाहे राह पर फैलने की इजाज़त देता है।"[1]

और जानवर को ख़ुद छोड़ कर उस के ह़ब्स (या'नी उस पर क़ाबू पाने) की दुआ़ तो ज़ाहिर ह़माक़त है क्या वाह़िदे क़ह्हार को आज़माता या مَعَاذَالله उसे अपना मह़कूम ठहराता है !

---

1 "كنز العمال"، كتاب المواعظ والرقائق... إلخ، الحديث: ٤٣٧٩٧، الجزء السادس عشر، ج٨، ص١٤، (بحواله طبراني).

सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से किसी ने कहा : अगर खुदा की कुदरत पर भरोसा है अपने आप को उस पहाड़ से नीचे गिरा दो, फ़रमाया : ''मैं अपने रब को आज़्माता नहीं।''(1)

और औरत की निस्बत सहीह हदीस से साबित है कि टेढ़ी पसली से बनी है, इस की कजी हरगिज़ न जाएगी, सीधा करना चाहो तो टूट जाएगी और उस का टूटना येह है कि तलाक़ दे दी जाए।(2) पस या तो आदमी उस की कजी पर सब्र करे या तलाक़ दे दे कि न तलाक़ देता न सब्र करता बल्कि बद दुआ देता है, क़ाबिले क़बूल नहीं।

यूंही जब गवाह न किये खुद अपना माल मोहलका (हलाकत) में डाला और सफ़ीह (बे वुकूफ़) को देना बरबादी के लिये पेश करना है। फिर दानिस्ता, मवाक़ेए मुज़र्रत (नुक़्सान देह जगहों) में पड़ कर ख़लास (छुटकारा) मांगना हमाक़त है।

ख़ुलासा येह है : ''خویشتن کردہ را علاجے نیست''(3) फ़क़ीर के ख़याल में ज़ाहिरन मा'निये अहादीस येह हैं, وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

फ़क़ीर ने इस तहरीर के चन्द रोज़ बा'द ''**अल अश्बाहु वन्नज़ाइर**'' में देखा कि **फ़वाइदे शत्ता** में ''**मुहीत**'' कि **किताबुल हज्र** से येह पिछले तीन शख़्स नक़्ल किये कि इन की दुआ क़बूल नहीं होती।(4)

---

1 "فیض القدیر"، ج۳، ص۳۹۲، تحت الحدیث: ۳٤٤٥.

2 "صحیح مسلم"، کتاب الرضاع، باب الوصیة بالنساء، الحدیث:۱٤٦۸، ص۷۷۵.

3 *नहीं इलाज ख़ुद कर्दा कारसाज़ी का*

4 "الأشباه والنظائر"، الفن الثالث، فائدة: ثلاثة لا يستجاب دعاء هم، ص۳۳۸.

अ़ल्लामा ह़मवी ने "**ग़म्ज़ुल उ़यूनि वल बसाइर**"(1) में "**अह़कामुल क़ुरआन**" इमाम अबू बक्र जस्सास से नक़्ल किया कि ज़ह़ाक ने अपने दैन(2) पर गवाह न करने वाले की निस्बत कहा :

إن ذهب حقّه لم يؤجر

وإن دعا عليه لم يجب؛ لأنّه ترك حقّ اللّٰه تعالٰى وأمره.(3)

या'नी : "अगर उस का ह़क़ मारा जाए तो कुछ अज्र न पाए और अगर मदयून पर बद दुआ़ करे तो क़बूल न हो कि इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ छोड़ा और उस के अम्र का ख़िलाफ़ किया।"

या'नी : قوله تعالٰى: ﴿وَاَشۡهِدُوۡۤا اِذَا تَبَایَعۡتُمۡ﴾(4) येह ता'लील بِحَمۡدِاللّٰهِ تَعَالٰی इस मा'ना की मुअय्यिद (या'नी : ताईद करती) है जो फ़क़ीर ने समझे, या'नी इन की दुआ़ मक़्बूल न होना ख़ास उसी माद्दे (बारे) में है।

सबब 12, 13, 14 : इसी "**ग़म्ज़ुल उ़यून**" में "**किताबुल मुह़ा-ज़रात**" अबू यह़्या ज़-करिय्या मराग़ी से नक़्ल किया : ह़ज़रते

---

(1) أي: غمز عيون البصائر وهو مشهور بيننا

(2) **दैन की ता'रीफ़ :** जो चीज़ वाजिब फ़िज़्ज़िम्मा हो किसी अ़क़्द म-सलन बैअ़ या इजारा की वजह से या किसी चीज़ के हलाक करने से उस के ज़िम्मे तावान वाजिब हुवा या क़र्ज़ की वजह से वाजिब हुवा इन सब को दैन कहते हैं दैन की एक ख़ास सूरत का नाम क़र्ज़ है जिस को लोग दस्त गर्दां कहते हैं, हर दैन को आज कल लोग क़र्ज़ बोला करते हैं येह फ़िक़्ह की इस्तिलाह़ के ख़िलाफ़ है।

("बहारे शरीअ़त", हिस्सए याज़्दहुम, मुबैअ़ और समन में तसर्रुफ़ का बयान, जि. 2, स. 752)

(3) "غمز عيون البصائر"، الفن الثالث، فائدة: ثلاثة لا يستجاب دعاءهم، ج٣، ص٢٥٣.

(4) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह कर लो।"

(پ٣، البقرة: ٢٨٢)

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला छ⁶ शख़्सों की दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता। तीन तो येही पिछले ज़िक्र फ़रमाए,

और **एक** वोह जो अपने घर में मुंह फैलाए बैठा रहे कि ऐ रब मेरे ! मुझे रोज़ी दे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे रिज़्क़ ढूंडने का हुक्म न दिया ? तूने मेरा इर्शाद न सुना : ﴿فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ﴾ "फैल जाओ ज़मीन में और ढूंडो फ़ज़्ल अल्लाह का।" (پ ۲۸، الجمعۃ: ۱۰)

दूसरा वोह जिस ने अपना माल फ़ुज़ूल ख़र्चियों में खो दिया, अब कहता है : ऐ रब ! मुझे और दे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे मियाना रवी का हुक्म न दिया था ? क्या तूने मेरा इर्शाद न सुना था ? ﴿وَالَّذِیْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ یُسْرِفُوْا وَلَمْ یَقْتُرُوْا وَکَانَ بَیْنَ ذٰلِکَ قَوَامًا﴾(1)

तीसरा वोह कि ऐसे लोगों में मुक़ीम रहे जो उसे ईज़ा देते हैं और दुआ करे : ऐ रब मेरे ! मुझे इन के शर से किफ़ायत कर, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : क्या मैं ने तुझे हिजरत का हुक्म न दिया ? क्या मेरा इर्शाद न सुना : ﴿اَلَمْ تَکُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِیْهَا﴾(2) ـ(3)

येह तक़रीर भी بِحَمْدِاللّٰہِ इस मा'निये फ़क़ीर की मुअय्यिद है।

---

(1) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न हद से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें।" (پ۱۹، الفرقان: ٦٧)

(2) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते।" (پ٥، النسآء: ۹۷)

(3) "غمز عیون البصائر"، الفن الثالث، فائدۃ: ثلاثۃ لا یستجاب دعاء ھم، ج۳، ص۲۵۳

أقول : इस तक्दीर पर और बहुत लोग ऐसे निकल सकते हैं जो खुद कर्दा का इलाज ढूंडते हों म-सलन : जो बिग़ैर[1] किसी सख़्त मजबूरी के रात को ऐसे वक़्त घर से बाहर निकले कि लोग सो गए हों पाउं की पहचल (पाउं की आहट/आवाज़) रास्तों से मौक़ूफ़ हो गई हो। सहीह़ ह़दीस में इस से मुमा-न-अ़त फ़रमाई कि इस वक़्त बलाएं मुन्तशिर होती हैं।(1)

या रात[2] को दरवाज़ा खुला छोड़ दे या बिग़ैर[3] **बिस्मिल्लाह** कहे बन्द करे कि शैत़ान उसे खोल सकता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दहना पाउं मकान में रखे तो शैत़ान कि साथ आया था बाहर रह जाता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दरवाज़ा बन्द करे तो उस के खोलने पर क़ुदरत नहीं पाता।

या खाने[4], पानी के बरतन **बिस्मिल्लाह** कह कर न ढांके कि बलाएं उतरती और ख़राब कर देती हैं, फिर वोह त़आ़म व शराब (खाना व पानी) बीमारियां लाते हैं।(2)

या बच्चे[5] को मग़रिब के वक़्त घर से बाहर निकाले कि इस वक़्त शयात़ीन मुन्तशिर होते हैं।(3)

---

(1) "المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ١٣٤٥، ج١، ص٣٦٩.
و"مسند أبي يعلى"، الحديث: ٢٣٢٣، ج٢، ص٣٦٦.

(2) "صحيح البخاري" كتاب الأشربة، باب تغطية الإناء، الحديث: ٥٦٢٣، ج٣، ص٥٩١.
و"صحيح مسلم"، كتاب الأشربة، باب الأمر بتغطية الإناء... إلخ، الحديث:٢٠١٢، ص١١١٤.

(3) "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ١١٠٩٤، ج١١، ص٦٣.

या खाने[6] से बे हाथ धोए सो रहे कि शैत़ान चाटता और مَعَاذَالله बरस[(1)] का बाइ़स होता है[(2)]

या ग़ुस्ल[7] ख़ाने में पेशाब करे कि इस से वस्वसा पैदा होता है।[(3)]

या छज्जे[8] के क़रीब सोए और छत पर रोक (बाउन्ड्री) न हो कि गिर पड़ने का एह़तिमाल है।[(4)]

---

1 **बरस :** एक मरज़ का नाम। जिस में फ़सादे ख़ून से जिस्म पर सफ़ेद धब्बे पड़ जाते हैं। ("उर्दू लुग़त", जि. 2, स. 1020)

2 "المستدرك"، كتاب الأطعمة، باب لا يمسح أحدكم يده...إلخ، الحديث: ٧٢٠٩، ج٥، ص١٦٢.

و"سنن الترمذي"، كتاب الأطعمة، باب ما جاء في كراهية البيتوتة... إلخ، الحديث: ١٨٦٦، ج٣،ص٣٤٠.

و"المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٤٣٥، ج٦، ص٣٥.

و"المرقاة"، ج٨، ص٥٠.

3 "سنن ابن ماجه"، كتاب الطهارة، باب كراهة البول في المغتسل، الحديث: ٣٠٤، ج١، ص١٩٤.

و"سنن النسائي"، كتاب الطهارة، باب كراهة البول في المستحم، الحديث:٣٦، ص١٤.

4 "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في النوم على سطح غير محجر، الحديث:٥٠٤١، ج٤، ص٤٠٣.

و"المرقاة"، تحت الحديث: ٤٧٢٠، ج٨، ص٤٨٧-٤٨٨.

या औ़रत[9] से हम बिस्तरी के वक़्त **बिस्मिल्लाह** न कहे कि शैत़ान शरीक हो जाता और अपना उ़ज़्व उस के उ़ज़्व के साथ दाख़िल करता है(1) जिस के बाइ़स बच्चा इन्सान व शैत़ान दोनों के नुत़्फ़े से बनता और फिर बुरा तुख़्म (ख़राब बीज) बुरा ही फल लाता है(2)

या खाना[10] बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** के खाए(3) कि शैत़ान साथ खाता और जो त़आ़म चन्द मुसल्मानों को बस करता (काफ़ी होता) एक ही के खाने में फ़ना (ख़त्म) हो जाता है।(4)

या ज़मीन[11] के सूराख़ों में पेशाब करे कि कभी सांप वग़ैरा जानवरों का घर या जिन्न का मकान होता और इन्सान ईज़ा पाता है(5)

---

❶"فتح الباري"، تحت الحديث: ٥١٦٥، كتاب النكاح، ج٩، ص١٩٦

❷ हम बिस्तरी के वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने से मुराद येह है कि सित्र खोलने से पहले ही पढ़ ले कि खुले सित्र पढ़ना जाइज़ नहीं, येही एह़तियात़ इस्तिन्जा ख़ाना जाते वक़्त भी मल्ह़ूज़ रखें कि इस्तिन्जा ख़ाने से बाहर ही बिस्मिल्लाह शरीफ़ और दुआ़ पढ़ ली जाए।

❸ ह़दीसे पाक में वारिद कि खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना अगर भूल जाए और दरमियान में याद आए तो यूं कहे : ((بِسْمِ اللّٰهِ أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ)) "अल्लाह के नाम से खाने की इब्तिदा और इन्तिहा।"

"سنن أبي داود"، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام، الحديث: ٣٧٦٧، ج٣، ص٤٨٧

नोट : यहां जहां कहीं भी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने का ज़िक्र है इस से पूरी "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" मुराद है।

❹"سنن أبي داود"، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام، الحديث:٣٧٦٦، ج٣، ص٤٨٧.

❺"سنن النسائى"، كتاب الطهارة، باب كراهية البول فى الجحر، الحديث:٣٤، ص١٤.
و"مشكاة المصابيح"، كتاب الطهارة، الحديث: ٣٥٤، ج١، ص٨٤.
و"المرقاة"، تحت الحديث: ٣٥٤، ج٢، ص٧٢.

या अपनी[12] ख़्वाह अपने दोस्त की कोई चीज़ पसन्द आए तो उस पर दफ़्ए़ नज़र की दुआ :

"اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلَیْهِ وَلَا تَضُرَّهٗ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"(1) न पढ़े कि नज़र ह़क़ है(2) मर्द को क़ब्र और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है,(3)

या तन्हा[13] सफ़र करे कि फ़ुस्साक़ इन्सो जिन्न से मुज़र्रत (तक्लीफ़) पहुंचती है और हर काम में दिक़्क़त पड़ती है।

या हंगामे जिमाअ़[14] (हम बिस्तरी के वक़्त) शर्मगाहे ज़न (औ़रत की शर्मगाह) की त़रफ़ निगाह करे कि مَعَاذَاللّٰه ! अपने या बच्चे या दिल के अन्धे होने का बाइ़स है।(4)

या उस वक़्त[15] बातें करे कि बच्चे के गूंगे होने का एह़तिमाल है।(5)

---

1 ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर ब-र-कत नाज़िल फ़रमा, और इसे ज़रर न पहुंचे जो कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा सो वोही तो हुवा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ताईद के बिग़ैर नेकी पर कुछ क़ुदरत नहीं।

"مجمع الزوائد"، كتاب الطب، باب ما يقول إذا رأى ما يعجبه، الحديث: ٨٤٣٢، ج٥، ص١٨٧.

و"عمل اليوم والليلة"، الحديث: ٢٠٧ـ٢٠٨، ص٧٢، بألفاظ متقاربة.

2 "صحيح البخاري"، كتاب الطب، باب: العين حق، الحديث: ٥٧٤٠، ج٤، ص٣٢.

3 "حلية الأولياء"، الحديث: ٩٧٨٠، ج٧، ص٩٦.

4 "فيض القدير"، الحديث: ٥٥١-٥٥٢، ج١، ص٤١٩.

و"الكامل في ضعفاء الرجال"، ج٢، ص٢٦٥.

5 "كنز العمال"، كتاب النكاح، الحديث: ٤٤٨٩٣، الجزء السادس عشر، ج٨، ص١٥١.

و"التيسير" شرح "الجامع الصغير"، ج١، ص١٧٦.

या खड़े खड़े[16] पानी पिया करे[(1)] कि दर्दे जिगर का मूरिस (बाइस) है या पाख़ाने[17] में बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** कहे जाए कि ख़बाइस से मुज़र्रत (या'नी ख़बीस जिन्नात वग़ैरा से नुक़्सान पहुंचने) का अन्देशा है[(2)]

या फ़ासिक़ों[18], फ़ाजिरों, बद वज़्ओं, बद मज़्हबों के पास निशस्त बरख़ास्त करे कि अगर बिलफ़र्ज़ सोहबते बद के असर से बचा तो **मुत्तहम** ज़रूर हो जाएगा।

या लोगों[19] के रास्तों में ख़्वाह उन की निशस्त बरख़ास्त की जगह पाख़ाना पेशाब करे[(3)] कि आप ही गालियां खाएगा।

या सफ़र[20] से पलट कर बिग़ैर इत्तिलाअ़ किये रात को अपने घर

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب الأشربة، باب في الشرب قائماً، الحديث: ٢٠٢٤-٢٠٢٦، ص١١١٩.

2 "المصنف" لابن أبي شيبة، كتاب الطهارات، باب ما يقول الرجل إذا دخل الخلاء، الحديث: ٥، ج١، ص١١.

3 "سنن ابن ماجه" كتاب الطهارة، باب النهي عن الخلاء على قارعة الطريق، الحديث: ٣٢٨، ج١، ص٢٠٨.

و"المستدرك"، كتاب الطهارة، الحديث: ٦١١، ج١، ص٣٩٦.

و"المسند" لأحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس... إلخ، الحديث: ٢٧١٥، ج١، ص٦٤٠.

4 "صحيح البخاري"، كتاب النكاح، الحديث: ٥٢٤٦، باب طلب الولد، ج٣، ص٤٧٦.

و"صحيح مسلم"، كتاب الإمارة، باب كراهة الطروق... إلخ، الحديث: ٧١٥، ص١٠٦٤.

में चला आए(4) कि मक्रूह देखने का एह्तिमाल है।[1]

येह सब उमूर ह़दीसों में मासूर (वारिद) और इसी क़िस्म के और सदहा आदाब अह़ादीस में मज़्कूर और कुतुबे आइम्मा व उ़-लमा में मस्तूर (अइम्मए दीन व उ़-लमा की किताबों में मज़्कूर हैं) जिन की शर्ह़ के लिये मुजल्लदात (या'नी कई जिल्दें) भी काफ़ी नहीं।

बर बिनाए तक़रीरे मज़्कूर इन सब सूरतों में कह सकते हैं कि इन ख़ास माद्दों में इन लोगों की दुआ़ क़बूल न होगी कि इन्हों ने ख़ुद ख़िलाफ़े हुक्मे शर-अ़ कर के मवाक़ेए़ मुज़र्रत में क़दम रखा और ख़ादिमे ह़दीस जानता है कि अक्सर ह़दीस में बा'ज़ बातों का तज़्किरा और उन के ज़िक्र से उन के हज़ार अम्साल की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हैं। هذا ما عندي والله تعالیٰ أعلم (जो कुछ बयान हुवा येह मेरे नज़्दीक है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बेहतर जानने वाला है।)

सबब 15 : أَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ न करना (या'नी नेकी का हुक्म न करना और बुराई से न रोकना)।

या'नी किसी जमाअ़त में कुछ लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करते हों दूसरे ख़ामोश रहें और ह़त्तल मक़्दूर उन्हें बाज़ न रखें मन्अ़ न करें कि हर एक के आ'माल उस के साथ हैं हमें रोकने, मन्अ़ करने से क्या ग़रज़, तो जो बला आएगी उस में नेकों की दुआ़ भी न सुनी जाएगी कि येह ख़ुद नह्य व अम्र छोड़ कर तारिके फ़राइज़ थे।

---

1 या'नी हो सकता है कि उस के घर वाले ऐसी ह़ालत में हों कि उसे ना पसन्द है और उन्हें ऐसी ह़ालत में देख कर उसे दुख व तक्लीफ़ पहुंचे।

नोट : आदाबे सफ़र जानने के लिये "बहारे शरीअ़त", सोलहवां हि़स्सा, सफ़ह़ा 291 मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "या तो तुम أَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ करोगे या अल्लाह तआला तुम पर तुम्हारे बदों को मुसल्लत़ कर देगा, फिर तुम्हारे नेक दुआ करेंगे तो क़बूल न होगी।"

أخرجه البزار والطبراني في "الأوسط" عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه بسند حسن.(1)

तम्बीह :

أقول : किसी सूरत में दुआ क़बूल न होना यक़ीनी क़त़्ई नहीं, न इस से येह मुराद कि ऐसी ह़ालतों में दुआ को मह़्ज़ फ़ुज़ूल व ना मक़्बूल जान कर बाज़ रहें, ह़ाशा ! (हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि) दुआ सलाह़े अहले ईमान है (या'नी दुआ ईमान वालों का हथियार है), दुआ जालिबे अम्नो अमान है (या'नी दुआ अम्नो अमान लाने वाली है), दुआ नूरे ज़मीन व आस्मान है, दुआ बाइ़से रिज़ाए रह़मान है, बल्कि मक़्सूद इन उमूर से रोकना है कि येह दुआ व इजाबत में ह़िजाब और असर के लिये सद्दे बाब होते हैं, तो इन से बचना लाज़िम और जिस से वाक़ेअ़ हो लिये अगर हनूज़ (अभी तक) मौजूद हैं तो उन का इज़ाला ज़रूर, जैसे : माले ह़राम कि जिस से लिया है वापस दे वोह न रहा उस के वारिस को दे या उन से मुआ़फ़ कराए, कोई न मिले तो स-दक़ा कर दे और जो गुज़र चुके तौबा व इस्तिग़फ़ार और आयन्दा के लिये तर्के इसरार का अ़ज़्मे सह़ीह़ करे, इस की ब-र-कत उन की नुहूसत को ज़ाइल कर देगी और दुआ بِاِذْنِهٖ تَعَالٰى अपना असर देगी। ﴿وَ بِاللّٰهِ التَّوْفِيْق﴾

---

1 इस ह़दीस को बज़्ज़ार ने और त़-बरानी ने "अल मो'जमुल औसत़" में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से स-नदे ह़सन के साथ रिवायत किया।

"المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ۱۳۷۹، ج۱، ص۳۷۷

फ़स्ले हफ़्तुम किन किन बातों की दुआ न करनी चाहिये ?

قال الرضاء : इस में पन्दरह[15] मस्अले हैं, बारह[12] इर्शादे ह़ज़रत मुसन्निफ़े **अ़ल्लाम** और तीन **मुल्ह़क़ाते** फ़क़ीरे मुस्तहाम(1) ।

मस्अलए ऊला : दुआ में ह़द से न बढ़े, म-सलन : अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना, इसी त़रह़ जो चीज़ें मुह़ाल(2) (ना मुम्किन) या क़रीब ब मुह़ाल हैं न मांगे। ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾.(3)

قال الرضاء : "दुर्रे मुख़्तार" वग़ैरा में इसी क़बील से गिना : हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी का उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़ना भी मुह़ाले आ़दी(4) है।(5)

أقول : मगर ह़दीस शरीफ़ में है :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ وَتَمَامَ الْعَافِيَةِ وَدَوَامَ الْعَافِيَةِ)).

"इलाही ! मैं तुझ से मांगता हूं आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की

---

(1) या'नी ह़ज़रते मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة के बारह इर्शादात के साथ इस फ़क़ीर की तीन गुज़ारिशात।

(2) **मुह़ाल :** जिस का वुजूद बिदा-हतन मु-तसव्वर न हो जैसे जिस्म का ह़-र-कत व सुकून से आ़री होना या नज़री त़ौर पर ग़ैर मु-तसव्वर हो जैसा कि शरीके बारी तआ़ला का वुजूद। ("अल मोअ़-त-क़दुल मुन्तक़द" (मुतर्जम) स. 34)

मुह़ाल की तीन क़िस्में हैं : (1) मुह़ाले अ़क़्ली (2) मुह़ाले शर-ई (3) मुह़ाले आ़दी

इस बारे में मज़ीद तफ़्सील के लिये "**अल मोअ़-त-क़दुल मुन्तक़द**" मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

(3) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को।"

(پ: ٢، البقرة: ١٩٠)

(4) मुह़ाले आ़दी से मुराद येह है कि उ़मूमन या आ़-दतन ऐसा होता न हो मगर उस का होना ना मुम्किन भी न हो, कभी किसी ह़िक्मत के तह़्त हो भी सकता हो, म-सलन किसी शख़्स का हमेशा के लिये सिह़्ह़त मन्द रहना बीमार न पड़ना।

(5) "الدرّ المختار"، كتاب الصلاة، ج٢، ص٢٨٧

तमामी और आ़फ़िय्यत की हमेशगी ।''(1)

मगर येह कि "تَمَامُ الْعَافِيَة" से दीनो दुन्या व रूह़ व जिस्म की आ़फ़िय्यत हर बला से मुराद हो जो ह़क़ीक़तन बला है, या ना क़ाबिले बरदाश्त अगर्चे ब नज़र अज्र व जज़ा, ने'मत व अ़त़ा है ।(2) दीन में अ़क़ी–दतन व अ़–मलन किसी क़िस्म का नक़्स मुत़्लक़न बला है और रूह़ पर ग़म व फ़िक्रे उ़क़्बा के सिवा (आख़िरत की फ़िक्र के इ़लावा) और हर ग़म व परेशानी मुत़्लक़न रन्ज व अ़ना है (या'नी रन्ज व तक्लीफ़ है) और जिस्म के ह़क़ में कभी कभी हलका बुख़ार, ज़ुकाम, दर्दे सर और इन के मिस्ल हलके अमराज़ बला नहीं ने'मत हैं बल्कि इन का न होना बला है मर्दाने ख़ुदा पर अगर चालीस दिन गुज़रें कि कोई इ़ल्लत व क़िल्लत न पहुंचे (या'नी बीमारी व परेशानी न आए) तो इस्तिग़्फ़ार व इनाबत फ़रमाते हैं (या'नी तौबा करते और रुजूअ़ लाते हैं) कि मबादा बाग ढीली न कर दी गई हो (या'नी ख़ुदा न ख़्वास्ता तवज्जोह न हटा ली गई हो) । हां ! सख़्त अमराज़ मिस्ले जुनून व जुज़ाम व

---

1 "جـامـع الأحاديث" للسيوطي، المسانيد والمراسيل، مسند علي بن أبي طالب، الحديث: ٦٠٢٨، ج١٥، ص٣٤٣

2 मगर येह कि यहां ह़दीसे पाक में "تَمَامُ الْعَافِيَة" से दीन व दुन्या और जिस्म व रूह़ का हर बला से मह़फ़ूज़ होना मुराद है या फिर ना क़ाबिले बरदाश्त बलाओं से मह़फ़ूज़ होना मुराद है अगर्चे इस पर सब्र करना भी अज्रो सवाब का बाइ़स है, मुख़्तसर येह कि "تَمَامُ الْعَافِيَة" से हर त़रह़ की बला से मह़फ़ूज़ होना हरगिज़ मुराद नहीं क्यूं कि बा'ज़ बलाएं, म–सलन : हलका बुख़ार, ज़ुकाम और दर्दे सर वग़ैरा मुसीबत व बला नहीं बल्कि एक त़रह़ की ने'मत हैं जैसा कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة आगे ख़ुद वज़ाह़त फ़रमा रहे हैं ।

बरस व कूरी (अन्धा पन) व ताऊ़न[1] या सांप का काटना, जलना, डूबना, दबना, गिरना وأمثال ذلک (और इसी की मिस्ल दूसरी बीमारियां) अगर्चे मुसल्मान के कफ़्फ़ारए ज़ुनूब (या'नी गुनाहों का कफ़्फ़ारा) व बाइ़से अज्रो शहादत व रह़मत हैं ज़रूर बला और ﴿لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ﴾[2] में दाख़िल हैं। व लिहाज़ा इन से

---

❶ **जुनून :** "जुनून ऐसे दिमाग़ी ख़लल और ह़रज को कहते हैं कि आ़म तौ़र पर अपने मा'मूल के मुत़ाबिक़ आदमी के अक़्वाल व अफ़्आ़ल बाक़ी न रह सकें, चाहे येह कैफ़िय्यत फ़ित़री और पैदाइशी तौ़र पर हो, या बा'द में किसी मरज़ की बिना पर।"

("القاموس الفقهي"، ص٦٩)

जुज़ाम (कोढ़) **:** "एक मु-तअ़द्दी मरज़ जिस में बदन सफ़ेद हो जाता है मरज़ की शिद्दत में आ'ज़ा भी गल जाते हैं।" ("उर्दू लुग़त", जि. 6, स. 554)

बरस : वोह शदीद सफ़ेदी जो मुकम्मल बदन या इस के बा'ज़ ह़िस्सों पर होती है जो तमाम बदन में सरायत कर जाती और बढ़ती जाती है यहां तक कि वोह सफ़ेदी तमाम बदन को घेर लेती है, येह कमज़ोर और अपाहज कर देने वाली बीमारी है।"

("الرحمة في الطب والحكمة" للسيوطي، الباب الثامن والأربعون والمئة، ص١٧٥)

ताऊ़न : एक वबाई मु-तअ़द्दी बीमारी जिस में एक फोड़ा बग़ल या जांघ (या'नी रान) में निकलता है और इस के ज़ह्र से इन्सान बहुत कम जां बर होता है, इस में उ़मूमन क़ै, ग़शी और ख़फ़्क़ान (एक बीमारी जिस में दिल की धड़कन बढ़ जाती है) का ग़-लबा रहता है, येह मरज़ पहले चूहों में फैलता है फिर इन्सानों में आता है, येह बीमारी पिस्सूओं (एक पर दार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से बदन में खुजली होती है) के ज़रीए़ फैलती है।

("उर्दू लुग़त", जि. 13, स. 53)

ताऊ़न से भागने से मु-तअ़ल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का रिसाला : "تیسر الماعون للسکن في الطاعون" फ़तावा र-ज़विय्या की जिल्द 24 सफ़ह़ा 285 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

❷ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान **:** "हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (बरदाश्त) न हो।" (پ٣، البقرة: ٢٨٦)

आफ़िय्यत मांगी गई और इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में : ((أَعُوْذُ بِکَ مِنْ سَيِّءِ الْأَسْقَامِ)) [1] बुरे अमराज़ की क़ैद लगा कर पनाह त़लब की तो "تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَدَوَام" का येही **महमल** और कलामे फु-क़हा से तनाफ़ी ज़ाइल[2]

इसी त़रह़ अ़ल्लामा क़राफ़ी व अ़ल्लामा लक़्क़ानी वग़ैरहुमा ने इसी से शुमार किया : दोनों जहां की भलाई मांगना या'नी अगर येह मक़्सूद हो कि दारैन की सब ख़ूबियां दे कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं जो इसे नहीं मिल सकते ।)[3]

और इसी में दाख़िल है ऐसे अम्र के बदलने की दुआ़ मांगना जिस पर क़लम जारी हो चुका, म-सलन : लम्बा आदमी कहे : मेरा क़द कम हो जाए, या छोटी आंखों वाला : मेरी आंखें बड़ी हो जाएं ।

قال الرضاء : अगर्चे मुह़ाले अ़क़्ली के सिवा कि अस्लन सलाह़िय्यते क़ुदरत नहीं रखता, सब कुछ ज़ेरे क़ुदरते इलाहिय्यह दाख़िल है । मगर ख़िलाफ़े आ़दत बात की ख़्वास्त-गारी (दर-ख़्वास्त) सिर्फ़

---

1 या'नी ऐ अल्लाह ! मैं बुरे अमराज़ से तेरी पनाह त़लब करता हूं ।

"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب في الاستعاذة، الحديث: ١٥٥٤، ج٢، ص١٣٢

2 हमारी मज़्कूरा बाला बह़स से वोह ह़दीसे पाक जिस में "इलाही ! मैं तुझ से मांगता हूं आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की तमामी और आ़फ़िय्यत की हमेशगी" फ़रमाया गया और कलामे फु-क़हा जो अभी "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से गुज़रा कि "हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी का उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़ना भी मुह़ाले आ़दी है" के माबैन पैदा होने वाला येह ज़ाहिरी तआ़रुज़ दूर हो गया और येही "تَمَامَ الْعَافِيَةِ" का मफ़्हूम है कि ना क़ाबिले बरदाश्त बलाओं से ह़िफ़ाज़त रहे ।

3 "أنوار البروق"، الفرق الثالث والسبعون والمائتان، القسم الثاني، ج٤، ص٤٥٣

हज़राते अम्बिया व औलिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वक़्ते इज़्हारे मो'जिज़ा व करामत ब ग़-रज़े इर्शाद व हिदायत व इत्मामे हुज्जत (लोगों की हिदायत और उन पर हुज्जत क़ाइम करने के लिये) बि इज़्निल्लाहे तआला जाइज़ है। औरों का आलमे अस्बाब में हो कर ऐसी बात मांगना अपनी हद से बढ़ना और जहल व सफ़ाहत में पड़ना है।

﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ﴾

"जैसे कोई अपने हाथ फैलाए बैठा है कि पानी ख़ुद उस के मुंह में पहुंच जाए और हरगिज़ न पहुंचेगा।" (پ۱۳، الرعد: ۱٤)

मस्अला 2 : लग्व और बे फ़ाएदा दुआ न करे।

इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا हिकायत करते हैं : बनी इस्राईल में एक शख़्स था सनोस[1] नामी, उसे हुक्म हुवा कि तीन[3] दुआएं तेरी क़बूल होंगी अपनी औरत के लिये दुआ की तमाम बनी इस्राईल की औरतों से ज़ियादा ख़ूब सूरत हो गई ग़ुरूर व शुरूर करने और शोहर को सताने लगी एक दिन उस से ख़फ़ा हो कर कहा : ख़ुदा तुझे कुतिया कर दे उसी वक़्त कुतिया हो गई फिर बेटों की सिफ़ारिश से उस के लिये दुआ की : इलाही ! इसे अस्ली सूरत पर कर दे जो सूरत पहले थी वोही हो गई और तीनों दुआएं मुफ़्त ज़ाएअ़ हुईं।[2]

मस्अला 3 : गुनाह की दुआ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए या कोई फ़ाहिशा ज़िना करे कि गुनाह की तलब भी गुनाह है।

---

1 قد وجدنا اسمه : بسوس.

2 "تفسير البغوي"، الأعراف، تحت الآية: ١٧٥، ج٢، ص١٨٠.
و"تفسير الخازن"، الأعراف، تحت الآية: ١٧٥، ج٢، ص١٦٠.

मस्अला 4 : क़त्ए रेह्म (या'नी अ़ज़ीज़ों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने) की दुआ न करे, म-सलन : फ़ुलां व फ़ुलां रिश्तादारों में लड़ाई हो जाए।

ह़दीस में है : "मुसल्मान की दुआ क़बूल होती है, जब तक ज़ुल्म व क़त्ए रेह्म की दर-ख़्वास्त न करे।[1]"

قال الرضاء : क़त्ए रेह्म भी एक क़िस्मे इस्म है (या'नी गुनाह की क़िस्म है), जिसे ब वज्हे शिद्दते एहतिमामे अह़ादीस, बाब में इस्म पर अ़त्फ़ फ़रमाया : ((**ما لم يدع بإثم أو قطيعة رحم**)) (जब तक गुनाह या क़त्ए रेह्म की दुआ न करे)[2] इसी लिये मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ब इत्तिबाए अह़ादीस इसे मस्अलए जुदागाना ठहराया।

मस्अला 5 : अल्लाह तआ़ला से ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार ग़नी है, अगर तमाम ख़ल्क़ को एक साअ़त में उन के ह़ौसले से ज़ियादा बख़्शे, उस के ख़ज़ाने में कुछ नुक़्सान न हो।

ह़ज़रत इमामुल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब मांगो ख़ुदा से तो फ़िरदौस मांगो कि वोह औसत़ बिहिश्त और आ'ला जन्नत है और उस के ऊपर है अ़र्श रह़मान का, और उसी से जारी होती हैं नहरें बिहिश्त की।"[3]

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء أنّ دعوة المسلم مستجابة، الحديث: ٣٣٩٢، ج٥، ص٢٤٨.

2 المرجع السابق.

3 "صحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب: ﴿وَكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَاءِ﴾، الحديث: ٧٤٢٣، ج٤، ص٥٤٧.

और येह भी आया है : ''जब तू दुआ मांगे बहुत मांग कि तू करीम से मांगता है ।''(1)

ऐ अज़ीज़ ! वोह करीम व रहीम है, बे मांगे करोड़ों ने'मतें तेरे हौसला व लियाक़त से ज़ियादा तुझे अ़ता करता है । अगर तू उस से मांगेगा क्या कुछ न पाएगा । **ولنعم ما قيل** (और क्या ही ख़ूब कहा गया है)

آنکه ناخواسته عطا بخشد

گر تو خواهش کنی چها بخشد (2)

بادشاہے ست او اگر خواهد

هر دو عالم بیك گدا بخشد (3)

और वोह जो ह़दीस में है कि ''जूते का दुवाल (तस्मा) टूटे तो वोह भी ख़ुदा से मांग''(4) और बा'ज़ मुख़ा-त़बाते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में है : ''हांडी

---

1 "صحيح ابن حبان"، كتاب الأدعية، ذكر استحباب الإكثار في السؤال ...إلخ، الحديث: ٨٨٦، ج٢، ص١٢٤، بألفاظ متقاربة.

2 *बिन मांगे अ़ता फ़रमाता है मह़रूम कभी फैरा ही नहीं*
फ़रियाद अगर तू कर ले कभी फिर देख अ़ताओं की बारिश

3 *तू बादशाह है ऐ मेरे मालिक ! गदा को तू*
अगर चाहे अ़ता कर दे दो आ़लम आने वाह़िद में

4 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها، الحديث: ٣٦٢٣، ج٥، ص٣٤٩.

का नमक भी मुझ से मांग।[1]'' मत्लब इस का येह है कि तमाम तवज्जोह अपनी मेरी त़रफ़ रख ग़ैर से अस्लन तअ़ल्लुक़ न कर, जो मांग मुझ ही से मांग, अगर अह़यानन (कभी कभार) किसी ख़सीस (कमतर और ह़क़ीर) चीज़ की ज़रूरत हो, मुझ से सुवाल कर न येह कि ख़सीस ही सुवाल किया कर, और तह़क़ीक़ येह है कि येह अम्र ब इख़्तिलाफ़े अह़वाल मुख़्तलिफ़ है जिस वक़्त ख़ुदा के उ़मूमे करम व क़ुदरत और अपनी आ़जिज़ी व एह़तियाज पर नज़र हो और बा वुजूद इस के ख़सीस ह़क़ीर चीज़ की ज़रूरत हो, दूसरे से सुवाल करना और ग़ैर के सामने हाथ फैलाना क़बूल न करे, इस क़िस्म का सुवाल ख़ुदा से मुज़ा-यक़ा नहीं रखता, हां बिला ज़रूरत ख़सीस चीज़ मांगना ह़माक़त है, उ़म्दा शै मांगे कि ख़ुदा करीम है और हर चीज़ पर क़ादिर।

قال الرضاء : दुन्या ज़लील और इस की तमाम मताअ़ बआं कसरत (बा वुजूद बहुत होने के) निहायत क़लील[2] ﴿قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ﴾ वोह मुसल्मान के लिये ज़ादे मुसाफ़िर (तोशए मुसाफ़िर) है और ज़ाद ब क़दरे ह़ाजत दरकार होता है न लादने को, व लिहाज़ा इस में ज़ियादा की हवस कसरत की त़लब मबग़ूज़ (ना पसन्द) ठहरी ﴿اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ﴾[3]

और बे ज़रूरते शर-इय्या ग़ैरों के दरवाज़े पर भीक मांगने की इजाज़त नहीं तो अब ह़ाजत मौजूद और ग़ैर से मांगना ना मह़मूद और ज़ियादा की हवस भी मरदूद, **ला जरम** (यक़ीनन) नमक की कंकरी भी

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها، الحديث: ٣٦٢٤، ج٥، ص٣٤٩.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरतना थोड़ा है।" (پ٥، النساء: ٧٧)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।" (پ٣٠، التكاثر: ١-٢)

रब ही से मांगेंगे और उस की जगह येह न कहेंगे कि नमक का पहाड़ दे दे या पैसे की ज़रूरत है तो करोड़ रुपै दे दे कि एक पैसा और करोड़ अशरफ़ी ज़लील व क़लील होने में दोनों बराबर हैं, येह "كرّ إلى ما منه فرّ"(1) हो जाएगा। ब ख़िलाफ़ नईमे आख़िरत (आख़िरत की ने'मतों के) कि इस में ज़ियादत मत़्लूब व मक़्सूद और अ़ताए करीम ग़ैर मह़दूद फिर क्यूं कम पर क़नाअ़त करें ! وَلِلّٰهِ الْحَمْد ﴾

मस्अला 6 : रन्ज व मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ़ न करे कि मुसल्मान की ज़िन्दगी उस के ह़क़ में ग़नीमत है।

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : एक शख़्स शहीद हुवा, बरस दिन बा'द (एक साल बा'द) उस का भाई भी मर गया। त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब में उस को देखा कि शहीद से बिहिश्त में आगे जाता है, ख़्वाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बयान किया और उस की पेश क़दमी (शहीद से आगे जाने) पर तअ़ज्जुब किया, फ़रमाया : जो पीछे मरा, क्या उस ने एक र-मज़ान का रोज़ा न रखा ! और एक साल की नमाज़ अदा न की ! या'नी मक़ामे तअ़ज्जुब नहीं कि इस की इ़बादत उस की इ़बादत से ज़ियादा है।(2)

ऐ अ़ज़ीज़ ! वहां के लिये क्या जम्अ़ किया कि यहां से भागता है ? अगर मौत की शिद्दत व सख़्ती से वाक़िफ़ हो तो आरज़ू करे, काश ! तमाम दुन्या की तक्लीफ़ मुझ पर हो और चन्द रोज़ मौत से मोहलत मिले।

---

(1) आस्मान से गिरा खजूर में अटका। या'नी एक मुसीबत से छूटा दूसरी में जा फंसा।

(2) "سنن ابن ماجه"، كتاب تعبير الرؤيا، باب تعبير الرؤيا، الحديث: ٣٩٢٥، ج٤، ص٣١٣ و"المسند" للإمام لأحمد بن حنبل، الحديث: ٨٤٠٧، ج٣، ص٢٢٩.

सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रन्ज के सबब से मौत की आरज़ू न करो, अगर नाचार हो जाओ कहो :

((اَللّٰهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّي))

"ख़ुदाया मुझे जिन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे ह़क़ में बेहतर है और मुझे वफ़ात दे जिस वक़्त मौत मेरे ह़क़ में बेहतर हो।"[1]

एक शख़्स ने पूछा : बेहतर लोगों का कौन है ? (या'नी लोगों में से बेहतरीन शख़्स कौन है ?) फ़रमाया : "जिस की उ़म्र दराज़ हो और काम अच्छे।" अ़र्ज़ की : बदतर लोगों का कौन है ? फ़रमाया : "जिस की उ़म्र बड़ी हो और काम बुरे।"[2]

पस नेकूकार के वासिते़ ज़िन्दगी ने'मत और बदकार के लिये ज़िन्दगी निक़्मत (सज़ा), मगर तमन्ना मौत की इस ख़याल से कि जिस क़दर जियूंगा (ज़िन्दा रहूंगा) ज़ियादा गुनाह करूंगा, नादानी है, अगर गुनाहों को बुरा जानता है तो उन के तर्क पर मुस्तइ़द (तय्यार) हो[3] और उ़म्रे दराज़ त़लब करे ता (कि) इ़बादत व रियाज़त से उन का तदारुक (तलाफ़ी) करे ﴿اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ﴾[4]

---

1 "سنن النسائي"، كتاب الجنائز، باب تمني الموت، الحديث: ١٨١٧-١٨١٨، ص ٣١١.
و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١١٩٧٩، ج٤، ص٢٠٢.

2 "سنن الترمذي"، ابواب الزهد، باب منه، ج٤، ص ١٤٨، الحديث: ٢٣٣٧.

3 या'नी : अगर गुनाहों को बुरा जानता है तो गुनाह छोड़ने पर कमर बस्ता हो।

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।" (پ١٢، هود: ١١٤)

हज़रते मरयम سَلَامُ اللهِ عَلَيْهَا का फ़रमाना : ﴿يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا﴾(1) दुआ ब हलाक नहीं बल्कि आरज़ू और तमन्ना ज़मानए माज़ी की है और "रन्ज व मुसीबत से घबराने" की क़ैद इस लिये हम ने ज़िक्र की, कि येह दुआ (या'नी मरने की दुआ) ब सबबे शौक़े वस्ले इलाही व इश्तियाक़े लिक़ाए सालिहीन दुरुस्त है।

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दुआ करते हैं :

﴿تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ﴾(2)

इसी त़रह़ जब दीन में फ़ितना देखे तो अपने मरने की दुआ जाइज़ है।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल है :

((إذا أردتَ بقوم فتنة فاقبضني إليك غير مفتون)).(3)

ह़दीस में है : फ़रमाते हैं : "कोई तुम से मौत की आरज़ू न करे मगर जब कि ए'तिमाद नेकी करने पर न रखता हो।"(4)

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हाए किसी त़रह़ मैं इस से पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती।" (پ١٦، مريم: ٢٣)

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मुझे मुसल्मान उठा और उन से मिला जो तेरे कुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं।" (پ١٣، يوسف: ١٠١)

3 ऐ अल्लाह ! जब तू किसी क़ौम के साथ अ़ज़ाब व गुमराही का इरादा फ़रमाए (उन के आ'माले बद के सबब) तो मुझे बिग़ैर फ़ितने के अपनी त़रफ़ उठा।

"سنن الترمذي"، كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة ص، الحديث:٣٢٤٦، ج٥، ص١٦١.

4 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٨٦١٥، ج٣، ص٢٦٣.

قـال الـرضـاء : ख़ुलासा येह कि दुन्यवी मुज़र्रतों से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुज़र्रत (दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़ [1] ﴿كمـا فـي "الـدرّ المختـار" و"الخلاصة" وغيرهما.﴾

मस्अला 7 : बे ग़-रज़े सहीह़ शर-ई़ किसी के मरने और ख़राबी की दुआ़ न मांगे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((إذا سمعتم الرجل يقول هلك الناس فهو أَهلكُهم)).

"जब सुनो तुम किसी मर्द को कि कहता है लोग हलाक हों[1] तो वोह सब से ज़ियादा हलाक होने वाला है।"[2]

ह़दीस शरीफ़ में है : एक शराबी को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर लाए हुज़ूर ने ह़द मारने का हुक्म दिया कोई उस के धोल मारता (या'नी थप्पड़ लगाता), कोई जूते, फ़रमाया : "इस की मलामत करो" किसी ने कहा : तुझ को ख़ुदा का ख़ौफ़ न आया, किसी ने कहा : तू रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से न शरमाया, एक ने कहा : أَخزَاكَ اللّٰهُ "ख़ुदा तुझे ख़्वार करे"

---

1 "الدر المختار"، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٩١.
و"خلاصة الفتاوى"، كتاب الكراهية، الفصل الثاني في العبادات، ج٤، ص٣٤٠.
و"الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثلاثون في المتفرقات، ج٥، ص٣٧٩.

1. या'नी जो शख़्स औरों की हलाकत व ख़राबी चाहता है वोह सब से ज़ियादा हलाक व ख़राब होता है और बा'ज़ هلك الناس को जुम्लए ख़-बरिय्या कहते हैं। या'नी जो औरों को हलाकत में मुब्तला व बुरा और अपने आप को उन से बड़ा जानता है, वोह सब से ज़ियादा हलाकत में मुब्तला और बुरा है। ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ. وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٧٦٨٩، ج٣، ص١٠٢.

फ़रमाया : "येह न कहो बल्कि कहो : ((اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَہٗ اَللّٰھُمَّ ارْحَمْہُ)) "ख़ुदाया ! इस को बख़्श दे, ख़ुदाया ! इस पर रह़्म फ़रमा ।"(1)

तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी ने अपनी क़ौम की शिकायत की और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दौस पर दुआ़ कीजिये(2) फ़रमाया :

((اَللّٰھم اھد دَوساً وآت بھم))

---

1 "سنن أبي داود"، باب في الحد في الخمر، الحديث: ٤٤٧٧-٤٤٧٨، ج٤، ص٢١٦-٢١٧.

2 ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी यमन के मश्हूर क़बीले दौस के फ़र्द थे, येह मक्के ही में ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे, और इस के बा'द अपने वत़न वापस गए और अ़र्सा तक वहीं रहे, ख़ैबर के मौक़अ़ पर अपने मुत्तबिईन के साथ ख़ैबर ही में ह़ाज़िर हुए फिर मदीनए त़य्यिबा में रहने लगे, जंगे यमामा में शहीद हुए, इन का ख़िताब "ज़ुन्नूर" भी है, इन्हों ने इस्लाम क़बूल करते वक़्त येह अ़र्ज़ किया था : मुझे दौस की त़रफ़ भेजिये और मुझे कोई निशानी अ़त़ा फ़रमाइये जिस से उन्हें हिदायत नसीब हो, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! इसे नूर अ़त़ा फ़रमा, इस दुआ़ की ब-र-कत से इन की दोनों आंखों के दरमियान एक नूर चमकता था, इन्हों ने अ़र्ज़ की : मुझे अन्देशा है कि वोह लोग येह कहें कि इस की सूरत बिगड़ गई है तो येह रोशनी इन के कोड़े के कनारे मुन्तक़िल हो गई, इन का कोड़ा अंधेरी रात में चमकता था इसी लिये इन का नाम "ज़ुन्नूर" पड़ा । इन की येह अ़र्ज़ दाश्त (या'नी दौस की हलाकत की दुआ़ की दर-ख़्वास्त) दोबारा ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर थी जब कि वोह ख़ैबर में अपने अस्सी80 या नव्वे90 साथियों के साथ ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए थे, इन्हों ने येह भी अ़र्ज़ किया था कि दौस में ज़िना और सूद आ़म है इन की हलाकत की दुआ़ कीजिये (तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन की हिदायत की दुआ़ फ़रमाई) ।

("نزهة القاري"، كتاب الجهاد، باب الدعاء على المشركين... إلخ، ج٦، ص٢٢٧)

"ख़ुदाया ! दौस को हिदायत फ़रमा और उन को यहां ले आ।"(1)

इसी त़रह़ जब सक़ीफ़(2) के पथ्थरों से बहुत मुसल्मान शहीद हुए सह़ाबा ने गुज़ारिश की इन पर दुआ़ कीजिये। फ़रमाया :

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب الدعاء للمشركين بالهدى ليتألفهم، الحديث: ٢٩٣٧، ج٢، ص٢٩١.

2 येह भी अ़रब के एक क़बीले का नाम है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के साथ त़ाइफ़ का क़स्द किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वहां पहुंच कर अशराफ़े सक़ीफ़ या'नी अ़ब्दे यालील बिन अ़म्र बिन उ़मैर और उस के भाई मस्ऊ़द और ह़बीब को इस्लाम की दा'वत दी मगर उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वत का बुरी त़रह़ जवाब दिया, एक बोला : अगर आप को ख़ुदा ने पैग़म्बर बनाया है तो वोह का'बे का पर्दा चाक कर रहा है, दूसरे ने कहा : क्या ख़ुदा को पैग़म्बरी के लिये आप के सिवा कोई न मिला ? तीसरे ने कहा : मैं हरगिज़ आप से कलाम नहीं कर सकता, अगर आप पैग़म्बरी के दा'वे में सच्चे हैं तो आप से गुफ़्त-गू करना ख़िलाफ़े अदब है और अगर झूटे हैं तो क़ाबिले ख़ित़ाब नहीं, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मायूस हो कर वापस हुए तो उन्हों ने कमीने लोगों और ग़ुलामों को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उभारा जो आप के लिये इन्तिहाई नाज़ैबा और गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहते और तालियां बजाते, इतने में लोग जम्अ़ हो गए और उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दोनों त़रफ़ सफ़ें बांध लीं जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दरमियान से गुज़रे तो क़दमे मुबारक उठाते वक़्त आप के मुक़द्दस क़दमों पर पथ्थर बरसाने लगे यहां तक कि ना'लैने मुबारक ख़ून से भर गए, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पथ्थरों का सदमा पहुंचता तो बैठ जाते, मगर वोह बाज़ू थाम कर खड़ा कर देते, जब चलने लगते तो पथ्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते, उ़त्बा और शैबा आप के सख़्त दुश्मन थे मगर आप की इस ह़ालत पर उन के दिल भी नर्म पड़ गए।

(ماخوذ من "السيرة الحلبية"، باب ذكر خروج النبي صلى الله عليه وسلم إلى الطائف، ج١، ص٤٩٨-٤٩٩. و"السيرة النبوية" لابن هشام، ص١٦٧)

((اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيفًا))

"खुदाया ! सक़ीफ़ को हिदायत फ़रमा ।"(1)

जंगे उहुद में ज़ालिमों ने दन्दाने मुबारक संगे सितम से शहीद किया और कुफ़्फ़ारे ताइफ़ ने हुज़ूर के जिस्मे नाज़नीन पर इस क़दर पथ्थर मारे कि पाश्नए मुबारक (या'नी एड़ियां मुबारक) खून से आलूदा हुए मगर उन पर भी दुआए हलाक व ख़राबी न की हुज़ूर अगर चाहते वोह सब हलाक हो जाते ।

अतिय्या ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾(2) की तफ़्सीर में कहते हैं : "مُعْتَدِيْن" से वोह लोग मुराद हैं जो लोगों के कोसने में ह़द से बढ़ते और कहते हैं : अल्लाह उन को ख़्वार करे, अल्लाह उन पर ला'नत करे ।(3)

मौलाना या'क़ूब चर्ख़ी आयए करीमा : ﴿فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ﴾(4)

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب المناقب، باب في ثقيف وبني حنفية، الحديث: ٣٩٦٨، ج٥، ص٤٩٢.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं ।"

(پ٨، الأعراف:٥٥)

3 "تفسير البغوي"، پ٨، الأعراف، تحت الآية: ٥٥، ج٢، ص١٣٨.

وجدنا هذا القول تحت الآية: ﴿اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾.

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तो उसे उस के रब ने चुन लिया और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों (ह़क़दारों) में कर लिया ।" (پ٢٩، القلم: ٥٠)

की तफ़्सीर में लिखते हैं : नसीब आरिफ़ का येह है कि बलाओं में सब्र करे और मुन्किरों के इन्कार से मु-तग़य्यर न हो बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करे कि फ़रमाते थे :

((اللّٰهم اهد قومي فإنّهم لا يعلمون)) "ख़ुदाया ! मेरी क़ौम को हिदायत फ़रमा कि वोह जानते नहीं।"

हां अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से उम्मीद तौबा और तर्के ज़ुल्म की न हो और उस का मरना, तबाह होना ख़ल्क़ के ह़क़ में मुफ़ीद हो, ऐसे शख़्स पर बद दुआ दुरुस्त है।

सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब देखा कि क़ौम के सरकश अपने कुफ़्रो इ़नाद से बाज़ न आएंगे और वद व सुवाअ़ व यग़ूस व यऊ़क़ व नस्र को न छोड़ेंगे,(1) जनाबे इलाही में अ़र्ज़ की :

﴿رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا﴾

"ख़ुदाया ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई घर वाला न छोड़।" (پ٢٩، نوح: ٢٦)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़िब्त़ियों पर दुआ की :

﴿رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ﴾

"ख़ुदाया ! इन के माल मिटा दे और इन के दिलों पर सख़्ती कर कि

(1) ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम इन की पूजा करती और इन की इ़बादत छोड़ने पर तय्यार न थी, सूरए नूह़ की आयत नम्बर 23 में इन का बा क़ाइ़दा ज़िक्र मौजूद है। मज़ीद तफ़्सील के लिये "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान", स. 686, "नूरुल इरफ़ान", स. 912 और "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 24, स. 573 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

वोह ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देखें।" (پ۱۱، یونس: ۸۸)

और इसी क़िस्म के अग़राज़ के वासिते हमारे पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी अह़यानन (कभी कभार) बा'ज़ कुफ़्फ़ार पर दुआ़ करना साबित है।

قال الرضاء : बा'ज़ उन में से ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने "سُرُوْرُالْقُلُوْبِ فِيْ ذِكْرِ الْمَحْبُوْبِ" के बाब मो'जिज़ात में ज़िक्र फ़रमाई।)[1]

मस्अला 8 : किसी मुसल्मान को येह बद दुआ़ न करे कि तू काफ़िर हो जाए, कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे, बिला रैब (या'नी बिला शक व शुबा) कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (मुसल्मान का बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही कि सब बद ख़्वाहियों से बदतर है।

मस्अला 9 : किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊ़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक मुस्तह़िक़े ला'नत पर भी ला'नत न कहे[2] यूं ही मच्छर और हवा और जमादात व हैवानात[1] पर भी ला'नत मम्नूअ़ है।

---

1 "سرور القلوب"، معجزاتِ مصطفى صلى الله تعالى عليه وسلم، ص۳۱۵-۳۱٦.

2 "منح الروض الأزهر" للقارئ، الكبيرة لا تخرج المؤمن عن الإيمان، ص۷۲.

و"أشعة اللمعات"، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان من الغيبة والشتم، ج٤، ص ۷۱

1 मगर बिच्छू वग़ैरा बा'ज़ जानवरों पर ह़दीस में ला'नत आई है। ۱۲منه قُدِّسَ سِرُّهٗ

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुसल्मान बहुत त़ा'न[1] करने वाला और ला'न करने वाला और फ़ोहूश व बेहूदा बकने वाला नहीं होता।"(1)

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : "बहुत ला'नत करने वाले क़ियामत के दिन गवाह व शफ़ीअ़ न होंगे।"(2)

ا۔ **في رواية "الترمذي": ((لا يكون المؤمن لعّاناً)).**

("سنن الترمذي"، باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث: ٢٠٢٦، ج٣، ص٤١٠).

وفي أخرى له: ((لا ينبغي للمؤمن أن يكون لعّاناً)).

("سنن الترمذي"،باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث: ٢٠٢٦، ج٣، ص٤١٠).

وروى أيضاً: ((المسلم ليس بلعّان)).

("سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في اللعنة، الحديث: ١٩٨٤، ج٣ ص٣٩٣، بألفاظ متقاربة. وفيه: ((ليس المؤمن بالطعان ولا اللعان)).

وللبخاري: لم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم فاحشاً ولا لعّاناً.

("صحيح البخاري"، باب ما ينهي من السباب واللعن، الحديث: ٦٠٤٦، ج٤، ص١١٢).

۱۲منہ قُدِّسَ سِرُّہٗ

(1) "سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث ١٩٨٤، ج٣، ص٣٩٣.

(2) "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، الحديث ٢٥٩٨، ص١٤٠٠.

तीसरी ह़दीस शरीफ़ में है "मुसल्मान की ला'नत मिस्ल उस के क़त्ल के है।"(1)

चौथी ह़दीस शरीफ़ में है "जब बन्दा किसी पर ला'नत करता है, वोह ला'नत आस्मान की त़रफ़ चढ़ती है उस के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं कि यहां तेरी जगह नहीं, फिर ज़मीन की त़रफ़ उतरती है उस के दरवाज़े भी बन्द हो जाते हैं कि यहां तेरी जगह नहीं, फिर दाएं बाएं फिरती है जब कहीं ठिकाना नहीं पाती अगर जिस पर ला'नत की, ला'नत के लाइक़ है तो उस पर जाती है वरना कहने वाले की त़रफ़ पलट आती है।"(2)

और फ़रमाते हैं : ऐ औ़रतो ! स-दक़ा दो कि मैं ने तुम्हें दोज़ख़ में ब कसरत देखा या'नी औ़रतें दोज़ख़ में बहुत पाईं। अ़र्ज़ की : किस सबब से ? फ़रमाया : तुम ला'नत बहुत करती हो।(3)

इमाम ग़ज़ाली "कीमियाए सआ़दत" में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वक़्त सो100 बार शराब पी, एक सह़ाबी ने उस पर ला'नत की और कहा : कब तक इस का फ़साद बाक़ी रहेगा ! हुज़ूर ने फ़रमाया : "शैत़ान इस का दुश्मन मौजूद है वोह किफ़ायत करता है, तू ला'नत कर के शैत़ान का यार न हो।"(4)

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الأدب، باب ما ينهى من السباب واللعن، الحديث:٦٠٤٧، ج٤، ص١١٢.

و"المعجم الكبير"، الحديث: ١٣٣٠، ج٢، ص٧٣.

2 "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في اللعن، الحديث: ٤٩٠٥، ج٤، ص٣٦٢.

3 "صحيح البخاري"، كتاب الحيض، باب ترك الحائض الصوم، الحديث:٣٠٤، ج١، ص١٢٣.

4 "كيميائے سعادت"، اصل پنجم، باب اول، ج١، ص٣٧١.

और एक शख़्स ने शराब पी, लोग उस को मारते और ला'नत करते। फ़रमाया : "ला'नत न करो कि वोह ख़ुदा व रसूल को दोस्त रखता है।"[1]

सुवाल : शर-अ़ शरीफ़ में ज़ालिमों और बियाज (सूद) खाने वालों और इस के मुआ़-मले में पड़ने वालों पर और उस शख़्स पर जो अपने मां बाप पर ला'नत करे और जो बिदअ़ती को जगह दे और जो ग़ैरे ख़ुदा के वासिते़ जानवर ज़ब्ह़ करे और सिवा इन के और गुनहगारों पर ला'नत वारिद है और अगले पैग़म्बर भी कुफ़्फ़ार पर ला'नत करते :

﴿لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ﴾[2]

और फ़िरिश्ते भी उन पर ला'नत किया करते हैं :

﴿اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا﴾[3]

---

1. "صحيح البخاري"، كتاب الحدود، باب ما يكره من لعن شارب الخمر، الحديث: ٦٧٨٠، ج٤، ص ٣٣٠.
و"كيميائے سعادت"، ركن سوم، آفت هشتم، ج٢، ص٥٧٣.

2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ई़सा बिन मरयम की ज़बान पर।" (پ٦، المائدة: ٧٨)

3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "उन का बदला येह है कि उन पर ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की, हमेशा इस में रहें।" (پ٣، ال عمران: ٨٧-٨٨)

जवाब : ला'नत लुग़त में ब मा'ना त़र्द व इब्आ़द (या'नी धुत्कार और दूरी) के है और अहले शरीअ़त कभी इस से त़र्द व इब्आ़दे रह़मते इलाही व बिहिश्त से, और कभी त़र्द व इब्आ़दे जनाबे क़ुर्ब और रह़मते ख़ास व द-र-जए साबिक़ीन से मुराद लेते हैं।(1)

पहले मा'नी काफ़िरों के लिये ख़ास हैं। जिस शख़्स का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी जैसे : अबू जह्ल, अबू लहब, फ़िरऔ़न, शैत़ान, हामान उस पर ला'नत जाइज़, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिन पर ला'नत करते थे, **ब ए'लामे** इलाही (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बताने से) उन के काफ़िर मरने से वाक़िफ़ थे और फ़िरिश्ते भी उन्हीं पर ला'नत करते हैं जिन की बद अन्जामी से **ब ए'लामे** इलाही वाक़िफ़ होते हैं या अम्बिया व मलाएका काफ़िरों पर ब वस्फ़े कुफ़्र ला'नत करते हैं या'नी : ﴿لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ﴾(2) कहते हैं।

और **दूसरी क़िस्म** गुनहगारों को भी शामिल है, जिस जगह क़ुरआन या ह़दीस में लफ़्ज़े ला'नत का उ़साह (गुनहगारों) के ह़क़ में वारिद है वहां दूसरे मा'ना मुराद हैं, मगर जवाज़ इस क़िस्म का भी मुक़य्यद ब वस्फ़े आ़म मज़मूम है لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ (झूटों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत)

---

(1) लुग़त में "ला'नत" के मा'ना "दूरी" के हैं।

शरीअ़त की इस्तिलाह़ में ला'नत के मा'ना दो2 त़रह़ से बयान किये गए हैं :

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस की जन्नत से दूरी, तो किसी पर ला'नत करने के मा'ना कभी तो येह होंगे कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व जन्नत से दूर हो।

(2) और कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब और उस की ख़ास रह़मतों से दूरी, या पिछले नेक बन्दों को उस की जनाब में जो मर्तबा मिला उस मर्तबे से दूरी मुराद होगी।

(2) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह की ला'नत मुन्किरों पर।" (پ۱، البقرة: ۸۹)

और لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ (ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत) कह सकते हैं, किसी शख़्से ख़ास पर ला'नत नहीं कर सकते।

शैख़े मुहक़्क़िक़[1] फ़रमाते हैं : "ला'नत करना किसी पर जाइज़ नहीं सिवा इस के जिस के काफ़िर मरने की मुख़्बिरे सादिक़ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने ख़बर दी, और काफ़िरे मख़्सूस पर कि ईमान उस का दमे अख़ीर मोहूतमल हो[2] ला'नत न करें।"

---

1 "أشعة اللمعات"، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان من الغيبة والشتم، ج٤، ص٧١.

2 या'नी येह एह्तिमाल कि हो सकता है फ़ुलां काफ़िर मरते वक़्त ईमान ले आया हो।

बा'ज़ मक्कारे ज़माना इसी को बुन्याद बना कर भोले भाले मुसल्मानों को अपने दामे फ़रेब में लेने की कोशिश करते हैं कि "मियां ! काफ़िर को भी काफ़िर मत कहो ! क्या मा'लूम कब मुसल्मान हो जाए ?"

मक़ामे ग़ौर तो येह है कि पहले ख़ुद काफ़िर कह चुके, फिर कहते हैं काफ़िर मत कहो, हालां कि ख़ुद क़ुरआने मजीद से इस बात की ताईद होती है कि काफ़िर को काफ़िर ही कहा जाए और मोमिन को मोमिन, क्या आप ग़ौर नहीं करते कि क़ुरआने पाक में काफ़िरों को काफ़िर कह कर पुकारा गया है बल्कि क़ुरआने पाक में एक मुकम्मल सूरत का नाम ही "सू-रतुल काफ़िरून" रखा गया है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कोई आ़क़िल शख़्स इस ह़क़ीक़त से इन्कार नहीं कर सकता कि जो शै जिस वक़्त जिस ह़ालत में हो उसे उस वक़्त उसी की जिन्स से पुकारा जाएगा, म-सलन : गन्दुम जब तक अपनी अस्ल ह़ालत पर बाक़ी है उसे गन्दुम ही कहा जाएगा और जब उसे पीस कर आटा कर दिया जाए तो फिर उसे कोई भी गन्दुम कहने को तय्यार नहीं होगा बल्कि आटा ही कहा जाएगा और जब उस आटे की रोटी बना ली जाए तो फिर उसे आटा नहीं बल्कि रोटी का नाम दिया जाएगा और जब उस रोटी को खा कर फ़ुज़्ले की शक्ल में ख़ारिज कर दिया जाए तो फिर उसे रोटी नहीं बल्कि फ़ुज़्ला कहा जाएगा, उस वक़्त इन ह़ज़रात को येह बातें नहीं सूझती कि गन्दुम को गन्दुम मत कहो क्या मा'लूम कब आटा हो जाए और आटे को आटा मत कहो क्या मा'लूम कब रोटी हो जाए वग़ैरा...... =

"त़रीक़ए मुह़म्मदिय्यह" में है : सिवा ऐसे काफ़िर के किसी शख़्से मुअ़य्यन पर ला'नत जाइज़ नहीं ।(1) यहां तक कि बहुत मुह़क़्क़िक़ीन उ़-लमा[1] यज़ीद पर ला'नत में तवक़्क़ुफ़ करते हैं बा वुजूद इस के कि

= अगर इन लोगों की इस बात को मान लिया जाए कि "काफ़िर को काफ़िर मत कहो ! क्या मा'लूम कब मुसल्मान हो जाए" तो इस से लाज़िम आता है कि फिर मुसल्मान को भी मुसल्मान न कहा जाए कि क्या मा'लूम कब बद मज़हब या काफ़िर हो जाए, क्या आप देखते नहीं कि कितने ईमान से ग़ाफ़िलों का मरते वक़्त ईमान सल्ब कर लिया जाता है । وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی

दर अस्ल इस त़रह़ की ना समझी वाली बातें करने वालों का इन ह़ीले बहानों को पेश करने से मक़्सूदे अस्ली येह होता है कि येह ह़ज़रात जो चाहें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ियां करते फिरें, जिस त़रह़ चाहें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को गालियां देते रहें, इन्हें कोई कुछ कहने वाला न हो कि मियां ! काफ़िर को भी काफ़िर मत कहो हम तो फिर भी कलिमा गो हैं, मगर इन ह़ज़रात ने कलिमए त़य्यिबा के लवाज़िमात को भुला दिया कि ह़क़ीक़तन कलिमा गोई से मक़्सूदे अस्ली तो वोही अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शाने वाला सिफ़ात को दिल से तस्लीम कर के इन की तौक़ीर बजा लाना है । सिर्फ़ गोश्त के लोथड़े या'नी ज़बान से कलिमए त़य्यिबा को रट लेना काफ़ी नहीं, क्या देखते नहीं कि हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़मानए मुबा-रका में मुनाफ़िक़ीन भी ब ज़ाहिर कलिमा पढ़ते थे मगर ईमान से उन्हें दूर का भी इ़लाक़ा नहीं था ।

इन की गुस्ताख़ाना इ़बारात व अ़क़ाइद जानने के लिये "बहारे शरीअ़त" पहली जिल्द के ह़िस्सए अव्वल में "ईमान व कुफ़्र का बयान" मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं ।

(1) "الطريقة المحمدية"، المبحث الأول، النوع التاسع، ج٢، ص ٢٣٠-٢٣١.

1. उ़-लमा, यज़ीद की तक्फ़ीर और इस की ला'न के बारे में तीन गुरौह हैं :

इमाम अह़मद उसे काफ़िर और ला'नत उस पर जाइज़ कहते हैं : इस लिये कि उस ने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत के बा'द कहा : "मैं ने इन को उस का बदला दिया जो इन्हों ने क़ुरैश के बुज़ुर्गों और सरदारों के =

इस के लश्कर ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के नवासे और अइज़्ज़ा व अहले बैत को हज़ारों बे रह़मियों और संग दिलियों के साथ शहीद

= साथ जंगे बद्र में किया था" और येह बात फ़िल वाक़ेअ़ कुफ़्र है, सिवा इस के और अफ़्आ़ल व अक़्वाल इस रू सियाह से मन्क़ूल हैं जो कुफ़्रो इरतिदाद पर सरीह़ दाल्ल हों, शराब और ह़राम कारी इस के वक़्त में अ़लानिया जारी हुई और बे हुर्मती ह़-रमैने शरीफ़ैन और वहां के बाशिन्दों की इस के लश्कर के हाथ से वाक़ेअ़ हुई।

(انظر "منح الروض الأزهر"، الكبيرة لا تخرج عن الإيمان، ص٧٣، و"الصواعق المحرقة"، الخاتمة في بيان اعتقاد أهل السنة... إلخ، ص ٢٢٠)

और बा'ज़ उ़-लमा इस की तक्फ़ीर व ला'न से इन्कार करते और कहते हैं: इजाज़त इन ह़-र-कतों और इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़त्ल की इस से ब दलीले क़त़ई साबित नहीं और येह कलिमा कि "मैं ने इन से जंगे बद्र का बदला लिया", बर तक़्दीरे सुबूत, अह़ाद के मर्तबे से मु-तजाविज़ नहीं हो सकता **واليقين لا يزول إلّا بيقين مثله** (और यक़ीनी बात को रद करने के लिये उसी की मिस्ल यक़ीनी बात दरकार होती है) **كما تقرر في موضعه**

ग़ायत कार इस का येह है कि फ़ासिक़ो फ़ाजिर था और अह़कामे शर-इय्या पर क़ाइम न था और फ़ासिक़ पर ला'नत जाइज़ नहीं।

फ़ाज़िले क़ौनवी "शर्हे उ़म्दतुन्नसफ़ी" में लिखते हैं: साहि़बे कबीरा पर ला'नत न की जाए कि ईमान उस का उस के साथ है, इरतिकाबे कबीरा से कम नहीं होता और मुसल्मान पर ला'नत जाइज़ नहीं।

("منح الروض الأزهر"، الكبيرة لا تخرج عن الإيمان، ص٧٣، (نقلاً عن القونوي).)

मुल्ला अ़ली क़ारी "शर्हे फ़िक़्हे अक्बर" में क़ौले शारेह़े "अ़क़ाइद" का या'नी: **نحن لا نتوقف في شأنه بل في إيمانه فلعنة الله عليه وعلى أنصاره وأعوانه** मअ़ इस के दलाइल के रद करते हैं और "ख़ुलासा" वग़ैरा से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज्जाज व यज़ीद पर ला'नत करना न चाहिये इस लिये कि पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अहले क़िब्ला की ला'नत से मुमा-न-अ़त फ़रमाई है और जो कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से ला'नत करना बा'ज़ अहले क़िब्ला पर मन्क़ूल है, इस सबब से है कि हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام लोगों का ह़ाल जानते थे और लोग नहीं जानते शायद वोह शख़्स मुनाफ़िक़ हो या **ब ए'लामे** इलाही उस का कुफ़्र पर मरना मा'लूम हो।

("منح الروض الأزهر"، الكبيرة لا تخرج عن الإيمان، ص٧٢-٧٣، ملتقطاً.) =

किया और कोई दक़ीक़ा[1] हितके हुर्मते ह़रम का बाक़ी न छोड़ा।

= इमाम ग़ज़ाली "एह़याउल उ़लूम" में लिखते हैं कि हुक्म यज़ीद का इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ के क़त्ल के लिये अस्लन साबित नहीं और बिला तह़क़ीक़ात मुसल्मान की त़रफ़ निस्बत कबीरा की जाइज़ नहीं إلى أن قال ला'ने अश्ख़ास में ख़त़र है पस इज्तिनाब चाहिये और तर्के ला'ने इब्लीस में भी ख़त़र नहीं فضلًا عن غيره (जब इब्लीस को ला'नत न करने में ईमान को कोई ख़त़रा नहीं तो दूसरों को ला'नत न करने में ईमान को ख़त़रा कैसे हो सकता है !) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم۱۲ منہ قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز

("إحياء علوم الدين"، كتاب آفات اللسان، الآفة الثامنة: اللعن، ج٣، ص١٥٤)

और बा'ज़ उ़-लमा इस की तक्फ़ीर व ला'न में तवक़्क़ुफ़ (सुकूत इख़्तियार) करते हैं और येही राजेह़ और येही अस्लम और येही हमारे अइम्मए हुदा का मज़हबे असह़्ह़ व अक़्वम है।

("المسامرة بشرح المسايرة"، ما جرى بين علي ومعاوية رضي الله عنهما، ص٣١٥-٣١٦. و"الصواعق المحرقة"، الخاتمة في بيان اعتقاد أهل السنة... إلخ، ص٢٢١)

1. इस ख़बीस ने मुस्लिम बिन उ़क़्बा मुर्री को मदीनए सकीना पर भेज कर सत्तरह सो1700 मुहाजिरीन व अन्सार व ताबिईने किबार को शहीद कराया। तीन रोज़ अहले मदीना लूट और क़त्ल और अन्वाए़ मसाइब में मुब्तला रहे और फ़ौजे अश्क़िया ने मस्जिदे अक़्दस में घोड़े बांधे और किसी को वहां नमाज़ न पढ़ने दी, अहले ह़रम से यज़ीद की ग़ुलामी पर ब जब्र बैअ़त ली कि चाहे बेचे, चाहे आज़ाद करे, जो कहता मैं ख़ुदा और रसूल के हुक्म पर बैअ़त करता हूं उसे शहीद करते।

("فتح الباري"، كتاب الفتن، باب إذا قال عند قوم شيئاً... إلخ، تحت الحديث: ٧١١٤، ج١٣، ص٦٠-٦١. و"البداية والنهاية"، وقعة الحرث، ج٥، ص٧٣١-٧٣٢. و"الصواعق المحرقة"، الخاتمة في بيان اعتقاد أهل السنة... إلخ، ص٢٢١-٢٢٢.)
=

अस्ल इस बाब में येह है कि ला'नत करना किसी पर सवाब नहीं अगर कोई शख़्स दिन भर शैतान पर ला'नत करता रहे, क्या फ़ाएदा हासिल हो[1] इस से येह बेहतर है कि इस क़दर वक़्त ज़िक्र व तिलावत व दुरूद में सर्फ़ करे कि सवाबे अ़ज़ीम हाथ आए, अगर इस काम में हमारे लिये कुछ फ़ाएदा होता परवर्द गारे आ़लम इब्लीस पर ला'नत करने का हुक्म देता, पस एह़तियात़ इसी में है कि जिस के अन्जाम से इत्तिलाअ़ न हो उस पर ला'नत न करे अगर वोह लाइक़ ला'नत के है तो उस पर ला'नत कहने में तज़्यीए़ वक़्त है (या'नी वक़्त को ज़ाएअ़ करना है) और जो वोह ला'नत का मुस्तह़िक़ नहीं तो गुनाहे बे लज़्ज़त।

= जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के घर की बे हुर्मती कर चुके, ख़ानए ख़ुदा पर चले राह में मुस्लिम बिन उ़क़्बा मर गया, हुसैन बिन नुमैर ने मअ़ फ़ौजे कसीर मक्का में पहुंच कर बैतुल्लाह को जला दिया और वहां के रहने वालों पर त़रह़ त़रह़ का ज़ुल्मो सितम किया। ١٢منہ قُدِّسَ سِرُّہٗ

(انظر "فتح الباري"، كتاب التفسير، باب قوله: ثاني اثنين... إلخ، تحت الحديث:٤٦٦٦، ج٨، ص ٢٧٩.)

1. मलाएका व अम्बिया कि ब हुक्मे जनाबे किब्रिया किसी पर ला'नत करते हैं ब सबबे इम्तिसाले अम्र (हुक्म बजा लाने) के मश्कूर व माजूर होते हैं जिस त़रह़ ज़बानियए दोज़ख़ (वोह फ़िरिश्ते जो दोज़ख़ियों को आग में धकेलेंगे) और वोह फ़िरिश्ते जो अ़ज़ाब पर मामूर हैं अपने काम में मह़मूद हैं गोया येह भी काफ़िरों के ह़क़ में एक क़िस्म का अ़ज़ाब है कि मक़्बूलाने जनाबे अ-ह़दिय्यत इस के ईसाल पर मामूर व माजूर होते हैं, दूसरे शख़्स को कि क़ैदियों की ता'ज़ीब पर मुक़र्रर नहीं इन को मारना और ईज़ा देना मूजिबे अज्र नहीं और आयए करीमा : ﴿عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "उन पर ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों सब की।" (پ٢، البقرة:١٦١)) अख़्बार है न कि अम्र कि सब आदमियों का मामूर ब नस्स होना साबित हो, फ़-तफ़क्कर। ١٢منہ قُدِّسَ سِرُّہٗ

इसी वासिते इमाम अ़ब्दुल्लाह याफ़ेई य-मनी "मिरआतुल जिनान" में फ़रमाते हैं : किसी मुसल्मान पर ला'नत अस्लन जाइज़ नहीं और जो किसी मुसल्मान पर ला'नत करे वोह मल्ऊ़न है ।[1]

और ह़दीस शरीफ़ में भी इसी त़रफ़ इशारा वाके़अ़ है :

((لا ينبغي للمؤمن أن يكون لعّاناً)) رواه الترمذي.[2]

शैख़ मुह़क़्क़िके़ देहलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अस्ल आ़दत व शेवए अहले सुन्नत तर्के सब्बो ला'न है[3] ((المؤمن ليس بلعّان)) (या'नी मोमिन ला'नत करने वाला नहीं होता) ।[4]

बा'ज़ उ़-लमा फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत की ख़ूबियों में से है कि किसी पर ला'नत नहीं करते और किसी को काफ़िर नहीं कहते और अहले बिदअ़त की बुराइयों से है कि बा'ज़ इन का बा'ज़[1] को काफ़िर कहता और बा'ज़ इन का बा'ज़ पर ला'नत करता है ।"

---

1 "مرآة الجنان"، السنة: ٥٠٤، ج٣، ص١٣٤.

2 किसी भी मोमिन को येह बात ज़ैब नहीं कि वोह ला'नत करने वाला हो, इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، كتاب الطب، باب ماجاء في اللعن والطعن، ج٣، الحديث:٢٠٢٦، ص٤١٠.

3 या'नी अहले सुन्नत का शेवा येह नहीं कि वोह लोगों को बुरा भला कहें या गाली दें या ला'नत करें बल्कि हम अहले सुन्नत का शेवा तो इन चीज़ों से दूर रहना है।

"أشعة اللمعات"، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان من الغيبة والشتم، ج٤، ص٧١.

4 "إحياء العلوم"، كتاب آفات اللسان، ج٣، ص١٥٤.

1. शीआ़ ख़्वारिज को काफ़िर कहते और उन पर ला'नत करते हैं और ख़्वारिज शीआ़ को काफ़िर व मल्ऊ़न जानते हैं बल्कि अपने मज़हब वालों की ला'न व तश्नीअ़ में बाक (ख़ौफ़) नहीं करते, जो शख़्स इन के ह़ालात से वाक़िफ़ है वोह ख़ूब जानता है कि ला'न व तक्फ़ीर तमाम अहले बिदअ़त खुसूसन शीआ़ का वज़ीफ़ा है। ١٢منہ قُدِّسَ سِرُّهٗ

قال الرضاء : लिहाज़ा हमारे उ-लमा ने तस्रीह़ फ़रमाई कि अगर किसी के कलाम में निनानवे वजह कुफ़्र की निकलती हों और एक वजह इस्लाम की तो मुफ़्ती पर वाजिब है कि वज्हे इस्लाम की त़रफ़ मैल करे[1] ((فإنّ الإسلام يَعلو ولا يُعلَى)) (बेशक इस्लाम हमेशा ग़ालिब रहने वाला है न कि मग़लूब होने वाला)[2] व लिहाज़ा हमारे अइम्मा फ़रमाते हैं : لا نكفر أحداً من أهل القبلة "हम अहले क़िब्ला से किसी को काफ़िर नहीं कहते।"[3]

मगर यहां एक शदीद फ़ाह़िश मुग़ा-लत़ा बा'ज़ गुमराह बद दीन दिया करते हैं कि इन अक़्वाल से इस्तिदलाल कर के मुन्किराने ज़रूरिय्याते दीन[4] की तक्फ़ीर भी बन्द करनी चाहते हैं ह़ालां कि येह

---

1. या'नी मुफ़्ती उस जानिब माइल हो और उसी पर फ़तवा दे जिस जानिब उस कलाम करने वाले के कलाम से उस के इस्लाम का और मुसल्मान होने का पहलू निकलता हो।
"منح الروض الأزهر شرح فقه الاكبر"، مطلب يجب معرفة المكفرات، ص١٦٢.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع في أحكام المرتدين، ج٢، ص٢٨٣.

2. "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب إذا أسلم الصبي...إلخ، ج١، ص٤٥٥.

3. "النهر الفائق"، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٢، ص١٩٤.
و"الدر المختار"، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٣٣-١٣٤.

4. **ज़रूरिय्याते दीन :** "वोह मसाइले दीन हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों", जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानियत, अम्बिया की नुबुव्वत, जन्नत व नार, ह़श्रो नश्र वग़ैरहा, म-सलन येह ए'तिक़ाद कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ा-तमुन्नबिय्यीन हैं, हुज़ूर के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता। अ़वाम से मुराद वोह मुसल्मान हैं जो त़ब्क़ए उ-लमा में शुमार न किये जाते हों, मगर उ-लमा की सोहबत से शरफ़ याब हों और मसाइले इ़ल्मिय्या से ज़ौक़ रखते हों। ("बहारे शरीअ़त", ईमान व कुफ़्र का बयान, हिस्सए अव्वल, जि. 1, स. 172, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

ख़ुद कुफ़्र है, येही अइम्मा व उ़-लमा कि अक़्वाले मज़्कूरा लिख चुके, जा बजा तस्रीह़ फ़रमाई (या'नी मु-तअ़द्दद मक़ामात पर सराह़त व वज़ाह़त फ़रमाई) कि "जो ज़रूरिय्याते दीन से किसी शै के मुन्किर को काफ़िर न जाने, ख़ुद काफ़िर है।" "शिफ़ा शरीफ़" व "वजीज़े इमाम कुर्दरी" व "दुर्रे मुख़्तार" वग़ैरहा कुतुबे मोअ़्-त-मदा में है :

من شکّ في كفره وعذابه فقد كفر.

"जो ऐसे के कुफ़्र व अ़ज़ाब में शक लाए ख़ुद काफ़िर हो जाए।"(1)

एक और निनानवे वजह के येह मा'ना हैं कि उस के कलाम में सो पहलू निकलते हों निनानवे जानिबे कुफ़्र जाते हों और एक त़रफ़े इस्लाम तो मा'निये इस्लाम ही पर ह़म्ल वाजिब, कि बा वस्फ़े एह़तिमाले इस्लाम, हुक्मे कुफ़्र जाइज़ नहीं(2) न येह कि जो निनानवे बातें कुफ़्र की करे और सिर्फ़ एक बात इस्लाम की तो उसे मुसल्मान कहा जाएगा।

ह़ाशा (हरगिज़) येह किसी मुसल्मान का मज़हब नहीं यूं तो यहूदी भी अल्लाह को एक, मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तक अम्बिया को नबी, "तौराते मुक़द्दस" को कलामुल्लाह, क़ियामत व जन्नत व नार को ह़क़ जानते हैं येह एक क्या सदहा बातें इस्लाम की हुईं, फिर क्या उन्हें मुस्लिम कहा जाएगा या उन्हें मुसल्मान कहने वाला काफ़िर न हो जाएगा ! ह़ाशा लिल्लाह ! बल्कि हज़ारहा बातें इस्लाम की करे और एक कुफ़्र की, म-सलन : "क़ुरआने अ़ज़ीम" व नमाज़ पढ़े, रोज़ा रखे, ज़कात दे, ह़ज करे और साथ ही बुत को भी सज्दा करे तो क़त़्अ़न काफ़िर होगा।

---

1 "الدر المختار"، كتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٥٦.
و"الشفا"، الباب الأول في بيان ما هو حقّه صلى الله عليه وسلم... إلخ، ج٢، ص٢١٦.

2 या'नी जब तक उस मु-तकल्लिम के मुसल्मान होने का एह़तिमाल बाक़ी है तो उस पर सूरते मज़्कूरा में कुफ़्र का हुक्म लगाना जाइज़ नहीं।

यूंही अइम्मए दीन व उ-लमाए मोअ-त-मदीन ने तसरीह़ फ़रमा दी है कि अहले क़िब्ला से मुराद वोह हैं "जो तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान रखते हैं" उन्हीं की तक्फ़ीर जाइज़ नहीं और जो ज़रूरिय्याते दीन से एक बात का मुन्किर हो वोह अहले क़िब्ला ही से नहीं, उस की तक्फ़ीर में शक भी कुफ़्र है न कि इन्कार, "शर्हे मवाक़िफ़" व "ह़ाशिया चलपी" व "शर्हे फ़िक़्हे अक्बर" व "ह़वाशी दुर्रे मुख़्तार" वग़ैरहा में इस की तह़क़ीक़ है।[1] बड़ा ह़वाला ह़ज़रते इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दिया जाता है कि वोह अहले क़िब्ला की तक्फ़ीर नहीं करते, बेशक मगर वोही जो ह़क़ीक़तन अहले क़िब्ला हैं न फ़क़त़ वोह कि कलिमा पढ़ें और क़िब्ले को मुंह करें अगर्चे खुले कुफ़्र बकें, ख़ुद सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी अ़क़ाइद की किताब "फ़िक़्हे अक्बर शरीफ़" में फ़रमाते हैं : صفاته في الأزل غير محدثة ولا مخلوقة فمن قال إنّها مخلوقة أو محدثة أو وقف فيها أو شكّ فيها فهو كافر بالله تعالى.

"अल्लाह तआ़ला की सिफ़तें अ-ज़ली हैं, न ह़ादिस, न मख़्लूक़ तो जो उन्हें मख़्लूक़ या ह़ादिस बताए या उन के बारे में तवक़्क़ुफ़ करे या शक लाए वोह काफ़िर है।"[2]

इमाम अबू यूसुफ़ رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : छ6 महीने मुना-ज़रे के बा'द मेरी और इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राय इस पर मुस्तक़िर हुई (या'नी मेरा और इमामे आ'ज़म का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ हुवा) कि जो कोई क़ुरआने अ़ज़ीम को मख़्लूक़ कहे काफ़िर है।[3]

---

1 "منح الروض الأزهر"، فصل في الكفر صريحاً وكناية، ص١٨٨.
و"ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب الإمامة، ج٢، ص٣٥٨.

2 "الفقه الأكبر"، الباري جلّ شأنه موصوف في الأزل... إلخ، ص٢٥.

3 "منح الروض الأزهر"، القرآن كلام الله غير مخلوق ولا حادث، ص٢٦.
و"الحديقة الندية"، والقرآن كلام الله تعالى غير مخلوق، ج١، ص٢٥٨.

येह फ़वाइद ख़ूब याद रखने के हैं कि नेचरी कुफ़्फ़ार[1] और उन के अज़्नाब व अन्फ़ार[2] ऐसी जगह बहुत ग़ुल मचाते हैं और अ़लानिया कुफ़्र कर के मुसल्मानों को अपनी तक्फ़ीर से रोकना चाहते हैं। (وَاللّٰهُ الْهَادِي.)

❶ "नेचरी अक्सर ज़रूरिय्याते दीन के मुन्किर हैं, कहते हैं : न जन्नत है, न दोज़ख़, न ह़श्रे अज्साम (या'नी क़ियामत में ज़िन्दा उठाया जाना) न कोई फ़िरिश्ता है, न कोई जिन्न, न आस्मान है, न असरा और मो'जिज़ा और (इन का गुमान है) मूसा की लाठी में पारह था, तो जब उस को धूप लगती वोह लाठी हिलती थी, और समुन्दर को फाड़ देना मद व जज़्र के सिवा कुछ नहीं था, और ग़ुलाम बनाना वह़शियों का काम है, और हर वोह शरीअ़त जो इस का हुक्म लाई तो वोह हुक्म अल्लाह की त़रफ़ से नहीं, इस के इ़लावा अन गिनत और बे शुमार कुफ़्रिय्यात इस के मुन्ज़िम हैं। और येह लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की छोटी बड़ी तमाम अह़ादीस को रद करते हैं, और अपने ज़ो'म में क़ुरआन के सिवा कुछ नहीं मानते, और क़ुरआन को भी नहीं मानते मगर उसी सूरत में जब वोह इन की बेहूदा राय के मुवाफ़िक़ हो अब अगर क़ुरआन में ऐसी चीज़ देखते जो इन के उन अवहामे आ़दिया रस्मिया के मुनासिब नहीं जिन्हें इन्हों ने अपना उसूल ठहराया जिस उसूल का नाम इन के नज़्दीक "नेचर" है, अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला की आयतों को तह़रीफ़े मा'नवी के ज़रीए़ से रद करना वाजिब मानते हैं, ख़ास त़ौर पर जब क़ुरआनी आयात में ऐसी कोई बात हो जो नसरानियों की तह़क़ीक़ाते जदीदा और यूरोप की तराशीदा तहज़ीब के मुख़ालिफ़ हो, जैसे : आस्मानों का वुजूद जिस के बयान के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम और तमाम कुतुबे इलाहिय्यह के समुन्दर मौजें मार रहे हैं।"

("अल मोअ़-त-मदुल मुस्तनद", स. 329 (मुतर्जम))

❷ या'नी काफ़िर नेचरियों के दुम छल्ले और इन के चेले, मौजूदा दौर के वहाबी, देवबन्दी और ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरा हैं जो अपने आप को अहले ह़दीस कहते कहलवाते हैं ह़ालां कि क़ुरआनो ह़दीस की फ़हमो फ़िरासत से इन्हें दूर का भी इ़लाक़ा नहीं कि क़ुरआनो ह़दीस के नाम पर आ़म मुसल्मानों को बहकाते ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ियां करते हैं।

मस्अला 10 : किसी मुसल्मान को येह बद दुआ कि तुझ पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो, न दे कि ह़दीस शरीफ़ में इस की मुमा-न-अ़त वारिद है।(1)

मस्अला 11 : जो काफ़िर मरा, والعياذ بالله تعالٰى, उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत ह़राम है।

قال الله عزّوجلّ:

﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ﴾(2)

وقد ثبت في "الصحيحين" أنّ سبب نزول هذه الآية قوله صلى

---

1 "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في اللعن، الحديث: ٤٩٠٦، ج٤، ص٣٦٢.

2 अल्लाह عزّوجلّ ने इर्शाद फ़रमाया : "नबी और ईमान वालों को लाइक़ नहीं कि मुश्रिकों की बख़्शिश चाहें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह दोज़ख़ी हैं और इब्राहीम का अपने बाप की बख़्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब जो उस से कर चुका था, फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वोह अल्लाह का दुश्मन है उस से तिन्का तोड़ दिया (ला तअ़ल्लुक़ हो गया)। बेशक इब्राहीम ज़रूर बहुत आहें करने वाला मु-तह़म्मिल है।" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ١١، التوبة: ١١٣-١١٤)

الله تعالٰی علیه وسلم لأبي طالب: ((لأستغفرنّ لک ما لم أُنه عنک)).[1]

अ़ल्लामा शहाबुद्दीन क़राफ़ी मालिकी[2] तस्रीह़ करते हैं कि कुफ़्फ़ार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कुफ़्र है कि आयए करीमा : ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ﴾[3] में مَعَاذَالله किज़्बे क़ौले इलाही चाहता है।[4]

قال الرضاء : या'नी अगर कुफ़्फ़ार की मग़्फ़िरत और इन का दोज़ख़ से नजात पाना शरअ़न जाइज़ मानता है तो बेशक मुन्किरे नुसूसे क़ातिआ़ है वरना येह कलिमा ह़राम व ना रवा है कि इस से इन्कार लाज़िम

---

❶ "बुख़ारी" व "मुस्लिम" में मौजूद है कि मज़्कूरा आयत के नुज़ूल की वजह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का अबू त़ालिब के बारे में येह फ़रमाना है कि मैं तुम्हारे लिये उस वक़्त तक बख़्शिश त़लब करता रहूंगा जब तक मुझे मेरे रब की जानिब से तुम्हारे लिये मन्अ़ न किया जाए।

"صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب إذا قال المشرك عند الموت: لاإله إلا الله، الحديث: ١٣٦٠، ج١، ص١٠٦.

و"صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب الدليل على صحة الإسلام ... إلخ، الحديث: ١٢٤، ص٣١-٣٢.

❷ क़ाहिरा में इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मज़ार से मुत्तसिल अ़लाक़े को "क़राफ़ा" कहते हैं चूंकि येह उसी अ़लाक़े के रहने वाले थे इस वजह से इन को क़राफ़ी कहते हैं।

❸ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उस का कोई शरीक ठहराया जाए।" (پ٥، النسآء: ١١٦)

❹ या'नी : مَعَاذَالله ! अल्लाह तआ़ला के फ़रमान को झूटा साबित करना चाहता है कि उस ने तो फ़रमा दिया कि वोह मुश्रिकीन को नहीं बख़्शेगा और येह चाहता है कि उन की बख़्शिश हो जाए।

"الفروق" للقرافي، الفرق الثاني والسبعون والمأتان، القسم الأول، ج٤، ص٤٤٣.

आता है बल्कि इन्दत्तफ़्तीश इसे दो सख़्त आफ़तों का सामना है, शरअ़न मुहाल मान कर अब जो इस्तिद्आ़ करता है आया वाके़ई वुकू़अ़ चाहता है या यूंही लफ़्ज़े बे मा'ना बक रहा है।

अव्वल में ह़क़ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی से उस की ख़बर की तक्ज़ीब चाहना,

और **दुवुम** अ़बस व इस्तिह्ज़ा है और दोनों का पहलू مَعَاذَاللّٰه जानिबे कुफ़्र झुकता है। बहर ह़ाल सूरते साबिक़ा यक़ीनन कुफ़्र और सानी अशद ह़राम, सख़्त कबीरा जिस से तौबा व तजदीदे इस्लाम व निकाह़ लाज़िम।[1]

فافهم فإنّ المقام مزلّة الأقدام وقد أطال الكلام ههنا العلامة الحلبي في "الحلية"[2] ولخّصه في "ردّ المحتار"[3] وزاد، والكلّ غير

---

1 या'नी अगर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की बख़्शिश व नजात को शरअ़न जाइज़ समझता है, तो येह आयाते कु़रआनिया के इन्कार व तक्ज़ीब के सबब खुला कुफ़्र है और अगर शरअ़न इन की मग़्फ़िरत व नजात को जाइज़ न समझते हुए उन के लिये बख़्शिश की दुआ़ करता है तो येह कुफ़्र नहीं अलबत्ता शदीद ह़राम व सख़्त कबीरा गुनाह है कि इस वजह से येह दो बड़ी आफ़तों में मुब्तला हुवा पहली येह कि जानता है कि इन की किसी सूरत बख़्शिश नहीं फिर भी इन की बख़्शिश की दुआ़ से इन की वाके़ई मग़्फ़िरत का त़लब गार है जो इन्तिहाई द-रजा की बेबाकी और ख़बरे ख़ुदा वन्दी का किज़्ब चाहना है या फिर यूंही फ़ुज़ूल बात बक रहा है और مَعَاذَاللّٰه ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ठठ्ठा और इस्तिह्ज़ा कर रहा है और इन दोनों बातों में कुफ़्र का अन्देशा है जो सख़्त ह़राम लिहाज़ा इस से तजदीदे ईमान व निकाह़ दोनों लाज़िम हैं।

2 وهي: "الحلبة" أي: "حلبة المجلّي شرح منية المصلّي" ولكن في بلادنا معروفة بـ"الحلية".

"الحلبة"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ج٢، ص٢٥٥-٢٥٦.

3 "رد المحتار، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، مطلب في خلف الوعيد ... إلخ، ج٢، ص٢٨٨-٢٨٩.

محرَّر ولولا غرابة المقام لنبأتک بما لهما وعليهما وقد بيناه فيما علقناه عليهما[1] ولعلّ الحق لا يتجاوز عن الحكمين الذين أشرتُ إليهما، والله سبحنه وتعالٰى أعلم.)[2]

मस्अला 12 : नज़र ब दलीले साबिक़ येह दुआ़ कि ख़ुदाया ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे जाइज़ नहीं[3] कि जिस त़रह़ वहां तक्ज़ीबे आयात लाज़िम आती है, इस दुआ़ से उन अह़ादीस की तक्ज़ीब होती है जिन में बा'ज़ मुसल्मानों का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा, और उन का आह़ाद होना इस जुरअत का मुजव्विज़ नहीं[4] और

---

1 "جدّ الممتار" كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ج٢، ص ٢٢١-٢٢٢.

و"هامش الحلبة" للإمام أحمد رضا خان عليه الرحمة، ص٧٣-٧٤.

2 समझ ले क्यूं कि येह क़दमों के फिसलने का मक़ाम है, और अ़ल्लामा ह़लबी ने "ह़लबा" में इस बारे में त़वील कलाम फ़रमाया है जिस का ख़ुलासा अ़ल्लामा शामी ने "रद्दुल मुह़तार" में बयान फ़रमाते हुए और कलाम ज़ाइद फ़रमाया और मुकम्मल कलाम ग़ैर मुह़र्रर है, अगर येह पेचीदा कलाम न होता तो मैं तुम्हें उन (साह़िबे "रद्दुल मुह़तार" व "ह़लबा") के दलाइल और इन पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात से आगाह करता, हां ! "रद्दुल मुह़तार" और "ह़लबा" पर जो मैं ने ह़वाशी लिखे हैं उन में मैं ने उसे बयान किया है और मुम्किन है कि दुरुस्ती इन दो हुक्मों से आगे न बढ़े जिन की त़रफ़ मैं ने अभी अस्ल किताब में इशारा किया है, और पाकीज़ा व बुलन्द शान वाला रब عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

3 या'नी : मज़्कूरा बाला दलील की रोशनी में येह दुआ़ करना कि "या अल्लाह ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे" जाइज़ नहीं।

4 या'नी : जिन अह़ादीस में बा'ज़ मुसल्मानों का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा अगर्चे वोह अह़ादीस ख़बरे वाह़िद के ज़ुमरे से हैं इस के बा वुजूद इस बात को किसी त़ौर पर भी जाइज़ क़रार नहीं दिया जा सकता कि सब मुसल्मानों के सब गुनाहों की ऐसी बख़्शिश त़लब करना कि कोई गुनाह नाम को भी बाक़ी न रहे फ़रमाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करना है।

﴿فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا﴾ और قوله عزّوجلّ : ﴿يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ﴾
أَيْ: مِنَ الْكُفْرِ فَيَعُمُّ الْمُسْلِمِيْنَ (3) इन के मुनाफ़ी और इस दुआ के जवाज़ के लिये काफ़ी नहीं(4) कि अफ़्आल सियाक़ सुबूत में इजमाअ़न उ़मूम पर दलालत नहीं करते और बर तक़्दीरे तस्लीम इस जगह ख़ुसूस मुराद है ता (कि) क़वाइदे शर-अ़ से ख़िलाफ़ लाज़िम न आए(5) हां ! اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِجَمِيْعِ الْمُسْلِمِيْنَ बे निय्यते ता'मीमे ह़क़ीक़ी जाइज़

---

1 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान : "ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी मांगते हैं।" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ٢٥، الشورى: ٥)

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की।" (پ٢٤، المؤمن: ٧)

3 या'नी : जिन्हों ने कुफ़्र से तौबा की और येह आयत मुसल्मानों को भी शामिल है।

4 या'नी क़ुरआने पाक की येह मज़्कूरा आयात उन अह़ादीसे मुबा-रका के मुनाफ़ी नहीं कि जिन में बा'ज़ मुसल्मानों का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा और न ही येह आयाते करीमा सब मुसल्मानों के सब गुनाहों की ऐसी बख़्शिश के लिये दुआ़ को जाइज़ क़रार देती हैं कि अस्लन कोई गुनाह नाम को भी बाक़ी न रहे।

5 यहां अफ़्आ़ल से मुराद वोह हैं कि जो फ़िरिश्तों से सादिर हुए या'नी तमाम ज़मीन वालों के लिये बख़्शिश की दुआ़ करना। तो इस बात पर इज्माअ़ हो चुका है कि उन के अफ़्आ़ल की त़रह़ हमें भी वोही फ़े'ल करना या'नी तमाम मुसल्मानों के सब गुनाहों की ऐसी मग़्फ़िरत त़लब करना कि अस्लन कोई गुनाह नाम को भी बाक़ी न रहे, जाइज़ नहीं कि येह उन्हीं का ख़ास्सा है, और अगर बिलफ़र्ज़ येह तस्लीम कर भी लिया जाए कि हमारे ह़क़ में भी वोह अफ़्आ़ल जाइज़ हैं तो फिर हम येह कहेंगे कि इस जगह ख़ुसूस मुराद है या'नी ज़मीन वालों से मुराद यहां सब ज़मीन वाले नहीं बल्कि बा'ज़ मुराद हैं और यूं भी कहा जा सकता है कि सब ज़मीन वाले ही मुराद हैं मगर इन सब के तमाम गुनाहों की ऐसी बख़्शिश मुराद नहीं कि अस्लन कोई गुनाह नाम को भी बाक़ी न रहे बल्कि तमाम मुसल्मानों के लिये फ़िल जुम्ला मग़्फ़िरत त़लब की गई है और तमाम मुसल्मानों के लिये फ़िल जुम्ला मग़्फ़िरत और बा'ज़ पर बा'ज़ गुनाहों के सबब अ़ज़ाब होने में कोई तज़ाद नहीं।

"شرح المنية" لابن أمير الحاج.[2] هذا حاصل كلام قَرَافيّ، ذكره في [1] है,

قال الرضاء : येह दूसरा मस्अला मा'रि-कतुल आरा है, अ़ल्लामा क़राफ़ी वग़ैरा उ़-लमा तो अ़-दमे जवाज़ की त़रफ़ गए और अ़ल्लामा किरमानी ने इस में मुना-ज़-अ़त की (या'नी मुख़ा-लफ़त की) जिसे "शर्हे मुनया" में रद कर दिया फिर मुह़क़्क़िक़े ह़लबी ने इस बिना पर कि मुसल्मानों के लिये ख़ल्फ़े वईद ब मा'ना अ़त़ा व मग़्फ़िरत जाइज़ (बल्कि क़त़्अ़न वाक़ेअ़ है) और इस दुआ़ में बरादराने दीनी पर शफ़्क़त समझी जाती है और जवाज़े दुआ़ जवाज़े मग़्फ़िरत पर मब्नी है न कि वुक़ूअ़ पर, तो अ़-दम वुक़ूए़ मग़्फ़िरते जमीअ़ की ह़दीसें इस दुआ़ के ख़िलाफ़ नहीं, इस के जवाज़ की त़रफ़ मैल किया[3] अ़ल्लामा ज़ैन ने "बह़्रुर्राइक़", फिर अ़ल्लामा मुह़क़्क़िक़ अ़लाई ने "दुर्रे मुख़्तार" में इन की तब्इय्यत की (या'नी : अ़ल्लामा इब्ने नुजैम और मुह़क़्क़िक़ अ़लाई ने

---

1. हां येह दुआ़ कि "ऐ अल्लाह ! मेरी और तमाम मुसल्मानों की बख़्शिश फ़रमा" अगर इस में निय्यत येह न हो कि तमाम मुसल्मानों के तमाम गुनाहों की बख़्शिश हो जाए, तो जाइज़ है वरना ना जाइज़।

2. येह इमाम क़राफ़ी के कलाम का ख़ुलासा है जिसे अ़ल्लामा ह़लबी ने "शर्हे मुनया" में ज़िक्र किया।

3. या'नी : येह मस्अला कि "तमाम मुसल्मानों के तमाम गुनाहों की बख़्शिश हो जाए" इस में उ़-लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है अ़ल्लामा क़राफ़ी वग़ैरा इसे ना जाइज़ कहते हैं जब कि अ़ल्लामा किरमानी ने इस में इख़्तिलाफ़ किया जिस का मुह़क़्क़िक़े ह़लबी ने "शर्हे मुनया" में रद फ़रमाया फिर मुह़क़्क़िक़े ह़लबी ने इस के जवाज़ की त़रफ़ माइल होते हुए येह तावील की, कि ख़ल्फ़े वईद ब मा'ना अ़त़ा व मग़्फ़िरत, मुसल्मानों के ह़क़ में जाइज़ बल्कि क़त़्अ़न वाक़ेअ़ है, नीज़ इस दुआ़ में मुसल्मानों पर शफ़्क़त भी है और दुआ़ का जवाज़, मग़्फ़िरत के जाइज़ होने पर है न कि इस के वाक़ेअ़ हो जाने पर, तो वोह अह़ादीसे करीमा जिन में तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत का वाक़ेअ़ न होना वारिद हुवा, वोह अह़ादीसे करीमा इस जवाज़े मग़्फ़िरत के ख़िलाफ़ नहीं हैं।

अ़ल्लामा ह़लबी की पैरवी की) ।[1]

मगर इस में सरीह़ ख़दशा है कि जवाज़ सिर्फ़ अ़क़्ली है न कि शर-ई़ कि ह़दीस **मु-तवाति-रतुल मा'ना** से बा'ज़ मुअमिनीन की ता'ज़ीब साबित और न-ववी व अबी वलक़ानी ने इस पर इज्माअ़ नक़्ल किया और जवाज़े दुआ़ के लिये सिर्फ़ जवाज़ अ़क़्ली बा वुजूद इस्तिह़ालए शर-ई़ काफ़ी होना मुसल्लम नहीं, इस त़रफ़ मुह़क़्क़िक़े शामी ने "रद्दुल मुह़तार" में इशारा फ़रमाया ।[2] रहा इज़्हारे शफ़्क़त से उ़ज़्र, मैं कहता हूं : वोह महल्ले तक्ज़ीबे नुसूस में क़ाबिले समाअ़त नहीं[3] **فتأمّل** ।

ثمّ أقول وباللّٰه التوفيق : यहां ता'मीमें दो हैं : एक ता'मीमे मुस्लिमीन, दूसरी ता'मीमे ज़ुनूब ।

अगर दाई़ (दुआ़ मांगने वाला) सिर्फ़ ता'मीमे अव्वल पर क़नाअ़त करे, म-सलन कहे : **اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ**[4] या **اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم**[5] तो क़त्अ़न जाइज़ है और इस का इमाम क़राफ़ी को भी इन्कार नहीं और इस के फ़ज़्ल में

---

1 "البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ج١، ص٥٧٧-٥٧٨.
و"الدر المختار"، فصل في بيان تأليف الصلاة إلى انتهائها، ج٢، ص٢٨٨.

2 "ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، فصل في بيان تأليف الصلاة إلى انتهائها، مطلب في خلف الوعيد وحكم الدعاء... إلخ، ج٢، ص٢٨٩.

3 या'नी : येह उ़ज़्र पेश करना कि तमाम मुसल्मानों के तमाम गुनाहों की बख़्शिश चाहना इन से शफ़्क़त का इज़्हार करना है तो येह बात क़ाबिले क़बूल नहीं कि इस से आयात व अह़ादीस की तक्ज़ीब लाज़िम आती है ।

4 ऐ अल्लाह ! मेरी, मेरे मां बाप और तमाम मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों की बख़्शिश फ़रमा ।

5 ऐ अल्लाह ! मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत को बख़्श दे ।

अह़ादीस वारिद और इस का जवाज़ आयात से मुस्तफ़ाद और येह त़-बक़ा ब त़-बक़ा मुस्लिमीन में बिला नकीर शाएअ़,

और अगर सिर्फ़ ता'मीमे सानी पर इक्तिफ़ा करे, म-सलन : अपने लिये कहे : इलाही ! मेरे सब गुनाह छोटे बड़े, ज़ाहिर, छुपे, अगले, पिछले मुआ़फ़ फ़रमा, या कहे : इलाही ! मेरे और मेरे वालिदैन व मशाइख़ व अह़बाब व उसूल व फ़ुरूअ़ और तमाम अहले सुन्नत के लिये ऐसी मग़्फ़िरत कर जो अस्लन किसी गुनाह का नाम न रखे, जब भी क़त़्अ़न जाइज़ और इस क़िस्म की दुआ़ भी ह़दीस में वारिद और मुस्लिमीन में मु-तवारिस (या'नी मुसल्मानों में चली आ रही है), इन दोनों सूरतों के जवाज़ में तो किसी का कलाम नहीं हो सकता कि इस में अस्लन किसी नस्स की तक्ज़ीब नहीं।

सूरते सानिया (दूसरी सूरत या'नी ता'मीमे ज़ुनूब) में तो ज़ाहिर है कि नुसूस सिर्फ़ इस क़दर पर दाल्ल कि बा'ज़ मुस्लिमीन मुअ़ज़्ज़ब होंगे, मुम्किन कि वोह दाई और उस के वालिदैन व मशाइख़ व अह़बाब व जमीअ़ अहले सुन्नत के सिवा और लोग हों।

इसी त़रह़ सूरते ऊला (पहली सूरत या'नी ता'मीमे मुस्लिमीन) में कोई ह़रज नहीं कि हर मुसल्मान के लिये फ़िल जुम्ला मग़्फ़िरत और बा'ज़ पर बा'ज़ ज़ुनूब (गुनाहों) की वजह से अ़ज़ाब होने में तनाफ़ी नहीं।

अक़ूल : बा'ज़ नुसूस से निकाल सकते हैं कि फ़िल जुम्ला मग़्फ़िरत हर मुसल्मान के लिये होगी, अह़ादीसे सरीह़ा नात़िक़ (या'नी अह़ादीस के इर्शाद) कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से हर वोह शख़्स जिस के दिल में ज़र्रा बराबर ईमान है दोज़ख़ से निकाल लिया जाए तो ज़रूर है कि येह निकलना क़ब्ल पूरी सज़ा पा लेने के हो वरना शफ़ाअ़त का असर क्या हुवा।

अब रही सूरते सालिसा (तीसरी सूरत) या'नी दाई दोनों ता'मीमें करे म-सलन : कहे : इलाही ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे।

أقول : इस के फिर दो[2] मा'ना मोहूतमल :

एक येह कि मग़्फ़िरत ब मा'ना "तजावुज़ फ़िल जुम्ला" के लें तो ह़ासिल येह होगा कि इलाही ! किसी मुसल्मान को उस के किसी गुनाह की पूरी सज़ा न दे, इस के जवाज़ में भी कुछ कलाम नहीं कि मफ़ादे नुसूस मुत़्लक़न ता'ज़ीबे बा'ज़ उ़सात है न कि इस्तीफ़ाए जज़ाए बा'ज़ ज़ुनूब[1] बल्कि करीम कभी इस्तिक़्सा नहीं फ़रमाता (या'नी मालिक करीम عَزَّوَجَلَّ कभी पूरी बाज़पुर्स नहीं फ़रमाता) [2] ألا ترى! إلى قوله تعالى: ﴿عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ﴾ जब **अक्रमुल ख़ल्क़** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कभी पूरा मुवा-ख़ज़ा नहीं फ़रमाया (या'नी पूरी बाज़पुर्स नहीं फ़रमाई) तो इन का मौला عَزَّوَجَلَّ तो **अक्रमुल अक्रमीन** है ।

दूसरे येह है कि मग़्फ़िरते ताम्मह कामिला मुराद ली जाए या'नी हर मुसल्मान के हर गुनाह की पूरी मग़्फ़िरत कर कि किसी मुसल्मान के किसी गुनाह पर अस्लन मुवा-ख़ज़ा न किया जाए, येह बेशक तक्ज़ीबे नुसूस की त़रफ़ जाएगा और इसी को इमाम क़राफ़ी ना जाइज़ फ़रमाते हैं । और बेशक येही مِنْ حَيْثُ الدَّلِيْل राजेह़ नज़र आता है और इस त़रह़ की दुआ़ किसी आयत या ह़दीस से साबित नहीं और मुस्लिमीन के ह़क़ में ख़ल्फ़े वई़द का जवाज़ (जिस से ख़ुद ह़स्बे तस्रीह़े "ह़िल्या" व दीगर क़ाइलान जवाज़े अ़फ़्व व मग़्फ़िरत मुराद और वोह यक़ीनन इज्माअ़न जाइज़

---

1 या'नी अह़ादीसे मुबा-रका में जो बा'ज़ मुसल्मानों के अ़ज़ाब का ज़िक्र है इस का मक़्सूद व मुराद येह है कि बा'ज़ गुनहगारों को अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाएगा येह नहीं कि वोह अपने तमाम गुनाहों की पूरी पूरी सज़ा पाएंगे ।

2 क्या तूने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान न सुना : "तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्म पोशी फ़रमाई ।" (कन्ज़ुल ईमान) (پ۲۸، التحريم: ۳)

बल्कि वाक़ेअ़ है) इस मस्अले में क्या मुफ़ीद कि बा'ज़ के लिये इस का अ़दम व वुक़ूए अ़ज़ाब, तवातुर व इज्माअ़ से साबित तो यहां कलामे "ह़िल्या" मह़ल्ले कलाम है और मस्अला अइम्मा क्या मशाइख़ से भी मन्क़ूल नहीं कि दूसरों को मजाले सख़ुन (ए'तिराज़ की गुन्जाइश) न रहे, पस **अह़्वत़** येही है (या'नी : ज़ियादा एह़तियात़ इसी में है) कि इस सूरते सालिसा के मा'निये सानी (तीसरी सूरत के दूसरे मा'नी या'नी मग़्फ़िरते ताम्मह कामिला) से एह़तिराज़ करे। शायद मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इसी लिये सिर्फ़ कलामे इमाम क़राफ़ी पर इक्तिसार फ़रमाया कि रुजह़ान व एह़तियात़ इसी त़रफ़ है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

هذا ما ظهر لي في النظر الحاضر، فتأمّل لعلّ اللّٰه يحدث بعد ذلك أمراً.(1)

मस्अला 13 : قال الرضاء : अपने और अपने अह़बाब के नफ़्स व अह्ल व माल व वलद (बच्चों) पर बद दुआ़ न करे क्या मा'लूम कि वक़्ते इजाबत हो और बा'दे वुक़ूए बला (मुसीबत में मुब्तला होने के बा'द) फिर नदामत हो।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अपनी जानों पर बद दुआ़ न करो और अपनी औलाद पर बद दुआ़ न करो और अपने ख़ादिम पर बद दुआ़ न करो और अपने अम्वाल पर बद दुआ़ न करो कहीं इजाबत की घड़ी से मुवाफ़िक़ न हो।"

---

1 येह वोह कलाम है जो इस वक़्त ग़ौरो फ़िक्र से मुझ पर मुन्कशिफ़ हुवा पस तू ग़ौर कर शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द कोई नया हुक्म भेजे।

رواه مسلم وأبو داود وابن خزيمة عن جابر بن عبد الله رضي الله تعالٰى عنهما.[1]

और फ़रमाते हैं : "तीन दुआएं बेशक मक़्बूल हैं : दुआ मज़्लूम की और दुआ मुसाफ़िर की और मां बाप का अपनी औलाद को कोसना।"

رواه الترمذي وحسّنه عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه.[2]

तम्बीह : दैलमी वग़ैरा ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((إنّي سألت الله أن لا يقبل دعاء حبيب على حبيبه)).

"बेशक मैं ने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि किसी प्यारे की प्यारे पर बद दुआ क़बूल न फ़रमाए।"[3]

अ़ल्लामा शम्सुद्दीन सख़ावी इसे लिख कर फ़रमाते हैं : सह़ीह़ ह़दीसों से साबित कि औलाद पर मां बाप की बद दुआ रद नहीं होती तो

---

1. इस ह़दीस को इमामे मुस्लिम, अबू दावूद और इब्ने ख़ुज़ैमा ने ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया।
"صحيح مسلم"، كتاب الزهد والرقائق، باب حديث جابر الطويل... إلخ، الحديث: ٣٠٠٩، ص١٦٠٤.
و"سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب النهي أن يدعو... إلخ، الحديث: ١٥٣٢، ج٢، ص١٢٦.

2. इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया और ह़सन कहा
"سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما ذكر في دعوة المسافر، الحديث:٣٤٥٩، ج٥، ص٢٨٠.

3. "المسند الفردوس" للديلمه ، الحديث: ١٨٩، ج١، ص٥٢.

इस ह़दीस को इन से तौफ़ीक़ दिया (तत़्बीक़ देनी) चाहिये[1], انتہی

أقول وباللہ التوفیق : बद दुआ दो[2] त़ौर पर होती है :

एक येह कि दाई (या'नी दुआ करने वाले) का क़ल्ब ह़क़ीक़तन उस का येह ज़रर (नुक़्सान) नहीं चाहता, यहां तक कि अगर वाक़ेअ़ हो तो खुद सख़्त सदमे में गिरिफ़्तार हो। जैसे : मां बाप गुस्से में अपनी औलाद को कोस लेते हैं मगर दिल से इस का मरना या तबाह होना नहीं चाहते और अगर ऐसा हो तो उस पर इन से ज़ियादा बेचैन होने वाला कोई न होगा। दैलमी की ह़दीस में इसी क़िस्मे बद दुआ के लिये वारिद कि हुज़ूर **रऊफ़ुर्रह़ीम रह़मतुल्लिलल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस का मक़्बूल न होना अल्लाह तआ़ला से मांगा। नज़ीर इस की वोह ह़दीसे सह़ीह़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "इलाही ! मैं बशर हूं बशर की त़रह़ ग़ज़ब फ़रमाता हूं तो जिसे मैं ला'नत करूं या बद दुआ दूं उसे तू उस के ह़क़ में कफ़्फ़ारा व अज्र व बाइ़से त़हारत कर।"[2]

दूसरे इस के ख़िलाफ़ कि दाई का दिल ह़क़ीक़तन उस से बेज़ार और उस के इस ज़रर का ख़्वास्त-गार (उम्मीद वार) है और येह बात मां बाप को مَعَاذَاللہ उसी वक़्त होगी जब औलाद अपनी शक़ावत से उ़क़ूक़ को (या'नी : ना फ़रमानी व सरकशी को) इस द-र-जए ह़द से गुज़ार दे कि उन का दिल वाक़ेई उस की त़रफ़ से सियाह हो जाए और अस्लन मह़ब्बत नाम को न रहे बल्कि अ़दावत आ जाए। मां बाप की ऐसी ही बद दुआ के लिये फ़रमाते हैं कि रद नहीं होती।

---

1 "المقاصد الحسنة"، حرف الدال المهملة، تحت الحديث: ٤٨٧، ص ٢٢١.

2 "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة، باب من لعنه النبي ... إلخ، الحديث: ٢٦٠٠-٢٦٠٣، ص ١٤٠١-١٤٠٣.

والعياذ باللّٰہ سبحنه وتعالٰی، هذا ما ظهر لي، واللّٰه تعالٰی أعلم.(1)

मस्अला 14 : قال الرضاء : तह़सीले ह़ासिल (या'नी : जो चीज़ पहले से ह़ासिल हो उस के ह़ुसूल) की दुआ़ न करे म-सलन : मर्द कहे : इलाही ! मुझे मर्द कर दे[1] कि येह इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़ व ठठ्ठा) है, हां ऐसी दुआ़ जिस में इम्तिसाले अम्रे शरीअ़त (या'नी : शर-ई अह़कामात की बजा आ-वरी) या इज़्हारे इ़ज्ज़ व उ़बूदिय्यत या ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से मह़ब्बत या दीन व अहले दीन की त़रफ़ रग़बत या कुफ़्र व काफ़िरीन से नफ़रत वग़ैरा मनाफ़ेअ़ निकलते हैं वोह जाइज़ है अगर्चे उस अम्र का ह़ुसूल यक़ीनी हो, जैसे :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ، اَللّٰهُمَّ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ، اَللّٰهُمَّ أَعْطِ سَيِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ، اَللّٰهُمَّ ارْضِ عَنْ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، اَللّٰهُمَّ أَعْطِ بَيْتَكَ الْمُكَرَّمَ شَرَفاً وتَكْرِيْماً، اَللّٰهُمَّ الْعَنْ أَعْدَاءَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.(2)

---

❶ अल्लाह पाक व बुलन्द हमें अपनी पनाह में रखे। येह वोह गौहर पारे कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ज़ाहिर फ़रमाए और सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है।

1. जब कि मर्द से येही मा'निये लु-ग़वी मुराद हो और अगर मर्द ब मा'ना शुजाअ़ व दिलेर या मर्दे ह़क़ीक़ी, मर्दे राहे ख़ुदा मुराद ले तो इस्तिह्ज़ा नहीं। مرد باش یا خاک پائے مرد باش۔۱۲ منہ حفظہ ربہ (या'नी मर्द बनो या किसी अल्लाह के वली की सोह़बत इख़्तियार करो)

❷ ऐ अल्लाह ! हमारे आक़ा व सरदार मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर दुरूद भेज, ऐ अल्लाह ! हमें सीधा रास्ता चला, ऐ अल्लाह ! हमारे आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को वसीला अ़त़ा फ़रमा, ऐ अल्लाह ! सह़ाबए किराम से राज़ी हो, ऐ अल्लाह ! तू बैतुल्लाह शरीफ़ को शरफ़ और बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमा, ऐ अल्लाह ! सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दुश्मनों को अपनी रह़मत से दूर फ़रमा।

कि अगर्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद का नुज़ूल और मुसल्मानों को रुश्दो हिदायत तक वुसूल, हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को वसीला मिलना और अल्लाह तआला का अस्हाबे किराम से राज़ी होना और बैते मुकर्रम की इज़्ज़त व करामत और हुज़ूर के आ'दा पर ग़ज़ब व ला'नत सब यक़ीनी बातें हैं मगर इन दुआओं में वोही मनाफ़ेए मज़्कूरा हैं, तो फ़ुज़ूल व इस्तिहज़ा नहीं हो सकतीं।

أقول : इलावा बरीं इन सब में वोह तावील जो इन्हें त़-लबे ह़ासिल से जुदा कर दे मुम्किन وللتفصيل محلّ آخر (या'नी इस मस्अले की तफ़्सील किसी और मक़ाम पर की जाएगी)।

मस्अला 15 : قال الرضاء : दुआ में ह़ज्र व तंगी न करे। म-सलन : यूं न मांगे कि तन्हा मुझ पर रह़्म फ़रमा, या सिर्फ़ मुझे और मेरे फ़ुलां फ़ुलां दोस्तों को ने'मत बख़्श। ह़दीस में है : एक आ'राबी ने दुआ की : اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ وَارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّلَا تَرْحَمْ مَعَنَا أَحَداً.

"इलाही ! मुझ पर रह़्म कर और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा (और हमारे सिवा किसी और पर रह़मत न फ़रमा)। फ़रमाया हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने : ((لقد حَجَّرْتَ واسِعاً)) "बेशक तूने बड़ी वुस्अ़त वाली चीज़ को तंग कर दिया।"[1]

ऐ अज़ीज़ ! रह़मते इलाही शामिले अनाम है (या'नी तमाम मख़्लूक़ के साथ है) और इस का इन्आ़म आ़लम को आ़म : ﴿رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾[2]

जो नेक बात अपने लिये दरकार हो जब तमाम मुसल्मानों के लिये चाहेगा अगर ख़ुद मुस्तह़िक़ नहीं इस ख़ैर ख़्वाहिये आ़म की ब-र-कत से मुस्तह़िक़ हो जाएगा या यूं कि इन में बा'ज़ तो यक़ीनन

1 "صحيح البخاري"، كتاب الأدب، باب رحمة الناس والبهائم، الحديث: ٦٠١٠، ص٥٠٨.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है।" (پ٩، الأعراف: ١٥٦)

हर ख़ैर व फ़लाह़ के क़ाबिल हैं तो किसी का तुफ़ैली हो कर पाएगा ब ख़िलाफ़ इस सूरत के कि सिर्फ़ अपने या और बा'ज़ अह़बाब के लिये चाही, बाक़ी के लिये पसन्द न की तो एक तो आ़म मुअमिनीन की बद ख़्वाही, दूसरे कमाले ईमान का नुक़्सान।

नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((لا يؤمن أحدكم حتى يحبّ لأخيه ما يحبّ لنفسه)).

"तुम में कोई मोमिने कामिल नहीं होता जब तक अपने भाई मुसल्मान के लिये वोही न चाहे जो ख़ुद अपने लिये चाहता है।"(1)

और फ़रमाते हैं : ((الدين النصح لكلّ مسلم)).

"दीन हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही का नाम है।"(2)

व लिहाज़ा अह़ादीस में ता'मीमे दुआ़ (या'नी : अपनी दुआ़ में सब मुसल्मानों को शामिल करने) के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हुए।

كما أسلفناه في فصل الآداب، والله تعالى أعلم بالصواب.(3)

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الإيمان، باب من الإيمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه، الحديث: ١٣، ج١، ص١٦.

2 "سنن النسائي"، كتاب البيعة، النصيحة للإمام، الحديث: ٤٢٠٣-٤٢٠٦، ص٦٨٤-٦٨٥.

3 जैसा कि हम ने पीछे आदाबे दुआ़ की फ़स्ल (या'नी फ़स्ले दुवुम) में ज़िक्र किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ह़क़ को ज़ियादा जानने वाला है।

फ़स्ले हश्तुम उन लोगों के बयान में जिन की दुआ क़बूल होती है।

قال الرضاء : वोह उन्नीस19 हैं। आठ8 ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ज़िक्र फ़रमाए और ग्यारह11 फ़क़ीर غَفَرَاللّٰہُ تَعَالٰی لَہٗ ने ज़ाइद किये।﴿

अव्वल (1) : मुज़्त़र (बेचैन व परेशान ह़ाल)।

قال الرضاء : इस की त़रफ़ तो ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इशारा मौजूद :

﴿اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَكْشِفُ السُّوْٓءَ﴾.﴿(1)

दुवुम (2) : मज़्लूम अगर्चे फ़ाजिर हो, अगर्चे काफ़िर हो।

قال الرضاء : ह़दीस में है : "अल्लाह तआ़ला उस से फ़रमाता है :

((وعزتي لأ نصرنّک ولو بعد حين))

"मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक ज़रूर मैं तेरी मदद करूंगा अगर्चे कुछ देर के बा'द।"﴿(2)

सिवुम (3) : बादशाहे आ़दिल।

चहारुम (4) : मर्दे सालेह़।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई। (پ ٢٠، النمل:٦٢)

2 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في العفو والعافية، الحديث: ٣٦٠٩، ج٥، ص٣٤٣.

"سنن ابن ماجه" كتاب الصيام، باب في الصائم لا تردّ دعوته، الحديث: ١٧٥٢، ج٢، ص٣٤٩-٣٥٠.

पन्जुम (5) : मां बाप का फ़रमां बरदार।

शशुम (6) : मुसाफ़िर।

قال الرضاء: رواه ابن ماجه والعقيلي والبيهقي عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه والبزار وزاد: ((حتى يرجع)) والضياء عن أنس وأحمد والطبراني عن عقبة بن عامر رضي الله تعالٰى عنهم.[1]

मु-तअ़द्दद अह़ादीस में इर्शाद हुवा कि "इस की (या'नी मुसाफ़िर की) दुआ़ ज़रूर मुस्तजाब है, जिस में कुछ शक नहीं।"

رواه أحمد والبخاري في "الأدب المفرد" وأبو داود والترمذي عن أبي هريرة ومنها حديث ابن ماجه والضياء المذكوران.[2]

---

1. मुसाफ़िर की दुआ़ की क़बूलिय्यत वाली ह़दीस को इब्ने माजह, अ़क़ीली, बैहक़ी और बज़्ज़ार ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया जब कि बज़्ज़ार ने "حتی یرجع" (यहां तक कि लौट आए) के अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया, और इसी ह़दीस को ज़िया ने ह़ज़रते अनस और अह़मद व त़-बरानी ने ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत किया।

"سنن ابن ماجه"، باب دعوة الوالد ودعوة المظلوم، الحديث: ٣٨٦٢، ج٤، ص ٢٨١.

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ٣٣١٦، ج١، الجزء الثاني، ص ٤٤، (بحوالہ بزار).

2. इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने "मुस्नदे अह़मद" में और बुख़ारी ने "अल अ-दबुल मुफ़रद" में और अबू दावूद व तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया, और इन मु-तअ़द्दद अह़ादीस में से इब्ने माजह और ज़िया की रिवायत कर्दा मज़्कूरा बाला ह़दीसे मुबा-रका भी है।

"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٧٥١٣، ج٣، ص ٧١.

و"الأدب المفرد"، باب دعوة الوالدين، الحديث: ٣٢، ص١٩.

बज़्ज़ार के यहां ह़दीसे अबू हुरैरा इन अल्फ़ाज़ से है : "तीन शख़्स हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि इन की कोई दुआ़ रद न करे : रोज़ादार ता इफ़्त़ार और मज़्लूम ता इन्तिक़ाम और मुसाफ़िर ता रुजूअ़ ।"﴾[1]

हफ़्तुम (7) : रोज़ादार ।

قال الرضاء : ख़ुसूसन वक़्ते इफ़्त़ार ।﴾

हश्तुम (8) : मुसल्मान कि मुसल्मान के लिये उस की **ग़ैबत** (ग़ैर मौजू-दगी) में दुआ़ मांगे ।

قال الرضاء : ह़दीस शरीफ़ में है :

"येह दुआ़ निहायत जल्द क़बूल होती है ।" फ़िरिश्ते कहते हैं :

((آمین ولک بمثل ذالک))

"उस के ह़क़ में तेरी दुआ़ क़बूल और तुझे भी इसी त़रह़ की ने'मत हुसूल ।"[2]

दूसरी ह़दीस में फ़रमाया :

"येह दुआ़ ह़ाजी व ग़ाज़ी व मरीज़ व मज़्लूम की दुआ़ओं से भी ज़ियादा जल्द क़बूल होती है ।"

البيهقي في "الشعب" بسند صالح عن ابن عباس رضي الله تعالٰى

---

1 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣١٦، ج١، الجزء الثاني، ص٤٤، (بحوالہ بزار).

2 "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب الدعاء بظهر الغيب، الحديث:١٥٣٤-١٥٣٥، ج٢، ص١٢٦-١٢٧.

و"صحيح مسلم"، كتاب الذكر والدعاء، باب فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، الحديث: ٢٧٣٢-٢٧٣٣، ص١٤٦٢.

عنهما : ((خمس دعوات يستجاب لهن)) فذكرهن وقال: ((وأسرع هذه الدعوات إجابة دعوة الأخ لأخيه بظهر الغيب)).(1)

बल्कि तीसरी ह़दीस में इर्शाद हुवा कि "इस से ज़ियादा जल्द क़बूल होने वाली कोई दुआ़ नहीं।"

رواه الترمذي عن عبد الله بن عمر رضي الله تعالى عنهما ونحوه للطبراني وغيره عن عبد الله بن عمر رضي الله تعالى عنهما.(2)

चौथी ह़दीस शरीफ़ में आया : "येह दुआ़ रद नहीं होती।"

البزار عن عمران بن حصين رضي الله تعالى عنهما.(3)

---

1 बैहक़ी "शु-अ़बुल ईमान" में सालेह़ सनद के साथ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत करते हैं : पांच दुआ़एं मक़्बूल हैं : फिर वोह ज़िक्र कीं या'नी मज़्लूम, ह़ाजी, मुजाहिद कि जिहाद के लिये निकले, मरीज़ और मुसल्मान की मुसल्मान के लिये उस की ग़ैर मौजू-दगी में दुआ़ करना फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इन में निहायत जल्द क़बूल होने वाली दुआ़, एक मुसल्मान की अपने मुसल्मान भाई के लिये उस की ग़ैर मौजू-दगी में मांगी गई दुआ़ है।

"شعب الإيمان"، الحديث: ١١٢٥، ج٢، ص٤٦-٤٧

2 इस ह़दीस को तिरमिज़ी और इसी की मिस्ल त़-बरानी और दीगर मुह़द्दिसीने किराम ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في دعوة الأخ... إلخ، الحديث:٣٨٥، ج٣، ص٣٩٥.

3 इस ह़दीस को बज़्ज़ार ने इ़मरान बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत किया।

"مسند البزار"، الحديث:٣٥٧٧، ج٩، ص٥٢.

नहुम (9) : قال الرضاء : वालिदैन की दुआ़ अपनी औलाद के ह़क़ में, एक ह़दीस शरीफ़ ज़िक्र की जाती है कि "येह दुआ़ उम्मत के लिये दुआ़ए नबी के मिस्ल होती है।"

رواه الديلمي عن أنس رضي الله تعالٰى عنه. (1)

दहुम (10) : قال الرضاء : औलाद की दुआ़ वालिदैन के ह़क़ में।

أبو نعيم عن واثلة بن الأسقع رضي الله تعالٰى عنه عن النبي صلى الله تعالٰى عليه وسلم: ((أربع دعواتهم مستجابة: الإمام العادل والرجل يدعو لأخيه بظهر الغيب ودعوة المظلوم ورجل يدعو لوالديه)). (2)

याज़्दहुम (11) : قال الرضاء : ह़ाजी की दुआ़ जब तक अपने घर पहुंचे।

ह़दीस शरीफ़ में है : "जब तू ह़ाजी से मिले, उसे सलाम कर और मुसा-फ़ह़ा कर और दर-ख़्वास्त कर कि वोह तेरे लिये इस्तिग़फ़ार करे, क़ब्ल इस के कि वोह अपने घर में दाख़िल हो कि वोह मग़्फ़ूर है।"

أخرجه الإمام أحمد عن ابن عمر رضي الله تعالٰى عنهما. (3)

---

(1) इस ह़दीस को दैलमी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"المسند الفردوس" للديلمي، الحديث:٢٨٥٩، ج١، ص٣٨٦

(2) अबू नुऐ़म, वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और वोह मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से रावी : चार आदमियों की दुआ़एं क़बूल हैं : (1) आ़दिल बादशाह, (2) वोह शख़्स कि अपने मुसल्मान भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस के लिये दुआ़ करे, और (3) मज़्लूम की दुआ़, और (4) वोह शख़्स जो अपने वालिदैन के लिये दुआ़ करे।

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٠٢، ج١، الجزء الثاني، ص٤٣

(3) इस ह़दीस की तख़्रीज इमाम अह़मद ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से की।

"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، ج٢،ص٣٥١، الحديث:٥٣٧١

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : ''ह़ाजी की दुआ़ रद नहीं होती, जब तक पलटे।''

البيهقي والديلمي ويأتي.(1)

दुवाज़्दहुम (12) : قال الرضاء : उ़म्रह करने वाला।

ह़दीस शरीफ़ में है : ''ह़ज व उ़म्रह वाले ख़ुदा के मेहमान हैं, देता है उन्हें जो मांगें और क़बूल फ़रमाता है जो दुआ़ करें।''

رواه البيهقي (इस ह़दीस को बैहक़ी ने रिवायत किया)।(2)

सीज़्दहुम (13) : قال الرضاء : मरीज़, कि नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

''जब बीमार के पास जाओ, उस से अपने लिये दुआ़ चाहो कि उस की दुआ़ मिस्ले दुआ़ए मलाएका है।'' (3) رواه ابن ماجه عن عمر رضي الله تعالى عنه.

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : ''मरीज़ की दुआ़ रद नहीं होती, यहां तक कि अच्छा हो।''

---

(1) इस ह़दीसे मुबा-रका को बैहक़ी और दैलमी ने रिवायत किया और येह ह़दीसे मुबा-रका आगे (हफ़्दहुम में) आएगी।

"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من اللّٰه تعالى، ذكر فصول في الدعاء... إلخ، الحديث:١١٢٥، ج٢، ص٤٧.

(2) "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الحج والعمرة، الحديث: ٤١٠٦-٤١٠٩، ج٣، ص٤٧٦-٤٧٧.

(3) इस ह़दीस को इब्ने माजह ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया।

"سنن ابن ماجه"، كتاب الجنائز، باب ما جاء في عيادة المريض، الحديث: ١٤٤١، ج٢، ص١٩١.

رواه ابن أبي الدنيا ونحوه عند البيهقي والديلمي عن ابن عباس رضي الله تعالٰى عنهما.[1]

चहार दहुम (14) : قال الرضاء : हर मोमिन मुब्तलाए बला या'नी बलाए दुन्यवी व जिस्मानी। येह मरीज़ से आ़म है।

ह़दीस शरीफ़ में है : सलमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इर्शाद हुवा : "ऐ सलमान ! बेशक मुब्तला की दुआ़ मुस्तजाब है।"

الديلمي عنه رضي الله تعالٰى عنه.[2]

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : "मोमिने मुब्तला की दुआ़ ग़नीमत जानो।"

أبو الشيخ عن أبي الدرداء رضي الله تعالٰى عنه.[3]

पांज़्दहुम (15) : قال الرضاء : जो यादे ख़ुदा ब कसरत करता हो।

ह़दीस शरीफ़ में है : "तीन शख़्सों की दुआ़ अल्लाह तआ़ला रद नहीं करता : एक वोह कि ख़ुदा की याद ब कसरत करे और

---

1. इस ह़दीस को इब्ने अबिद्दुन्या और इसी की मिस्ल बैहक़ी और दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।
"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من الله تعالى، ذكر فصول في الدعاء... إلخ، الحديث: ١١٢٥، ج٢، ص٤٧.

2. इस ह़दीस को दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।
"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٦٥، ج١، الجزء الثاني، ص٤٧، (بحوالہ دیلمی).

3. इस ह़दीस को अबुश्शैख़ ने ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।
"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٠٥، ج١، الجزء الثاني، ص٤٣، (بحوالہ ابوالشیخ).

मज़्लूम और बादशाहे आदिल।"

رواه البيهقي عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه.[1]

शांज़्दहुम (16) : قال الرضاء : जो तन्हा जंगल में जहां उसे अल्लाह के सिवा कोई न देखता हो खड़ा हो कर नमाज़ पढ़े।

ابن مندة وأبو نعيم في الصحابة عن ربيعة بن وقاص رضي الله تعالٰى عنه عن النبي صلى الله تعالٰى عليه وسلم: ((ثلاثة مواطن لا تردّ فيها دعوة عبد: رجل يكون في بَرِيَّة بحيث لا يراه أحد إلا الله فيقوم فيصلي)). الحديث[2]

हफ़्दहुम (17) : قال الرضاء : ग़ाज़ी कि ग़ज़ाए कुफ़्फ़ार के लिये निकले (या'नी कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिये निकले) जब तक वापस आए।

---

1. इस हदीस को बैहक़ी ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।
"شعب الإيمان"، باب في محبة الله عزوجل، فصل في إدامة ذكر الله عزوجل، الحديث:٥٨٨، ج١، ص٤١٩.

2. इब्ने मन्दह व अबू नुऐम **"मा'रिफ़तिस्सहाबा"** में हज़रते रबीआ बिन वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : तीन मक़ामात ऐसे हैं कि इन में बन्दे की दुआ रद नहीं की जातीं, इन में से एक वोह बन्दा जो जंगल में खड़ा हो कर इस हाल में नमाज़ अदा करे कि उसे उस के रब عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न देखता हो। (अल हदीस)
"معرفة الصحابة"، لأبي نعيم، ربيعة بن وقاص، الحديث: ٢٧٩٢، ج٢، ص٢٩٨، بألفاظ متقاربة.

الـديـلمي عن ابن عباس رضـي الـلّـه تـعالى عنهما : ((أربع دعوات لاتردّ: دعوة الحاج حتى يرجع ودعوة الغازي حتى يصدر)) الحديث.[1]

ولـلبيهـقـي عـنـه بـإسناد متماسـک: ((خمس دعوات يستجاب لهن)) فذكر نحوه.[2]

ख़ुसूसन जब कि مَعَاذَالله और साथी भाग जाएं और येह साबित क़दम रहे,[3] وهــوفي تتمة حديث ربيعة المارّ.

हज़्दहुम (18) : قــال الـرضــاء : जिस शख़्स ने किसी पर एह़सान किया अपने मोह़सिन के ह़क़ में उस की दुआ़ रद नहीं होती।

الديلمي عن ابن عمر رضي الله تعالىٰ عنهماعن النبي صلى الله عليه وسلم: ((دعاء المحسن إليه للمحسن لا يردّ)).[4]

---

1. दैलमी ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रावी कि चार दुआ़एं रद नहीं की जाती : ह़ाजी की दुआ़ जब तक कि लौट न आए और ग़ाज़ी की दुआ़ यहां तक कि वापस हो। (अल ह़दीस)

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٠١، ج١، ص٤٣، (بحواله ديلمى)

2. और बैहक़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से अस्नादे मु-तमासिक के साथ रिवायत किया कि पांच क़िस्म के लोगों की दुआ़एं क़बूल होती हैं फिर मज़्कूरा बाला अफ़राद का ज़िक्र फ़रमाया।

"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من الله تعالى، الحديث:١١٢٥، ج٢، ص٤٧

3. या'नी : और इस का तज़्किरा रबीआ़ बिन वक़्क़ास से मज़्कूरा बाला रिवायत कर्दा ह़दीस के आख़िर में है।

4. दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم से रिवायत किया कि जिस शख़्स ने किसी पर एह़सान किया तो एह़सान करने वाले के ह़क़ में उस की दुआ़ रद नहीं होती।

"المسند الفردوس" للديلمي، ج١، ص٣٨٦، الحديث:٢٨٦٣.

नूज़्दहुम (19) قال الرضاء : जमाअ़ते मुसल्मानान कि मिल कर दुआ करें, बा'ज़ दुआ करें बा'ज़ आमीन कहें।

الطبراني والحاكم والبيهقي عن حبيب بن مَسْلَمة الفِهْرِيِّ رضي الله تعالى عنه : ((لا يجتمع ملأ فيدعو بعضهم ويؤمّن بعضهم إلّا أجابهم الله تعالى)).(1)

येह ग्यारह[11] कि फ़क़ीर ने ज़िक्र किये इन में सिवाए नहुम[9] व दहुम[10] के बाक़ी नव[9] साहिबे "हि़स्ने ह़सीन" से भी रह गए।

﴿فالحمد لله على حسن التوفيق.﴾(2)

---

1 त़-बरानी, ह़ाकिम और बैहक़ी ने ह़ज़रते ह़बीब बिन मुस्लिमा फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया कि मुसल्मान जम्अ़ हों उन में बा'ज़ दुआ करें, और बा'ज़ आमीन कहें तो अल्लाह तआ़ला उन की दुआ क़बूल फ़रमाता है।

"المستدرك" للحاكم، حبيب بن مسلمة الفهرى كان مجاب الدعوة، الحديث: ٥٥٢٩، ج٤، ص٤١٧.

و"المعجم الكبير"، الحديث:٣٥٣٦، ج٤، ص٢٢.

2 इस हुस्ने तौफ़ीक़ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये सब ख़ूबियां।

फ़स्ले नहुम

उन आ'माले सालिहा में जिन के करने वाले को किसी दुआ की हाजत नहीं ।

قال الرضاء : येह फ़स्ल अगर्चे इस रिसाले में नहीं मगर इस मज़मून को हज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने किताब "**अल जवाहिर**"(1) में इफ़ादा फ़रमाया फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ब वज्हे जलालते फ़ाएदा व अ़-ज़-मते आ़एदा (या'नी अ़ज़ीम फ़ाएदा और मन्फ़अ़त के पेशे नज़र) इसे यहां ज़िक्र करता है, वोह तीन³ चीज़ें हैं :

अव्वल (1) : दुरूद शरीफ़ ।

इमाम अहमद व तिरमिज़ी व हाकिम ब असानीदे सहीहा जय्यिदा हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं : जब चहारुम शब गुज़रती थी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم खड़े हो कर फ़रमाते :

"ऐ लोगो ! ख़ुदा की याद करो, ख़ुदा की याद करो, आई **राजिफ़ा**(2), इस के बा'द आती है **रादिफ़ा**(3) आई मौत उन चीज़ों के साथ जो उस में हैं।"

मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मैं दुआ बहुत

---

1 "جواهر البيان في أسرار الأركان"، فصل چهارم، ص١٨٥-١٨٦

2 राजिफ़ा से मुराद है क़ियामत का पहला नफ़्ख़ा चूंकि इस नफ़्ख़े से ज़मीन में सख़्त ज़ल्ज़ला पड़ जावेगा।

(مرآة المناجيح"، باب البكاء والخوف، الفصل الأول، ج٧، ص١٥٧)

3 रादिफ़ा से मुराद दूसरा नफ़्ख़ा जिस से मुर्दे जी उठेंगे।

(مرآة المناجيح"، باب البكاء والخوف، الفصل الأول، ج٧، ص١٥٧)

किया करता हूं इस में से हुज़ूर के लिये किस क़दर मुक़र्रर करूं ?

फ़रमाया : "जितनी चाहे।"

मैं ने अ़र्ज़ की : चहारुम।

फ़रमाया : जिस क़दर चाहे, और ज़ियादा करे तो तेरे लिये बेहतर है।

मैं ने अ़र्ज़ की : निस्फ़।

फ़रमाया : "जितनी चाहे, और ज़ियादा करे तो तेरे लिये बेहतर है।"

मैं ने अ़र्ज़ की : अपनी कुल दुआ़ हुज़ूर के लिये कर दूं, या'नी अपनी कुल दुआ़ के इ़वज़ हुज़ूर पर दुरूद भेजा करूं ?

फ़रमाया : "ऐसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला तेरे सब मुहिम्मात (अहम और मुश्किल कामों में) किफ़ायत करेगा और तेरे गुनाह बख़्श देगा।"(1)

अह़मद व त़-बरानी ब अस्नादे ह़सन रावी : وهذا حديث الطبراني (या'नी येह त़-बरानी की ह़दीस के अल्फ़ाज़ हैं) कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं अपनी तिहाई दुआ़ हुज़ूर के लिये करूं ?

फ़रमाया : "अगर तू चाहे।"

अ़र्ज़ की : दो तिहाई।

फ़रमाया : "हां"

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب صفة القيامة، باب في ترغيب في ذكر الله... إلخ، الحديث:٢٤٦٥، ج٤، ص٢٠٧.

و"المستدرك"، كتاب التفسير، الحديث:٣٦٣١، ج٣، ص١٩٨.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث:٢١٢٩٩-٢١٣٠٠، ج٨، ص٥٠.

अ़र्ज़ की : कुल दुआ़ के इवज़ दुरूद मुक़र्रर करूं।

फ़रमाया : "ऐसा करेगा तो ख़ुदा तेरे दुन्या व आख़िरत के सब काम बना देगा।"(1)

और बेशक दुरूद सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये दुआ़ है और जिस क़दर इस के फ़वाइद व ब-रकात मुसल्ली (या'नी दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले) पर आ़इद होते हैं हरगिज़ हरगिज़ अपने लिये दुआ़ में नहीं बल्कि इन के लिये दुआ़ तमाम उम्मते मर्हूमा के लिये दुआ़ है कि सब इन्हीं के दामने दौलत से वाबस्ता हैं।

سلامتِ همه آفاق در سلامت تُست(2)

दुवुम (2) : ज़िक्रे इलाही।

बैहक़ी ने "शु-अ़बुल ईमान" में बुकैर बिन अ़तीक़ उन्हों ने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह उन्हों ने अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर उन्हों ने अपने वालिद ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم, हुज़ूर ने रब्बुल इ़ज़्ज़त जिल जलाल تَقَدَّسَتْ أَسْمَاؤُهُ से रिवायत की, कि फ़रमाता है :

((من شغله ذكري عن مسألتي أعطيته أفضل ما أعطي السائلين))

"जिसे मेरी याद मेरे मांगे से बाज़ रखे, मैं उसे बेहतर उस अ़ता

---

1 "المعجم الكبير"، الحديث: ٣٥٧٤، ج٤، ص٣٥.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢١٣٠٠، ج٨، ص٥٠.

2 *मैं क्या बताऊं तमन्नाए ज़िन्दगी क्या है*
हुज़ूर आप सलामत रहें कमी क्या है

का बख़्शूं जो मांगने वालों को दूं।"(1)

इसी वासिते हज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने तमाम मुद्दत वुक़ूफ़ में ज़िक्रे इलाही पर इक्तिसार किया और ता ग़ुरूबे आफ़्ताब (या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब तक)

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّ آبَائِنَا الْأَوَّلِيْنَ

कहते रहे।(2)

सिवुम (3) : तिलावते क़ुरआने मजीद।

नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने रब्बे जलील तबा-र-क व त-आ़ला से रिवायत फ़रमाते हैं :

((من شغله القرآن عن ذكري ومسألتي أعطيتُه أفضل ما أعطي السائلين وفضل كلام الله على سائر الكلام كفضل الله على خلقه)).

---

(1) "شعب الإيمان"، الحديث:٥٧٢، ج١، ص٤١٣

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है सारी बादशाहत और उसी के वासिते सब ख़ूबियां, सारी भलाई उसी के हाथ में है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, अगर्चे बुरा मानें मुशरिक, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं जो हमारा रब और हमारे अगले बाप दादाओं का परवर्द गार है।

"شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات، الحديث:٤٠٨٠، ج٣، ص٤٦٦، بألفاظ متقاربة.

"जिसे तिलावते कुरआने मजीद मेरे ज़िक्र और मेरे सुवाल से रोक दे उसे अफ़्ज़ल उस का दूं, जो तमाम साइलीन को अ़ता करूं।"

फिर फ़रमाया : "और बुज़ुर्गी कलामे इलाही की तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे बुज़ुर्गिये रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهُ, उस की तमाम मख़्लूक़ पर।"

قال الترمذي:حديث حسن (इमाम तिरमिज़ी ने इस ह़दीस को ह़सन कहा)।[1]

والله سبحنه وتعالى أعلم بالصواب.[2]

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب ثواب القرآن، الحديث:٢٩٣٥، ج٤، ص٤٢٥

2 दुरुस्ती का बेहतर इ़ल्म अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی को है।

फ़स्ले दहुम मब्ह़स दुआ के मु-तअ़ल्लिक़ चन्द नफ़ीस सुवाल व जवाब में

सुवाले अव्वल (1) : अपनी आ़जिज़ी और परवर्द गार **तबा-र-क व तआ़ला** की रह़मत पर नज़र कर के दुआ़ व सुवाल बेहतर है या क़ज़ा (तक़्दीर) पर राज़ी हो कर तर्क, औला है ?

जवाब : बा'ज़ उ़-लमा तर्के दुआ़ को औला जानते हैं।

इमाम वासिती़ फ़रमाते हैं : जो ख़ुदाए तआ़ला ने तेरे लिये ठहरा दिया वोह उस से बेहतर है जो तू मांगता है।(1)

सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم ने बला के वक़्त दुआ़ न मांगी, जिब्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा : कुछ ह़ाजत है ? फ़रमाया : हां, मगर न तुम से, कहा : ख़ुदा से अ़र्ज़ कीजिये, फ़रमाया : حسبي من سؤالي علمه بحالي.(2)

خدا واقف کہ حافظ را غرض چیست(3)

وعلم الله حسبي عن سؤالي(4)

---

❶ "الرسالة القشيرية"، باب الدعاء، ص٢٩٦.

1. मुल्ला अ़ली क़ारी "शर्हे फ़िक़्हे अक्बर" में लिखते हैं : कि इस कलिमा की ब-र-कत से जलने से मह़फ़ूज़ रहे, सात दिन या चालीस दिन आग में रहे और उस वक़्त सोलह16 बरस के थे। ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ

"شرح الفقه الأكبر"، الدعاء للميت ينفع خلافاً للمعتزلة، ص ١٣٠

❷ या'नी उस का मेरे ह़ाल को जानना येही मुझे किफ़ायत करता है मेरे सुवाल करने से।

"تفسير البغوي"، ج٣، ص٢١١

❸ या'नी ख़ुदा जानता है कि ह़ाफ़िज़ की ग़रज़ क्या। ह़ाफ़िज़ से मुराद "ह़ाफ़िज़ शीराज़ी" हैं।

ख़ुदा तो जानता है ह़ाल क्या है उस के बन्दे का

नहीं ह़ाजत मेरे मा'रूज़ की उस रब्बे आ'लम को

उ़-लमा कहते हैं : जो चीज़ बे मांगे मिलती है उस से कि मांगने से ह़ासिल हो, बेहतर होती है, देखो ! ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने मग़्फ़िरत की त़लब और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने हिदायत की तमन्ना की, ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को येह दोनों ने'मतें ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام से बेहतर व अफ़्ज़ल ह़ासिल हुई।

قال الرضاء:قال سیدنا إبراهیم عَلَيْهِ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيم :

﴿وَالَّذِیْٓ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓــٴَـتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ﴾ (1)

وقال: ﴿وَلَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ﴾ (2)

وقال موسى الكليم عَلَيْهِ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيم: ﴿اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ﴾ (3)

وقال تعالى لمحمد صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم: ﴿لِیَغْفِرَ لَکَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ﴾ (4) الآية.

---

(1) सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने अपने रब से अ़र्ज़ की : "और वोह जिस की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़त़ाएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा।" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ۱۹، الشعرآء: ۸۲)

(2) और अ़र्ज़ की : "और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे।" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ۱۹، الشعرآء: ۸۷)

(3) मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने कहा : "मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं, अब वोह मुझे राह देगा।" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۹۹)

(4) और अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया : "ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के" (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) (پ۲٦، الفتح: ۲)

وقال تعالی: ﴿يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ﴾(1)

وقال تعالی: ﴿وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا﴾(2)

ह़दीसे क़ुदसी में है :

((من شغله ذكري عن مسألتي أعطيتُه أفضل ما أعطي السائلين))

"जिसे मेरी याद मुझ से दुआ मांगने की फ़ुरसत न दे, उसे मांगने वाले से बेहतर दूं।"(3)

और येह भी ह़दीस में वारिद कि "ख़ुदा भाई यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पर रह़्म करे अगर बादशाह से इस बात की, कि मुझे ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर, दर-ख़्वास्त न करते, उसी वक़्त मुक़र्रर करता, दर-ख़्वास्त के सबब बरस दिन तक मुक़र्रर न हुए।" (या'नी एक साल ताख़ीर से मुक़र्रर हुए)(4)

قال الرضاء : इमाम दक़ूक़ी का क़स्दे कनारे दरिया, दूर से चन्द अब्दाल को मुख़्तलिफ़ शक्लों में मु-तशक्कल होते देखना, फिर उन के क़रीब आ कर नमाज़ में उन्हें इमाम बनाना, एक जहाज़ डूबता देख कर उन का दुआ करना, ख़लास पाना अब्दाल का इक़्तिदा से जुदा हो जाना, कि तुम्हें कारख़ानए क़ज़ा में दख़्ल देने का क्या मन्सब

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और इन के साथ के ईमान वालों को।" (پ۲۸، التحريم:۸)
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और तुम्हें सीधी राह दिखा दे।" (پ۲٦، الفتح: ۲)
3. "شعب الإيمان"، ج۱، ص۴۱۳، الحديث:۵۷۲.
4. "الجامع لأحكام القرآن"، الجزء التاسع، ج۵، ص۱۴۸.
و"روح المعاني"، الجزء:۱۳، ص۹. و"تفسير البغوي"، ج۲، ص۳٦۳.
و"تفسير الخازن"، ج۳، ص۲۷.

है मा'रूफ़ व मश्हूर, और मस्नवी शरीफ़ ह़ज़रत मौलवी قُدِّسَ سِرُّہُ الْمَعْنَوِیُّ में मज़्कूर ।》[1]

और बा'ज़ उ़-लमा दुआ़ व सुवाल ब नज़र इन फ़वाइद के जो साबिक़ मज़्कूर हुए बेहतर समझते हैं।

बा'ज़ कहते हैं : बेहतर येह है कि ज़बान से दुआ़ करे और दिल से ख़ुदा के हुक्म व क़ज़ा पर राज़ी रहे ताकि दोनों फ़ाएदे हाथ आएं।

बा'ज़ कहते हैं : जिस बात में ह़ज़्ज़े नफ़्स को दख़्ल है वहां सुकूत व तर्के दुआ़ अफ़्ज़ल है और जिस में दीन व शर-अ़ की तरक़्क़ी या किसी दूसरे मुसल्मान का फ़ाएदा है उस का मांगना मुनासिब ।[2]

बा'ज़ उ़-लमा फ़रमाते हैं : जिस वक़्त दिल दुआ़ की त़रफ़ इशारा करे और उस से कुशूदे कार नज़र आए (या'नी अपना मक़्सूद व मत़्लूब ह़ासिल होता दिखाई दे) दुआ़ बेहतर है और जब सुकूत की त़रफ़ इशारा करे सुकूत औला, और येह क़ौल असह़्ह़े अक़्वाल है (या'नी येह क़ौल तमाम अक़्वाल से सह़ीह़ तर है) ।[3]

अक्सर उमूर, ख़ुसूसन मुबाह़ात व मन्दूबात में दिल का फ़तवा ए'तिबारे तमाम रखता है इसी वासित़े कहते हैं : दुआ़ व तर्क में तरजीह़, वक़्त पर ज़ाहिर होती है।

---

1 "मस्नविये मौलाना रूम" (मुतर्जम), दफ़्तरे सिवुम, स. 37, 42।

2 या'नी जिस बात की दुआ़ मांगने में ज़ाती मफ़ाद शामिल हो वहां दुआ़ को छोड़ देना और राज़ी ब रिज़ाए मौला रहना अफ़्ज़ल है और जिस बात की दुआ़ मांगने में दीने मतीन की सर बुलन्दी या किसी मुसल्मान भाई का फ़ाएदा हो तो ऐसी दुआ़ मांगना मुनासिब है।

3 "الرسالۃ القشیریۃ"، باب الدعاء، ص۲۹۶-۲۹۷

قال الرضاء : येह जो ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इर्शाद फ़रमाया हुक्मे अस्ली है, मगर इस का मौरिद सिर्फ़ औलिया हैं जिन की निस्बत : [1]((استفتِ قلبک)) वारिद।

अ़वाम मुअमिनीन कि फ़ह्वाए क़ल्ब व त़ग़्वाए नफ़्स व इग़्वाए देव में तमीज़ नहीं कर सकते, इन के लिये राह येही है कि दुआ़ में कभी तक़्सीर (कमी) न करें कि फ़ी नफ़्सिही इ़बादत बल्कि मग़्ज़े इ़बादत है, लिहाज़ा क़ुरआनो ह़दीस में मुत़्लक़न इस की त़रफ़ तरग़ीब फ़रमाई कि अह़कामे शरइय्या में कसीर ग़ालिब ही पर लिह़ाज़ होता है।[2]

ثمّ أقول : मह़ल्ले नज़ाअ़ अदइय्यए ख़ास्सा, वक़्ते ह़ाजाते ह़ादिसा हैं[3], वरना मुत़्लक़ दुआ़ ब इज्माए उम्मते मर्हूमा हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार वाजिब है, [4] ﴿اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ﴾

---

1 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١٨٠٢٨، ج٦، ص٢٩٣.

2 हुक्म वोही है जो मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इर्शाद फ़रमाया या'नी बा'ज़ उ़-लमा तर्के दुआ़ मुनासिब जानते हैं और बा'ज़ फ़वाइद के पेशे नज़र दुआ़ करने को, मगर येह सिर्फ़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ الله के लिये है जिन के बारे में इर्शाद फ़रमाया : "अपने दिल से फ़तवा पूछिये", येह हुक्म आ़म मुसल्मानों के लिये नहीं कि वोह दिल की बातों, नफ़्स की चालों और शैत़ानी वस्वसों में तमीज़ नहीं कर सकते लिहाज़ा उन के लिये हुक्म येही कि वोह दुआ़ में कमी न करें क्यूं कि दुआ़ न सिर्फ़ इ़बादत बल्कि इ़बादत का मग़्ज़ है क़ुरआनो ह़दीस में दुआ़ की तरग़ीब मुत़्लक़न इस लिये दी गई है कि शर-ई़ अह़कामात में ज़ियादा तर ग़ालिब का ही ए'तिबार किया जाता है।

3 "अदइय्या" दुआ़ की जम्अ़ है। और दुआ़ मांगने या ना मांगने में उ़-लमा का जो इख़्तिलाफ़ गुज़रा वोह बा'ज़ ख़ास दुआ़ओं के मु-तअ़ल्लिक़ उस वक़्त है कि जब अचानक कोई मुश्किल या मुसीबत आए और दुआ़ की जाए, वरना मुत़्लक़ दुआ़ में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हम को सीधा रास्ता चला।" (الفاتحة: ٥)

क्या दुआ नहीं ! और (1)﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ सब से अफ़्ज़ल दुआ है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((أفضل الذكر لا إله إلا اللّٰه وأفضل الدعاء الحمد للّٰه))(2)

رواه الترمذي وحسّنه والنسائي وابن ماجه وابن حبان والحاكم وصحّحه عن جابر بن عبد اللّٰه رضي اللّٰه تعالٰى عنهما.(3)

दुरूद शरीफ़ भी दुआ है कि ब इज्माए उम्मते मर्हूमा उम्र में एक बार हर मुसल्मान पर फ़र्ज़े क़त़ई और **इन्दल मुह़क़्क़िक़ीन** (मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक) हर बार कि ज़िक्र शरीफ़ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आए वाजिब है।(4)

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "सब ख़ूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का।" (الفاتحة: ١)

2 सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ" है और सब से अफ़्ज़ल दुआ "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" है।

3 इस ह़दीस को तिरमिज़ी, नसाई, इब्ने माजह, इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत किया, और ह़ाकिम ने इस रिवायत को सह़ीह़ कहा और तिरमिज़ी ने इसे ह़सन क़रार दिया।

"سنن الترمذي"، باب ما جاء أنّ دعوة المسلم مستجابة، الحديث: ٣٣٩٤، ج٥، ص٢٤٨.

و"سنن ابن ماجه"، كتاب الأدب، باب فضل الحامدين، الحديث: ٣٨٠٠، ج٤، ص٢٤٨.

و"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير...إلخ، أفضل الذكر لا إله إلا اللّٰه...إلخ، الحديث: ١٨٩٥، ج٢، ص١٧٩.

4 "الدرّ المختار" و"ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، آداب الصلاة، ج٢، ص٢٧٧-٢٧٨.

इस मस्अले की तफ़्सील जानने के लिये "फ़तावा र-ज़विय्या", जिल्द 6, सफ़ह़ा 222, 223, और "बहारे शरीअ़त", जि. 1, ह़िस्सए अव्वल, सफ़ह़ा 76 (मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

यूं अइम्मए शाफ़िइय्या के नज़्दीक हर रोज़ उन्तालीस39 बार दुआ़ फ़र्ज़ होगी कि शबाना रोज़ में सत्तरह17 रक्अ़तें फ़र्ज़ हैं हर रक्अ़त में फ़ातिहा फ़र्ज़, हर फ़ातिहा में दो2 बार दुआ़ और हर क़ा'दए अख़ीरा में दुरूद फ़र्ज़ है।(1)

अहादीसे साबिक़ा(2) जिन में इर्शाद हुवा कि "जो दुआ़ न करे अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाए", तर्के मुत़्लक़ ही पर महमूल या مَعَاذَالله अपने को बारगाहे इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से बे नियाज़ जानना, उस के हुज़ूर तज़र्रोअ़ व ज़ारी से परहेज़ रखना कि अब सरीह़ कुफ़्र व मूजिबे ग़-ज़बे अ-बदी है। व लिहाज़ा ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾(3) के मुत्तसिल ही इर्शाद हुवा :

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ﴾(4)

---

(1) इन्दश्शवाफ़ेअ़ दुरूद फ़र्ज़ है।

انظر "الهداية"، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ج١، ص٥٣.

و"شرح صحيح مسلم" للنووي، كتاب الصلاة، باب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم بعد التشهد، ج ١، ص ١٧٥.

इन्दश्शवाफ़ेअ़ सूरए फ़ातिहा पढ़नी फ़र्ज़ है।

انـظر "شرح صحيح مسلم" للنووي، كتاب الصلاة، باب وجوب قراءة الفاتحة... إلخ، ج ١، ص ١٧٠.

(2) वोह ह़दीसें कि फ़स्ले दुवुम में अदब 30, के तह़त मज़्कूर हुईं।

(3) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।"

(4) "जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं अ़न्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।" (پ٢٤، المؤمن: ٦٠) (यहां इ़बादत से मुराद दुआ़ है, उन्ज़ुर फ़स्ले अव्वल, स. 48)

बिल जुम्ला मुत़्लक़ दुआ में हरगिज़ किसी मुसलमान से नज़ाअ़ मा'क़ूल नहीं और ख़ुद बा'द अम्रे सरीह़ : ﴿اُدْعُوْنِیْ﴾ व फ़रमान : ﴿وَاسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ﴾[1] गुन्जाइशे कलाम क्या है।[2] ﴿فافهم، والله تعالٰی أعلم﴾

सुवाले दुवुम (2) : दुआ तफ़्वीज़ के मुनाफ़ी (ख़िलाफ़) है, जो शख़्स अपना काम किसी के सिपुर्द करता है आप (ख़ुद) उस में दख़्ल नहीं देता।

जवाब : तफ़्वीज़ के येह मा'ना कि बन्दा जिस काम के नफ़्अ़ नुक़्सान से वाक़िफ़ न हो उसे अपने मौला को कि ह़कीम व करीम व अ़लीम है सिपुर्द करे वोह मस्लह़त उस की इस से बेहतर जानता है, न येह कि जो बात क़त्अ़न इस के ह़क़ में बेहतर है मानिन्दे बिहिश्त व ईमान व मह़ब्बते ख़ुदा के, उस की त़लब न करे या जो बात बिल यक़ीन मुज़िर है, मिस्ल कुफ़्रो शिर्क व मा'सियत व दोज़ख़ के, उस से पनाह न चाहे, बल्कि जिस बात का अन्जाम मा'लूम नहीं उस की त़लब भी मअ़ इस्तिस्ना व शर्त़े ख़ैर व सलाह़, मुनाफ़िये तफ़्वीज़ नहीं।[3]

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो।" (پ٥، النسآء: ٣٢)

2. दुआ करने या इस को तर्क करने के मु-तअ़ल्लिक़ जो उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है वोह ख़ास मवाक़ेअ़ के मु-तअ़ल्लिक़ है वरना मुत़्लक़न दुआ के मांगने में तो किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं और जिन आयात व अह़ादीस में तर्के दुआ पर ग़-ज़बे इलाही वग़ैरा की वईदें आई हैं उन में मुराद वोह लोग हैं जो मुत़्लक़न दुआ को तर्क कर देते हैं या مَعَاذَاللّٰه अपने आप को बारगाहे ईज़्दी से बे नियाज़ समझ कर दुआ तर्क करते हैं और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ व इन्किसारी से कतराते और परहेज़ करते हैं और येह तो सरीह़ कुफ़्र और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दाइमी ग़ज़ब का बाइस है।

3. बल्कि जिस बात का अन्जाम मा'लूम नहीं या'नी येह नहीं जानता कि फ़ुलां चीज़ का सुवाल मेरे ह़क़ में बेहतर है या नहीं ? तो उस फ़ुलां चीज़ का सुवाल भी, इस्तिस्ना (म-सलन लफ़्ज़े "अगर") के साथ या'नी : ऐ मेरे मालिक ! अगर तुझे पसन्द हो तो मुझे येह अ़त़ा फ़रमा, अगर मेरे ह़क़ में बेहतर हो तो अ़त़ा फ़रमा, इसी त़रह़ अगर मेरे ह़क़ में मुनासिब हो तो अ़त़ा फ़रमा मज़्कूरा तीनों त़रह़ से दुआ मांगना तफ़्वीज़ के ख़िलाफ़ नहीं।

दुआए इस्तिख़ारा में वारिद : "इलाही ! येह काम अगर मेरे दीन व दुन्या व अन्जाम में बेहतर है तो मुझे इस की तौफ़ीक़ दे, वरना मुझ को इस से बाज़ रख और मेरा दिल इस से फैर ।"(1)

अलबत्ता जिस चीज़ में मुज़र्रत (नुक़्सान) यक़ीनी है उस की त़लब करना या जिस का नफ़्अ़ नुक़्सान मा'लूम नहीं बिग़ैर शर्ते ख़ैर व सलाह़ के मांगना तफ़्वीज़ के मुनाफ़ी व बे जा है ।

इमाम ग़ज़ाली के शैख़ फ़रमाते हैं : इस्तिस्ना और शर्ते ख़ैर व सलाह़ क़त़इय्यात (यक़ीनी चीज़ों) में भी औला कि कभी ख़ैर व सलाह़ मफ़्ज़ूल (कम अफ़्ज़ल अ़मल) में होती है, म-सलन : एक शख़्स नमाज़ पढ़ता है और वक़्त तंग हो गया है और एक अन्धा कूंएं में गिरा पड़ता है, बचाना उस का इस के ह़क़ में बेहतर है अगर्चे नमाज़ फ़ी नफ़्सिही अफ़्ज़ल है, और अक्सर होता है कि अफ़्ज़ल की त़लब में आदमी हलाक हो जाता है और मफ़्ज़ूल बे ज़रर हाथ आता है जैसे : **माउश्शईर** (या'नी जव का वोह पानी जो शराब न हो) बा'ज़ मरीज़ों के ह़क़ में मुफ़ीद, और शरबत अगर्चे अफ़्ज़ल है मुज़िर । पस ऐसा मफ़्ज़ूल अफ़्ज़ल से अस्लह़ व बेहतर है । तो बन्दे को लाइक़ कि अपने मालिक से अ़र्ज़ करे : इलाही ! मेरी सलाह़ व बहबूद अफ़्ज़ल में रख और इस की तौफ़ीक़ दे, क़त़्अ़न जज़्मन बिला शर्ते सलाह़ अफ़्ज़ल की दर-ख़्वास्त न करे कि कभी मुज़िर होती है ।

قال الرضاء : इस कलाम से मक़्सूद सल्बे उ़मूम है या'नी सब क़त़इय्यात ऐसे नहीं कि जमे इस्तिस्ना व शर्ते ख़ैर से बे नियाज़ हों, न उ़मूमे सल्ब कि सब क़त़इय्यात में इस की ह़ाजत हो, महब्बते ख़ुदा व रसूल جَلَّ جَلَالُهٗ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم व बिहिश्त व दीदारे इलाही व शफ़ाअ़ते रिसालत पनाही صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم व तौफ़ीक़े त़ाअ़त की त़लब, और कुफ़्र व

---

(1) "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب ما جاء في التطوع مثنى مثنى، الحديث: ١١٦٢، ج١، ص٣٩٤.

बिदअ़त व दोज़ख़ व ग़-ज़बे इलाही व नाराज़िये हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से तअ़व्वुज़ (पनाह मांगना) अस्लन मोह़ताजे शर्त़ व इस्तिस्ना नहीं कि इन उमूर में किसी सूरत दूसरा पहलू मु-तसव्वर नहीं और जहां दूसरा पहलू पैदा होगा वहां भी शर्त़ व इस्तिस्ना नज़र ब नफ़्से ज़ात अफ़्ज़ल होंगे कि अफ़्ज़ल फ़ी नफ़्सिही कभी ब वज्हे आ़रिज़ मफ़्ज़ूल हो सकता है[1] जैसे आफ़ाक़ियों के लिये नमाज़ व त़वाफ़[2] वरना مَفْضُوْل مِنْ حَيْثُ هُوَ مَفْضُوْل हरगिज़ अस्लह़ नहीं हो सकता[3], (وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم)

सुवाले सिवुम (3) : जो मुक़द्दर है होगा, फिर दुआ़ से क्या फ़ाएदा ?

जवाब : दुआ़ से बला रद होती है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

"क़ज़ा दुआ़ के सिवा किसी चीज़ से रद नहीं होती और सिवा

---

1 "क़त़इय्यात" से मुराद यहां वोह उमूर हैं जिन का नफ़्अ़ या नुक़्सान यक़ीनी है और इन में दूसरा पहलू न पाया जाए म-सलन मह़ब्बते ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़लब और ग़-ज़बे इलाही व नाराज़िये नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पनाह, या'नी बा'ज़ उमूरे यक़ीनिया ऐसे हैं कि जिन से मु-तअ़ल्लिक़ दुआ़ करते वक़्त इस्तिस्ना व ख़ैर की शर्त़ लगाने की ह़ाजत नहीं कि "इलाही ! अगर येह काम मेरे दीन व दुन्या व अन्जाम में बेहतर है तो मुझे इस की तौफ़ीक़ दे, वरना मुझ को इस से बाज़ रख और मेरा दिल इस से फैर।", बा'ज़ उमूरे यक़ीनिया ऐसे हैं कि जिन से मु-तअ़ल्लिक़ दुआ़ करते वक़्त इस्तिस्ना व ख़ैर की शर्त़ लगाना ही बेहतर है जैसा कि "**माउश्शईर**" वाली मिसाल गुज़री।

2 मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ का सवाब एक लाख गुना बढ़ कर मिलता है इस के बा वुजूद आफ़ाक़ी (या'नी ह़रम शरीफ़ से बाहर रहने वाले) को नमाज़ के बजाए ज़ियादा त़वाफ़ करने का हुक्म है।

तफ़्सील के लिये "बहारे शरीअ़त", जि. 1, ह़िस्सा 6, सफ़ह़ा 1112, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

3 या'नी जिस चीज़ पर किसी दूसरी चीज़ को फ़ज़ीलत ह़ासिल हो तो बज़ाते ख़ुद पहली चीज़ उस दूसरी चीज़ से ज़ियादा मुफ़ीद व भली नहीं हो सकती।

नेकी के कोई चीज़ उम्र को ज़ियादा नहीं करती।"(1)

दूसरी ह़दीस में है : "दुआ उस चीज़ से कि नाज़िल हुई और उस से कि हनूज़ नाज़िल न हुई (जो अभी तक नाज़िल न हुई) फ़ाएदा बख़्शती है और बेशक बला नाज़िल होती है और दुआ उस को मिल जाती है तो दोनों आपस में मुदा-फ़-अ़त करती रहती (लड़ती रहती) हैं"(2) या'नी बला उतरना चाहती है और दुआ उस को रोकती है यहां तक कि क़ियामत तक नहीं उतरने देती।

मगर येह रद भी क़ज़ा के मुवाफ़िक़ है जिस त़रह़ वुजूद हर शै का किसी सबब से मरबूत़ (मिला हुवा) है इसी त़रह़ हर चीज़ के रोकने और दफ़्अ़ करने के लिये भी एक सबब मुक़र्रर है, सिपर (या'नी ढाल) ह़र्बा (जंगी हथियार) रोकने का एक सबब है, और दुआ सबबे दफ़्ए़ बला, सिपर लेना क़ज़ा के ख़िलाफ़ नहीं, दुआ क्यूंकर मुनाफ़ी हो सकती है !

तह़क़ीक़ इस मक़ाम की येह है कि क़ज़ा दो2 क़िस्म है :

मुबरम कि جَفَّ الْقَلَمُ بِمَا هُوَ كَائِنٌ(3) इस का बयान है

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب القدر، باب ما جاء لا يرد القضاء إلا الدعاء، الحديث: ٢١٤٦، ج٤ ص٥٥.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢٢٤٧٦، ج٨، ص ٣٣٠.

2 "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير...إلخ، لا يرد القدر إلا الدعاء، الحديث:١٨٥٦، ج٢، ص١٦٢.

3 या'नी जो होना है उसे लिख कर क़लम सूख गया, मुराद येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिखे में तब्दीली मुम्किन नहीं, जो लिख दिया गया वोह हो कर रहेगा।

"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢٨٠٤، ج١، ص٦٥٩.

और **मुअ़ल्लक़** कि ﴿وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ﴾[1] इस का निशान है, मुफ़स्सिरीन इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : बा'ज़ अस्बाब से उ़म्र में कमी ज़ियादती होती है और वोह भी लौहे़ मह़फ़ूज़ में लिखी है।[2]

पस क़ज़ा में **तग़य्युर** (तब्दीली) क़ज़ा के मुत़ाबिक़ रवा है, म-सलन : मुक़द्दर है कि ज़ैद की उ़म्र साठ60 बरस की होगी और जो ह़ज करेगा अस्सी80 बरस ज़िन्दा रहेगा।

तम्बीह :

قال الرضاء : येह क़ज़ा में **तग़य्युर** नहीं **मुक़्ज़ा** बिह का तग़य्युर है और **मुक़्ज़ा** की भी ज़ात बदली न (कि) इस के **मुक़्ज़ा** होने की ह़ैसिय्यत उसे इस ए'तिबार से जो नज़र आ़म्मए इ़बाद में ज़ाहिर होता है अह़ादीस व कलिमाते उ़-लमाए किराम में रद व **तग़य्युरे** क़ज़ा फ़रमाया है,[3] इस का

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और जिस बड़ी उ़म्र वाले को उ़म्र दी जाए या जिस किसी की उ़म्र कम रखी जाए।" (پ٢٢، فاطر: ١١)

2 "روح المعاني"، پ٢٢، فاطر: تحت الآية: ١١، الجزء: ٢٢، ص٤٧٩-٤٨٠

3 मुक़्ज़ा बिह से मुराद यहां वोह शै है जो तक़्दीर में लिखी गई हो जैसा कि अभी मिसाल गुज़री कि "मुक़द्दर है कि ज़ैद की उ़म्र साठ बरस की होगी और अगर ह़ज करेगा तो अस्सी बरस ज़िन्दा रहेगा।" तो इस मिसाल में ज़ैद की उ़म्र मुक़्ज़ा बिह है जो कि साठ से बदल कर अस्सी तक बढ़ा दी जाएगी।

येह तक़्दीर में तब्दीली नहीं बल्कि जो चीज़ तक़्दीर में मुक़द्दर की गई है इस की तब्दीली है चुनान्चे मुक़्ज़ा बदला या'नी जो चीज़ मुक़द्दर की गई थी वोह बदली न कि ख़ुद तक़्दीर ही अपनी ह़ैसिय्यत बदल गई या'नी आ़म लफ़्ज़ों में यूं कह सकते हैं कि इस बन्दे के ह़क़ में येह दो बातें (60 और 80) तै़ शुदा थीं जो इस के फ़े'ल व अ़मल से मु-तअ़य्यन हो गई।

बयान अ़न्क़रीब आता है, पहले येह जानिये कि यहां बा'ज़ अश्ख़ास को क़ौले हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में कि "सब औलिया क़ज़ाए **मुअ़ल्लक़** को रोकते हैं और मैं क़ज़ाए **मुबरम** को रद फ़रमाता हूं" أو كما قال رضي الله عنه (या इसी त़रह़ का इर्शाद जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया) शुबा गुज़रता है कि क़ज़ाए **मुबरम** क्यूंकर क़ाबिले रद हो सकती है !

أقول : शायद इन साहि़बों को ह़दीसे **अबिश्शैख़ फ़ी "किताबुस्सवाब" अ़न अनस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ न पहुंची कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((أكثر من الدعاء فإنّ الدعاء يردّ القضاء المبرم))

"दुआ़ ब कसरत मांग कि दुआ़ क़ज़ाए **मुबरम** को रद कर देती है।"(1)

حديث ابن عساكر عن نمير بن أوس مرسلًا(2) **وحديث الديلمي عن أبي موسى رضي الله تعالى عنه موصولًا** कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((الدعاء جند من أجناد الله مجنّد يردّ القضاء بعد أن يبرم)).

"दुआ़ अल्लाह तआ़ला के लश्करों से एक लाम बांधा लश्कर है (या'नी हर त़रह़ के जंगी सामान से लेस लश्कर है) कि क़ज़ा को रद कर देता है बा'द **मुबरम** होने के।"(3)

---

1 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الباب الثامن في الدعاء، الحديث:٣١١٧، ج١، ص٢٨.

2 **ह़दीसे मुरसल की ता'रीफ़ :** जिस ह़दीस की सनद के अख़ीर से रावी को साक़ित़ कर दिया जाए, म-सलन ताबेई़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से रिवायत करे और सह़ाबी को छोड़ दे। ("تيسير مصطلح الحديث"، ص٧٠)

3 "تأريخ دمشق"="ابن عساكر"، ج٢٢، ص١٥٨.

तह्क़ीक़ इस मक़ाम की येह है कि क़ज़ाए **मुअ़ल्लक़** दो[2] क़िस्म है :

एक **मुअ़ल्लक़ महज़** जिस की ता'लीक़ का ज़िक्र लौहे़ महूव व इस्बात या सुहुफ़े मलाएका में भी है, आ़म औलिया जिन के उ़लूम इस से मु-तजाविज़ नहीं होते ऐसी क़ज़ा के दफ़्अ़ पर दुआ़ की हिम्मत फ़रमाते हैं कि उन्हें ब वज्हे ज़िक्रे ता'लीक़ इस का क़ाबिले दफ़्अ़ होना मा'लूम होता है।

दूसरी **मुअ़ल्लक़ शबीह बिल मुबरम** कि इ़ल्मे इलाही में तो **मुअ़ल्लक़** है मगर लौहे़ महूव व इस्बात व दफ़ातिरे मलाएका में इस की ता'लीक़ मज़्कूर नहीं, वोह इन मलाएका और आ़म औलिया के इ़ल्म में **मुबरम** होती है, मगर ख़्वास इ़बादुल्लाह जिन्हें इम्तियाजे़ ख़ास है, **ब इल्हामे** रब्बानी बल्कि ब रूयते मक़ामे अरफ़अ़ ह़ज़रत **मख़्दअ़**(1) इस की ता'लीक़े वाक़ेई पर **मुत्तलेअ़** होते हैं और इस के दफ़्अ़ में दुआ़ का इज़्न पाते हैं, और या आ़म मुअमिनीन जिन्हें अल्वाह़ व सह़ाइफ़ पर इत्तिलाअ़ नहीं ह़स्बे आ़दत दुआ़ करते हैं और वोह ब वज्हे इस ता'लीक़ के जो इ़ल्मे इलाही में थी मुन्दफ़ेअ़ हो जाती है, येह वोह क़ज़ाए **मुबरम** है जो सालेहे़ रद (या'नी टल सकती) है, और इसी की निस्बत हु़ज़ूरे ग़ौसिय्यत का इर्शादे अमजद।

---

(1) "**बह्जतुल असरार**" शरीफ़ में हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल कि "मैं लोगों के ह़ालात से अ़लाहि़दा हूं मैं उन की अ़क़्लों से अ़लाहि़दा हूं तमाम मर्दाने खु़दा जब तक़्दीर तक पहुंचते हैं तो रुक जाते हैं मगर मैं वहां तक पहुंचता हूं और मेरे लिये एक खिड़की खुल जाती है उस में दाखि़ल होता हूं और तक़्दीराते ह़क़ से ह़क़ के साथ ह़क़ के लिये मुना-ज़-अ़त करता हूं" इसी मक़ाम को **मख़्दअ़** कहते हैं।

क़सीदए ग़ौसिया में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं :

أنا الحَسَنِيُّ والمخدع مَقامِي

وأَقدامِي على عُنُق الرِّجال

"मैं ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की औलाद से हूं और बड़ा मर्तबा है मेरा, और मेरे क़दम तमाम औलिया की गरदनों पर हैं।"

व लिहाज़ा फ़रमाते हैं : "तमाम औलिया मक़ामे क़द्र पर पहुंच कर रुक जाते हैं सिवा मेरे, कि जब मैं वहां पहुंचा मेरे लिये उस में एक रोज़न (रोशन दान) खोला गया जिस से दाख़िल हो कर

"نَازَعْتُ أَقْدَارَ الْحَقِّ بِالْحَقِّ لِلْحَقِّ ۔"

"मैं ने तक़्दीराते ह़क़ से ह़क़ के साथ ह़क़ के लिये मुना-ज़-अ़त की।"

मर्द वोह है जो मुना-ज़-अ़त करे न वोह कि तस्लीम।

رواه الإمام الأجل سيدي أبو الحسن علي نور الدين اللخمي قُدِّسَ سِرُّهُ في "البهجة" المباركة بسندين صحيحين ثلاثيين عن الإمام الحافظ عبد الغني المقدسي والإمام الحافظ ابن الأخضر رحمهما الله تعالٰى سمعا سيدنا الغوث الأعظم رضي الله عنه وأرضاه وحشرنا في زمرة من تبعه ووالاه، آمين.(1)

नज़ीर इस की अह़कामे ज़ाहिरिय्या शरइय्या हैं वोह भी तीन[3] त़रह़ आते हैं :

एक **मुअ़ल्लक़ ज़ाहिरुत्ता'लीक़** कि हुक्म के साथ ही बयान

---

(1) इस को जलीलुल क़द्र इमाम, हमारे सरदार अबुल ह़सन अ़ली नूरुद्दीन अल्लख़्मी ने अपनी किताब "बह्जतुल असरार" शरीफ़ में दो सह़ीह़ स-नदों के साथ जो कि तीन वासित़ों से हैं, रिवायत किया, एक सनद इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी अल मक़्दिसी और दूसरी इमाम ह़ाफ़िज़ इब्नुल अख़्ज़र عَلَيْهِمَا الرَّحْمَة से उन्हों ने बिला वासित़ा ग़ौसे पाक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इस बात की समाअ़त की, अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हो और उन्हें हम से राज़ी करे और हमें उन के मुत्तबिईन और उन की त़रफ़ रुजूअ़ करने वालों में उठाए। आमीन !

"بهجة الأسرار"، ذكر كلمات أخبربها عن نفسه محدثا بنعمة ربك، ص ٥٢

फ़रमा दिया कि हमेशा को नहीं। एक मुद्दते ख़ास के लिये है كقوله تعالى :
﴿حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا﴾(1)

दूसरे वोह कि इ़ल्मे इलाही में तो उन के लिये एक मुद्दत है मगर बयान न फ़रमाई गई जब वोह मुद्दत ख़त्म होती और दूसरा हुक्म आता है ब ज़ाहिर मा'लूम होता है कि हुक्मे अव्वल बदल गया ह़ालां कि हरगिज़ न बदला (2)﴿لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ﴾ बल्कि उस की मुद्दत यहीं तक थी, गो हमें ख़बर न थी, व लिहाज़ा हमारे उ़-लमा फ़रमाते हैं : नस्ख़ तब्दीले हुक्म नहीं बल्कि बयाने मुद्दत का नाम है।(3)

तीसरे वोह कि इ़ल्मे इलाही में हमेशा के लिये हैं, जैसे : नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत, ज़िना की ह़ुरमत, येह अस्लन सालेहे़ नस्ख़ नहीं येह क़ज़ाएं भी ब सूरते अम्र होती हैं। म-सलन : फ़ुलां वक़्त फ़ुलां की रूह़ क़ब्ज़ करो, फ़ुलां रोज़ फ़ुलां को येह दो येह छीन लो, न ब सीग़ए ख़बर(4), कि ख़बरे इलाही में तख़ल्लुफ़ मुह़ाल बिज़्ज़ात है : ﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾(5) وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (अल्लाह तआ़ला ख़ूब तर जानता है)﴿

---

1. तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उन की कुछ राह निकाले।" (پ٤، النسآء: ١٥)
2. तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं।" (پ١١، يونس: ٦٤)
3. "التفسيرات الأحمدية"، في جواز نسخ القرآن، ص١٥
4. "**ख़बर** उस कलाम को कहते हैं जिस में सिद्क़ और किज़्ब दोनों का एह़तिमाल हो।"
5. तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में, उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं और वोही है सुनता जानता।" (پ٨، الأنعام: ١١٥)

सुवाले चहारुम (4) : दुआ मक़ामे रिज़ा व तस्लीम के ख़िलाफ़ है, जब बन्दा अपने मुक़द्दर पर राज़ी हो गया तो दुआ से क्या काम रहा ?

जवाब : दुआ ख़िलाफ़े रिज़ा नहीं, हो सकता है कि हुसूले मुद्दआ या नजात अज़ बला दुआ पर मुक़द्दर हो ।

قال الرضاء : येह सुवाल, सुवाले दुवुम का ग़ैर है । वहां बर बिनाए तफ़्वीज़ सुवाल था यहां बर बिनाए रिज़ा व तस्लीम और तफ़्वीज़ व रिज़ा में फ़र्क़ बय्यिन (ज़ाहिर) है, रिज़ा का मर्तबा तफ़्वीज़ के द-रजे से आ'ला है ।

तफ़्वीज़ येह कि अपने काम दूसरे के सिपुर्द कीजिये अब चाहे वोह सियाह व सपेद कुछ करे, अस्लन दख़्ल न दीजिये, आम अज़ीं कि अपने दिल को भाए या ना पसन्द आए, जैसे मुद्दई व मुद्दआ अ़लैह किसी को अपने मुआ-मले का ह़कम (सालिसी या'नी फ़ैसला करने वाला) बना देते हैं जी तो हर एक का येही चाहता है कि मेरे मुवाफ़िक़ करे, फिर उस के सिपुर्द कर देते हैं कि जो तेरी समझ में आए कर दे ।

और **रिज़ा व तस्लीम** येह कि अपना इरादा उस के इरादे में फ़ना हो जाए जो कुछ वोह चाहे अपना दिल भी उसी को पसन्द करे और उस के ख़िलाफ़ की ख़्वाहिश न रखे व लिहाज़ा क़ुरआने अ़ज़ीम में : ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتّٰى يُحَكِّمُوكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾ पर इक्तिफ़ा न फ़रमाया "या'नी क़सम तेरे रब की वोह मुसल्मान न होंगे जब तक तुझे ह़कम न बनाएं उस झगड़े में जो इन के आपस में हो" कि फ़क़त इस क़दर तो हर हुक्म ह़कम के साथ होता है, नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर इस के साथ येह भी ज़रूर कि ﴿ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾ "या'नी फिर न पाएं अपने दिलों में अस्लन तंगी तेरे हुक्म से और तस्लीम कर लें मान कर ।" (پ٥، النسآء: ٦٥)

अब तस्लीम व तफ़्वीज़ का फ़र्क़ और दोनों सुवालों में मुग़ा–यरत (अ़लाहि़–दगी) खुल गई और जवाब कि ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इर्शाद फ़रमाया, इस की तौज़ीह़ येह है कि अक्सर ह़बसे मुद्दआ़ या इन्ज़ाले बला (मुराद बर न आना या कोई बला व मुसीबत का उतरना) इस लिये होता है कि बन्दे हमारे हुज़ूर इल्हाह़ व ज़ारी करें और आ़जिज़ाना बे कसाना गिड़गिड़ाते मुंह और थर–थराते हाथ हमारी बारगाह में लाएं, वोह खुद फ़रमाता है :

﴿فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا﴾ "तो क्यूं न हुवा कि जब उन पर हमारी त़रफ़ से सख़्ती आई थी गिड़गिड़ाए होते" (پ۷، الأنعام: ٤٣)

और वारिद कि फ़रमाता है :

((مَنْ لَا يَدْعُوْنِي أَغْضَبُ عَلَيْهِ)) "जो मुझ से दुआ़ न करेगा, मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा"(1) और गुज़रा कि कभी अ़त़ाए मुराद में देर इस लिये करते हैं कि हमारे हुज़ूर ज़ियादा गिड़गिड़ाए, तो साबित हुवा कि इल्हाह़ व ज़ारी में मसरूफ़ होना ऐ़न रिज़ाए मौला है न कि इस के ख़िलाफ़

بلبلے برگ گلے خوش رنگ در منقار داشت
واندراں برگ ونوا خوش نالہائے زار داشت
گفتمش در عین وصل ایں نالہ وفریاد چیست
گفت مارا جلوۂ معشوق درایں کار داشت

فافهم، والله سبحانه وتعالیٰ أعلم.﴾

---

(1) "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الباب الثامن، الحديث: ٣١٢٤، الجزء الثاني، ج١، ص٢٩.

सुवाले पन्जुम (5) : सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं : जब तक बन्दा अपनी ख़्वाहिश से दस्त बरदार नहीं होता गर्द इस दौलत की उस के दामन को नहीं छूती। अगर एक ज़र्रा मुराद व आरज़ू का बाक़ी रहे इस दश्ते ख़ूंख़ार (ख़त़रनाक मैदान) में क़दम न रख सके।

जवाब : हुक्म तसव्वुफ़ का मानिन्दे हुक्मे फ़िक़्ह के आ़म नहीं बल्कि ब इख़्तिलाफ़े अह़वाल व मवाजीद व अज़्वाक़ (बल्कि तसव्वुफ़ का हुक्म ज़ौक़ व शौक़ और ह़ालत के मुख़्तलिफ़ होने से) मुख़्तलिफ़ होता है इसी लिये हुक्म फ़िक़्ह का सूफ़ी पर जारी है और इन्कार सूफ़ी का फ़िक़्ह पर सह़ीह़ नहीं, सूफ़ी को रुजूअ़ ब फ़िक़्ह ज़रूर है और फ़क़ीह को रुजूअ़ ब तसव्वुफ़ फ़र्ज़ नहीं।[1]

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो फ़िक़्ह ह़ासिल करे और तसव्वुफ़ से वाक़िफ़ न हो मु-तकल्लिफ़ (या'नी दुश्वारी में पड़ने वाला) है और जो तसव्वुफ़ ह़ासिल करे और इ़ल्मे फ़िक़्ह से ग़ाफ़िल हो ज़िन्दीक़[(1)] (बे दीन) है और जो दोनों जम्अ़ करे मुह़क़्क़िक़ है।"[(2)]

तसव्वुफ़ हर चन्द बरतर व अफ़्ज़ल है मगर फ़िक़्ह अस्लम व अश्मल है[(3)] इसी वासिते़ कहते हैं : बाति़न ज़ाहिर पर मुक़द्दम न किया जाए, न तह़सील में, न अह़काम की ता'मील में कि तह़सीले फ़िक़्ह बा'द **अज़् तअ़म्मुक़ फ़ित्तसव्वुफ़** मुश्किल है (या'नी तसव्वुफ़

---

1. या'नी अह़काम में। ۱۲منہ قُدِّسَ سِرُّہٗ

(1) **ज़िन्दीक़ :** المجوس يلقّبون بالزنادقة، لأنّ الكتاب الذي زعم "زرادشت" أنّه نزل عليه من عند الله مسمى بالزند والمنسوب إليه يسمى زندي.ثمّ عرب فقيل زنديق.

("التفسير الكبير" للرازي، الأنعام، تحت الآية: ١٠٠، ج٥، ص٨٩.)

(2) "مرقاة المفاتيح"، كتاب العلم، الفصل الثالث، تحت الحديث: ٢٧٠، ج١، ص٥٢٦.

(3) या'नी तसव्वुफ़ अगर्चे अफ़्ज़लो आ'ला है लेकिन फ़िक़्ह उ़लूम की तमाम राहों में सब से ज़ियादा सलामत और अक्सर उ़लूम को अपने इह़ाते़ में लिये हुए है।

में ग़ौरो ख़ौज़ करने के बा'द फ़िक़्ह सीखना मुश्किल है), بخلاف العکس ।
इसी लिये कहते हैं : کُنْ فقیھاً صوفیاً ولا تکن صوفیاً فقیھاً.[1] पस येह हुक्म (या'नी दुआ से दस्त बरदारी का हुक्म) साहिबे मक़ामे फ़ना के लिये मख़्सूस है, जिसे येह मक़ाम हासिल उस के हक़ में तर्के दुआ अफ़्ज़ल ।

قال الرضاء : बल्कि इस से सुदूरे दुआ मुश्किल ।

इस तक़रीर पर एक **ए'तिराज़** वारिद होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पेशवाए मुरीदान व सरदाराने मुरादां हैं, कोई वली व नबी उन से आगे क़दम नहीं बढ़ा सकता ।

قال الرضاء : या'नी उन की बांधी हुई हदों से तजावुज़ नहीं कर सकता कि सब उन के ज़ेरे हुक्म और उन के इत्तिबाअ़ पर मामूर हैं ।

ख़ुदाए तआला उन को हुक्म देता है : ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾[2] ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾[3] ﴿قُلْ رَّبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا﴾[4] ﴿قُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ﴾[5] फिर किसी का क्या रुत्बा है कि अपनी ख़्वास्त व मुराद से इन्क़िताए कुल्ली करे और दुआ और सुवाल को छोड़ दे ।

---

1. फ़क़ीह सूफ़ी बनो सूफ़ी फ़क़ीह न बनो या'नी पहले फ़िक़्ह सीखो फिर तसव्वुफ़ का इल्म हासिल करो और इस के बर अ़क्स न करो ।
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह का पैदा करने वाला है ।" (پ۳۰، الفلق: ۱)
3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब ।" (پ۳۰، الناس: ۱)
4. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब ! मुझे इल्म ज़ियादा दे ।" (پ۱٦، طٰہٰ: ۱۱٤)
5. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब ! बख़्श दे और रह़्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़्म करने वाला ।" (پ۱۸، المؤمنون: ۱۱۸)

उ़-लमा फ़रमाते हैं : जो शख़्स नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई बात निकाले उस के मुंह पर मारी जाए।[1]

قال الرضاء : बढ़ना येह है कि बे इज़्ने हुज़ूर इक़्दाम करे (या'नी जिस बात की सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत न फ़रमाई हो वोह काम करे) और येह न होगा मगर मुख़ा-लफ़त में, वरना इर्शादे अक़्दस हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم :

((من سنّ في الإسلام سنة حسنة كان له أجرها وأجر من عمل بها إلى يوم القيامة لا ينقص من أجورهم شيئاً))[2]

''जो इस्लाम में अच्छी राह पैदा करे इस का और क़ियामत तक उस पर अ़मल करने वालों का सवाब उसे मिलता है और उन आ़मिलों के सवाब में कुछ कमी न हो।'' ख़ुद हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का इज़्ने आ़म है। सय्यिदी अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी ना-बुलुसी قُدِّسَ سِرُّہُ الْقُدْسِی ''ह़दीक़ए नदिय्यह शर्हे त़रीक़ए मुह़म्मदिय्यह'' में फ़रमाते हैं :

''أنّ النبي صلى الله عليه وسلم قال: ((من سنّ سنة حسنة)) فسمى المبتدع للحسن مستناً فأدخله النبي صلى الله عليه وسلم في السُّنّة وضابطة السُّنّة ما قرّره وفعَله النبيُّ صلى الله عليه وسلم وداوَمَ عليه ومن جملة قوله فعلُه صلى الله عليه وسلم؛ لأنّه تقرير وإذن في ابتداع السنة الحسنة إلى يوم الدين وإنّه مأذون له بالشرع فيهاومأجور عليه مع العاملين لها بدوامها.

---

1. "مرقاة المفاتيح"، كتاب الإيمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنّة، الفصل الأوّل، تحت الحديث: ١٤٠، ج١، ص٣٦٦.
2. "صحيح مسلم"، باب الحث على الصدقة ولو بشقّ تمرة... إلخ، الحديث: ١٠١٧، ص٥٠٨. و"المعجم الكبير"، الحديث: ٢٣٧٢، ج٢، ص٣٢٩.

"या'नी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ((من سنّ في الإسلام سنة حسنة)) : फ़रमा कर बिद्अ़ते ह़-सना को सुन्नत में दाख़िल फ़रमा लिया और इस के ईजाद करने वाले को सुन्नी क़रार दिया कि सुन्नत का ज़ाबिता येह है कि जिस बात को नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुक़र्रर रखा या जो काम हुज़ूर ने मुदा-वमत व इज़्हार के साथ किया और हुज़ूर का वोह इर्शाद भी हुज़ूर का फ़े'ल है कि इस में क़ियामत तक बिद्अ़ते ह़-सना निकालने का इज़्न और इसे बर क़रार रखना और बता देना है कि इसे शरअ़न इस की इजाज़त है और क़ियामत तक जो उस पर अ़मल करें उन सब के साथ अज्रो सवाब है।"》(1)

एक शख़्स ने किसी फ़क़ीर से बिश्र ह़ाफ़ी का ह़ाल बयान किया कि उन्हों ने जूता पहनना छोड़ दिया था कि ज़मीन फ़र्शे ख़ुदा है वोह फ़रमाता है : ﴿وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ﴾ "ज़मीन को हम ने फ़र्श किया तो क्या अच्छा बिछाने वाले हैं हम।" (پ۲۷، الذاريات: ٤٨) जब कि हम अमीरों और बादशाहों के फ़र्श पर जूता पहन कर नहीं जा सकते ख़ुदाए तआ़ला के फ़र्श पर जूता पहन कर किस त़रह़ फिरें। फ़क़ीर ने कहा :

ऐ अ़ज़ीज़ ! जो शख़्स नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई अम्र इख़्तियार करे अपने काम में ख़जालत (शरमिन्दगी) उठाए। बिश्रे ह़ाफ़ी ने अगर येह समझ कर जूता पहनना छोड़ा, पाख़ाने पेशाब के लिये किस जगह को मुक़र्रर किया ! ? आयत के येह मा'ना नहीं बल्कि येह मुराद है कि जिस बादशाह के फ़र्श पर जूता पहन कर फिरें या पाख़ाना पेशाब करें, ख़राब व नापाक हो जाए, ﴿وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ﴾ "ज़मीन को हम ने फ़र्श किया पस क्या अच्छे हैं हम बिछाने वाले" (پ۲۷، الذاريات: ٤٨) कि हमारे फ़र्श पर तमाम जहान चलता फिरता पाख़ाना पेशाब करता है मगर ख़राब नहीं होता। जिस वक़्त नजासत ख़ुश्क हो कर ज़ाइल होती है बे धोए उस पर नमाज़ जाइज़ होती है।

(1) "الحديقة الندية"، ثم اعلم أيها المكلف أنّ فعل البدعة السيئة... إلخ، ج۱، ص۱٤۷

قال الرضاء : इस ह़िकायत के ईराद से मक़्सूद ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ (या'नी मुसन्निफ़ का यहां इस ह़िकायत को ज़िक्र करने का मक़्सद) सिर्फ़ इस क़दर कि जो दक़ीक़ा सुन्नत ने ना मो'तबर रखा दूसरा उस का ए'तिबार नहीं कर सकता। व लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब येह ख़याल आया कि पाख़ाने जाने में नजासत की मख्खियां कपड़ों पर बैठती है, नमाज़ के लिये लिबास जुदागाना चाहिये फ़ौरन इस से रुजूअ़ फ़रमाई कि सह़ाबए किराम, अइम्मए दीन थे जब उन्हों ने येह अम्र रवा रखा दूसरा कौन इसे मा'यूब कह सकता है ![1]

रहा इन वलिय्युल्लाह का ए'तिराज़ वोह इस वजह पर मु-तवज्जेह है जो बयान करने वाले ने ज़िक्र की, न مَعَاذَاللہ ह़ज़रते ह़ाफ़ी قُدِّسَ سِرُّہُ الصَّافِی की बरह्ना पाई पर, उन की बरह्ना पाई की वजह वोह थी जो ख़ुद उन्हों ने बयान फ़रमाई, और इमाम याफ़ेई ने ''रौज़ुर्रयाह़ीन'' में ज़िक्र की, कि वोह अमीर कबीर थे, रईसाना ऐ़शो इ़शरत में बसर करते एक दिन अपनी मजलिसे बे ग़मी में थे कि दरवाज़े पर किसी फ़क़ीर ने आवाज़ दी कनीज़ गई,

फ़क़ीर ने पूछा : तेरा आक़ा क्या करता है ?

उस ने बयान किया,

कहा : तेरा आक़ा बन्दा है या आज़ाद ?

कहा : आज़ाद,

कहा : सच कहती है, बन्दा होता तो बन्दगी में होता,

---

(1) "ردّ المحتار"، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٨١.

و"حاشية الطحطاوي على "المراقي"، كتاب الطهارة، فصل فيما يجوز به الاستنجاء، ص٥٤.

و"البريقة المحمودية"، ج٦، ص٢٦٤.

येह आवाज़ ह़ज़रते बिश्र के गोशे मुबारक में पड़ी फ़ौरन ह़ाल मु-तग़य्यर हुवा, बे ताबाना नंगे पाउं दौड़े, फ़क़ीर को न पाया, दुन्या छोड़ी, मह़ब्बते मौला के रंग में रंगे गए मगर उस दिन से जूता न पहना, अगर कोई पूछता फ़रमाते : मेरे मौला ने मुझ से इसी ह़ालत पर सुल्ह़ की[1], या'नी जिस वक़्त जज़्बे इलाही ने मुझे अपनी त़रफ़ खींचा मैं उस वक़्त नंगे पाउं ही था, लिहाज़ा इसी ह़ाल पर रहना चाहता हूं।

अब उन की क़द्रे बरह्ना पाई देखिये जब तक ज़िन्दा रहे तमाम जानवरों ने रास्तों में लीद, गोबर, पेशाब करना छोड़ दिया कि ह़ाफ़ी के पाउं ख़राब न हों। एक दिन किसी ने बाज़ार में लीद पड़ी देखी कहा : ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ﴾[2] पूछा गया : क्या है ? कहा : ह़ाफ़ी ने इन्तिक़ाल किया, तह़क़ीक़ के बा'द येही अम्र निकला।

رضي الله تعالٰى عن أولياءه ونفعنا ببركاتهم في الدنيا والدين، آمين[3].

जवाब इस शुबे का तीन3 वजह से है :

पहली वजह : पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ल्क़ की हिदायत व रहनुमाई के लिये तशरीफ़ लाए बा'ज़ अवक़ात हुज़ूर औला को छोड़ कर अदना को इख़्तियार फ़रमाते ताकि लोग इस के जवाज़ से वाक़िफ़ हों येह मफ़्ज़ूल उन के लिये हज़ार अफ़्ज़ल और येह अदना लाख आ'ला से औला था।[4]

---

1 "روض الرياحين"، الفصل الثاني فى إثبات كرامات الأولياء، ص٢١٧-٢١٨

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।" (پ٢، البقرة:١٥٦)

3 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया से राज़ी हो और हमें इन मुक़द्दस ह़ज़रात की ब-र-कतों से दीनो दुन्या में नफ़अ़ पहुंचाए आमीन।

4 या'नी वोह अ़मल ब ज़ाहिर कम अफ़्ज़ल मा'लूम होता है वरना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जिस अ़मल को इख़्तियार फ़रमाया वोही अफ़्ज़लो आ'ला है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का येह फ़े'ल भी इसी क़िस्म से है ता (कि) लोग समझें कि दुआ व सुवाल हमारे लिये है तर्के ख़्वास्त ख़वास के लिये ख़ास है।

قال الرضاء : हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم शारेअ़ हैं हुज़ूर का फ़े'ल आ़म उम्मत की इक्तिदा के लिये है हुज़ूर अगर अपने मक़ामे आ़ली से आ़म्मए ख़ल्क़ के लिये **तनज़्ज़ुल** न फ़रमाएं, इत्तिबाए़ सुन्नत तमाम जहान को मुहा़ल हो जाए, व लिहाज़ा तमाम रात शब बेदारी और र-मज़ान मुबारक के सिवा पूरे महीने के रोज़े कभी हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से मन्क़ूल नहीं, शब को क़ियाम भी फ़रमाते और आराम भी, नफ़्ली रोज़े भी रखते और इफ़्तार भी (या'नी : कभी रोज़े न भी रखते) एक बार इस्तिन्जा फ़रमाया फ़ारूक़े आ'ज़म पानी ह़ाज़िर लाए इर्शाद हुवा : येह क्या है ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर के वुज़ू को पानी, फ़रमाया : मुझे हुक्म न दिया गया कि हर पेशाब के बा'द वुज़ू फ़रमाऊं : ((لكانت سُنّة ولو فعلتُ)) "और मैं ऐसा करता तो सुन्नत हो जाता।"(1)

इस से येह साबित नहीं होता कि हर वक़्त बा वुज़ू रहना अफ़्ज़ल नहीं, या अकाबिर बन्दगाने ख़ुदा का तमाम रात इ़बादत में गुज़ारना, अय्यामे मुह़र्रमा(2) के सिवा नफ़्ली रोज़े रखना, ख़िलाफ़े सुन्नत है येह मक़ासिद शारेअ़ से मह़ज़ ना वाक़िफ़ी व जहालत है।

(1) "سنن أبي داود"، كتاب الطهارة، باب في الاستبراء، الحديث: ٤٢، ج١، ص٤٩. و"سنن ابن ماجه"، كتاب الطهارة، باب من بال ولم يمس ماء، الحديث: ٣٢٧، ج١، ص٢٠٧-٢٠٨.

(2) वोह अय्याम कि जिन में रोज़ा रखना मन्अ़ है। वोह साल के पांच दिन हैं : चार दिन ई़दुल अज़्हा के (10 से 13 ज़िल हिज्जा) और एक दिन ई़दुल फ़ित्र का।

दूसरी वजह : इन्सान हर वक़्त एक मक़ाम पर नहीं रहता, वरना कारख़ानए हिदायत व नसीहत में फ़ुतूर (या'नी ख़लल) वाक़ेअ़ हो। एक रोज़ ह़ज़रते ह़न्ज़ला, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कहने लगे : ह़न्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया, सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ाल पूछा, कहा : जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में रहता हूं अपने दिल में ज़ौक़ व शौक़ पाता हूं जब मजलिसे अक़्दस से जुदा हुवा और अहलो इ़याल से मिला, वोह ज़ौक़ व शौक़ नहीं रहता फ़रमाया : अपना भी येही ह़ाल है चलो हुज़ूर से येह ह़ाल अ़र्ज़ करें, अ़र्ज़ की, फ़रमाया : "आदमी एक ह़ाल पर नहीं रहता, अगर तुम एक ह़ाल पर रहो तो कपड़े फाड़ कर निकल जाओ और औ़रतों और बच्चों से कनारा करो और फ़िरिश्ते तुम से मुसा-फ़ह़ा करें।"(1)

मन्क़ूल है : किसी ने ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा : आप ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की बूए पैराहन (क़मीस की ख़ुश्बू) मिस्र से सूंघी और कन्आ़न के कूंएं में उन की ख़बर न ली, फ़रमाया : हमारा ह़ाल यक्सां नहीं रहता।

گہے بر طارمِ اعلٰی نشینیم

گہے بر پُشت پائے خود نہ بینیم (2)

पस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का बा'ज़ अह़वाल में दुआ़ फ़रमाना बा'ज़ दीगर अह़वाल में औ-लविय्यते तर्क के

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب التوبة، باب فضل دوام الذكر والفكر في أمور الآخرة، الحديث: ٢٧٥٠، ص١١٧٠-١١٧١.

و"سنن الترمذي"، كتاب صفة القيامة، الحديث: ٢٥٢٢، ج٤، ص٢٣٠-٢٣١.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١٧٦٢١، ج٦، ص١٩٠.

2 "گلستانِ سعدی"، باب دوم در اخلاق درویشان، ص۵۸-۵۹۔

मुनाफ़ी नहीं ।[1]

इसी वासिते कहते हैं : बा'ज़ वक़्त दुआ और बा'ज़ वक़्त इस का तर्क औला है और सिफ़त इस की ब इशारए क़ल्ब उसी वक़्त मा'लूम होती है ।

قال الرضاء : मगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तवारुदे अह़वाल ह़ालाते अहले तल्वीन[2] से पाक व मुनज़्ज़ा हैं, वोह सरदाराने अस्ह़ाबे तम्कीन हैं और अह़वाले मु-तआ़-क़बा उधर की तजल्लियाते गूना गून के आईना हैं, वहां जो कुछ है अफ़्ज़ल व अक्मल व अह़सन व अज्मल अह़वाल है ख़ुसूसन सय्यिदुल अम्बिया عليه وعليهم أفضل الصلاة والثناء

قال تعالٰی: ﴿وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى﴾

"जो आन आती है तेरे लिये गुज़श्ता आन से अफ़्ज़लो आ'ला है ।" (پ٣٠، الضحٰی: ٤) **﴿فاحفظ واستقم﴾**[3]

---

❶ या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़क़ में अफ़्ज़ल व औला तो तर्के दुआ है इस के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का बा'ज़ अह़वाल में दुआ फ़रमाना इस अफ़्ज़ल व औला के मुनाफ़ी नहीं इस लिये कि इन का हर फ़े'ल उम्मत की ता'लीम के लिये है ।

❷ **अहले तल्वीन** से मुराद वोह सालिक है जो एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल या एक वस्फ़ से दूसरे वस्फ़ की जानिब मुन्तक़िल हो इसे सूफ़ियाए किराम की इस्तिलाह़ में अहले तल्वीन कहा जाता है येह अरबाबे अह़वाल की सिफ़त है ।

अहले तम्कीन : अहले ह़क़ीक़त की सिफ़त जो मक़ामे इस्तिक़ामत व सबात है, येह अहले ह़क़ाइक़ की सिफ़त है । (येह तल्वीन से आ'ला है) । ("الرسالة القشيرية"، ص١١٤)

❸ इसे याद कर लीजिये और इसी पर इस्तिक़ामत के साथ जमे रहिये ।

तीसरी वजह : कि असह़ह़ व अफ़्ज़ल वुजूह है[1] येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मक़ामे बक़ा कि इस मक़ामे फ़ना से हज़ारों द-रजे अर-फ़ओ आ'ला है, ह़ासिल था, इस मक़ाम में दुआ़ व सुवाल व تَـوَجُّہ بِخَلْق وتَمَيُّز بَيْنَ الصَّلَاح والفَسَاد (या'नी मख़्लूक़ की त़रफ़ तवज्जोह और भलाई और बुराई के माबैन फ़र्क़ करना) जाइज़ बल्कि लाज़िम है और शफ़ाअ़त व उ़ज़्र ख़्वाही अपने मु-तअ़ल्लिक़ों और मु-तवस्सिलों की त़रफ़ से वाजिब।

قال الرضاء: قال اللّٰہ تعالٰی: ﴿وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِکَ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ﴾[2]۔

हु़ज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया :

فالرجل هو النازع للقدر لا الموافق له كما تقدم.[3]

आख़िर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को न सुना, कि अपने ख़लीले जलील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की निस्बत क्या फ़रमाता है :

﴿فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ

---

1. या'नी मज़्कूरा ए'तिराज़ का जवाब मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने तीन3 त़रह़ से दिया इन में सब से अफ़्ज़ल व सह़ीह़ तर जवाब येह है।
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और ऐ मह़बूब ! अपने ख़ासों और आ़म मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो।" (پ۲۶، محمد: ۱۹)
3. मर्द वोह है जो तक़्दीराते ह़क़ में ह़क़ ही की इजाज़त से उस के हु़ज़ूर मुना-ज़-अ़त करे न कि तस्लीम। जैसा कि सफ़्ह़ा 186 पर गुज़रा।

لُوْطٍ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَحَلِیْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِیْبٌ ﴿﴾ (1)

जवाबे सानी : इस बयान से अ़-दमे जवाज़े दुआ़ व सुवाल नहीं समझा जाता इस लिये कि दुआ़ भी मुरादे मह़बूब है साइलीन पर तक़ाज़ा है : (2) ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ मौला चाहता है हमारा बन्दा हमारे ह़ुज़ूर इल्तिजा लाए और इ़ज्ज़ व बेचारगी अपनी ज़ाहिर करे।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ाइल हुवा और उसे ख़ुश ख़बरी मिली, हम से क़ौमे लूत़ के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला, बहुत आहें करने वाला, रुजूअ़ लाने वाला है।" (پ۱۲، ھود: ۷۴-۷۵)

सूरए हूद की मज़्कूरा आयत नम्बर 74 के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْه "ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" में इर्शाद फ़रमाते हैं :

"या'नी : कलाम व सुवाल करने लगा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मुजा-दला येह था कि आप ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत़ की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे ? फ़िरिश्तों ने कहा : नहीं, फ़रमाया : अगर चालीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं, आप ने फ़रमाया : अगर तीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं, आप इस त़रह़ फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया : अगर एक मर्द मुसल्मान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे ? उन्हों ने कहा : नहीं तो आप ने फ़रमाया : इस में लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام हैं, इस पर फ़िरिश्तों ने कहा : हमें मा'लूम है जो वहां हैं, हम ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام को और उन के घर वालों को बचाएंगे, सिवाए उन की औ़रत के। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मक़्सद येह था कि आप अ़ज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मआ़सी से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए, चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم की सिफ़त में इर्शाद होता है (कि बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला, बहुत आहें करने वाला, रुजूअ़ लाने वाला है)।"

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।" (پ۲۴، المؤمن: ۶۰)

ह़दीस में है : ख़ुदाए तआ़ला पिछली रात को आस्माने दुन्या पर तजल्लिये ख़ास करता और सुब्ह़ तक इर्शाद फ़रमाता है :

"कौन है जो मुझ को पुकारे मैं उसे जवाब दूं,

कौन है जो मुझ से दुआ़ मांगे मैं क़बूल करूं।"(1)

ह़दीसे क़ुदसी में है : "ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब भूके हो, मगर जिसे मैं खिलाऊं, मुझ से खाना मांगो, मैं खाना दूंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब नंगे हो मगर जिसे मैं पहनाऊं, मुझ से कपड़ा मांगो, मैं कपड़ा दूंगा।"(2)

सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस को दुआ़ की तौफ़ीक़ दी जाए दरवाज़े बिहिश्त के उस के लिये खोले जाएं।"(3)

दूसरी ह़दीस में है : "जो मुसल्मान किसी दुआ़ में ख़ुदाए तआ़ला की त़रफ़ अच्छी त़रह़ मु-तवज्जेह होता है, ख़ुदाए तआ़ला उस की दुआ़ उसे अ़त़ा करता है या दुन्या में देता है या आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा फ़रमाता है।"(4)

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن.

---

1 "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب أيّ الليل أفضل، الحديث: ١٣١٥، ج٢، ص٥١.

2 "صحيح مسلم"، باب تحريم الظلم، الحديث: ٦٥٧٧، ص١٣٩٣.

3 "سنن الترمذي"، باب دعاء النبي ﷺ، الحديث: ٣٥٥٩، ج٥، ص٣٢٢.
و"المستدرك"، باب استفتاح الدعاء، الحديث: ١٨٧٦، ج٢، ص١٧١.

4 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٩٧٩٢، ج٣، ص٤٥٨.

तज़्यील

ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल क़बीह़ लि ज़ातिही है।

ह़दीस शरीफ़ में है : "सुवाल फ़वाह़िश से है"(1) और फ़वाह़िश ह़राम, पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अबू बक्र और सौबान और अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से इस बात पर बैअ़त ली कि सिवाए ख़ुदाए तआ़ला के किसी से सुवाल न करें यहां तक कि अगर कोड़ा गिर जाता, घोड़े से उतर कर उठा लेते मगर किसी से न कहते कि हमें कोड़ा उठा दे।(2)

अल्लाह पाक अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा की ता'रीफ़ करता है : ﴿لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا﴾(3)

उ़-लमा फ़रमाते हैं : "तर्के सुवाल हर ह़ाल में औला है कि ख़ुदाए तआ़ला हर शख़्स के रिज़्क़ का कफ़ील है।"

ह़दीस शरीफ़ में है : "भूका और ह़ाजत मन्द अगर अपनी ह़ाजत लोगों से छुपाए, ख़ुदाए तआ़ला रिज़्क़े ह़लाल साल भर तक उसे इ़नायत करे।"(4)

---

1 "كيميائے سعادت"، اصل چهارم درفقر وزهد، ج۲، ص۸٤۳.
و"احياء علوم الدين"، كتاب الفقر والزهد، ج٤، ص۲٥۹.

2 "السنن الكبرى" للبيهقي، باب كراهية السؤال... إلخ، الحديث: ۷۸۷٥، ج٤، ص۳۳۰.
و"الحديقة الندية"، القسم الثاني، النوع العشرون، ج۲، ص۲٦۷.

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़-गिड़ाना पड़े।" (پ۳، البقرة: ۲۷۳)

4 "المعجم الصغير"، باب من اسمه إبراهيم، الحديث: ۲۱٤، ج۱، ص۷۹.
و"شعب الإيمان"، باب الصبر على المصائب، الحديث: ۱۰۰٥٤، ج۷، ص۲۱٥-۲۱٦.

﴿وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللّٰہِ رِزْقُھَا﴾ (1)

﴿نَحْنُ نَرْزُقُھُمْ وَاِیَّاکُمْ﴾ (2)

बिश्र ह़ाफ़ी कहते हैं : "जो किसी को बुरा न कहे और किसी के दरवाज़े पर न जाए और किसी से सुवाल न करे, दुन्या व आख़िरत में बा आबरू रहे।"

बा'ज़ (3) ﴿وَاِلٰی رَبِّکَ فَارْغَبْ﴾ की तफ़्सीर में लिखते हैं : अपने रब ही से मांग(4) दूसरे से सुवाल न कर और (5) ﴿اِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَۃَ وَالْاُوْلٰی﴾ के तह़्त में तह़रीर करते हैं : فمن طلبه من غيرنا فقد أخطأ "तो जो इसे हमारे ग़ैर से त़लब करे वोह ख़त़ा पर हो।"(6)

मूसा عَلَيْهِ السَّلام को हुक्म होता है : "जानवर के वासित़े घास और हांडी के लिये नमक भी मुझी से मांग।"(7)

उ़-लमा फ़रमाते हैं : "ख़ुदाए तआ़ला से सुवाल करना इ़ज़्ज़त

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो।" (پ١٢، هود: ٦)
2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी।" (پ١٥، بني إسرآءيل: ٣١)
3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और अपने रब ही की त़रफ़ रग़्बत करो।" (پ٣٠، ألم نشرح: ٨)
4. "روح المعاني"، پ٣٠، الانشراح، تحت الآية: ٨، ج١٥، ص٥٤٦
5. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक आख़िरत और दुन्या दोनों के हमीं मालिक हैं।" (پ٣٠، الليل: ١٣)
6. "تفسير الجلالين مع حاشية الجمل"، الليل، تحت الآية: ١٣، ج٨، ص٣٣٩
7. "الدر المنثور"، ج٧، ص٣٠٢، پ٢٤، غافر: تحت الآية: ٦٠.

और ग़ैरों से मांगना मूजिबे ज़िल्लत है।"[1]

बैत

راز گوئم بخلق و خوار شوم

باتو گویم بزرگ وار شوم[2]

जो शख़्स आदमी से सुवाल करता है तीन ख़राबियों में पड़ता है :

पहली ख़राबी : ख़ल्क़ की निगाह में ज़लीलो ख़्वार हो जाता है, हर एक के सामने आ़जिज़ी करनी पड़ती है बन्दे को लाइक़ नहीं कि अपने नफ़्स को बिला ज़रूरत ख़्वार कर दे और सिवाए ख़ुदाए तआ़ला के और के सामने तज़ल्लुल (आ़जिज़ी) करे।

दूसरी ख़राबी : मोह़ताजी ज़ाहिर करना मौला की शिकायत है, जो ग़ुलाम बराहे एह़सान फ़रामोशी व नमक ह़रामी अपने मौला के इन्आ़म व अ़ता पर क़नाअ़त न करे और दूसरे के सामने हाथ फैलाए गोया ज़बाने ह़ाल से कह रहा है कि मेरा मौला मुझे नंगा भूका रखता है और ब क़दर रफ़्ए़ एह़तियाज नहीं देता।

नक़्ल है एक आ़बिद किसी पहाड़ पर रहता, वहां अनार का दरख़्त था हर रोज़ तीन अनार उस में आते, उन्हें खाता और इ़बादत करता, ह़क़ عَزَّوَجَلَّ को इम्तिह़ान मन्ज़ूर हुवा, एक रोज़ अनार न लगे सब्र किया दो रोज़ और येही माजरा गुज़रा, तीसरे दिन घबरा कर पहाड़ से नीचे उतरा, उस के नीचे एक नसरानी रहा करता था उस से सुवाल किया, नसरानी ने चार रोटियां दीं, उस का कुत्ता भौंकने लगा आ़बिद ने

---

1. "إحياء علوم الدين"، كتاب الفقر والزهد، ج٤، ص٢٥٩

2. *तू सब को राज़ कह कर ही ज़लीलो ख़्वार होता है*
   ख़ुदा वाह़िद कि सब के राज़ को वोह राज़ रखे है

एक रोटी डाल दी कुत्ते ने खा कर फिर पीछा किया, दूसरी रोटी डाल दी, कुत्ते ने वोह भी खा ली मगर पीछा न छोड़ा जब चारों खा लीं और भौंकने से बाज़ न आया आ़बिद ने कहा : ऐ ह़रीसे नाह़क़ कोश ! (या'नी : नाह़क़ बात में कोशिश करने वाले) तुझे शर्म नहीं आती कि मैं तेरे घर से भीक मांग कर लाया और तूने मुझ से सब छीन लीं अब भी पीछा नहीं छोड़ता, कुत्ते ने कहा : ''मैं तुझ से ज़ियादा बे शर्म नहीं कि जिस मालिक ने बरसों बे मेह़नत व मशक़्क़त ऐसा नफ़ीस रिज़्क़ तुझे खिलाया, तीन रोज़ न देने पर इतना घबरा गया कि उस के दुश्मन के घर भीक मांगने आया।''

तीसरी ख़राबी : जिस से सुवाल करता है उसे नाह़क़ रन्ज देता है कि अगर वोह सुवाल रद कर दे तो लोगों से शरमिन्दगी व नदामत हो और जो ख़ल्क़ से शरमा कर दे तो दिल पर गिरां गुज़रे और आख़िरत में मुफ़ीद न हो बल्कि ब सबब रियाकारी के मुज़िर हो ऐसे शख़्स से सुवाल करना गोया मुसा–दरह और डांड त़लब करना है (या'नी : तावान त़लब करना है)।[1]

सूफ़ियाए किराम कहते हैं : ''जिस को जाने कि येह लोगों की शर्म से देता है उस से लेना मम्नूअ़ है'' और जो सुवाल से ख़ुश होता है और ब त़ीबे ख़ात़िर देता है (या'नी : ख़ुश दिली के साथ देता है) बा'ज़ अवक़ात सुवाल उस पर भी ना गवार गुज़रता है ख़ुसूसन उस शख़्स का जो बहुत सुवाल किया करता है पस बन्दे को लाइक़ है कि ख़ुदा ही से सुवाल करे कि वोह मांगने से नाख़ुश नहीं होता, न बार बार अ़र्ज़ करने से नाराज़ बल्कि और ज़ियादा राज़ी होता है।[2]

---

1 ''إحياء علوم الدين''، كتاب الفقر والزهد، آداب الفقير المضطر فيه، ج٤، ص٢٥٩

2 ''كيميائے سعادت''، اصل چهارم درفقر وزهد، ج٢، ص٨٤٣-٨٤٤.

ह़दीस शरीफ़ में है : ''जिस के पास ब क़दरे किफ़ायत हो और वोह सुवाल करे क़ियामत के दिन उस के मुंह का गोश्त गल कर गिर पड़ेगा कि हड्डी के सिवा कुछ बाक़ी न रहेगा।''(1)

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में आया है कि ''वोह जो कुछ लेता है दोज़ख़ की आग है अब चाहे बहुत ले या थोड़ी'', किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! किस क़दर रखता हो तो सुवाल न करे ? फ़रमाया : ''सुब्ह़ व शाम का खाना।''(2)

और एक रिवायत में ''पचास दिरहम'' कि एक आदमी को साल भर किफ़ायत करते हैं।(3)

और वज्हे तत़्बीक़ येह है कि मौसिमे स-दक़ात जहां साल भर में एक बार आता है, अगर उन दिनों ब क़दरे सद्दे रमक़ (या'नी : इतना खाना जिस से ज़िन्दगी क़ाइम रहे) एक साल का क़ूत (या'नी : ख़ूराक) नहीं रखता या साल भर के लाइक़ कपड़ा मौजूद नहीं और इस अ़र्से में न मिलने की उम्मीद, न कस्ब पर क़ुदरत, तो उस को सुवाल दुरुस्त है और जो हर रोज़ सुवाल करता है उसे दूसरे दिन के लिये भी सुवाल करना जाइज़ नहीं।

---

1 "سنن ابن ماجه"، كتاب الزكاة، باب: من سأل عن ظهر غنى، الحديث: ١٨٤٠، ج٢، ص٤٠٢.

2 "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من يعطى من الصدقة، وحد الغنى، الحديث: ١٦٢٩، ج٢، ص١٦٤، بألفاظ متقاربة.

و"الجامع الصغير"، حرف الميم، الحديث: ٨٧٢٩، ص٥٢٨.

3 "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من يعطى من الصدقة، وحد الغنى، الحديث: ١٦٢٦، ج٢، ص١٦٣.

अस्ल येह है कि सुवाल ब क़दरे ह़ाजत दुरुस्त है और ह़ाजत ब इख़्तिलाफ़े अश्ख़ास व अवक़ात व अह़वाल व अम्सार मुख़्तलिफ़।

पस ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल **फ़ी नफ़्सिही क़बीह़** है और इस की इजाज़त ब वज्हे ज़रूरत, الضرورات تبيح المحظورات (या'नी : ज़रूरतें मम्नूआ अश्या को मुबाह़ या'नी जाइज़ कर देती हैं) जो शख़्स ब क़दरे सद्दे रमक़ के क़ूत या ब क़दरे सित्रे औ़रत के लिबास या सोने बैठने के लाइक़ घर नहीं रखता और कस्ब[1] से भी नहीं ह़ासिल कर सकता उसे कई शर्त़ से सुवाल करना दुरुस्त है।

पहली शर्त़ : ख़ुदाए तआ़ला की शिकायत न करे और ना शुक्री का कलिमा ज़बान पर न लाए।

दूसरी शर्त़ : ह़त्तल वुस्अ़ (जहां तक मुम्किन हो) अपने अ़ज़ीज़ और दोस्त और सख़ी आ़ली हिम्मत से मांगे कि उस पर सुवाल गिरां न गुज़रेगा और वोह इसे ब नज़रे ह़क़ारत न देखेगा।

---

1. अगर क़ुदरते कस्ब रखता हो तो कस्ब करे और सुवाल से बाज़ रहे मगर त़ालिबे इ़ल्म, अगर कस्बे मआ़श त़-लबे इ़ल्म में ख़लल डाले ब ख़िलाफ़ आ़बिद कि वोह कस्ब करे अगर्चे इ़बादत में ह़रज हो।

قال الرضاء : वज्हे फ़र्क़ ज़ाहिर कि कस्बे ह़लाल ख़ुद अफ़्ज़ल इ़बादात से है तो इस में दोनों मक़्सूद ह़ासिल ब ख़िलाफ़ इ़ल्म कि इस से जो मत़्लूब है कस्ब से ह़ासिल नहीं हो सकता, मअ़ हाज़ा त़-लबे इ़ल्म फ़र्ज़े ऐ़न है या फ़र्ज़े किफ़ाया और इ़बादाते नाफ़िला के लिये तफ़र्रुग़ (फ़राग़त) अस्लन फ़र्ज़ नहीं।

इसी त़रह़ उस दीनी किताब को जिस की ह़ाजत रखता है फ़रोख़्त करना ज़रूर नहीं, हां जिस किताब की ह़ाजत न हो और जा नमाज़ और इसी क़िस्म का अस्बाब कि ह़ाजत से ज़ियादा हो बेच डाले और सुवाल न करे। ۱۲منہ قدس سرہٗ

तीसरी शर्त़ : पारसाई को ह़ीला दुन्या त़-लबी व सुवाल का न करे, कि दीन को दुन्या से बेचना कमाले नादानी है।[1]

चौथी शर्त़ : जमाअ़त में एक शख़्स को मु-तअ़य्यन कर के सुवाल न करे कि अगर न दे शरमिन्दा हो और जो दे उस के जी पर गिरां गुज़रे मगर साह़िबे ज़कात से मुस्तह़िक़ के वासित़े और जो ख़ुद मुस्तह़िक़ हो तो अपने लिये सुवाल ब तअ़य्युन मुज़ा-यक़ा नहीं रखता, अगर्चे उस को ना गवार हो और इसी त़रह़ तअ़य्युने सुवाल कि मुझे एक रुपिया या दो रुपै दे, न चाहिये।

पांचवीं शर्त़ : क़दरे ह़ाजत से ज़ियादा न मांगे।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अस्ल ह़ाजतें तीन हैं : रोटी, कपड़ा, घर, और ह़दीस शरीफ़ में है कि "आदमी को तीन चीज़ों के सिवा दुन्या में कुछ ह़क़ नहीं, चन्द लुक़्मे कि उस की पीठ को सीधा करें और एक टुकड़ा कपड़ा कि सित्र छुपाए और छोटा घर जिस में झुक कर दाख़िल हो सके" इसी त़रह़ जो चीज़ें घर के लिये लाबुद (या'नी ज़रूरी) हैं वोह भी ह़ाजत में दाख़िल हैं।[2]

قال الرضاء : येह ह़ाजाते ज़रूरिय्या आ़म्मा हैं जिन की त़रफ़ सब को एह़तियाज है और अहलो इ़याल वाले को इन के न-फ़क़े की भी ह़ाजत है, अगर बीबी या ग़ैर मालदार बच्चों या ह़ाजत मन्द मां बाप और इन के मिस्ल उन के लिये जिन का न-फ़क़ा शरअ़न इस पर वाजिब है क़दरे किफ़ायत न पास है, न वक़्ते ह़ाजत तक कस्ब से ह़ासिल कर सकता है तो इन के लिये भी सुवाल जाइज़ बल्कि वाजिब है

---

1 या'नी अपनी परहेज़ गारी के ज़रीए़ सुवाल न करे कि दीन को दुन्या के बदले बेचना बहुत बे वुक़ूफ़ी है।

2 "کیمیائے سعادت"، اصل چہارم درفقر وزھد، ج۲، ص۸٤٥

فإنّ ما لا يحصل الواجب إلّا به يكون واجباً كمثله في "ردّ المحتار" عن "الذخيرة": إن قدر على الكسب تفرض النفقة عليه فيكتسب وينفق عليهم وإن عجز؛ لكونه زمناً أو مقعداً يتكفف الناس وينفق عليهم كذا في نَفَقات الخَصَّاف.(1)

ग़रज़ अस्ल कुल्ली वोही है कि जो ह़ाजत व ज़रूरत वाक़ेई़ व शर-ई़ हो और त़रीक़ए तह़सील सिवा सुवाल के दूसरा न हो (मांगने के इ़लावा कोई और चारा न हो तो) उस के लिये ब क़दरे ह़ाजत, ता वक़्ते ह़ाजत सुवाल जाइज़ है वरना ह़राम।

आज कल अक्सर लोग बेटी के बियाह के लिये भीक मांगते हैं और इस से मक़्सूद रुसूमे मुरव्वजए हिन्द का पूरा करना होता है, ह़ालां कि वोह रस्में अस्लन ह़ाजते शरइय्या नहीं तो उन के लिये सुवाल ह़लाल नहीं हो सकता, हां मुसल्मानों को ख़ुद मुनासिब है कि ह़ाजत मन्द बेटी वाले की इआ़नत करें। ह़दीस में इस की मदद करने, इसे क़र्ज़ देने की त़रफ़ इर्शाद हुवा है।

बा'ज़े भीक मांगते हैं कि ह़ज को जाएंगे, येह भी ह़राम और उन्हें देना भी ह़राम, ما حرم أخذه حرم إعطاءه (जिस शै का लेना ह़राम, उस का देना भी ह़राम) फ़क़ीर को ह़ज, नफ़्ल है और सुवाल ह़राम,

(1) जो शख़्स वाजिब के ह़ुसूल पर सुवाल किये बिग़ैर क़ुदरत नहीं रखता उस पर सुवाल करना वाजिब है, इसी की मिस्ल ''रद्दुल मुह़तार'' में ''ज़ख़ीरा'' से मन्क़ूल कि अगर कमा कर उन का न-फ़क़ा जो इस शख़्स पर वाजिब है, पूरा कर सकता है तो कमाई कर के उन का न-फ़क़ा अदा करे, और अगर लुन्जा या अपाहिज होने के सबब नहीं कमा सकता तो लोगों से मांग कर उन का ख़र्चा पूरा करे जिन का न-फ़क़ा इस पर वाजिब है इसी त़रह़ ख़िसाफ़ के बाबुन्न-फ़क़ा में भी मज़्कूर है। "ردّ المحتار"، كتاب الطلاق، باب النفقة، ج٥، ص٣٤٦

नफ़्ल के लिये ह़राम इख़्तियार करना किस ने माना !﴾

छटी शर्त़ : इसे तनअ़ुम व तजम्मुले नफ़्स व इ़याल में सर्फ़ न करे बल्कि वसीलए इ़बादत व मुबाह़ में ख़र्च करे ।[1]

قال الرضاء : माल ग़ादी व राइह़ है (या'नी माल, बादल व हवा की मानिन्द आनी जानी शै है) सुब्ह़ आता और शाम जाता शाम जाता और सुब्ह़ आता है। नाने शबीना के मोह़ताज (मुफ़्लिस और लाचार लोग) आंखों देखते देखते साह़िबाने तख़्तो ताज हो गए अब अगर किसी ने ज़रूरत के लिये सुवाल से माल ह़ासिल किया अभी ख़र्च न हुवा था कि माले ह़लाल किसी दूसरी वजह से मिल गया तो उसे अगर्चे उस माले सुवाल का वापस देना शरअ़न ज़रूर नहीं कि उस वक़्त मोह़ताज ही था मगर औला येही है कि वापस कर दे ताकि ज़िल्लते सुवाल की तलाफ़ी और शुक्र व इज़्हारे ने'मते इलाही हो फिर भी अगर सर्फ़ करे तो उसी ह़ाजत व ज़रूरत ही के उमूर में कि जिस के लिये मांगा था उस के ख़िलाफ़ न हो।

هذا ما ظهر في شرح هذا الكلام الشريف، فافهم، والله تعالىٰ أعلم﴾[2]

सातवीं शर्त़ : मुन्इ़मे ह़क़ीक़ी का शुक्र बजा लाए और जिस ने दिया उस का भी शुक्र अदा करे कि वासित़ए वुसूले ने'मत है और उस

---

1 या'नी जो माल मांग कर ह़ासिल हुवा उसे अपने और अपने अहलो इ़याल के ऐ़शो इ़शरत और बनाव सिंघार में ख़र्च न करे बल्कि उसे इ़बादत और मुबाह़ कामों का ज़रीआ़ बनाए।

2 येह कलाम है जो मुसन्निफ़ عليه الرحمة के उस कलाम की तशरीह़ में मुझ पर ज़ाहिर हुवा, पस इसे समझो और सब से बेहतर इ़ल्म अल्लाह तआ़ला को है।

के ह़क़ में दुआ़ करे।(1)

ह़दीस शरीफ़ में है : "जो भलाई करे उस को बदला दो, न हो सके तो उस के लिये दुआ़ करो।"(2)

मगर स-दक़ा देने वाले को चाहिये कि अगर फ़क़ीर उस के सामने उसे दुआ़ दे तो वोही दुआ़ फ़क़ीर को दे दे ताकि दुआ़ का इ़वज़ दुआ़ हो जावे और स-दक़ा बे इ़वज़ रहे उस के इ़वज़ सवाबे आख़िरत मिले।

आठवीं शर्त़ : किसी से बार बार सुवाल न करे कि इस ह़-र-कत से वोह तंग होगा वोह उस को ह़रीस समझेगा।

नवीं शर्त़ : अगर देने वाला तंग हो कर या लोगों से शरमा कर या माले मुश्तबह या ह़राम उस को दे, क़बूल न करे कि अगर ख़ुदा के वासित़े ऐसे माल से इज्तिनाब करेगा, ख़ुदा अपने फ़ज़्लो करम से उसे बेहतर इ़नायत फ़रमाएगा :

﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًاۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ﴾(3)

---

1 या'नी : परवर्द गारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए कि दर ह़क़ीक़त सभी ने'मतें मिलती तो अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की त़रफ़ से हैं लेकिन चूंकि येह शख़्स उस ने'मते ख़ुदा वन्दी के पहुंचने का ज़रीआ़ बना इस लिये इस का भी शुक्रिया अदा करे और इस के ह़क़ में दुआ़ भी करे।

2 "السنن الكبرى"، كتاب الزكاة، باب عطية من سأل بالله عزوجل، الحديث: ٧٨٩٠، ج٤، ص٣٣٤.

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।" (پ٢٨، الطلاق: ٢-٣)

दसवीं शर्त़ : लि वज्हिल्लाह सुवाल न करे या'नी येह कलिमा कि ख़ुदा के वासित़े मुझे कुछ दो, न कहे, हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो शख़्स **लि वज्हिल्लाह** सुवाल करे, मल्ऊन है।"(1)

एक बुज़ुर्ग कूफ़े के बाज़ार में चिड़िया हाथ पर बिठाए कहते थे : इस चिड़िया के लिये मुझे कुछ दो, किसी ने कहा : येह क्या कहते हो ? फ़रमाया : दुन्याए दूं (या'नी : बे क़ीमत व ह़क़ीर दुन्या) के लिये ख़ुदा का वासित़ा नहीं ला सकता इस का शफ़ीअ़ (सिफ़ारिशी) भी ह़क़ीर चाहिये।(2)

सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((لا يسأل لوجه الله إلا الجنة))

"लि वज्हिल्लाह कह कर जन्नत के सिवा कोई चीज़ न मांगी जाए।"(3)

ग्यारहवीं शर्त़ : जिस क़दर दिया जाए ब त़ीबे ख़ात़िर (या'नी : ख़ुश दिली के साथ) क़बूल करे ज़ियादा पर इस्रार से निहायत बाज़ रहे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो माल, देने वाले की ना गवारी के साथ लिया जाता है उस में ब-र-कत नहीं होती।"(4)

---

1. "مجمع الزوائد"، كتاب الزكاة، باب فيمن سأل بوجه الله عزوجل، الحديث: ٤٥٦٨-٤٥٦٩، ج٣، ص٢٧٢.
2. "كشف المحجوب" (فارسی)، باب آدابهم في السؤال وتركه، ص ٤٠٧.
3. "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب كراهية المسألة بوجه الله تعالى، الحديث: ١٦٧١، ج٢، ص١٧٨.
4. "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب النهي عن المسألة، الحديث: ١٠٣٧-١٠٣٨، ص ٥١٦.

येह ज़ियादा के लिये इस वासिते इस्रार करता है कि ज़ियादा काम आएगा और वहां उस से ब-र-कत उठा ली गई कि इस थोड़े की क़द्र भी ब-कारआमद न होगा, अगर क़नाअ़त करता, अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ख़ैरो ब-र-कत अ़ता फ़रमाता है।

बारहवीं शर्त़ : लाज़िम है कि ऐ़ब स-दक़े का पोशीदा रखे।

قال الرضاء : जैसे देने वाले को चाहिये कि नाक़िस चीज़ स-दक़े में न दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़नी है, स-दक़ा पहले उस ग़निय्ये मुत़्लक़ جَلَّ وَعَلَا के दस्ते क़ुदरत में पहुंचता इस के बा'द फ़क़ीर के हाथ में जाता है। अब आदमी देखे कि ग़नी की सरकार में क्या पेशकश करता है।

वोह फ़रमाता है : ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾

"हरगिज़ नेकी न पाओगे जब तक अपनी प्यारी चीज़ों में से हमारी राह में ख़र्च न करो।" (پ٤، ال عمران: ٩٢)

और फ़रमाता है : ﴿لَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ﴾

"तुम्हें ऐसी चीज़ दी जाए तो न लोगे मगर येह कि चश्म पोशी कर जाओ।" (پ٣، البقرة: ٢٦٧)

ऐसे ही स-दक़े लेने वाले पर लाज़िम है कि नाक़िस पर नाराज़ न हो और उस की मज़म्मत व शिकायत न करे कि आख़िर उस की त़रफ़ से ने'मत है और ने'मत का मुआ-वज़ा शुक्र है न (कि) शिकायत, उस का कोई क़र्ज़ न आता था कि शिकायत करता है।﴾

तेरहवीं शर्त़ : जो शख़्स माले ज़ुल्म या माले रिबा (किसी से छीना हुवा, या सूदी माल) दे हरगिज़ न ले कि ख़बीस से सिवा ख़ुबुस (बुराई) के और कोई नतीजा नहीं निकलता।

قال الرضاء : अगर मा'लूम हो कि जो कुछ येह देता है ऐ़न ह़राम

है तो हर त़रह़ लेना ह़राम है ख़्वाह हदिय्या में, ख़्वाह स-दक़ा में, ख़्वाह उजरत में, ख़्वाह क़र्ज़ में, ख़्वाह किसी त़रह़, वरना जाइज़।

ما لم نعرف شيئاً حراماً بعينه به نأخذ، قاله محرّر المذهب محمّد رحمه اللّٰه تعالٰى وقد فصّلنا المسألة بوجوهها في مجموعتنا المباركة إن شاء اللّٰه تعالٰى "العطايا النبوية في الفتاوى الرضوية".﴾[1]

चौदहवीं शर्त़ : स-दक़े को थोड़ा और ह़क़ीर न जाने, जैसे देने वाले को चाहिये बहुत दे और थोड़ा समझे। والكثير في جنب اللّٰه قليل (कसीर भी अल्लाह के हुज़ूर क़लील है) ह़दीसे सह़ीह़ैन से साबित कि स-दक़ा को ह़क़ीर न जानो अगर्चे बकरी का जला हुवा खुर हो।[2]

قال الرضاء : इस के मुख़ात़ब स-दक़ा देने वाले भी हो सकते हैं या'नी : अगर ऐसी ही चीज़ की इस्तित़ाअ़त है तो येही दो और इसे ह़क़ीर न जानो कि आख़िर इम्तिसाले अम्र है (या'नी शर-ई़ हुक्म की बजा आ-वरी है) और मोह़ताज के कुछ तो काम आएगी वहां इन्हीं दो बातों पर नज़र है न कि तुम्हारे क़लील व कसीर पर, कि यूं तो तमाम मताए़ दुन्या शर्क़ो ग़र्ब तक के सारे ख़ज़ीने, दफ़ीने हर क़लील से क़लील तर, हर ज़लील से ज़लील तर हैं और जब उस वक़्त नाक़िस ही चीज़ पर हाथ पहुंचता है तो अब वोह आयए करीमा वारिद न होगी जो हम ने ज़ेरे **शर्त़ 12** तिलावत की, कि उस में

---

1. जब तक किसी मुअ़य्यन शै का ह़राम होना हमें मा'लूम न हो उसे ले सकते हैं येह फ़िक़्हे ह़-नफ़ी को तह़रीरी सूरत में पेश करने वाले इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शागिर्दे अमजद, इमाम मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है और इस मस्अले की तमाम सूरतें हम ने बहुत तफ़्सील के साथ अपने बा ब-र-कत मज्मूअ़ए फ़तावा "العطايا النبوية في الفتاوى الرضوية" में ज़िक्र कर दी हैं। (انظر للتفصيل "الفتاوى الرضوية"، ج ٢١، ص ٦٤١)
2. "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب الحثّ على الصدقة... إلخ، الحديث: ١٠٣٠، ص ٥١٤.

﴿لَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ﴾ फ़रमाया है, "बिल क़स्द नाक़िस चीज़ न दो" (پ۳، البقرة: ۲٦۷) कि नाक़िस व कामिल दोनों पर दस्त-रस है और क़स्दन नाक़िस दो, वरना

﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا﴾(1)

नीज़ ह़दीस में इस त़रफ़ भी इशारा मुम्किन कि स-दक़ा देने में थोड़ी चीज़ को भी ह़क़ीर न जानो अगर्चे ज़ियादा की इस्तित़ाअ़त भी हो, हाथ पहुंचता है मगर शैत़ान रोकता है, नफ़्स आड़े आता है एक शैत़ान क्या सत्तर70 शैत़ान स-दक़े से बाज़ रखते हैं।

ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : "स-दक़ा सत्तर शैत़ानों के जबड़े चीर कर निकालता है।"(2) तो ऐसी ह़ालत में थोड़ा ही दे और उसे ह़क़ीर जान कर बिलकुल दस्त कश (ला तअ़ल्लुक़) न हो कि आख़िर मोह़ताज के ब-कारआमद होगा और बुख़्ल की जड़ दिल पर जमने में कुछ तो कमी आएगी। ما لا يُدرَك كلُّه لا يُترَك كلُّه (बिलकुल कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है) और यहां भी वोह आयए करीमा वारिद नहीं कि इस में : ﴿لَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ﴾ फ़रमाया न (कि) لَا تَيَمَّمُوا الْقَلِيْلَ (या'नी : ख़ास क़लील का इरादा न करो) ख़बीस व क़लील में ज़मीन व आस्मान का फ़र्क़ है, पाव भर खरे गेहूं क़लील हैं ख़बीस नहीं और दस10 मन घुने हुए (या'नी कीड़ा लगे हुए) कि गल कर आटा हो गए ख़बीस हैं न (कि) क़लील।

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है, क़रीब है कि अल्लाह दुश्वारी के बा'द आसानी फ़रमा देगा।" (پ۲۸، الطلاق: ۷)

2 "مجمع الزوائد"، كتاب الزكاة، باب ارغام الشيطان بالصدقة، الحديث: ٤٦٠١، ج۳، ص۲۸۲.

उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत इस द–रजा थी कि उन के भान्जे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में उन के तसर्रुफ़ात मह़जूर कर दिये (या'नी रोक दिये) थे[1], हज़ारहा रुपै एक जल्से में मोह़ताजों को तक़्सीम फ़रमा देतीं।

एक बार अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लाख रुपै नज़्र भेजे, उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कनीज़ को हुक्म दिया हज़ार फ़ुलां को दे आओ, सो फ़ुलां को, यहां तक कि एक पैसा न रखा और ख़ुद ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन का रोज़ा था, कनीज़ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर का रोज़ा है और घर में इफ़्त़ार को भी कुछ नहीं, फ़रमाया : पहले से कहती तो कुछ रख लिया जाता।[2]

इन उम्मुल मुअमिनीन ने एक बार साइल को एक दाना अंगूर का दिया, देखने वाले ने तअ़ज्जुब किया, फ़रमाया : **كم ترى فيها من مثاقيل ذرة؟** "इस से कितने ज़र्रे निकल सकेंगे ?" और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ﴿فَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ﴾ "जो एक ज़र्रा बराबर भलाई करेगा उस का अज्र देखेगा।" (پ۳۰، الزلزال: ۷) [3]

---

1 انظر "صحيح البخاري"، كتاب المناقب، باب مناقب قريش، الحديث: ۳۵۰۵، ج۲، ص۴۷۵، و كتاب الأدب، باب الهجرة، الحديث: ۶۰۷۳-۶۰۷۵، ج۴، ص۱۱۹.
या'नी : उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के माली तसर्रुफ़ के इख़्तियारात ले लिये थे कि ह़ाकिमे इस्लाम को इस बात का इख़्तियार है।

2 "إحياء علوم الدين"، كتاب الفقر والزهد، ج۴، ص۲۴۵.

3 "شعب الإيمان"، باب الزكاة، فصل في الاختيار في صدقة التطوع، الحديث: ۳۴۶۶، ج۳، ص۲۵۴.

هذا كلّه ما ظهر لي وأرجو أن يكون صواباً، والله تعالىٰ أعلم.[1]

ख़ैर येह चौदह14 शराइत़ ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ज़िक्र फ़रमाए, छ6 फ़क़ीर ज़िक्र करता है कि बीस20 का अ़दद कामिल हो।

पन्दरहवीं शर्त़ : मस्जिद में सुवाल न करे कि ह़दीस शरीफ़ में इस से मुमा-न-अ़त आई[2] और उसे देना भी न चाहिये की शनीअ़ पर इआ़नत है (या'नी : बुराई पर मदद करना है) उ़-लमा फ़रमाते हैं : मस्जिद के साइल को एक पैसा दे तो सत्तर70 पैसे और दरकार हैं जो उस देने का कफ़्फ़ारा हों। كما في "الهندية" و"الحديقة الندية"[3] وغيرهما और अगर ऐसी बद तमीज़ी से सुवाल करता है कि नमाज़ियों के सामने गुज़रता है या बैठे हुओं को फांद कर जाता है तो उसे देना बिल इत्तिफ़ाक़ मम्नूअ़।

وهو المختار على ما في "الدرّ المختار" من الحظر[4] وقد جزم في الصلاة[5] بإطلاق الحظر وعبّر عن هذا بقيل.

أقول: وإن فرّق بمن تعوّد فيمنع عطاء ه مطلقاً أو ورد غريباً كئيباً

1. येह सब वोह गौहर पारे हैं कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ज़ाहिर फ़रमाए और मैं उम्मीद करता हूं कि येही तौजीह जो मैं ने ऊपर ह़दीस से मु-तअ़ल्लिक़ बयान की, दुरुस्त है और सब से ज़ियादा जानने वाला तो अल्लाह ही है।

2. انظر"صحيح مسلم"، باب النهي عن نشد الضالة ... إلخ، الحديث: ٥٦٨، ص٢٨٤.
و"المرقاة"، باب المساجد ومواضع الصلاة، تحت الحديث: ٧٠٦، ج٢، ص٤١٢.

3. "الفتاوى الهندية"، كتاب الهبة، الباب الثاني عشر في الصدقة،ج٤، ص٤٠٨ .

4. "الدر المختار"، كتاب الحظر والاباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٨٨.

5. "الدر المختار"، كتاب الصلاة، باب ما يفسد الصلاة وما يكره فيها، ج٢، ص٥٢٣.

لا يعرف الناس فيباح إن لم يتخطّ لم يعد وكان توفيقاً، والله تعالٰى أعلم.[1]

सोलहवीं शर्त़ : सुवाल में ज़ियादा तमल्लुक़ (ख़ुशामद) व चापलूसी न करे कि शाने इस्लाम के ख़िलाफ़ है। ह़दीस शरीफ़ में आया : "मुसल्मान ख़ुशामदी नहीं होता"[2] और झूटी झूटी ता'रीफ़ें इस से भी बदतर कि एक तो तमल्लुक़, दूसरे किज़्ब, तीसरे उस शख़्स का नुक़्सान कि मुंह पर ता'रीफ़ करने को ह़दीस में गरदन काटना फ़रमाया और इर्शाद हुवा : "मद्दाहों के मुंह में ख़ाक झोंक दो"[3] ख़ुसूसन अगर मम्दूह़ फ़ासिक़ हो कि ह़दीस में फ़रमाया : "जब फ़ासिक़ की मदह़ की जाती है, **रब तबा-र-क व तआला** ग़ज़ब फ़रमाता है और **अ़र्शुर्रह़मान** हिल जाता है।"[4]

---

1 और इसी क़ौल को "दुर्रे मुख़्तार" के **किताबुल ह़ज़्रे वल इबाह़ा** में इख़्तियार किया है और इसी की **किताबुस्सलाह** में मस्जिद के साइल को मुत़्लक़न देने की मुमा-न-अ़त पर जज़्म फ़रमाया और मज़्कूरा क़ौल को लफ़्ज़े "قِيْلَ" से ता'बीर किया या'नी उस के ज़ो'फ़ की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।

मैं कहता हूं : इन दोनों अक़्वाल में तत़्बीक़ की सूरत येह है कि अगर वोह शख़्स पेशावर फ़क़ीर है तो उसे देना, चाहे मस्जिद में हो या इ़लावा मस्जिद, बहर सूरत मन्अ़ है और अगर वोह शख़्स ख़स्ता ह़ाल मुसाफ़िर है कि वहां उस का कोई जानने वाला नहीं, और न वोह नमाज़ियों को फलांगता है न ही बार बार सुवाल करता है, तो उसे देना जाइज़ है।

2 "شعب الإيمان"، باب في حفظ اللسان، الحديث: ٤٨٦٣، ج٤، ص ٢٢٤. و"الجامع الصغير"، الحديث: ٧٦٧١، ص٤٦٩.

3 "صحيح مسلم"، كتاب الزهد والرقائق، باب النهي عن المدح... إلخ، الحديث: ٣٠٠٢، ص١٦٠٠.

4 "شعب الأيمان"، الحديث: ٤٨٨٦، ج٤، ص ٢٣٠.

सत्तरहवीं शर्त़ : माल ह़ासिल करने के लिये जिस क़दर सलाह़ अपने में है, उस से ज़ियादा ज़ाहिर न करे। ख़्वाह वोह इज़्हार ज़बाने क़ाल से हो या ज़बाने ह़ाल से हो, कि **एक** तो ज़ोर (ज़बर दस्ती) होगा।

ह़दीस शरीफ़ में है : "जो लोगों को उस से ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा दिखाए जितना उस के पास है मुनाफ़िक़ है।"(1)

दूसरे धोका देना। ह़दीस शरीफ़ में है : "हमारे गुरौह से नहीं जो हमें फ़रेब दे।"(2)

तीसरे वोह माल कि उस के इ़वज़ लेगा, ना जाइज़ होगा। كما في "الطريقة المحمدية" कि देने वाला अगर ऐसा न जानता न देता या इतना न देता।

अठ्ठारहवीं शर्त़ : किसी सच्चे अ़-मले दीनी के ज़रीए़ से भी दुन्या न मांगे कि مَعَاذَ الله दीन फ़रोशी है। जैसे बा'ज़ फ़ु-क़रा कि ह़ज कर आते हैं जगह जगह अपना ह़ज बेचते फिरते हैं, फिर कभी बिक नहीं चुकता (या'नी : हमेशा उसी ह़ज को कमाई का ज़रीआ़ बनाते हैं)।

ह़दीस शरीफ़ में आया : "जो आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करे उस का चेहरा मस्ख़ कर दिया जाए और उस का ज़िक्र मिटा दिया जाए और उस का नाम दोज़ख़ियों में लिखा जाए।"(3)

---

1 "الجامع الصغير"، الحديث: ٨٣٨٣، ص ٥١١.

2 "صحيح مسلم"، كتاب الايمان، باب قول النبي: ((من غشنا فليس منا))، الحديث: ١٦٤، ص ٦٥.

3 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢١٢٨، ج ٢، ص ٢٦٨.

इमाम हुज्जतुल इस्लाम (या'नी इमाम ग़ज़ाली) फ़रमाते हैं : एक ग़ुलाम व आक़ा ह़ज कर के पलटे राह में नमक न रहा, न ख़र्च था कि मोल (ख़रीद) लेते। एक मन्ज़िल पर आक़ा ने कहा : बक़्क़ाल (किरयाना वाले) से थोड़ा नमक येह कह कर ले आ कि हम ह़ज से आते हैं, वोह गया और कहा : मैं ह़ज से आता हूं क़दरे नमक दे, ले आया। दूसरी मन्ज़िल में आक़ा ने फिर भेजा, इस बार यूं कहा कि : मेरा आक़ा ह़ज से आता है थोड़ा नमक दे, ले आया। तीसरी मन्ज़िल में आक़ा ने फिर भेजना चाहा, ग़ुलाम ने कि ह़क़ीक़तन आक़ा बनने के क़ाबिल था, जवाब दिया, परसों नमक के चन्द दानों पर अपना ह़ज बेचा कल आप का बेचा, आज किस का बेच कर लाऊं।

इमाम सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक शख़्स के यहां दा'वत में तशरीफ़ ले गए, मेज़बान ने ख़ादिम से कहा : उन बरतनों में खाना लाओ जो मैं दोबारा के ह़ज में लाया हूं, इमाम ने फ़रमाया : "मिस्कीन तूने एक कलिमे में अपने दो ह़ज ज़ाएअ़ किये" जब मुजर्रद (सिर्फ़) इज़्हार पर येह ह़ाल है तो इसे ज़रीअ़ए दुन्या त़-लबी बनाना किस द-रजा बदतर होगा। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی

और इसी में दाख़िल है वा'ज़ का पेशा कि आज कल न कम इल्म बल्कि बहुत निरे जाहिलों ने कुछ उलटी सीधी उर्दू देखभाल कर, ह़ाफ़िज़ा की क़ुव्वत दिमाग़ की त़ाक़त, ज़बान की त़लाक़त को शिकारे मरदम का ह़ाल (ज़बान की तेज़ी से लोगों को अपने जाल में फंसाने का ज़रीआ) बनाया है। अ़क़ाइद से ग़ाफ़िल, मसाइल से जाहिल और वा'ज़ गोई के लिये आंधी, हर जामेअ़, हर मज्मअ़, हर मजलिस, हर मेले में ग़लत़ ह़दीसें, झूटी रिवायतें, उलटे मस्अले बयान करने को खड़े हो जाएंगे और त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों से जो मिल सका कमाएंगे।

अव्वल तो उन्हें वा'ज़ कहना ह़रामे क़त़ई।

اوخویشتن گم است کرا رہبری کند(1)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((من قال في القرآن بغير علم فليتبوء مقعده في النار))

"जो बे इ़ल्म कु़रआन के मा'ना में कुछ कहे, वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

رواه الترمذي وصحّحه عن ابن عباس رضي الله تعالٰى عنهما.(2)

दूसरे उन का वा'ज़ सुनना ह़राम : ﴿سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ﴾(3) तो सारे जल्से का वबाल ऐसे वाइ़ज़ की गरदन पर है من غير أن ينقص من أوزارهم شيئاً (बिग़ैर इस के कि उन के गुनाह में कुछ कमी हो)।

तीसरे वा'ज़ व पन्द को जम्ए़ माल या रुजूए़ ख़ल्क़ का ज़रीआ़ बनाना गुमराहिये मरदूद व सुन्नते नसारा व यहूद (यहूदियों और ईसाइयों का त़रीक़ा) है।

"दुर्रे मुख़्तार" में है : التذكير على المنابر للوعظ والاتعاظ سُنّة الأنبياء والمرسلين ولرئاسة ومال وقبول عامّة من ضلالة اليهود والنصارى.(4)

---

1. या'नी जो ख़ुद गुमराह हो वोह किसी और की क्या राहनुमाई करेगा।
2. इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हुए सह़ीह़ क़रार दिया है।

"سنن الترمذي"، باب ما جاء في الذي يفسر القرآن برأيه، الحديث ٢٩٥٩، ج٤، ص٤٣٩.

3. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "झूट ख़ूब सुनते हैं।" (پ٦، المائدة: ٤١)
4. मिम्बरों पर इस लिये वा'ज़ करना ताकि लोगों को नसीह़त हो और उस के असर से लोग अपनी इस्लाह़ की कोशिश करें तो येह अम्बिया व मुर-सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है और इस को लोगों पर अपनी बड़ाई जतलाने और ह़ुसूले माल व शोहरत का ज़रीआ़ बनाना यहूदो नसारा के गुमराह अफ़्आ़ल में से है। "الدرّ المختار"، كتاب الحظر والاباحة، ج٩، ص٦٩٥.

"ख़ुलासा" व "तातार ख़ानिया" व "हिन्दिय्या" में है :

الـواعظ إذا سأل الناس شيئاً

في مجلس لنفسه لا يحلّ له ذلک؛ لأنّه اكتساب الدنيا بالعلم.[1]

इमाम फ़क़ीह अबुल्लैस ने अगर ह़ाले ज़माना देख कर कि सल्त़नतों ने उ़-लमा की कफ़ालत छोड़ दी, बैतुल माल में उन का ह़क़ कि हमेशा उन के और उन के मु-तअ़ल्लिक़ीन के तमाम मसारिफ़ की किफ़ायत की जाए उन्हें नहीं पहुंचता वोह कस्बे मआ़श में मसरूफ़ हों तो अ़वाम को हिदायत का दरवाज़ा मस्दूद होता है अज़ान व इमामत व ता'लीम ब उजरत पर फ़तवाए मु-तअख़्ख़िरीन की त़रह़ क़ौले जम्हूर और ख़ुद अपने क़ौले साबिक़ से रुजूअ़ फ़रमा कर आ़लिम को इजाज़त दी कि वा'ज़ व पन्द के लिये मुफ़स्सलात (या'नी शहर के इर्द गिर्द के क़स्बात व देहात) में जाए और नुज़ूर ले, तो वोह मजबूरी की इजाज़त ब ह़ालते ह़ाजत, ख़ास आ़लिमे दीन के लिये है जो अहले वा'ज़ व तज़्कीर है, न (कि) जाहिलों या नाक़िसों के वासिते़ कि इन्हें वा'ज़ कहना ही कब जाइज़ है[2] जो उस की ज़रूरत के लिये इस मह़ज़ूर (या'नी शरीअ़त की

---

1 वा'ज़ व नसीह़त करने वाला जब लोगों से मजलिस में अपने लिये कुछ मांगे तो येह उस के लिये ह़लाल नहीं इस लिये कि येह इ़ल्म बेच कर दुन्या ख़रीदना है।

"الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الرابع، ج٥، ص٣١٩.

2 या'नी : इमाम अबुल्लैस समर क़न्दी ने जब येह मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि हुकूमतों ने उ़-लमाए किराम की कफ़ालत करना छोड़ दी है और उन्हें और उन के मु-तअ़ल्लिक़ीन को बैतुल माल से जो उन का ह़क़ मिला करता था मिलना बन्द हो गया है ऐसी सूरत में उ़-लमा अगर मआ़शी मस्रूफ़ियात में पड़ जाएंगे तो फिर अ़वाम की हिदायत और वा'ज़ व नसीह़त का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा, अपने साबिक़ा क़ौल से रुजूअ़ फ़रमाते हुए जम्हूर मु-तअख़्ख़िरीन के क़ौल को इख़्तियार करते हुए उ़-लमाए किराम को अज़ान व इक़ामत, ता'लीमे कुरआनो ह़दीस और वा'ज़ के लिये उजरत और नज़राने लेने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई तो उन उ़-लमा को जो वा'ज़ की सलाह़िय्यत भी रखते हैं, येह इजाज़त इस्लाह़े उम्मत के मुक़द्दस जज़्बे के पेशे नज़र ज़रूरतन दी गई थी, जाहिलों और शर-ई अह़कामात से बे बहरा लोगों को तो वा'ज़ कहना ही जाइज़ नहीं तो इस पर उजरत व नज़राने लेना उन के लिये कैसे जाइज़ हो जाएगा !

मन्अ़ कर्दा) की इजाज़त हो फिर उस के लिये भी सिर्फ़ बहाले ह़ाजत, ब क़दरे ह़ाजत इजाज़त होगी : لأنّ ما كان بضرورة تقدّر بقدرها (इस लिये कि जो शै किसी ज़रूरत के तह़त साबित हो वोह ब क़दरे ज़रूरत ही जाइज़ रहती है) न कि बिला ह़ाजत या ख़ज़ाना भरने के लिये, फिर आगे मदार निय्यत पर है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कि ﴿عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ﴾[1] है उस की ह़ालत जानता है कि अस्ल मक़्सूद हिदायत है, न (कि) जम्ए़ माल, जब तो उस मजबूरी के फ़तवे से नफ़्अ़ पा सकता है वरना दानाए सिर्रो अख़्फ़ा (हर पोशीदा से पोशीदा को जानने वाले रब عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर झूटा ह़ीला न चलेगा और दुन्या ख़र (बे वुक़ूफ़) और दीन फ़रोश ही नाम पाएगा, وَالْعِيَاذُبِاللّٰهِ تَعَالٰی।

उन्नीसवीं शर्त़ : किसी झूटे ह़ीले से धोका न दे। म-सलन : मस्जिद बनवानी है, मद्रसे को दरकार है। वग़ैरा वग़ैरा कि अगर सिरे से बे अस्ल था तो झूट हुवा और अगर मस्जिद व मद्रसा वाक़ेई थे उन के नाम से ले कर ख़ुद खाया तो ख़ियानत हुई और हर ह़ाल में फ़रेब भी हुवा और जो मिला माले ह़राम हुवा और एक सख़्त नापाक तर धोका वोह है कि बा'ज़ अह़मक़ जाहिल ख़ुदा ना तर्स माले ह़राम ह़ासिल करने को "غلہ تا ارزاں شود امسال سید میشوم"[2] पर अ़मल करते हैं, ऐसे गुनाहे कबीरा से दूर भागे।

सह़ीह़ ह़दीस शरीफ़ में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो नसब में अपने बाप के सिवा दूसरे की त़रफ़ अपने को निस्बत करे उस पर अल्लाह तआ़ला और फ़िरिश्तों और आदमियों, सब

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "दिलों की जानता है।" (پ۲۹، الملک: ۱۳)

2 या'नी इस साल अगर ग़ल्ला सस्ता हो जाए तो सरदार हो जाएं।

की ला'नत है अल्लाह तआला न उस का फ़र्ज़ क़बूल करे न नफ़्ल।"[1]

और बा'ज़ सु-फ़हाए बे अ़क़्ल जिन का बाप शैख़ या और क़ौम से है, सिर्फ़ मां के सय्यिदानी होने पर सय्यिद बन बैठते हैं और इस बिना पर अपने आप को सय्यिद कहते कहलाते हैं येह भी मह्ज़ जहालत व मा'सियत और वोही दूसरे बाप को अपना बाप बनाना है। शर-ए़ मुत़ह्हर में नसब बाप से लिया जाता है न (कि) मां से। قال الله تعالى : ﴿وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ﴾[2]

इमाम ख़ैरुद्दीन रमली ने "फ़तावा ख़ैरिया" फिर अ़ल्लामा शामी ने "रद्दुल मुह़तार" और दीगर उ़-लमा ने अपने अस्फ़ार में तसरीह़ फ़रमाई कि जिस की मां सय्यिदानी हो अगर्चे इस वजह से वोह एक फ़ज़ीलत रखता है मगर ज़िन्हार (हरगिज़) सय्यिद न हो जाएगा।[3]

अ़ल्लामा सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी ना-बुलुसी قُدِّسَ سِرُّهُ الْقُدْسِيُّ ने "ह़दीक़ए नदिय्या" में इर्शाद फ़रमाया कि ऐसा शख़्स अगर अपने आप को सय्यिद कहे तो इसी वईद में दाख़िल है कि इस पर ख़ुदा व मलाएका व नास की ला'नत और उस की इ़बादतें मरदूद और अकारत।[4]

وَالْعِيَاذُ بِاللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن.

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فضل المدينة... إلخ، الحديث: ١٣٧٠، ص٧١٢

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और जिस का बच्चा है।" (پ٢، البقرة: ٢٣٣)

इस आयते करीमा के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इर्शाद फ़रमाते हैं : "या'नी वालिद, इस अन्दाज़े बयान से मा'लूम हुवा कि नसब बाप की त़रफ़ रुजूअ़ करता है।"

3 "ردّ المحتار"، كتاب النكاح، باب الكفاءة، ج٤، ص١٩٨.

4 "الحديقة الندية"، النوع الرابع من الأنواع الستين الكذب، ج٢، ص٢٠٩-٢١٠.

बीसवीं शर्त़ : अगर वाक़ेई सय्यिद या शैख़, अ़-लवी या अ़ब्बासी ग़रज़ हाशिमी है तो माले ज़कात लेने के लिये अपना हाशिमी होना न छुपाए कि देने वाले ने अनजानी में दे दिया तो इसे तो लेना ह़लाल न होगा और अगर छुपाने के लिये अपनी दूसरी क़ौम ज़ाहिर की तो उसी (मज़्कूरा बाला) वई़दे शदीद का मौरिद (मिस्दाक़) है, وَالْعِيَاذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی ।﴾

सुवाल : साबिक़े मज़्कूर हुवा कि तर्के सुवाल बहर ह़ाल औला है (या'नी बेहतर है) ह़ालां कि बा'ज़ अकाबिरे दीन व मशाइख़े त़रीक़त ने सुवाल किया है, ह़ज़रते शैख़ श-रफ़ुद्दीन यह़्या मुनीरी अपने "मक्तूबात" में लिखते हैं : "शैख़ अबू सई़द ख़राज़ फ़ाक़े के वक़्त लोगों से सुवाल करते हैं। और ख़्वाजा अबू ह़फ़्स ह़द्दाद मग़रिब व इ़शा के बीच में ब क़दरे ज़रूरत एक दो दरवाज़े से मांग लेते।

ख़्वाजा सुफ़्यान सौरी भी सफ़र में सुवाल करते और ख़्वाजा इब्राहीम अदहम जब कि जामेए़ बसरा में मो'तकिफ़ थे तीन दिन बा'द इफ़्त़ार फ़रमाते, उस रोज़ सुवाल करते।"(1)

قال الرضاء : इन ह़ज़राते उ़लिय्या قُدِّسَتْ أَسْرَارُهُمْ के येह अह़वाल अ़ल्लामा मुनावी ने भी "तैसीर शर्हे जामेए़ सग़ीर" में ज़ेरे ह़दीस : ((من سأل من غير فقر فإنّما يسأل الجمر))(2) ज़िक्र किये और ह़ज़रते अबू सई़द ख़राज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की निस्बत कहा : हंगामे फ़ाक़ा हाथ फैला कर "ثم شيء لله" फ़रमाते।(3)﴾

---

1 "قوت القلوب"، كتاب حكم المسافر والمقاصد في الأسفار، ج٢، ص٣٩٩.

و"البريقة المحمودية"، الثامن والعشرون حبّ المال للحرام، ج٤، ص٥٧. (شامله)

2 जिस ने बिग़ैर फ़क़्र के मांगा तो उस ने अंगारा मांगा।

3 "التيسير"، حرف الميم، ج٢، ص٨١٦. (شامله)

जवाब : मशाइख़े इ़ज़ाम व औलियाए किराम कभी मफ़्ज़ूल को इख़्तियार फ़रमाते हैं, इन के तमाम आ'माल व अफ़्आ़ल व अन्वाए़ अह़वाल में अग़राज़े आ़लिया हैं। बुज़ुर्गों ने वक़्ते इबाह़ते शरइय्या सुवाल में तीन फ़ाएदे तजवीज़ किये हैं, ब नज़र इन फ़वाइद के कभी सुवाल किया और अपने मुरीदों को इस का इज़्न दिया है।

पहला फ़ाएदा : रियाज़ते नफ़्स।

ख़्वाजा शक़ीक़ बल्ख़ी के एक मुरीद ख़्वाजा बा यज़ीद के पास आए, आप ने उन के पीर का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया : अ़र्ज़ की : ख़ल्क़ से फ़ारिग़ और ख़ुदा पर मु-तवक्किल हो कर बैठ गए हैं, फ़रमाया : मेरी त़रफ़ से शक़ीक़ से कहना दो[2] रोटियों के वासित़े ख़ुदा को न आज़माओ, नामा तवक्कुल का त़ै कर के भूक के वक़्त भीक मांग लिया करो, कहीं इस फ़े'ल की शामत से वोह मुल्क ज़मीन में न धंस जाए।[1]

قال الرضاء : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल फ़र्ज़े ऐ़न है :

قال اللّٰه تعالٰى: ﴿وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾

"अल्लाह ही पर तवक्कुल करो अगर मुसल्मान हो।" (پ٦، المائدة: ٢٣)

और फ़रमाता है : ﴿اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ﴾

"अगर तुम ख़ुदा पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो अगर मुसल्मान हो।" (پ١١، يونس: ٨٤)

ख़ुसूसन तसव्वुफ़ कि **इन्क़ित़ाअ़ अ़निल ग़ैरे** (या'नी : ग़ैर से ला तअ़ल्लुक़ हो जाने) बल्कि **फ़ना अ़निल ग़ैर** (या'नी : दूसरों की ख़बर ही न होने) बल्कि **नफ़िये मुत्लक़ ग़ैर** है (यहां तक कि अपनी और ग़ैर की

---

1 "كشف المحجوب"، باب آدابهم في السؤال وتركه، ص ٤٠٥

ज़ात से बिलकुल बे नियाज़ हो जाने का नाम है) इस में नामए तवक्कुल क्यूंकर तै करने का हुक्म हो सकता है। हां ! तवक्कुल क़ल्ब से तरहे अस्बाब (या'नी : नए अस्बाब की तलाश) है न कि अ़मल में तर्के अस्बाब[1], खुद हुक्म फ़रमाता है : ﴿فَانۡتَشِرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ وَابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ اللّٰہِ﴾

"ज़मीन में फैल जाओ और उस का फ़ज़्ल ढूंडो।" (پ۲۸، الجمعة: ۱۰)

व लिहाज़ा जब एक सहाबी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! अपना नाक़ा छोड़ दूं और खुदा पर तवक्कुल करूं ? फ़रमाया : बल्कि ((قَيِّدْ وَتَوَكَّلْ)).

"उस का पाउं बांध दे और तवक्कुल कर" या'नी : खुदा पर भरोसा कर।

رواه البيهقي في "الشعب" بسند جيّد عن عمرو بن أُميّة الضَّمْرِيِّ والترمذي بلفظ: ((اعقلها وتوكّل)) عن أنس رضي الله تعالٰى عنهما. [2]

---

1 या'नी : तवक्कुल के मा'ना येह नहीं कि अस्बाब को तर्क कर के बैठा रहे और हाथ पैर धरे कहे : अल्लाह तआ़ला हर शै पर कुदरत रखता है चुनान्चे वोह मुझे बिग़ैर कोशिश के भी रोज़ी देगा। बिला शुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत्लक़ है और ऐसा करना उस के लिये कुछ मुश्किल नहीं मगर बन्दे की मज़्कूरा सोच के पेशे नज़र कोशिश न करते हुए बैठ जाना, अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत के ख़िलाफ़ है कि आ़लमे अस्बाब या'नी : दुन्या में रह कर तर्के अस्बाब गोया हिक्मते इलाहिय्यह को बातिल करने के मु-तरादिफ़ है। हां ! तवक्कुल के मा'ना येह हैं कि उन अस्बाब को अस्ल न समझे और न ही उन पर भरोसा करे बल्कि उसी पर भरोसा करे कि जो इन अस्बाब का पैदा करने वाला और मुसब्बिबे ह़क़ीक़ी है।

2 इस ह़दीसे मुबा-रका को बैहक़ी ने "शु-अ़बुल ईमान" में ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से स-नदे जय्यिद के साथ रिवायत किया और तिरमिज़ी ने "اعقلها وتوكّل" के अल्फ़ाज़ के साथ इस को ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।

"شعب الإيمان"، باب التوكل والتسليم، الحديث: ۱۲۱۱، ج۲، ص۸۰.

و"سنن الترمذي"، كتاب الزهد، الحديث: ۲۵۲۵، ج٤، ص۲۳۲.

برتوکل پائے اشتر را نبید (1)

आ़लमे अस्बाब में रह कर तर्के अस्बाब गोया इब्त़ाले ह़िक्मते इलाहिय्यह है।

﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ﴾

"जैसे कोई हथेलियां पानी की त़रफ़ फैलाए हुए कि वोह उस के मुंह में पहुंच जाए और वोह पहुंचने वाला नहीं।" (پ۱۳، الرعد: ۱٤)

सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इसी को मन्अ़ फ़रमाया, रहा इज़्ने सुवाल।

أقول : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिस त़रह़ कुछ फ़राइज़ व मुह़र्रमात हैं जैसे : नमाज़ व ज़िना, वैसे ही क़ल्ब पर भी हैं, और इन की फ़र्ज़िय्यत व ह़ुरमत इसी त़रह़ यक़ीनी क़त़्ई ज़रूरिय्याते दीन से है जैसे सब्रो शुक्र व तवाज़ोअ़ व इख़्लास की फ़र्ज़िय्यत, जज़्अ़ (बे सब्री और वावेला पन) व कुफ़्रान व तकब्बुर व रिया की ह़ुरमत।

अ़वाम अगर बहुत मु-तवज्जेह तक़्वा व त़ाअ़त हुए इन्हीं फ़राइज़ व मुह़र्रमाते ब-दनिय्या पर क़नाअ़त करते और फ़राइज़ व मुह़र्रमाते क़ल्बिय्या से अस्लन काम नहीं रखते, पढ़ें नमाज़ और करें तकब्बुर और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए :

﴿اَلَیۡسَ فِیۡ جَہَنَّمَ مَثۡوًی لِّلۡمُتَکَبِّرِیۡنَ﴾

"क्या जहन्नम में ठिकाना नहीं मु-तकब्बिरों का।" (پ۲٤، الزمر: ٦٠)

अरबाबे क़ल्ब ब शिद्दत मु-तवज्जेह ब क़ल्ब होते हैं, ज़ाहिरी बात़िनी दोनों फ़राइज़ बजा लाते और दोनों के तमाम मुह़र्रमात से एह़तिराज़ फ़रमाते हैं, फिर ज़ाहिरी सलाह़ सह्ल है (या'नी : आ'माले ज़ाहिरी को दुरुस्त कर लेना आसान है) और बात़िनी इस से बहुत मुश्किल कि

(1) या'नी ऊंट के पाउं पर तवक्कुल न करो।

जवारेह़ (बदन के ज़ाहिरी आ'ज़ा) को नेक काम में लगाना, बद से बचाना, एक हिम्मत का काम है और क़ल्ब से रज़ाइल धो देना, फ़ज़ाइल से आरास्ता कर लेना, कारे दारद (इस के लिये अहम काम है) येह मुंह का निवाला नहीं बल्कि बदन भी ताबेए क़ल्ब है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((إنّ في الجسد مضغة إذا صلحت

صلُح الجسد كلّه وإذا فسدت فسد الجسد كلّه ألا وهي القلب))

"बेशक बदन में एक गोश्त पारा है वोह संवर जाए तो सब बदन बन जाए और जब वोह बिगड़ जाए तो सब बदन ख़राब हो जाए, सुनते हो ! वोह दिल है।"(1)

ख़ल्क़ की कस्रते मुख़ा-लत़त (या'नी : लोगों से ज़ियादा मेलजोल वग़ैरा) आ'माले ज़ाहिर में भी बहुत मुख़िल होती है, हज़ारों गुनाहे जिस्मानी तो वोह हैं कि तन्हाई में हो ही नहीं सकते और जो हो सकते हैं वोह भी बह़ाले मुख़ा-लत़त ज़ाइद होते हैं और सोह़बते अ़वाम क़ल्ब के लिये तो बहुत ही ख़त़रनाक है, मगर ब ज़रूरते शरइय्या जैसे मुफ़्तिये शर-अ़ व क़ाज़िये ह़क़ व मुदर्रिसे दीन व वाइज़े हुदा और ग़ैर मालदार के तुरुक़े कस्ब (या'नी : ग़ैर मालदार का मुआ़शी ज़रूरिय्यात के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े व ज़राएअ़ अपनाना) तिजारत, ज़राअ़त, नोकरी, मज़दूरी हैं और इन सब में मुख़ा-लत़त नास की ह़ाजत और इस्लाहे़ नफ़्स के लिये अ़-दमे फ़राग़त है और तस्ह़ीहे़ फ़राइज़ व इज्तिनाबे मुह़र्रमात अहम ज़रूरिय्याते दीनिय्या से है और ज़रूरते दीनी के वक़्त सुवाल ह़लाल, येह मा'ना हैं उन के इज़्न और ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ के इर्शादे रियाज़ते नफ़्स के, न वोह जो आज कल के मुड़ चरे जोगियों (शो'बदा बाज़ों) ने इख़्तियार किया है कि अच्छे ख़ासे जवान तन्दुरुस्त, और भीक मांगने का पेशा और इस्लाहे़ क़ल्ब दरकार, इस्लाहे़ ज़ाहिर से बर कनार और मन्अ़ कीजिये तो शर-ए़ मुत़ह्हर से मुआ़-रज़े को तय्यार, कि भीक मांगना भी

1 "صحيح البخاري"، كتاب الإيمان، باب فضل من استبرأ لدينه، الحديث:٥٢، ج١، ص٣٣

रियाज़ (या'नी मुजा-हदा) है, والكاسب حبيب الله (या'नी : कस्बे ह़लाल के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह तआला का महबूब बन्दा है) येह ह़रामे क़त़ई है और शर-अ़ का मुक़ाबला और सख़्त तर।

﴿وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ﴾

दूसरा फ़ाएदा : अपनी क़द्रो क़ीमत पर मु-तनब्बेह होना। जब शिब्ली मुरीद हुए ख़्वाजा जुनैद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तू मुल्के शाम का अमीरुल उ-मरा था, जब तक बाज़ार में भीक न मांगेगा दिमाग़ तेरा नख़्वत से ख़ाली न होगा (या'नी तेरे दिमाग़ से घमन्ड व ग़ुरूर न जाएगा) और अपनी क़द्रो क़ीमत न जानेगा।" इब्तिदा इब्तिदा में तो लोगों ने रईस जान कर बहुत कुछ दिया आख़िर रफ़्ता रफ़्ता हर रोज़ बाज़ार उन का सुस्त होता जाता, एक साल के बा'द येह नौबत पहुंची कि सुब्ह़ से शाम तक फिरते कोई कुछ न देता, पीर से ह़ाल अ़र्ज़ की, फ़रमाया : क़द्र तेरी येह है कि कोई तुझे कोड़ी को नहीं पूछता।(1)

قال الرضاء : सुवाल बे ज़रूरते शरइय्या अपने लिये ह़राम है और मिस्कीन व ह़ाजत मन्द मुसल्मानों के लिये मांगना ह़लाल बल्कि सुन्नत से साबित है। और जब मस्ऊलीन पर ज़ाहिर न किया जाए कि सुवाल दूसरों के लिये है तो ज़रूर वोह अपने ही लिये सुवाल जानेंगे और जो ह़ालत नफ़्स पर वहां त़ारी होती यहां भी होगी। ख़ुसूसन बाज़ार में दुकान दुकान गदया गरों की त़रह़ मांगते फिरना, ख़ुसूसन जब कि रोज़ाना एक मुद्दते दराज़ तक हो कि अब तो अगर येह कह कर भी होता कि औरों के लिये मांगते हैं जब भी शुदा शुदा (आहिस्ता आहिस्ता) वोही नौबत पहुंचती कि कोई कुछ न देता, मगर इस के अ़-दमे ज़िक्र में कस्रे नख़्वत ब द-र-जए अतम है।(2)

---

1 "کشف المحجوب"، باب آدابہم فی السؤال و ترکہ، ص۴۰۵-۴۰۶

2 या'नी : लोगों को येह न बताते हुए मांगना कि दूसरे मिस्कीनों के लिये मांगता हूं बल्कि ब ज़ाहिर अपने लिये ही मांगता हो, इस त़रह़ मांगने में तकब्बुर की काट ज़ियादा होती है।

इस दूसरे त़रीक़ए सुवाल में जब कि खु़द ज़रूरते शरइय्या न हो, ह़ज़राते उ़लिय्या येही सूरत मल्ह़ूज़ रखते होंगे कि सुवाल किया और ख़ल्क़ से छुप कर खु़फ़्या तसद्दुक़ फ़रमा दिया, मसाकीन की ह़ाजत रवाई हुई, मख़्लूक़ ने तसद्दुक़ की फ़ज़ीलत पाई, खु़द इ़लावा तसद्दुक़ इस तकब्बुर शिकनी की दौलत मिली। (1) ﴿هذا ما عندي، والله تعالٰى أعلم.﴾

तीसरा फ़ाएदा : रिआ़यते अदब कि माल सब खु़दा का है, ख़ल्क़ सिर्फ़ वकील व निगहबान है, खु़द बादशाह से ह़क़ीर चीज़ मांगना और गाह बेगाह (वक़्त बे वक़्त) इसी से हर क़िस्म का सुवाल करना ज़ैब नहीं देता।

यह्या राज़ी ने अपनी मां से कुछ मांगा, कहा : खु़दा से मांग, फ़रमाया : ऐ मादरे मेह्रबान ! मुझे शर्म आती है कि ऐसी चीज़ खु़दा तआ़ला से मांगूं और जो कुछ तुम्हारे पास है वोह भी खु़दाए तआ़ला का जानता हूं, या'नी : येह सुवाल भी दर ह़क़ीक़त खु़दा से है, मगर ऐसी ह़क़ीर चीज़ बिला वासित़ा उस से मांगना नहीं चाहता। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (और अल्लाह तआ़ला सब से बेहतर जानने वाला है)।

قال الرضاء : इस के मु-तअ़ल्लिक़ बा'ज़ कलाम मस्अलए तर्के दुआ़ में मस्तूर[2] और अस्ल येह है कि जब ह़ाजत मु-तह़क़्क़क़ और तुरुके कस्ब की वोह ह़ालत कि ऊपर मज़्कूर, और तर्के मुत़लक़ सबब की इजाज़त नहीं तो **रुजूए इलस्सुआल** आप ही ज़रूर। मगर लाज़िम है कि ख़ल्क़ पर नज़रे ज़ाहिर हो और ह़क़ीक़ते नज़र मालिक व मो'त़िये ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ पर मक़्सूर, ऐसी ह़ालत में मह़ज़ इब्त़ाले अस्बाब चाह कर या अल्लाह ! टुकड़ा दे, या अल्लाह ! पैसा दे, कहता रहना आप ही अ-दबे शर-अ़ से दूर, هذا ما ظهر لي

---

1. येह कलाम मेरे नज़्दीक है और सब से बेहतर इ़ल्म तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को है।
2. इस कलाम को जानने के लिये **फ़स्ले हफ़्तुम** के **मस्अला 5** नीज़ फ़स्ले दहुम का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

فافهم، والله تعالٰی أعلم फिर येह भी वहां है जहां मांगना सुवाल हो, महल्ले इम्बिसाते ताम (या'नी ऐसी जगह जहां के रहने वालों में आपस में बे तकल्लुफ़ी हो) में कि बाहम इत्तिहाद हो एक दूसरे के माल में ऐसी मुग़ा-यरत (या'नी ऐसा इम्तियाज़) न हो कि मांगने को ज़िल्लत व नंगो आ़र या मांगना समझें[1] जैसे : मां, बाप, औलाद, ज़ौज व ज़ौजा कि इसी अ़दम मुग़ा-यरत के बाइ़स इन्हें देने से शरअ़न ज़कात अदा नहीं होती कि येह देना न हुवा बल्कि गोया अपने सन्दूक़्चे के एक ख़ाने से निकाल कर दूसरे में रख देना। तो वहां मु-तआ़रिफ़े इम्बिसात का अ़मल दर आमद अस्लन सुवाल نُهِيَ عَنْهُ में दाख़िल नहीं[2] बल्कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है और फ़िक़्ह भी इस के जवाज़ पर शाहिद है। "फ़तावा हिन्दिय्या" में "मुलतक़त" से है :

عن الثوري رحمه الله تعالٰی: أنّه سئل عن الاستمداد من خبز غيره قال: هو مال غيره فليستأذنه ولا أحبّ له أن يفعل من غير استئذان ولا إشارة ومهما أمكن لا يستأذن؛ لأنّه سؤال إلّا أن يكون بينهما انبساط.[3]

---

1 या'नी दो शख़्सों के माबैन ऐसे ख़ुश गवार तअ़ल्लुक़ात और बे तकल्लुफ़ी हो कि एक दूसरे से कोई चीज़ मांगने को अपनी ज़िल्लत व बे इ़ज़्ज़ती तसव्वुर न करें।

2 या'नी घर के अफ़राद म-सलन मां बाप बीवी वग़ैरा से मांगना इस सुवाल में दाख़िल नहीं जिस की शर-अ़ में मुमा-न-अ़त वारिद हुई।

3 "सुफ़्यान सौरी से किसी ने दूसरे की रोटी से नफ़्अ़ उठाने के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया कि वोह तो दूसरे का माल है उस से इजाज़त लेनी चाहिये और कोई शख़्स किसी से सरा-ह़तन, इशा-रतन या जहां जहां ख़दशा हो कि येह उस से इजाज़त लिये बिग़ैर उस के माल से नफ़्अ़ उठाएगा तो मैं उस शख़्स के इस त़रह़ के फ़े'ल को पसन्द नहीं रखता हां ! जब कि उन दोनों के माबैन इम्बिसात (बे तकल्लुफ़ी) हो तो जाइज़ है।" "الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الحادي عشر، ج٥، ص٣٤١

मुरीदों से शैख़ की फ़रमाइश इसी अस्ल के नीचे आ सकती है। जब कि इम्बिसात़ मु-तह़क़्क़क़ हो और ह़ालत अ़-दमे बार पर नात़िक़।(1) वरना सुवाल से बदतर है कि साइल मजबूर नहीं कर सकता और यहां आदमी लिह़ाज़ के बाइ़स मजबूर हो जाता है, बह़ाले ना गवारी जो कुछ लिया, वोह सुवाल ही नहीं बल्कि ज़ुल्म व ग़स्ब व मुसा-दरह (डंड व तावान) है। येह दक़ीक़ा **वाजिबुल्लिह़ाज़** है (इस नुक्ते का लिह़ाज़ बहुत ज़रूरी है) कि बहुत मु-तसव्विफ़ए ज़माना (इस ज़माने के नाम निहाद सूफ़ी) इस में मुब्तला हैं, उन्हें इस का लिह़ाज़ फ़र्ज़ है और मुरीदीन को लाज़िम कि अपना माल व जान सब अपने पीर की मिल्क समझें, पीर कि शराइत़े पीरी का जामेअ़ हो, नाइबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم है और अइम्मए दीन फ़रमाते हैं : जो अपने आप को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की मिल्क न जाने, ह़लावते सुन्नत उस के मज़ाक़े जान तक न पहुंचे (या'नी : वोह सुन्नत की लज़्ज़त से मह़रूम रहेगा)।

قاله الإمام سهل التُّستَرِيُّ نقله الإمام القسطلاني في "المواهب" وغيره.(2)

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की :

هل أنا ومالي إلّا لك يا رسول

"मैं और मेरा माल हुज़ूर के सिवा किस के हैं ? या रसूलल्लाह "।(3)

وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی اَعْلَم۔

---

1 शैख़ का अपने मुरीदों से कोई चीज़ मांगना जब कि मुरीद और शैख़ के दरमियान इम्बिसात़ पाया जाए और मुरीद की ह़ालत येह बता रही हो कि उस पर बोझ नहीं।

2 इमाम सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी ने येह बात कही है और इमाम अह़मद क़स्त़लानी ने "अल मवाहिबुल्लदुन्निय्यह" वग़ैरा में इस बात को नक़्ल फ़रमाया है।

"المواهب اللدنية"، المقصد السابع، الفصل الأول، ج٢، ص ٤٩٤.

3 "سنن ابن ماجه"، باب في فضائل أصحاب رسول الله، الحديث: ٩٤، ج١، ص٧٢.

ख़ातिमा चन्द तरकीबे नमाज़े ह़ाजत में

तरकीबे अव्वल (1) : वुज़ूए ताज़ा अच्छी त़रह़ करे, दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े, बा'दे सलाम अ़र्ज़ करे :

((اَللّٰھُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُکَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَبِیِّ الرَّحْمَةِ، یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنِّيْ اَتَوَجَّهُ بِکَ اِلٰی رَبِّيْ فَیَقْضِيْ حَاجَتِيْ))(1)

और अपनी ह़ाजत ज़िक्र करे, येह दुआ़ सह़ीह़ ह़दीस में ता'लीम फ़रमाई।

قال الرضاء : एक नाबीना ख़िदमते अक़्दस ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अपनी ना बीनाई का शाकी हुवा, ह़ुज़ूर ने येह नमाज़ व दुआ़ इर्शाद फ़रमाई, उन्हों ने मस्जिद में जा कर पढ़ी, कुछ देर न गुज़री थी कि दोनों आंखें खुल गईं गोया कभी अन्धे न थे।

येह ह़दीस तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व त़-बरानी व ह़ाकिम व बैहक़ी ने रिवायत की, इमाम तिरमिज़ी फ़रमाते हैं : येह ह़दीस ह़सन सह़ीह़ ग़रीब है, ह़ाकिम ने कहा : बुख़ारी व मुस्लिम दोनों की शर्तों पर सह़ीह़ है, इमाम अबुल क़ासिम त़-बरानी, फिर इमाम बैहक़ी, फिर इमाम मुन्ज़िरी वग़ैरहुम अइम्मा ने फ़रमाया : सह़ीह़ है।(2)

---

1 इलाही ! मैं तुझ से सुवाल करता और तेरी त़रफ़ तवज्जोह करता हूं हमारे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के वसीले से जो मेह्रबानी वाले नबी हैं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मैं आप के वसीले से अपने रब की त़रफ़ तवज्जोह करता हूं कि मेरी ह़ाजत बर आए।

2 "سنن الترمذي"، باب في انتظار الفرج وغير ذلك، الحديث: ٣٥٨٩، ج٥، ص٣٣٦، بألفاظ متقاربة.

و"المستدرك" للحاكم، كتاب الدعاء... إلخ، باب دعاء ردّ البصر، الحديث: ١٩٥٢، ج٢، ص٢٠٣، بألفاظ متقاربة.

أقول : ह़दीस में "**या मुह़म्मद**" है, मगर इस की जगह "**या रसूलल्लाह**" कहना चाहिये कि सह़ीह़ मज़हब में हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करना ना जाइज़ है, उ़-लमा फ़रमाते हैं : अगर रिवायत में वारिद हो जब भी तब्दील कर लें, येह मस्अला हमारे रिसाला "**تَجَلِّي الْيَقِيْنِ بِأَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنِ**" में मुफ़स्सल व मुशर्रह़ मज़्कूर है,(1) व लिहाज़ा ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने "**या रसूलल्लाह**" फ़रमाया, وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

ثُمَّ أقول : इस दुआ़ के अव्वल व आख़िर ह़म्दे इलाही व दुरूदे रिसालत पनाही صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِ और आमीन पर ख़त्म और शुरूअ़ में अल्लाह तआ़ला को अस्माए त़य्यिबा से निदा वग़ैरा ज़ालिक जो आदाबे दुआ़ गुज़रे, ज़रूर बजा लाए और यूंही तमाम तरकीबात में समझे, दाबे आ़म है (या'नी : आ़म त़रीक़ा है) कि जिन उमूर की तफ़्सील और किसी अम्रे आ़म में मुत़्लक़न इन की ह़ाजत दूसरी जगह से मा'लूम हो, ख़ास मुअ़य्यन में इन के ज़िक्र की ह़ाजत नहीं समझी जाती।(2)﴿

---

(1) इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने रिसाले "تَجَلِّي الْيَقِيْنِ بِأَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنِ" में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को "या मुह़म्मद" पुकारने के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : "उ़-लमा तस्रीह़ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करनी ह़राम है, और वाक़ेई मह़ल्ले इन्साफ़ है जिसे उस का मालिको मौला तबा-र-क व तआ़ला नाम ले कर न पुकारे गु़लाम की क्या मजाल कि राहे अदब से तजावुज़ करे बल्कि इमाम ज़ैनुद्दीन मराग़ी वग़ैरा मुह़क़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : अगर येह लफ़्ज़ किसी दुआ़ में वारिद हो जो ख़ुद नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाई जैसे : दुआ़ए ((يَا مُحَمَّدُ إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِكَ إِلٰى رَبِّيْ)) ताहम उस की जगह "**या रसूलल्लाह**", "**या नबिय्यल्लाह**" चाहिये, ह़ालां कि अल्फ़ाज़े दुआ़ में ह़त्तल वुस्अ़ तग़यीर नहीं की जाती।" ("फ़तावा र-ज़विय्या", जि. 30, स. 157)

(2) या'नी आ़म तौ़र पर येह त़रीक़ा है कि जब किसी आ़म मुआ़-मले में उस के मु-तअ़ल्लिक़ा उमूर की तफ़्सीलात को मुत़्लक़न बयान किया गया हो तो किसी ख़ास मुआ़-मले में उन तफ़्सीलात को दोबारा ज़िक्र करने की ह़ाजत नहीं रहती।

तरकीबे दुवुम (2) : नमीरी व इब्ने बशकवाल, वहीब बिन वरद से रिवायत करते हैं : जो बन्दा बारह रक्अ़त, हर रक्अ़त में सू-रतुल फ़ातिहा व आ-यतुल कुर्सी व सूरए इख़्लास पढ़े फिर सज्दे में येह कलिमात कहे :

سُبۡحَانَ الَّذِيۡ لَبِسَ الۡعِزَّ وَقَالَ بِهٖ، سُبۡحَانَ الَّذِيۡ تَعَطَّفَ بِالۡمَجۡدِ وَتَكَرَّمَ بِهٖ، سُبۡحَانَ الَّذِيۡ أَحۡصٰى كُلَّ شَيۡءٍ بِعِلۡمِهٖ، سُبۡحَانَ الَّذِيۡ لَا يَنۡبَغِي التَّسۡبِيۡحُ إِلَّا لَهٗ، سُبۡحَانَ ذِي الۡمَنِّ وَالۡفَضۡلِ، سُبۡحَانَ ذِي الۡعِزِّ وَالۡكَرَمِ، سُبۡحَانَ ذِي الطَّوۡلِ وَالنِّعَمِ أَسۡأَلُكَ بِمَعَاقِدِ الۡعِزِّ مِنۡ عَرۡشِكَ وَمُنۡتَهَى الرَّحۡمَةِ مِنۡ كِتَابِكَ، وَبِاسۡمِكَ الۡعَظِيۡمِ الۡأَعۡظَمِ وَجَدِّكَ الۡأَعۡلٰى وَكَلِمَاتِكَ التَّآمَّاتِ كُلِّهَا لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ أَنۡ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ. (1)

---

(1) पाक है वोह ज़ात कि उसी के लिये इ़ज़्ज़त का लिबास है और जिस ने इ़ज़्ज़त के साथ कलाम फ़रमाया, पाक है वोह ज़ात जिस ने बुज़ुर्गी के साथ एह़सान फ़रमाया और उसी के साथ करम फ़रमाया, पाक है वोह ज़ात कि जिस का इ़ल्म काएनात की सारी अश्या को घेरे हुए है, पाक है वोह ज़ात और उसी के लिये बुज़ुर्गी है, पाकी है उसे कि साहि़बे फ़ज़्लो एह़सान है, पाकी है उसे कि साहि़बे इ़ज़्ज़त व करम है, पाकी है उसे कि साहि़बे क़ुदरत व ग़ना और इन्आ़म फ़रमाने वाला है, इलाही ! मैं तुझ से तेरे अ़र्श की दाइमी इ़ज़्ज़त के वसीले से और तेरी किताब या'नी क़ुरआने पाक जो कि रह़मत का मुन्तहा है उस के वसीले से सुवाल करता हूं और तेरे इस्मे आ'ज़म और तेरी आ'ला बुज़ुर्गी और तेरे सब कलिमाते ताम्मा के वसीले से सुवाल करता हूं कि जिन से कोई नेकूकार और कोई इ़स्यां शिआ़र ज़र्रा बराबर इन्ह़िराफ़ नहीं कर सकता कि तू अपने मह़बूब मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेज।

फिर ख़ुदाए तआला से वोह सुवाल करे जिस में गुनाह नहीं म–सलन कहे : أَنْ تَقْضِيَ حَاجَتِيْ هٰذِهٖ (मेरी येह ह़ाजत बर आए) और उस ह़ाजत का ज़िक्र करे, अल्लाह तआला रवा फ़रमाए।(1)

वह्ब कहते हैं : हमें पहुंचा है कि येह तरकीब अपने बे वुक़ूफ़ों और अब्लहों (या'नी : नादानों) को न सिखाओ कि गुनाहों पर दिलेरी न करें।(2)

तरकीबे सिवुम (3) : अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत की : नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स ख़ुदा से कुछ ह़ाजत रखता हो तन्हा मकान में बा वुज़ूए कामिल चार रक्अ़त पढ़े, पहली रक्अ़त में फ़ातिह़ा के बा'द ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ (पूरी सूरए इख़्लास) दस बार, दूसरी में बीस बार, तीसरी में तीस, चौथी में चालीस बार पढ़े फिर पचास बार ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ और सत्तर मर्तबा लाह़ौल पढ़े, अगर उस पर क़र्ज़ हो अदा हो जाए और जो वत़न से दूर हो ख़ुदा तआला उसे घर पहुंचाए और जो आस्मान के बराबर गुनाह रखता हो, और इस्तिग़फ़ार करे ख़ुदा उस के गुनाह बख़्शे और जो औलाद न रखता हो, ख़ुदा उसे औलाद दे और जो दुआ़ करे ख़ुदा उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाए, और जो ख़ुदा से दुआ़ नहीं करता, ख़ुदा उस से नाराज़ होता है।"

अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं : अपने अह़मक़ों को येह दुआ़ न सिखाओ कि इस से ना फ़रमानी पर इस्तिआ़नत करेंगे।

قال الرضاء : तरकीबे चहारुम (4) : इमाम अह़मद अपनी "मुस्नद" में अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रावी : मैं ने हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो वुज़ू कामिल त़ौर पर

---

1. "إحياء العلوم"، كتاب أسرار الصلاة ومهماتها، ج١، ص٢٧٨، بحذف ألفاظ قليل.
2. "إحياء العلوم"، كتاب أسرار الصلاة ومهماتها، ج١، ص٢٧٨.

करे या'नी : ब मुराआ़ते सुनन व आदाब (या'नी : सुनन व आदाबे वुज़ू को मल्हूज़ रखे), फिर दो रक्अ़तें पूरे तौ़र पर पढ़े या'नी : ब इस्तिज्माए सुनन व मुस्तह़ब्बात व हुज़ूरे क़ल्ब (या'नी : सुनन व मुस्तह़ब्बात की रिआ़यत करते हुए ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ पढ़े) फिर जो कुछ अल्लाह तआ़ला से मांगे, आ़जिल या आजिल, अल्लाह तआ़ला उसे अ़ता फ़रमाए।(1)

इमाम ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी फिर इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी फ़रमाते हैं : "इस की सनद ह़सन है।"(2)

अक़ूल : लफ़्ज़ ह़दीस में यूं है : ((أعطاه الله ما سأل معجّلاً أو مؤخّراً)) और इस के दो2 मा'ना मोह़्तमल :

एक येह कि दुन्या व आख़िरत की जो चीज़ अल्लाह तआ़ला से मांगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ता फ़रमाए।

दूसरे येह कि जो कुछ मांगे अल्लाह तआ़ला अ़ता करे, जल्द या देर में लिहाज़ा फ़क़ीर ने तरजमा भी ऐसे लफ़्ज़ों से किया जो दोनों मा'नों को मुह़्तमल रहें।

तरकीबे पन्जुम (5) : तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि उन की वालिदा उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक दिन सुब्ह़ को ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : हुज़ूर! मुझे कुछ ऐसे कलिमात ता'लीम फ़रमा दें कि मैं अपनी नमाज़ में कहा करूं, इर्शाद फ़रमाया : दस बार اَللّٰہُ اَکْبَرُ, दस बार سُبْحٰنَ اللّٰہ, दस बार

---

(1) "المسند"، للإمام أحمد، مسند القبائل، حديث أبي الدرداء عويمر، الحديث: ٢٧٥٦٧، ج١٠، ص٤١٩.

(2) "اللآلي المصنوعة" للسيوطي، كتاب الصلاة، ج٢، ص٤١.

اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह, फिर जो चाहें मांग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : نَعَمْ نَعَمْ، अच्छा अच्छा।''

इमाम तिरमिज़ी फ़रमाते हैं : येह ह़दीस ह़सन है। इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान इल्तिज़ामन फ़रमाते हैं : सह़ीह़ है। ह़ाकिम ने कहा : बर शर्ते अह़ादीसे ''सह़ीह़ मुस्लिम'', सह़ीह़ है।[1] وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن.

أقول : इस का त़रीक़ा यूं हो कि दो रक्अ़त नफ़्ल ब वुज़ूए ताज़ा व ह़ुज़ूरे क़ल्ब पढ़े, क़ा'दे में बा'द दुरूद शरीफ़ اَللّٰهُ اَكْبَرُ , سُبْحٰنَ اللّٰه, اَلْحَمْدُ لِلّٰه दस दस बार कह कर दुआए मक़्सूद ऐसे लफ़्ज़ों से करे जो मुख़िल्ले नमाज़ न हों।

म-सलन : أَسْأَلُکَ أَنْ تَقْضِيَ لِيْ حَاجَاتِيْ كُلَّهَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مَا كَانَ مِنْهَا لِيْ خَيْرًا وَّلَکَ رِضًا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ! آمين.[2]

तरकीबे शशुम (6) : तिरमिज़ी व इब्ने माजह व ह़ाकिम, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रावी, ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जिसे अल्लाह तआ़ला या

---

1 "سنن الترمذي، كتاب الوتر، باب ما جاء في صلاة التسبيح، الحديث: ٤٨٠، ج٢، ص٢٣.
و"المستدرك" للحاكم، باب صلاة حفظ... إلخ، الحديث: ١٢٣٢، ج١، ص٦٢٦.
و"صحيح ابن خزيمة" كتاب الصلاة، باب إباحة التسبيح... إلخ، الحديث: ٨٥٠، ج٢، ص٣١.

2 इलाही ! मैं सुवाल करता हूं कि दुन्या व आख़िरत में मेरी सारी ह़ाजतें कि मेरे लिये भलाई और तेरी रिज़ा का बाइस हों, पूरी फ़रमा, ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेह़रबानी फ़रमाने वाले !, या इलाही मेरे ह़क़ में ऐसा ही फ़रमा।

किसी आदमी की त़रफ़ ह़ाजत हो चाहिये कि अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के दो रक्अ़तें पढ़े, फिर अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ सना करे और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे फिर कहे :

((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، أَسْأَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ، لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْباً إِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمّاً إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ)).[1]

तरकीबे हफ़्तुम (7) : अस्बहानी, अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रावी, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ से फ़रमाया : ऐ अ़ली ! क्या मैं तुम्हें वोह दुआ़ न बता दूं कि जब तुम्हें कोई ग़म या परेशानी हो उसे अ़मल में लाओ, तो बि इज़्निल्लाहे तआ़ला तुम्हारी दुआ़ क़बूल और ग़म दूर हो, वुज़ू

---

1 अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं ह़िल्म वाला करम वाला है, पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कि अ़ज़ीम अ़र्श का मालिक है, सब ख़ूबियां अल्लाह को जो परवर्द गार सारे जहान वालों का, मैं तुझ से तेरी रह़मत के अस्बाब, तेरी रह़मत व बख़्शिश के ज़राएअ़ त़लब करता हूं और हर नेकी का हुसूल और हर गुनाह से सलामती मांगता हूं, ऐ सब से ज़ियादा मेह़रबान ! मेरे तमाम गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा, मेरे तमाम ग़मों को दूर फ़रमा, मेरी तमाम ह़ाजतों को जिस में तेरी रिज़ा है पूरा फ़रमा।

"سنن الترمذي"، كتاب الوتر، باب ما جاء في صلاة الحاجة، الحديث: ٤٧٨، ج٢، ص ٢١.

و"سنن ابن ماجه"، كتاب إقامة الصلاة، باب ما جاء في صلاة الحاجة، الحديث: ١٣٨٤، ج٢، ص١٥٥-١٥٦.

के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो और अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना और अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद ख़्वानी और अपने और सब मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों के लिये इस्तिग़्फ़ार करो फिर कहो :

((اَللّٰهُمَّ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ، لا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ، لا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ،اَللّٰهُمَّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُفَرِّجَ الْهَمِّ مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ، أَدْعُوْكَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا فَارْحَمْنِيْ فِيْ حَاجَتِيْ هٰذِهٖ لِقَضَائِهَا وَنُجَاحِهَا رَحْمَةً تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ)).[1]

---

1 ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ रखते हैं, अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं कि बुलन्दो बाला अ़-ज़मत वाला है, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं कि ह़िल्म वाला करम वाला है, पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कि सातों आस्मान व अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है, सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो सारे जहान वालों का और अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है, ऐ ग़मों को दूर फ़रमाने वाले इलाहल आ़-लमीन ! परेशानियों को दफ़्अ़ फ़रमाने वाले रब्बुल आ़-लमीन ! ऐ परेशान ह़ालों की फ़रियाद रसी फ़रमाने वाले ! ऐ दुन्या व आख़िरत के रह़मान व रह़ीम ! मैं तुझ को पुकारता हूं पस मेरी इस ह़ाजत में मुझ पर रह़्म फ़रमा, और काम्याब फ़रमाने के मुआ़-मले में मुझ पर ऐसी मेहरबानी फ़रमा कि वोह तेरे सिवा दूसरों से मुझे बे परवाह कर दे।

"الترغيب والترهيب"، كتاب النوافل، الترغيب في صلاة الحاجة ودعائها، الحديث: ٣، ج١، ص٢٧٤، بحذف ألفاظ قليل.

तरकीबे हश्तुम (8) : ह़ाकिम, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रावी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रात या दिन में बारह रक्अ़तें, हर दो रक्अ़त पर अत्तह़िय्यात पढ़, पिछली अत्तह़िय्यात के बा'द (या'नी बारहवीं रक्अ़त के क़ा'दे में अत्तह़िय्यात पढ़ने के बा'द) अल्लाह तआ़ला की सना और नबी صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर दुरूद बजा लाओ, फिर सज्दे में फ़ातिह़ा सात बार, आ-यतुल कुर्सी सात बार :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

दस बार पढ़, फिर कह :

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَمُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَاسْمِكَ الْأَعْظَمِ وَجَدِّكَ الْأَعْلٰى وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّةِ[1] फिर अपनी ह़ाजत मांग, फिर सर उठा कर दाएं बाएं सलाम फैर और इसे बे वुक़ूफ़ों को न सिखाओ कि वोह इस के ज़रीए़ से दुआ़ मांगेंगे तो क़बूल होगी।"

अह़मद बिन ह़र्ब व इब्राहीम बिन अ़ली व अबू ज़-करिय्या व ह़ाकिम ने कहा : हम ने इस का तजरिबा किया तो ह़क़ पाया।[2]

फ़क़ीर कहता है غَفَرَ اللّٰہُ تعالٰی لَہٗ : फ़क़ीर ने भी चन्द बार तजरिबा किया, तीरे बे ख़त़ा पाया, यहां तक कि बा'ज़ अइ़ज़्ज़ा के मरज़ को इम्तिदादे शदीद व इश्तिदादे मदीद हुवा (या'नी वोह अ़र्सए दराज़ से शदीद बीमार थे) ह़त्ता कि एक रोज़ बिल्कुल नज़्अ़ के आसार त़ारी हो गए, सब अक़ारिब रोने लगे, फ़क़ीर उन सब को रोता छोड़ कर दरवाज़ए करीम पर ह़ाज़िर हुवा, येह नमाज़ पढ़ी इस के बा'द मरीज़ की त़रफ़ चला और

1 ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरे अ़र्श की दाइमी इ़ज़्ज़त के वसीले, तेरी किताब की इन्तिहाई रह़मत के वसीले से, तेरे इस्मे आ'ज़म, तेरी आ'ला बुज़ुर्गी और तेरे मुकम्मल कलिमात के वसीले से सुवाल करता हूं।

2 "الترغيب والترهيب"، كتاب النوافل، الترغيب في صلاة الحاجة ودعائها، الحديث: ٤، ج١، ص٢٧٤.

वस्वसा था कि शायद ख़बरे नौए दिगर सुनने में आए (या'नी : शायद मरीज़ के इन्तिक़ाल की ख़बर सुनने को मिले मगर) वहां गया तो بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰی मरीज़ को बैठा बातें करता पाता, मरज़ जाता रहा, चन्द रोज़ में कुव्वत भी आ गई। وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

फ़ाएदा : येह ह़दीस इब्ने अ़साकिर ने ब रिवायत ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ रिवायत की[1], मगर इतना फ़र्क़ है कि उस में इस नमाज़ का वक़्त बा'दे मग़रिब मुअय्यन किया और फ़ातिह़ा व आ-यतुल कुर्सी व कलिमए मज़्कूरा पढ़ने के लिये बारहवीं रक्अ़त का पहला सज्दा और दुआ : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ पढ़ने को इस का दूसरा सज्दा रखा, न येह कि बा'दे अत्तह़िय्यात के सलाम से पहले एक सज्दा जुदागाना में पढ़ी जाएं। وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی أَعْلَمُ.

أقول : मगर हमारे जम्हूर अइम्मा लफ़्ज़ : أَسْأَلُکَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِکَ को मन्अ़ फ़रमाते हैं : ''हिदाया'' व ''वक़ाया'' व ''तन्वीरुल अब्सार'' व ''दुर्रे मुख़्तार'' व ''शर्हे जामेए़ सग़ीर'' इमाम क़ाज़ी ख़ान व तमर ताशी व मह़बूबी वग़ैरहा कुतुबे फ़िक़्हिय्या में इस की मुमा-न-अ़त मुसर्रह़ (या'नी : मज़्कूरा कुतुब में इस की साफ़ मुमा-न-अ़त वारिद है)[2] अ़ल्लामा इब्ने अमीर अलह़ाज ने ''ह़िल्या''[3] में तस्रीह़ फ़रमाई कि यूं कहना मक्रूहे तह़रीमी या'नी : क़रीब ब ह़रामे क़त़ई है और येह ह़दीस और इसी त़रह़ ह़दीसे तरकीब

---

1 "ابن عساكر"، ج٣٦، ص ٤٧١.

2 "الهداية"، كتاب الكراهية، مسائل متفرقة، ج٢، الجزء٤، ص ٣٨٠.

و"تنوير الأبصار" و"الدر المختار"، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص ٦٥١.

و"ردّ المحتار"، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص ٦٥١-٦٥٢.

3 "الحلبة"، الفصل الثالث عشر في صلاة الحاجة، ج٢، ص ٥٧٦.

दुवुम दोनों ब शिद्दत ज़ईफ़ हैं कि इस बात में हरगिज़ क़ाबिले इस्तिनाद नहीं हो सकतीं, तो इन तरकीबों से येह लफ़्ज़ कम कर देना ज़रूर है।

ثمّ أقول : सज्दे बल्कि क़ा'दे बल्कि क़ियाम के सिवा नमाज़ के किसी फ़े'ल में कुरआने अ़ज़ीम की तिलावत, ह़दीस व फ़िक़्ह दोनों से मन्अ़ है,[1] यहां तक कि सह्वन पढ़े तो सज्दा लाज़िम और अ़-मदन पढ़े तो इआ़दा वाजिब, तो ज़रूर है कि फ़ातिह़ा, आ-यतुल कुर्सी जो सज्दे में पढ़ी जाएंगी उन से सनाए इलाही की निय्यत करे, न (कि) कुरआने अ़ज़ीम की, नीज़ वाज़ेह़ रहे कि नवाफ़िल मुत्लक़ा में हर दो रक्अ़त नमाज़े जुदागाना है तो जितनी रक्आ़त एक निय्यत से पढ़ी जाएं हर क़ा'दे में अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद व दुआ़ सब कुछ हो और हर तीसरी के आग़ाज़ में : سُبحانک اللّٰهم وأعوذ (सना व तअ़व्वुज़) भी हो।[2]

ثمّ أقول : हमारे अइम्मा رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم के नज़्दीक एक निय्यत में दिन को चार रक्अ़त से ज़ियादा मक्रूह है और रात को आठ[8] से ज़ाइद

وظاهر إطلاق الكراهة كراهة التحريم وقد نصّ في "ردّ المحتار" على أنّه لا يحلّ فعله[3]

मगर दिन की कराहत **मुत्तफ़क़ अ़लैह** और शब की कराहत में

---

1 "صحيح مسلم"، كتاب الصلاة، باب النهي عن قراءة القرآن في الركوع والسجود، الحديث: ٤٨٠، ص٢٤٩.

و"بدائع الصنائع"، كتاب الصلاة، بيان ما يستحبّ وما يكره في الصلاة، ج١، ص٥١١.

2 "الدر المختار"، كتاب الصلاة، ج٢، ص٥٥٢.

3 ज़ाहिर येह है कि मुत्लक़न कराहत से मुराद मक्रूहे तह़रीमी है और ''रद्दुल मुह़तार'' में इस बात पर नस्स वारिद है कि ऐसा करना जाइज़ नहीं।

"ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مطلب في لفظة ثمان، ج٢، ص ٥٥١

इख़्तिलाफ़ है, इमाम शम्सुल अइम्मा सरख़सी ने फ़रमाया : रात को आठ से ज़ियादा भी मकरूह नहीं।(1) "फ़तावा ख़ुलासा" में इसी को सह़ीह़ कहा (3)وعــامتهــم علــى (2)الكراهة وصحّحها في "البدائع".

तो येह नमाज़ अगर हो, शब[1] में हो कि एक तस्ह़ीह़ पर कराहत से मह़फ़ूज़ रहे।

तरकीबे नहुम (9) : ह़ाफ़िज़ अबुल फ़रज इब्ने अल जूज़ी ब त़रीक़ अबान बिन अबी इ़याश अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे अल्लाह तआ़ला से कोई ह़ाजत दुन्या या आख़िरत की हो वोह पहले कुछ स-दक़ा दे, फिर बुध, जुमा'रात व जुमुआ़ का रोज़ा रखे, फिर जुमुआ़ को मस्जिद जामेअ़ में जा कर बारह रक्अ़तें पढ़े, दस रक्अ़तों में अल ह़म्द एक बार, आ-यतुल कुर्सी दस बार और दो में अल ह़म्द एक बार क़ुल हुवल्लाह पचास बार, फिर अल्लाह तआ़ला से अपनी ह़ाजत मांगे तो कोई ह़ाजत हो दुन्या ख़्वाह आख़िरत की अल्लाह तआ़ला पूरी फ़रमाए।"(4)

---

(1) "المبسوط"، كتاب الصلاة، باب مواقيت الصلاة، ج١، ص٣١٢.

(2) "خلاصة الفتاوى"، كتاب الصلاة، الفصل الثانى، الجنس في السنن، ج١، ص٦١.

(3) ज़ियादा तर फ़ु-क़हाए किराम का मौक़िफ़ कराहत का है और इसी को साह़िबे "बदाइउ़स्सनाएअ़" ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

"بدائع الصنائع"، كتاب الصلاة، بيان ما يكره من التطوع، ج٢، ص١٤

1. اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कि रिवायत इब्ने अ़साकिर ने इस राय फ़क़ीर की ताईद फ़रमाई कि इस में बा'दे मग़रिब की तस्रीह़ आई كما علمت (जैसा कि आप जान चुके) ١٢ مُدَّ ظِلُّہٗ

(4) "الموضوعات" لابن الجوزي، صلوات تفعل لأغراض، صلاة لقضاء الحوائج، ج٢، ص١٤١.

قال الحافظ: أبان متروک.(1)

أقول: روی لـه أبـو داود فـي "سـنـنه" والرجل من العباد والزُّهّاد والـصـلـحـاء مـن صـغار التابعين ولم ينسب لوضع، وقد قال الإمام أيوب السـختيـانـي: مـا زال نـعـرفـه بخير منذ كان، وقد روی عنه الإمام سفيان الثـوري. وأكثـر الـناس تشديداً عليه شعبةُ وقد كلّمه حمادُ بن زيد وعبادُ بـن عبـاد أن يـكفّ عنه فكفّ، ثم عاد وقال: الأمر دين، وصرّح أنّ وقيعته فيه عن ظنّ من غير يقين ومع ذلک قد روی عنه، والعهد عنه أنّه لا يروي إلّا عـن ثـقة عنده. ولا أريد بكلّ هذا تمشية أبان بل إبانة أنّ أبا الفرج لم يصب في إيراده في "الموضوعات" كعادته وهذا حاتم أئمة الشأن ابن حـجر العسقلاني قال في "أطراف العشرة" لحديث رواه أحمد بن ذكوان: زعـم ابـن حبـان وتبعه ابن الجوزي أنّ هذا المتن موضوع وليس كما قالا والـراوي وإن كـان متـروكـاً عـنـد الأكثـر ضعيفاً عند البعض فلم ينسب للوضع.(2)

---

❶ हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने अबान को मतरूक कहा।

"تقريب التهذيب"، حرف الألف، من اسمه آدم وأبان، ج١، ص٢٤.

❷ मैं कहता हूं : अबान से इमाम अबू दावूद ने भी "सु-ननो अबी दावूद" में ह़दीसें रिवायत की हैं और अबान नेक, बहुत आ़बिदो ज़ाहिद और सिग़ार ताबिई़न में से हैं इन पर वज़्ए ह़दीस का इल्ज़ाम लगाना मुनासिब नहीं है और इमाम अय्यूब सख़्तयानी फ़रमाते हैं कि हम ने जब भी आप को देखा हमेशा भलाई और ख़ैर पर ही देखा और आप =

तरकीबे दहुम (10) : इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़्मी शत़नौफ़ी قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز "बह्जतुल असरार शरीफ़" में ब स-नदे सह़ीह़ ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि इर्शाद फ़रमाते हैं :

"من استغاث بي في كربة كشفت عنه."

"जो किसी सख़्ती में मेरी दुहाई दे वोह सख़्ती दूर हो जाए।"

= से इमाम सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़दीसें रिवायत की हैं और सब से ज़ियादा इन पर जिरह़ शअ़्बा ने की है, जब ह़म्माद बिन ज़ैद और इ़बाद बिन इ़बाद ने शअ़्बा को उन पर जिरह़ करने से मन्अ़् फ़रमाया तो शअ़्बा ने जिरह़ तर्क कर दी, लेकिन बा'द में अपने क़ौले साबिक़ से येह कहते हुए रुजूअ़् कर लिया कि येह एक दीनी मुआ़-मला है और उन्हों ने इस बात की सराह़त भी की है कि इस बारे में जो बातें इन से वाक़ेअ़् हुई हैं वोह ज़न्नी और ग़ैर यक़ीनी हैं इस के बा वुजूद उन्हों ने इन से ह़दीसें रिवायत भी की हैं और उन का त़रीक़ा है कि वोह सिर्फ़ उस से ह़दीस रिवायत करते हैं जो उन के नज़्दीक क़ाबिले ए'तिमाद और सिक़ा हो और इस तमाम कलाम से मेरा मक़्सूद अबान का साथ देना नहीं बल्कि इस बात को वाज़ेह़ करना है कि इब्ने जूज़ी ने अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ उन का ज़िक्र भी अपनी "मौज़ूआ़त" में दुरुस्त त़ौर पर नहीं किया और येही बात उ़-लमाए ज़ीशान के क़ाज़ी इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी ने "اتحاف المهرة بأطراف العشرة" में उस ह़दीस के तह़्त कही जिस को इमाम अह़मद बिन ज़कवान ने रिवायत किया कि : इब्ने ह़ब्बान ने गुमान किया है और इब्ने जूज़ी ने भी इस बात पर उन की पैरवी की है कि "इस ह़दीस का मतन मौज़ूअ़् है", ह़ालां कि जैसा उन दोनों ने कहा, बात इस त़रह़ नहीं है, और रावी अगर्चे अक्सर मुह़द्दिसीन के नज़्दीक मतरूक है लेकिन बा'ज़ के नज़्दीक मतरूक नहीं बल्कि ज़ईफ़ है लिहाज़ा उन की त़रफ़ ह़दीस घड़ने की निस्बत करना मुनासिब नहीं।

ومن ناداني باسمي في شدة فرجت عنه.

''और जो किसी मुश्किल में मेरा नाम ले कर निदा करे वोह मुश्किल ह़ल हो जाए।''

ومن توسّل بي إلى الله عزّوجلّ في حاجة قضيت له.

''और जो किसी ह़ाजत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुझ से तवस्सुल करे वोह ह़ाजत रवा हो जाए।

और जो शख़्स दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में बा'दे फ़ातिह़ा, सूरए इख़्लास ग्यारह बार फिर बा'दे सलाम नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे।''

ويذكرني ثمّ يخطو إلى جهة العراق إحدى عشرة خطوة ويذكر اسمي ويذكر حاجته فإنّها تُقض بإذن الله تعالٰى.

''और मुझे याद करे, फिर इ़राक़ शरीफ़ की त़रफ़ ग्यारह क़दम चले और मेरा नाम लेता जाए फिर अपनी ह़ाजत ज़िक्र करे, तो बेशक वोह ह़ाजत बि इज़्निल्लाहे तआ़ला पूरी हो।''(1)

येह मुबारक नमाज़ उस सुल्त़ान बन्दा नवाज़ से अकाबिर अइम्मए दीन, मिसल इमाम इब्ने जहज़म व इमाम याफ़ेई़ व मौलाना अ़ली क़ारी व मौलाना शैख़ मुह़क़्क़िक़ मुह़द्दिसे देहलवी वग़ैरहुम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने नक़्ल व रिवायत फ़रमाई और फ़क़ीर ने एक मब्सूत़ रिसाला इस की तह़क़ीक़ व इस्बात व रद्दे शुकूक व शुबुहात में मुसम्मा बनाम तारीख़ी ''أنهار الأنوار من يمّ صلاة الأسرار'' (١٣٠٥ھ) मुलक़्क़ब बिह ''الحجج البهيّة لمحبّ الصلاة الغوثية''(2) और दूसरा रिसाला अ़-रबी मुख़्तसर

(1) ''بهجة الأسرار''، ذكر فضل أصحابه وبشراهم، ص١٩٧.

(2) येह रिसाला ''फ़तावा र-ज़विय्या'', जिल्द 7, सफ़ह़ा 569 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

उस की तरकीब व कैफ़िय्यत व त़रीक़ए ह़ज़राते मशाइख़ قُدِّسَتْ أَسْرَارُهُمْ में मुसम्मा बनाम तारीख़ी ''أزهار الأنوار من صبا صلاة الأسرار'' (١٣٠٥ھ) लिखा।(1)

जिसे मे'यारे शर-ए़ मुत़ह्हर पर इस नमाज़े मुक़द्दस की कामिल इ़यारी और ए'तिराज़ाते वाहियए मुन्किरीन की ज़िल्लत व ख़्वारी देखनी हो रिसालए ऊला और जिसे इस की तफ़्सीली तरकीब और त़रीक़ए मुरव्वजा ह़ज़राते मशाइख़ की तरतीब समझनी हो रिसालए सानिया (दूसरे रिसाले) की त़रफ़ रुजूअ़ लाए, وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن.

बिल जुम्ला येह दस10 तरकीबें हैं जिन में अव्वल व चहारुम व पन्जुम व दहुम तो आ'ला द-र-जए ह़सन व सिह़्ह़त व नज़ाफ़ते सनद पर हैं, इन में सब से अजल व आ'ज़म अव्वल है कि अजिल्ला हुफ़्फ़ाज़ ने यक ज़बान इस की तस्ह़ीह़ फ़रमाई फिर पन्जुम कि तिरमिज़ी ने तह़सीन और ह़ाकिम ने तस्ह़ीह़ की, फिर चहारुम कि ह़सन है, फिर दहुम कि वोह तीन इर्शादाते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से हैं और येह इर्शादे इब्नुल मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم, इन के बा'द शशुम व हफ़्तुम व नहुम फिर सिवुम का मर्तबा है(2) فإنّ الضعيف يعمل

---

1 येह रिसाला ''फ़तावा र-ज़विय्या'' जिल्द 7, सफ़ह़ा 633 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

2 ह़ासिल येह कि नमाज़ क़ज़ाए ह़ाजत में येह दस तरकीबें हैं जिन में पहली, चौथी, पांचवीं और दसवीं की सनद निहायत जय्यिद और सह़ीह़ है और इन में भी सब से अफ़्ज़लो आ'ला तरकीबे अव्वल है कि इस की तस्ह़ीह़ जलीलुल क़द्र हुफ़्फ़ाज़ मुह़द्दिसीन ने फ़रमाई और इस के बा'द पांचवीं कि तिरमिज़ी ने इस की तह़सीन और ह़ाकिम ने इस की तस्ह़ीह़ की, फिर चौथी कि ह़सन है, फिर दसवीं, कि पहली तीन या'नी अव्वल, चहारुम और पन्जुम सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रामीन हैं और येह या'नी दसवीं तरकीब फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, इस के बा'द छटी, सातवीं, और फिर तीसरी का द-रजा है।

به في فضائل الأعمال بإجماع أهل الكمال [1] और दुवुम व हश्तुम स-नदन भी शदीदुज़्ज़ो'फ़ और शरअ़न भी महज़ूर पर मुश्तमिल इन से एह़तिराज़ या तर्क लफ़्ज़े मज़्कूर से इस्लाह़, وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى اَعْلَمُ۔

तम्बीह : क़ज़ाए ह़ाजत की नमाज़ें जो कलिमात उ़-लमाए किराम में मज़्कूर या ह़ज़राते मशाइख़े इ़ज़ाम से मासूर ब कसरत हैं और بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰى इस सगे दरगाहे क़ादिरिय्यत को इन के और तमाम ह़ाजाते जुज़्इय्या व कुल्लिय्या के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़ारहा आ'माले नफ़ीसा जलीला मुजर्रबा की इजाज़त अपने शैख़ व आक़ाए ने'मत दरियाए रह़मत, **इमामुल उ़-लमा वल औलिया, सनामुल कु-मला-इ वल अस्फ़िया, सय्यिदुल वासिलीन, स-नदुल कामिलीन, शैख़ी व मौलाई व मुर्शिदी व कन्ज़ी ज़ुख़्री लि यौमी व ग़दी,** हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना व मौलाना सय्यिद शाह आले रसूल, अह़मद मारह़रवी رضي الله تعالى عنه وأرضاه وجعل أعلى جنان الفردوس مثواه [2] से ।

ولأرض من كأس الكرام نصيب [3]

इन में सिर्फ़ नमाज़हाए ह़ाजत ही की तफ़्सील करूं तो एक किताब जुदागाना लिखूं । और हनूज़ वोह भी बाक़ी और फ़क़ीर के पेशे नज़र हैं जो अह़ादीस में ख़ुद हुज़ूर सय्यिदुल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल हुई, मगर नाज़िरे रिसाला जान लेगा कि अस्ल रिसाले में अव्वल से आख़िर तक ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम

---

1. क्यूं कि ज़ईफ़ अह़ादीस के फ़ज़ाइले आ'माल में क़ाबिले अ़मल होने पर कामिल मुह़द्दिसीन व फ़ु-क़हाए किराम का इत्तिफ़ाक़ है।
2. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी हो और उन्हें हम से राज़ी करे और उन का ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस के आ'ला मक़ाम को करे ।
3. "ज़मीन के लिये भी सख़ियों के दस्तर ख़्वान से ह़िस्सा होता है।"

قُدِّسَ سِرُّهُ الشَّرِيْف को इह़ात़ा व इस्तीआ़ब का क़स्द नहीं, व लिहाज़ा फ़क़ीर ने तक्सीरे फ़ाएदा के लिये हर जगह ज़ियादात कीं और इन में बहुत ज़ियादतें ख़ुद ह़ज़रत मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهُ के दूसरे रसाइल व तालीफ़ से लीं, जिन से साबित कि ह़ज़रत मम्दूह़ ने क़स्दन हर जगह सिर्फ़ चन्द मुख़्तसर जुम्लों पर क़नाअ़त फ़रमाई है लिहाज़ा इस "ज़ैल" में भी ब इत्तिबाए़ "अस्ल" इस्तीआ़ब मल्ह़ूज़ न रहा, ख़ुसूसन ख़ातिमे में कि यहां तो जिस क़दर पेशे नज़र है इस सब का ईराद, ह़-जमे रिसाला को दो चन्द से बढ़ा देगा, लिहाज़ा इसी क़दर पर इक्तिसार होता और रब عَزَّوَجَلَّ **रऊफ़, रह़ीम, करीम, ह़य्य, क़य्यूम, अ़ज़ीम, अ़लीम** جَلَّ مَجْدُهُ से ब तवस्सुल हुज़ूर **सय्यिदुल मह़बूबीन, सय्यिदुल मुर-सलीन, सय्यिदुल आ़-लमीन, नबिय्युर्रह़मह, शफ़ीउ़ल उम्मह** صلى الله تعالى عليه وعلى آله وأصحابه وابنه الأكرم الغوث الأعظم وأولياء أمّته وعلماء ملّته أجمعين ब निहायत तज़र्रोअ़ व ज़ारी दुआ़ है कि इन दोनों रसाइल "अस्ल व ज़ैल" और ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम व फ़क़ीर **मुस्तहाम** की तमाम तालीफ़ात को ख़ालिसन **लि वज्हिल करीम** क़बूल फ़रमाए और अहले इस्लाम को **आ़जिलन व आजिलन** इन से नफ़्अ़ बख़्शे ।(1)

---

(1) या'नी अगर सिर्फ़ नमाज़ क़ज़ाए ह़ाजत की तफ़्सील लिखना शुरूअ़ कर दूं तो अ़लाह़िदा से एक किताब लिख डालूं तब भी बुज़ुर्गों के अ़त़ा कर्दा नमाज़े क़ज़ाए ह़ाजात के त़रीक़े बाक़ी रह जाएं और इसी त़रह़ मेरे पेशे नज़र वोह अह़ादीसे मुबा-रका भी हैं जो ख़ुद सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल हैं ।

बहर ह़ाल इस किताब का पढ़ने वाला इस बात को बख़ूबी जान सकता है कि किताब की इब्तिदा से इन्तिहा तक ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهُ का मक़्सद भी इह़ात़ा व इस्तीआ़बे कलाम (या'नी कलाम को फैला कर उस की जुज़्इय्यात समेत बयान करना) नहीं लिहाज़ा इसी बात के पेशे नज़र मैं ने भी कलाम को तूल नहीं दिया बस बा'ज़ जगहों में ज़रूरी इज़ाफ़े ख़ुद ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهُ ही की कुतुब व रसाइल से किये जो इस बात पर आप ख़ुद दलील हैं कि ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّهُ ने इस किताब की तालीफ़ में =

إنّه وليّ ذلک والقدير عليه وله الحمد أبداً دائماً والمآب إليه آمين آمين إلــه الحق آمين برحمتک يا أرحم الراحمين! وصلى الله تعالٰى على سيدنا ومولانا محمد وآله وصحبه أجمعين

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ أَشْھَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُکَ وَأَتُوبُ إِلَيْکَ. تَمَّت﴾[1]

= इख़्तिसार को पेशे नज़र रखा।

चुनान्चे "जै़ल" में भी इख़्तिसार को ही पेशे नज़र रखा और ख़ुसूसन यहां "ख़ातिमे" में जिस क़दर इख़्तिसार पेशे नज़र रहा, अगर उसे बयान किया जाए तो इस "रिसाला" का हज्म दुगना हो जाएगा, लिहाज़ा इसी पर इख़्तिसार किया जाता है। और मैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ़ गो हूं कि वोह हुज़ूर सय्यिदुल मुर-सलीन पर, आप की आल व अस्हा़ब, आप के प्यारे और मुअ़ज़्ज़ज़ बेटे हुज़ूर सय्यिदी ग़ौसे आ'ज़म, और आप की उम्मत के जमीअ़ औलियाए किराम व उ़-लमाए इ़ज़ाम पर दुरूद भेजे, और उन के वसीले से इन दोनों रसाइल या'नी "अस्ल" व "जै़ल" (**"अह़सनुल विआ़अ"** और **"जै़लुल मुद्दआ़अ"**) और मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ और मेरी तमाम तालीफ़ात व तस्नीफ़ात को अपनी रिज़ा में क़बूल फ़रमाए और तमाम मुसल्मानों को हमेशा इस किताब से नफ़अ़ बख़्शे।

1 बेशक वोही मददगार और नफ़अ़ पहुंचाने पर क़ादिर और उसी के लिये हमेशा की सना और उसी की त़रफ़ ठिकाना है ऐ अल्लाह! अपनी रह़मत के वसीले से क़बूल फ़रमा ऐ सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाले! और अल्लाह तआ़ला दुरूद भेजे हमारे आक़ा मौला मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और उन की तमाम आल व अस्हा़ब पर, ऐ अल्लाह तेरी पाकी और तेरी ही ह़म्द है मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाता हूं।

﴿مآخذ و مراجع﴾

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن مجید	کلام اللہ تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز
2	كنز الإيمان	امام اہلسنّت احمد رضا خان ت ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز
		کتب التفسیر	
3	خزائن العرفان	نعیم الدین مرادآبادی متوفی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن و پاک کمپنی لاہور
4	نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
5	التفسير الكبير	فخر الدین محمد بن عمر بن حسین الرازی متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
6	الدر المنثور	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت
7	تفسير روح البيان	اسمٰعیل حقی بروسوی متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
8	روح المعاني	شہاب الدین سید محمود آلوسی متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
9	الجامع لأحكام القرآن	محمد بن احمد انصاری قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت
10	تفسير جلالين مع حاشية الجمل	عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ وجلال الدین محمد احمد محلی متوفی ۸۶۴ھ	باب المدینہ، کراچی
11	تفسير الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی متوفی ۷۴۱ھ	صدیقیہ کتب خانہ، خٹک
12	تفسير البغوي	حسین بن مسعود فراء بغوی متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
13	التفسيرات الأحمدية	احمد بن ابی سعید المعروف بملا جیون متوفی ۱۱۳۰ھ	پشاور
		کتب الحدیث	
14	صحيح البخاري	ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
15	صحيح مسلم	ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت

16	سنن الترمذي	ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت
17	سنن أبي داود	ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
18	سنن النسائي	ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
19	سنن ابن ماجه	ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
20	الموطأ	مالک بن انس اصبحی متوفی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
21	المسند	احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر، بیروت
22	المستدرك	محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
23	المصنّف	عبدالرزاق بن ہمام بن نافع متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
24	صحيح ابن حبان	محمد بن حبان بن احمد متوفی ۳۵۴ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
25	مسند البزار	احمد بن عمرو بن عبدالخالق بزار متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ
26	السنن الكبرى	احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
27	سنن الدار القطني	علی بن عمر دارقطنی متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
28	المعجم الكبير	سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ، بیروت
29	المعجم الأوسط	سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ، بیروت
30	المعجم الصغير	سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ، بیروت
31	صحيح ابن خزيمة	محمد بن اسحاق بن خزیمہ متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی، بیروت
32	مراسيل أبي داود	ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	کتب خانہ رشیدیہ، دہلی
33	كتاب الدعاء	سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
34	المصنف في الأحاديث والآثار	عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی متوفی ۲۳۵ھ	دارالفکر، بیروت
35	الأدب المفرد	ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
36	مسند أبي يعلى	ابویعلیٰ احمد بن علی بن مثنیٰ موصلی متوفی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت

37	مشكاة المصابيح	محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
38	شعب الإيمان	احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
39	مسند الفردوس	شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت
40	الترغيب والترهيب	عبد العظیم بن عبد القوی منذری متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
41	الجامع الصغير	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
42	كنز العمال	علی متقی بن حسام الدین متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
43	مجمع الزوائد	علی بن ابی بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت
44	المقاصد الحسنة	محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی متوفی ۹۰۲ھ	دار الکتاب العربی، بیروت
45	جامع الأحاديث	عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت
46	حلية الأولياء	احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
47	الحصن الحصين	محمد بن محمد ابن الجزری متوفی ۸۳۳ھ	المکتبۃ العصریۃ، بیروت
48	عمل اليوم والليلة	احمد بن محمد بن اسحاق دینوری متوفی ۳۶۴ھ	دار الکتاب العربی، بیروت
	كتب شروح الحديث		
49	عمدة القاري	بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	دار الحدیث، ملتان
50	فتح الباري	احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
51	نزهة القاري	مفتی شریف الحق امجدی متوفی ۱۴۲۰ھ	برکاتی پبلشرز
52	شرح النووي	ابو زکریا یحیٰی بن شرف نووی ت ۶۷۶ھ	بنگلہ اسلامک اکیڈمی، یوپی
53	التيسير	عبد الرؤف مناوی متوفی ۱۰۰۳ھ	المکتبۃ الشاملۃ
54	فيض القدير	عبد الرؤف مناوی متوفی ۱۰۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
55	مرقاة المفاتيح	علی بن سلطان قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر، بیروت

56	أشعة اللمعات	عبدالحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ
57	لمعات التنقيح	عبدالحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	لاہور
58	مرآة المناجيح	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز
	كتب أصول الحديث		
59	تيسير مصطلح الحديث	محمود طحان	باب المدینہ، کراچی
60	نزهة النظر	احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	فاروقی کتب خانہ، ملتان
	كتب أسماء الرجال		
61	الموضوعات	عبدالرحمٰن بن علی بن جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دارالفکر، بیروت
62	تهذيب التهذيب	احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دارالعاصمۃ، ریاض
63	تقريب التهذيب	احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دارالعاصمۃ، ریاض
64	اللآلي المصنوعة	عبدالرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
65	الكامل لابن عدي	ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
	كتب العقائد		
66	الفقه الأكبر	ابوحنیفہ نعمان بن ثابت کوفی متوفی ۱۵۰ھ	باب المدینہ، کراچی
67	منح الروض الأزهر= شرح فقه أكبر	علی بن سلطان قاری حنفی متوفی ۱۰۱۴ھ	باب المدینہ، کراچی
68	شرح المواقف	قاضی عضدالدین عبدالرحمٰن ایجی متوفی ۷۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
69	المسامرة بشرح المسايرة	کمال الدین محمد بن محمد متوفی ۹۰۶ھ	مطبعۃ السعادۃ، مصر
70	الصواعق المحرقة	احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	ملتان
71	المعتقد المنتقد (مترجم)	علامہ فضل رسول بدایونی متوفی ۱۲۸۹ھ مترجم: مولانا اختر رضا خان مدظلہ العالی	مکتبہ برکات المدینہ

كتب أصول الفقه

72	الأشباه والنظائر	زین الدین بن نجیم متوفی ۹۷۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
73	غمز عیون البصائر	سید احمد بن محمد حموی مصری متوفی ۱۰۹۸ھ	باب المدینہ، کراچی
74	أنوار البروق في أنواء الفروق= الفروق	احمد بن ادریس صنہاجی قرافی متوفی ۶۸۴ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت

كتب الفقه

75	الهداية	علی بن ابی بکر مَرغینانی متوفی ۵۹۳ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
76	المبسوط	محمد بن احمد بن ابی سہل سرخسی متوفی ۴۹۰	کوئٹہ
77	بدائع الصنائع	علاء الدین ابوبکر بن مسعود کاسانی متوفی ۵۸۷ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
78	تنوير الأبصار	محمد بن عبداللہ بن احمد تمرتاشی متوفی ۱۰۰۴ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
79	الدر المختار	محمد بن علی حصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
80	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفۃ، بیروت
81	التاتارخانية	عالم بن علاء انصاری دہلوی متوفی ۷۸۶ھ	باب المدینہ، کراچی
82	الولوالجية	عبدالرشید بن ابی حنیفہ متوفی ۵۴۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
83	النهر الفائق	سراج الدین عمر بن ابراہیم متوفی ۱۰۰۵ھ	باب المدینہ کراچی
84	فتح القدير	محمد بن عبدالواحد المعروف بابن ہمام متوفی ۶۸۱ھ	کوئٹہ
85	البحر الرائق	زین الدین بن ابراہیم متوفی ۹۷۰ھ	کوئٹہ
86	الفتاوى الهندية	شیخ نظام وجماعۃ من علماء الہند	کوئٹہ
87	المسلك المتقسط	ملا علی بن سلطان قاری حنفی متوفی ۱۰۱۴ھ	باب المدینہ، کراچی
88	حاشية الطحطاوي على الدر	احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی متوفی ۱۲۴۱ھ	کوئٹہ
89	حاشية الطحطاوي على المراقي	احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی متوفی ۱۲۴۱ھ	باب المدینہ کراچی

90	خلاصة الفتاوى	طاہر بن عبد الرشید بخاری متوفی ۵۴۲ھ	کوئٹہ
91	الحاوي للفتاوي	عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت
92	حلية =حلبة المجلي	ابن امیر الحاج متوفی ۸۷۹ھ	مخطوطہ
93	هامش الحلبة	امام اہلسنّت احمد رضا خان ت ۱۳۴۰ھ	مخطوطہ
94	جد الممتار	امام اہلسنّت احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
95	جواهر البيان في أسرار الأركان	مولانا نقی علی خان متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبہ مہریہ رضویہ، سیالکوٹ
96	الفتاوى الرضوية	امام اہلسنّت احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
97	تجلي اليقين بأنّ نبيّنا سيّد الرسلين	امام اہلسنّت احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
98	تيسر الماعون للسكن في الطاعون	امام اہلسنّت احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
99	بهار شريعت	مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
100	رفيق الحرمين	امیر اہلسنّت مولانا الیاس قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، کراچی
	كتب السيرة		
101	المواهب اللدنية	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
102	شرح المواهب اللدنية	محمد بن عبد الباقی زرقانی متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
103	نسيم الرياض	احمد بن محمد بن عمر خفاجی متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
104	الشفا بتعريف حقوق المصطفى	قاضی ابو الفضل عیاض مالکی متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنّت برکات رضا، ہند
105	السيرة الحلبية	علی بن ابراہیم بن احمد حلبی متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
106	السيرة النبوية	عبد الملک بن ہشام معافری متوفی ۲۱۳ھ	دار المعرفۃ، بیروت
107	البداية والنهاية	اسماعیل بن عمر ابن کثیر متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر، بیورت
108	سرور القلوب في ذكر المحبوب	مولانا نقی علی خان متوفی ۱۲۹۷ھ	شبیر برادرز، لاہور

109	الخيرات الحسان	احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ مترجم: مفتی سید شجاعت علی قادری	مدینہ پبلشنگ کمپنی، کراچی
110	بهجة الأسرار	نورالدین علی بن یوسف شطنوفی متوفی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
		کتب التصوف	
111	إحياء علوم الدين	ابوحامد محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر، بیروت
112	اتحاف السادة المتقين	محمد بن محمد حسینی زبیدی متوفی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
113	الرسالة القشيرية	عبدالکریم بن ہوازن قشیری متوفی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
114	الطريقة المحمدية	محمد پیر علی المعروف بہ برکلی متوفی ۹۸۱ھ	دارالطباعۃ العامرہ
115	الحديقة الندية	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی متوفی ۱۱۴۱ھ	دارالطباعۃ العامرہ
116	البريقة المحمودية	محمد بن مصطفیٰ نقشبندی حنفی متوفی ۱۱۷۶ھ	المکتبۃ الشاملہ
117	كيميائے سعادت	ابوحامد محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
118	كشف المحجوب	علی بن عثمان ہجویری متوفی ۴۸۵ھ غالباً	نوائے وقت پرنٹرز، لاہور
119	قوت القلوب	محمد بن علی مکی متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہلسنّت برکاتِ رضا، ہند
120	روض الرياحين	عبداللہ بن اسعد یافعی متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
121	مثنوی مولانا روم (مترجم)	جلال الدین محمد بن محمد رومی متوفی ۶۷۰ھ مترجم: محمد عالم امیری	خدیجہ پبلیکیشنز، لاہور
122	گلستان سعدی	مصلح الدین سعدی شیرازی متوفی ۶۹۱ھ	نشر محمد، ایران
		کتب التأریخ	
123	تأريخ دمشق=ابن عساكر	علی بن حسن دمشقی متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر، بیروت
124	مرآة الجنان	عبداللہ بن اسعد یافعی یمنی متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
		کتب الأعلام	
125	معرفة الصحابة	ابونعیم احمد بن عبداللہ بن احمد متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت

126	وفيات الأعيان	احمد بن محمد بن ابراہیم بن ابوبکر متوفی ۶۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
127	الأعلام للزركلي	خیر الدین زرکلی متوفی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین، بیروت
128	معجم المؤلفين	عمر رضا کحالہ متوفی ۱۴۰۸ھ	مؤسسۃ الرسالہ، بیروت
129	هدية العارفين	اسماعیل کمال باشا متوفی ۱۳۳۹ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
130	الجواهر المضية	عبد القادر ابن ابی الوفاء محمد بن محمد بن نصر اللہ قرشی متوفی ۶۹۶ھ	باب المدینہ، کراچی
131	كشف الظنون	مصطفیٰ بن عبد اللہ قسطنطینی متوفی ۱۰۶۷ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت

كتب الأدب واللغة

132	ثمرات الأوراق	ابوبکر بن حجہ حنفی حموی متوفی ۸۳۷ھ	المکتبۃ الشاملہ
133	تحرير التحبير في صناعة الشعر والنثر	عبد العظیم بن عبد الواحد متوفی ۶۵۴ھ	المکتبۃ الشاملہ
134	القاموس الفقهي	سعدی ابوحبیب	باب المدینہ، کراچی
135	اردو لغت	ادارہ ترقی اردو بورڈ	ترقی اردو بورڈ، کراچی
136	اسلامی انسائیکلو پیڈیا	سید قاسم محمود	الفیصل ناشران وتاجران کتب
137	اردو دائرہ معارف اسلامیہ		زیر اہتمام: دانش گاہ، لاہور

كتب المتفرقة

138	حدائق بخشش	امام اہلسنّت احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ورضا اکیڈمی، بمبئی
139	ارمغان مدینہ	امیر اہلسنّت مولانا الیاس قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، کراچی
140	مغیلان مدینہ	امیر اہلسنّت مولانا الیاس قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، کراچی
141	الرحمة في الطب والحكمة	عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	مؤسسۃ التاریخ العربی، بیروت

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

«शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة»

(1) **करन्सी नोट के मसाइल :** येह किताब (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िर्त़ासिद्दराहिम) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। जिस में नोट के तबादिले और इस से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई अह़काम बयान किये गए हैं। (कुल सफ़ह़ात : 115)

(2) **विलायत का आसान रास्ता** (तसव्वुरे शैख़) : येह रिसाला (अल याक़ूतितुल वासित़ह) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। जिस में पीरो मुर्शिद के तसव्वुर के मौज़ूअ़ पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दिया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) **ईमान की पहचान** (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) : इस रिसाले में तम्हीदे ईमान के मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी और ज़रूरी इस्तिलाह़ात की मुख़्तसर तशरीह़ात दर्ज की गई हैं। (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) **काम्याबी के चार उसूल** (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) : इस रिसाले में पूरे आ़लमे इस्लाम के लिये चार निकात की सूरत में मआ़शी ह़ल पेश किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) **शरीअ़त व त़रीक़त :** येह रिसाला (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) का ह़ाशिया है। इस अ़ज़ीम रिसाले में शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग मानने वाले जाहिलों की सह़ीह़ रहनुमाई की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) **सुबूते हिलाल के त़रीक़े** (तु-रुक़ि इस्बाति हिलाल) : इस रिसाले में चांद के सुबूत के लिये मुक़र्रर शर-ई उसूलो ज़वाबित़ की तफ़्सीलात का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) **औ़रतें और मज़ारात की ह़ाज़िरी :** येह रिसाला (जु-मलिन्नूर फ़ी

नह्यिन्निसा-इ अ़न ज़िया-रतिल क़ुबूर) का ह़ाशिया है। इस रिसाले में औ़रतों के ज़ियारते क़ुबूर के लिये निकलने से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई हुक्म पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के मुस्कित जवाबात शामिल हैं। (कुल सफ़ह़ात : 35)

(8) **आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब** (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) : इस रिसाले में इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن पर बा'ज़ ग़ैर मुक़ल्लिदीन की त़रफ़ से किये गए चन्द सुवालात के मुदल्लल जवाबात ब सूरते इन्टरव्यू दर्ज किये गए हैं। (कुल सफ़ह़ात : 100)

(9) **ईदैन में गले मिलना कैसा ?** येह रिसाला (विशाहुल जीद फ़ी तह्लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) की तस्हीलो तख़्रीज पर मुश्तमिल है। इस रिसाले में ईदैन में गले मिलने को बिदअ़त कहने वालों के रद में दलाइल से मुज़य्यन तफ़्सीली फ़तवा शामिल है। (कुल सफ़ह़ात : 55)

(10) **राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल** : येह रिसाला (रद्दिल कह्ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। येह रिसाला पड़ोसियों और फ़ु-क़रा से ख़ैर ख़्वाही और वबा को टालने के लिये स-दक़ा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीस व ह़िकायात का बेहतरीन मजमूआ़ है। (कुल सफ़ह़ात : 40)

(11) **वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़** : येह रिसाला (अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) की तस्हील व ह़ाशिया और तख़्रीज पर मुश्तमिल है, इस में वालिदैन, असातिज़ए किराम, एह़तिरामे मुस्लिम और दीगर ह़ुक़ूक़ का तफ़्सीली बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 125)

(12) **दुआ़ के फ़ज़ाइल** : येह रिसाला (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) की ह़ाशिया व तस्हील और

तख़्रीज पर मुश्तमिल है, जिस में दुआ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली अह़काम का बयान है और हर हर मौज़ूअ़ पर सैर ह़ासिल बह़स की गई है।

(कुल सफ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाले अ़-रबी रसाइल :

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(1) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) (2) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) (3) अल इजाज़ातिल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) (4) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) (5) अल फ़द़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) (6) अजलिय्युल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) (7) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) (8) हु़स्सामुल ह़-रमैन अ़ला मुन्ह़रिल कुफ़्रि वल मैन (कुल सफ़ह़ात : 194)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

(1) **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ : इस किताब में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ कसीर आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबा-रका और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल के बिखरे हुए मोतियों को सिल्के तह़रीर में पिरोने की कोशिश की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 160)

(2) **इन्फ़िरादी कोशिश :** इस किताब में नेकी की दा'वत को ज़ियादा से ज़ियादा आ़म करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़ज़ाइल और इन्फ़िरादी कोशिश करने का त़रीक़ा बयान किया गया है। इलावा अज़ीं अस्लाफ़ की इन्फ़िरादी कोशिश के "99" मुन्तख़ब वाक़िआ़त को भी जम्अ़ किया गया है जिस में बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास

अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के "25" वाक़िआत भी शामिल हैं नीज़ किताब के आख़िर में इन्फ़िरादी कोशिश के अ-मली त़रीक़े की मिसालें भी पेश की गई हैं। (कुल सफ़ह़ात : 200)

(3) **शाहराहे औलिया :** येह रिसाला सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तस्नीफ़ "**मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन**" का तरजमा व तस्हील है। इस रिसाले में इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के तह़्त मुन्फ़रिद अन्दाज़ में ग़ौरो तफ़क्कुर या'नी "**फ़िक्रे मदीना**" करने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है। म-सलन इन्सान को चाहिये कि दिन रात पर ग़ौर करे कि जब दिन की रोशनी फैल जाती है तो रात की तारीकी रुख़्सत हो जाती है इसी त़रह़ जब नेकियों का नूर इन्सान को ह़ासिल हो जाए तो उस के आ'ज़ा से गुनाहों की तारीकी रुख़्सत हो जाती है। मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त ग़ौर करे कि किस अ-ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ के घर में दाख़िल हो रहा है ? इसी त़रह़ इबादत करते वक़्त ग़ौर करे कि इस में मेरा कोई कमाल नहीं येह तो रब तआ़ला का एह़सान है कि उस ने मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई, علیٰ ھذا القیاس । (कुल सफ़ह़ात : 36)

(4) **फ़िक्रे मदीना :** इस किताब में फ़िक्रे मदीना (या'नी मुह़ा-सबे) की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़वाइद और बुज़ुर्गाने दीन की फ़िक्रे मदीना के "131" वाक़िआ़त को जम्अ़ किया गया है जिस में बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के 41 वाक़िआ़त भी शामिल हैं नीज़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर फ़िक्रे मदीना करने का अ-मली त़रीक़ा भी बयान किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 164)

(5) **इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?** इस रिसाले में उन तमाम मसाइल का ह़ल बयान करने की कोशिश की गई है जो एक त़ालिबे इ़ल्म को इम्तिह़ानात

की तय्यारी के दौरान दरपेश हो सकते हैं। येह रिसाला बुन्यादी तौर पर दर्से निज़ामी के त्-लबा इस्लामी भाइयों को मद्दे नज़र रख कर लिखा गया है, लेकिन स्कूल व कोलेज में पढ़ने वाले त्-लबा (Students) के लिये भी यक्सां मुफ़ीद है। इस लिये इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह येह रिसाला इन त्-लबा तक भी पहुंचाएं क्यूं कि इस रिसाले में अपने म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" को पेशे नज़र रखते हुए बहुत से मक़ामात पर नेकी की दा'वत भी पेश की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 132)

(6) **नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल :** नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल पर मुश्तमिल एक किताब जिस में मुख़्तलिफ़ सूरतों का हुक्म अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللہُ تعالٰی की किताबों से एक जगह जम्अ़ करने की सअ़्य की गई है ताकि अ़वामुन्नास की इन मसाइल तक आसानी से रसाई हो सके और इस मस्अले के बारे में लोगों में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़लत फ़हमियां पाई जाती हैं उन का इज़ाला हो सके। (कुल सफ़ह़ात : 39)

(7) **जन्नत की दो चाबियां :** इस किताब में पहले जन्नत की ने'मतों का बयान किया गया है, फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से ज़बान व शर्म गाह की ह़िफ़ाज़त से मु-तअ़ल्लिक़ दी गई एक बिशारत ज़िक्र की गई है। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि हम इस की ज़मानत के ह़क़दार किस त़रह़ बन सकते हैं। ह़स्बे ज़रूरत शर-ई मसाइल भी ज़िक्र किये गए हैं। उम्मीदे वासिक़ है ज़बान और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के बारे में एक मक़ाम पर इतनी तफ़्सील आप को किसी दूसरी किताब में न मिलेगी। **ذلک فضل اللہ العظیم** (कुल सफ़ह़ात : 152)

(8) **काम्याब उस्ताज़ कौन ?** इस किताब में उन तमाम उमूर को बयान करने की कोशिश की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ तदरीस से हो सकता है म-सलन

सबक़ की तय्यारी, सबक़ पढ़ाने का त़रीक़ा, सुनने का त़रीक़ा علیٰ ھذا القیاس । येह किताब बुन्यादी त़ौर पर शो'बए दर्से निज़ामी को मद्दे नज़र रख कर लिखी गई है लेकिन हिफ़्ज़ व नाज़िरा के उस्ताज़ भी मा'मूली तरमीम के साथ इस से ब ख़ूबी फ़ाएदा उठा सकते हैं नीज़ स्कूल व कॉलेजिज़ में पढ़ाने वाले असातिज़ा के लिये भी इस किताब का मुत़ा-लआ़ फ़ाएदे से ख़ाली नहीं है। (कुल सफ़ह़ात : 43)

(9) **निसाबे म-दनी क़ाफ़िला :** इस किताब में म-दनी क़ाफ़िला से मु-तअ़ल्लिक़ उमूर का बयान है, म-सलन म-दनी क़ाफ़िला की अहम्मिय्यत, म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए, म-दनी क़ाफ़िला का जद्वल, इस जद्वल पर अ़मल किस त़रह़ किया जाए, अमीरे क़ाफ़िला कैसा होना चाहिये ? इलावा अज़ीं मौज़ूअ़ की मुना-सबत से अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी مدظلہ العالی के अ़त़ा कर्दा म-दनी फूल भी इस किताब में सजा दिये गए हैं । अपने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से मुन्फ़रिद किताब है । (कुल सफ़ह़ात : 196)

(10) **हु़स्ने अख़्लाक़ :** येह किताब दुन्याए इस्लाम के अ़ज़ीम मुह़द्दिस सय्यिदुना इमाम त़-बरानी علیہ الرحمۃ की शाहकार तालीफ़ "**मुकारिमुल अख़्लाक़**" का तरजमा है । इस किताब में इमाम त़-बरानी علیہ الرحمۃ ने अख़्लाक़ के मुख़्तलिफ़ शो'बों के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीस जम्अ़ की हैं । उम्मीदे वासिक़ है कि येह किताब शबो रोज़ इन्फ़िरादी कोशिश में मस्रूफ़ रहने वाले इस्लामी भाइयों के लिये बहुत मुफ़ीद साबित होगी । ان شاء اللہ عزوجل (कुल सफ़ह़ात : 74)

(11) **फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम :** येह किताब इमाम ग़ज़ाली علیہ الرحمۃ की मायानाज़ किताब "**एह़याउल उ़लूम**" की तल्ख़ीस व तस्हील है जिसे दर्स देने के अन्दाज़ में मुरत्तब किया गया है । इख़्लास, मज़म्मते दुन्या, तवक्कुल, सब्र जैसे मज़ामीन पर मुश्तमिल है । (कुल सफ़ह़ात : 325)

(12) **राहे इल्म :** येह रिसाला "**ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुत्तअ़ल्लुम**" का तरजमा व तस्हील है जिस में उन उमूर का बयान है जिन की रिआ़यत राहे इल्म पर चलने वाले के लिये ज़रूरी है। और उन बातों का ज़िक्र है जिन से इज्तिनाब मुअ़ल्लिम व मु-तअ़ल्लिम के लिये ज़रूरी है। (कुल सफ़ह़ात : 102)

(13) **ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ :** येह किताब ह़ाफ़िज़े मिल्लत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुबारक पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है "जिसे ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़" के नाम से शाएअ़ किया गया है। मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व बात़िला के फ़र्क़ को निहायत आसान अन्दाज़ में सुवालन जवाबन पेश किया है जिस की वजह से कम ता'लीम याफ़्ता लोग भी इस का आसानी से मुत़ा-लआ़ कर सकते हैं। (कुल सफ़ह़ात : 50)

(14) **तह़क़ीक़ात :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है, तह़क़ीक़ी अन्दाज़ में लिखी गई इस किताब में बद मज़हबों की त़रफ़ से वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के तसल्ली बख़्श जवाबात दिये गए हैं। मु-तलाशियाने ह़क़ के लिये नूर का मनारा है। (कुल सफ़ह़ात : 142)

(15) **अर-बईने ह़-नफ़िय्यह :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ नक़्शबन्दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है। जिस में नमाज़ से मु-तअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस को जम्अ़ किया गया है और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में ह़-नफ़ी मज़हब की तक़्विय्यत निहायत मुदल्लल अन्दाज़ में बयान की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 112)

(16) **बेटे को नसीह़त :** येह इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की किताब "**अय्युहल वलद**" का उर्दू तरजमा है। बच्चों की तरबिय्यत के लिये ला जवाब किताब है इस में इख़्लास, मज़म्मते माल और तवक्कुल जैसे मज़ामीन शामिल हैं। (कुल सफ़ह़ात : 64)

(17) **तलाक़ के आसान मसाइल :** इस फ़िक्ही किताब में मसाइले तलाक़ को आम फ़ह्म अन्दाज़ में पेश किया गया है जिस की बिना पर तलाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ अ़वामुन्नास में पाई जाने वाली ग़लत़ फ़हमियों का काफ़ी ह़द तक इज़ाला हो सकता है। (कुल सफ़ह़ात : 30)

(18) **तौबा की रिवायात व ह़िकायात :** इस किताब की इब्तिदा में तौबा की ज़रूरत का बयान है, फिर तौबा की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि सच्ची तौबा किस त़रह़ की जा सकती है ? और आख़िर में तौबा करने वालों के तक़रीबन 55 वाक़िआ़त भी नक़्ल किये गए हैं। उम्मीदे वासिक़ है कि येह किताब इस्लाही़ कुतुब में बेहतरीन इज़ाफ़ा मु-तसव्वर होगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 124)

(19) **अद्दा'वति इलल फ़िक्र** (अ़-रबी) : येह किताब मुह़क़्क़िक़े जलील मौलाना मन्शा ताबिश क़सूरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की मायानाज़ तालीफ़ "दा'वते फ़िक्र" का अ़-रबी तरजमा है जिस में बद मज़हबों को अपनी रविश पर नज़र सानी करने की तरग़ीब दी गई है। (कुल सफ़ह़ात : 148)

(20) **आदाबे मुर्शिदे कामिल** (मुकम्मल पांच ह़िस्से) : फ़ी ज़माना एक त़रफ़ नाक़िस और कामिल पीर का इम्तियाज़ मुश्किल है तो दूसरी त़रफ़ जो किसी कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्ता हैं भी तो उन्हें अपने मुर्शिद के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से आशनाई नहीं। इन ह़ालात में इस बात की अशद ज़रूरत मह़सूस हुई कि कोई ऐसी तह़रीर हो जिस से शरीअ़त की रोशनी में मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नाक़िस और कामिल मुर्शिद की पहचान भी हो सके और कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्तगान आदाबे मुर्शिद से मुत्तलअ़ हो कर ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर त़रीक़त की राह में होने वाले ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान से भी मह़फ़ूज़ रह सकें। इस ह़क़ीक़त को जानने

और मुर्शिदे कामिल के आदाब समझने के लिये आदाबे मुर्शिदे कामिल के मुकम्मल पांच हिस्सों पर मुश्तमिल इस किताब में शरीअ़त व त़रीक़त से मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी मा'लूमात पेश करने की सअ़्य की गई है। (कुल सफ़ह़ात : तक़्रीबन 200)

(21) **टी वी और मूवी :** फ़ी ज़माना ह़ालात बड़ी तेज़ी के साथ तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं। एक त़रफ़ बे अ़-मली का सैलाब अपनी तबाही मचा रहा है तो दूसरी त़रफ़ बद अ़क़ीदगी के ख़ौफ़नाक तूफ़ान की होल नाकियां बरबादी के मनाज़िर पेश कर रही हैं। इन ह़ालात में मीडिया का त़र्ज़े अ़मल भी सब के सामने है।

"टीवी और मूवी" नामी इस रिसाले में टीवी और मूवी के ना जाइज़ इस्ति'माल की तबाह कारियों और जाइज़ इस्ति'माल की मुख़्तलिफ़ सूरतों और फ़ी ज़माना इस की ज़रूरत का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 32)

(22) **फ़तावा अहले सुन्नत :** इस सिल्सिले में सात हिस्से शाएअ़ हो चुके हैं।

(23) **जन्नत में ले जाने वाले आ'माल :** इस किताब में मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल म-सलन हुसूले इल्म, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, दीगर स-दक़ात, तिलावते क़ुरआन, सब्र, हुस्ने अख़्लाक़, तौबा, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और दुरूदे पाक के सवाब के बारे में दो हज़ार(2000) से ज़ाइद अह़ादीस मौजूद हैं। इस किताब का मुत़ा-लआ़ करने वाले ख़ुद में अ़मल का जज़्बा बेदार होता मह़सूस करेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा रखने वाले मुसल्मानों के लिये इस में कसीर मवाद मौजूद है। (तक़्रीबन 1100 सफ़ह़ात)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(1) **ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह :** इस रिसाले में इल्मे नह़्व की मश्हूर इस्तिलाह़ात की ता'रीफ़ात मअ़ इम्सला व तौज़ीह़ात जम्अ़ कर दी गई हैं। अगर त़-लबा

इन ता'रीफ़ात का इस्तिह्ज़ार कर लें तो इल्मे नह्व के मसाइल व अब्हास समझने में बहुत सहूलत रहेगी, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ । (कुल सफ़हात : 45)

(2) **किताबुल अ़क़ाइद :** सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तस्नीफ़ कर्दा इस किताब में इस्लामी अ़क़ाइद और ह़दीसे पाक की रोशनी में क़ियामत से पहले पैदा होने वाले तीस झूटे मुद्दइयाने नुबुव्वत (कज़्ज़ाबों) में से चन्द की तफ़्सील बयान की गई है । येह किताब कई मदारिस के निसाब में भी शामिल है । (कुल सफ़हात : 64)

(3) **नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़न्ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की बे मिसाल तालीफ़ "**नख़्बतुल फ़िक्र फ़ी मुस्त़लिहि अहलिल असर**" की अ़-रबी शर्ह़ है । इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्त़िलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है । त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है । (कुल सफ़ह़ात : 175)

(4) **ज़ुब्दतुल फ़िक्र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़न्ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की बे मिसाल तालीफ़ "**नख़्बतुल फ़िक्रफ़ी मुस्त़लिहि अहलिल असर**" की उर्दू शर्ह़ है । इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्त़िलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है । त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है । (कुल सफ़ह़ात : 91)

(5) **शरीअ़त में उ़र्फ़ की अहम्मिय्यत :** येह रिसाला इमाम सय्यिद मुह़म्मद अमीन बिन उ़मर आ़बिदीन शामी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के उ़र्फ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तह़रीर

कर्दा अ़-रबी रिसाले "**नश्रिल उ़र्फ़ फ़ी बिना-इ बा'दिल अह़कामि अ़लल उ़र्फ़**" का उर्दू तरजमा है। तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के त़-लबा इस का ज़रूर मुत़ा-लआ़ करें। (कुल सफ़ह़ात : 105)

(6) **अर-बई़निन न-वविय्यह** (अ़-रबी) : अ़ल्लामा श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ जो कि कसीर मदारिस के निसाब में शामिल है। इस किताब को ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 121)

(7) **निसाबुत्तज्वीद :** इस किताब में दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़े कु़रआनिया की अदाएगी की मा'रिफ़त का बयान है। मदारिसे दीनिया के त़-लबा के लिये बेह़द मुफ़ीद है। (कुल सफ़ह़ात : 79)

(8) **गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल :** इस किताब में अरकाने इस्लाम की वज़ाह़त बयान की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 180)

(9) **काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कैसे बनें ?** इस किताब में इ़ल्म के फ़ज़ाइल, त़-लबे इ़ल्म की निय्यतों, अस्बाक़ की पेशगी तय्यारी और तरजमे में महारत ह़ासिल करने का त़रीक़ा, काम्याब त़ालिबुल कौन ? वग़ैरहुम मौज़ूआ़त का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(शो'बए तख़्रीज)

अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन : इस किताब की जदीद कम्पोज़िंग, पुराने नुस्ख़े से मुत़ा-बक़त और निहायत एह़तियात़ से प्रूफ़ रीडिंग की गई है। ह़वाला जात की तख़्रीज भी की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 206)

बहारे शरीअ़त : फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की आ़लिम बनाने वाली किताब "बहारे शरीअ़त" जो अ़क़ाइदे इस्लामिया और इन से मु-तअ़ल्लिक़ मसाइल पर मुश्तमिल है। तमाम ह़वाला जात की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज करने के साथ साथ

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी भी हाशिये में लिख दिये गए हैं। इस की मुकम्मल 3 जिल्दें शाएअ़ हो चुकी हैं।

(मजलिसे तराजिमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब)

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के इन रसाइल के अ़-रबी तराजिम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इ़ज़ामुल मलूक) (2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)

(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम) (4) श-ज-रए आ़लिया क़ादिय्यह र-ज़विय्यह अ़त्तारिय्यह

इन रसाइल के फ़ारसी तराजिम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(2) ग़फ़्लत

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(3) अबू जह्ल की मौत

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(4) एह़्तिरामे मुस्लिम

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़।

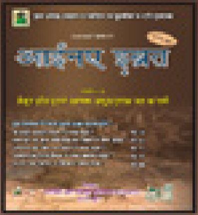

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ**"** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
(दा'वते इस्लामी)
مكتبة المدينة
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net